इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानी

संवेदना एवं शिल्प

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे की विद्यावाचस्पति
(पीएच.डी.) हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तावित
शोध-प्रबंध

शोध छात्र
श्री.बाळासाहेब धोंडीराम बाचकर
हिंदी विभाज
ज ला व वाणिज्य महाविद्यालय,
बेलापूर, तहसील श्रीरामपुर जि.अ.नगर

शोध ि-र्देशज
डॉ.शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख
प्राचार्य
लोज सेवा ज ला व विज्ञा-ा महाविद्यालय,
जारखेडा परिसर,
औरंगाबाद- 431 009

शोध जें द्र
ललित कला व साहित्य अकादमी केंद्र
टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
जनवरी 2016

प्रमाजपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोध छात्र **श्री.बाळासाहेब धोडीराम बाचकर** -ो पीएच्.डी. (हिंदी) पुर्व विश्वविद्यालय उपाधि के लिए प्रस्तुत **"इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशज ज्ी हिंदी ज्हा-ी- संवेदना एवं शिल्प"** -ामज शोध ज्ार्य संपूर्ज रूप से मेरे -िर्देश में संपन्न हुआ है।

मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे अग्रेषित किया जाए। अन्य स्त्रोतों से प्राप्त संदर्भ-सामग्री की स्वीकृति प्रस्तुत शोध प्रबंध में यथास्थान दी गई है।

स्था-ा-अहमदनगर **(डॉ.शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख)**

तिथि- **(शोध -िर्देशज)**

डॉ.शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख
प्राचार्य
लोज सेवा ज ला व विज्ञा-ा महाविद्यालय,
जारखेडा परिसर, औरंगाबाद- 431 009

संस्तुति

मैं संस्तुति, करता हूँ शोध छात्र **श्री.बाळासाहेब धोडीराम बाचकर** द्वारा प्रस्तुत **"इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानी- संवेदना एवं शिल्प"** शोध प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित करने की अनुमति दी जाती है।

स्था-ा- अहमदनगर

तिथि-जनवरी 2016

हिंदी विभाग, टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

प्रतिज्ञापत्र

मै **श्री.बाळासाहेब धोडीराम बाचकर** प्रतिज्ञापूर्वक निवेदन करता हूँ कि **"इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी जहा-ी- संवेदना एवं शिल्प"** -ामज शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे के अंतर्गत जो पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि के लिए, प्रस्तुत की जा रही है।

प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अ-य जिसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध -िर्देशज	शोध छात्र
डॉ.शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख	**श्री.बाळासाहेब धोडीराम बाचकर**

-प्राक्कथन-

इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों ने अपनी कहानियों में जन-जीवन की त्रासदी, समाज में प्रचलित विकृतियाँ, अंधानुकरण, धार्मिक कट्टरता तथा परिवेशगत अनुभूति तथा समाज की प्रताड़ित नारी उनकी रचनाधर्मिता प्रमुख स्वर रहा है। उनकी कहानियों का मूल आकर्षण बिंदू समाज दर्शन है, जो हमें बदलने का एहसास दिलाता है और मानवता की स्थापना करने के लिए प्रेरित करता है। परिणामत: शोध विषय चयन के लिए मेरा ध्याय इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों की कहानियों का केंद्रबिंदू बना। इक्कीसवीं सदी के कहानियों में राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन संदर्भ प्रस्तुत करने में अशातीत सफलता प्राप्त की है और उन्हीं कहानियों में मुझे मेरी शोधवस्तु नजर आयी। तभी मैंने श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख के परामर्श से **"इक्कीसवीं सदी जे प्रथम दशज जी हिंदी जहा-ी- संवेदना एवं शिल्प"** इस विषय पर शोधकार्य करने का निर्णय लिया है।

शोध प्रबंध गुरूवर्य डॉ. शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख इनके सौम्य व्यक्तित्व प्रेरक विचारों को प्रोत्साहन, सहयोग एवं आशिर्वाद का प्रतिफल है। उनकी आत्मीयता, प्रेमभाव तथा प्रोत्साहन के परिणाम स्वरूप ही प्रस्तुत प्रबन्ध ने आकार लिया है। अत: मैं उनका आजीवन ऋणी बनकर जीना चाहता हूँ। बेलापूर एज्यु सोसायटी की कला और वाणिज्य महाविद्यालय बेलापूर ता.श्रीरामपूर जि.अहमदनगर के अध्यक्ष सुनिलजी मुथ्था सर, संस्थाके सचिव मा.सदाशिव नागले, उपाध्यक्ष मा.राजेंद्र पाटील ठोंबरे सर और अन्य पदाधिकारी, मा.भालेराव एच आर सर इनका मै ह्रदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के आरम्भ से लेकर पूर्णत: तक के पीछे गुरूवर्य तथा प्राचार्य डॉ. बी. आर. पवार, प्रा.शेख एन.जी, प्रा.थोरात ए.एम., प्रा.पवार बी.एन, प्रा.सदाफुले व्ही. बी., प्राध्यापिका उंडे आर.एस. प्रा. डॉ.गुंफा कोकाटे, प्रा.व्ही.एन.काळे, प्रा.एस.एस.विधाटे, प्रा.पी.डी देशपांडे, प्रा. व्ही.एम.गायकवाड, प्रा.एस.एम.नवाळे, प्रा.सी.एन.कोतकर, ग्रंथपाल पावसे एस.पी इन सभी का ह्रदय से आभारी हूँ।

परिवारजनों में आदरणीय दादी माँ, माता, भाई, भाभी, बहन, सास-ससुर आदि सदस्यां के प्रति आभार प्रदर्शन मात्र औपचारिकता होगी, अस्तु।

इस अवसर पर मैं अपनी जीवन संगिनी सौ.सविता, सुपुत्र चि.निखिल, कु.मानसी को कैसे भुल सकता हूँ ? उनके मौन तप का मूल्य मेरे लिए शब्दातीत है। इस गंभीर दायित्व को आंनददायी बनाने में अपना पूर्णरूपेन सहयोग मिला।

मेरे शोधजार्य जो व्यवस्थित आकार देने का कार्य महेश गिते ने बड़ी तत्परता, मेहनत और लगन से किया है। उनके इस बहुमोल योगदान के लिए मैं आभारी हूँ।

श्री.बाळासाहेब धोंडीराम बाचकर
बेलापूर, तहसील श्रीरामपुर जि.अ.नगर

विषयानुक्रमणिका

अ.नं	**अध्याय**	**पृष्ठ क्रमांक**
प्रथम अध्याय	इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक हिंदी कहानी का अवलोकन	3
द्वितीय अध्याय	संवेदना और शिल्प : सैध्दांतिक विवेचन	45
तृतीय अध्यय	इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की कहानियों में परिवेश एवं परिस्थितियाँ	95
चतुर्थ अध्याय	इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के हिंदी कहानियों में चित्रित विविध समस्या	148
पंचम अध्याय	इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक हिंदी कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूप	206
षष्ठ अध्याय	इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक हिंदी कहानियों में चित्रित संवेदना	245
सप्तम अध्याय	इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक हिंदी कहानियों में शिल्पगत अध्ययन	295
	उपसंहार	348
	आधार ग्रंथ	354
	संदर्भ ग्रथ	355

इक्कीसवीं

प्रथम अध्याय

1.0 इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिन्दी कहानी का अवलोकन

1.1. हिन्दी कहानी का उदभव और विकास

1.1.1. स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी कहानी

1.1.1.1. पूर्व प्रेमचंद युग

1.1.1.2. प्रेमचंद युग

1.1.1.3. प्रेमचंदोत्तर युग

1.1.1.3.1. नये आयामः नई दिशा

1. सामाजिक कहानी
2. मनोविश्लेषणात्मक कहानी
3. ऐतिहासिक कहानी
4. साम्यवादी कहानी

1.1.2. स्वातंत्र्योत्तर कहानी

1. नई कहानी
2. साठोत्तरीय कहानी
3. समान्तर कहानी

1.2. हिन्दी कहानी का अर्थ

1.3. हिन्दी कहानी की परिभाषा

1.4 हिन्दी कहानी का स्वरूप

1.4.1. घटना प्रधान कहानी

1.4.2. चरित्र प्रधान कहानी

1.4.3. वर्णन प्रधान कहानी

1.4.4. भाव प्रधान कहानी

1.5. कहानी के तत्व

1.5.1. कथावस्तु

1.5.1.1. प्रस्तावना

1.5.1.2. मुख्यांश

1.5.1.3. क्लाइमेक्स

1.5.2. चरित्र चित्रण

1.5.2.1. वर्णन द्वारा चरित्र चित्रण

1.5.2.2. संकेत द्वारा चरित्र चित्रण

1.5.2.3. वार्तालाप द्वारा चरित्र चित्रण

1.5.2.4. घटनाओं द्वारा चरित्र चित्रण

1.5.3. संवाद

1.5.4. देशकाल वर्णन शैली

1.5.4.1. वर्णन शैली

1.5.5. भाषा शैली

1.5.6. उद्देश्य

निष्कर्ष

प्रथम अध्याय

इक्कीसवी सदीं क हिन्दी कहानियों का अवलोकन

प्रस्तावना-

हिंदी की आधुनिक कहानी का विकास अधिक पुराना नहीं है। निश्चय ही वह बीसवीं सदी में ही विकसीत हुई है। हिंदी कहानी विकास क्रम में छठा दशक अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि इस दशक में हिंदी कहानी को एक परिवर्तित रूप में पाते है। हिंदी कहानी का विकास स्वातंत्र्योत्तर काल में अधिक तीव्र गति से हुआ। कहानी के क्षेत्र में विभिन्न आंदोलन का उन्मेष भी हुआ है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में कहानी पर नये सिरे से नये प्रकार की चर्चा आरंभ हुई और कहानी को अनायास ही केंद्रीय विधा की गरिमा प्राप्त हो गई। " स्वातंत्र्योत्तर काल में यही खाली आकाश ज्योतिवंत नक्षत्रों से भर जाता है और हिंदी कहानी की एक नयी शुरूवात होती है क्योंकि हिंदी में उत्तर शती का पहला दशक कहानी के नवोत्थान के लिए अवरेख्य और स्मर्तव्य है।"[1] सन 1950 के आस पास हिंदी कहानीकारों की नयी पीढ़ी उभरकर आयी और एक स्पष्ट आंदोलनात्मक स्वर सुनायी देने लगा।

1.1. हिंदी कहानी का उद्‌भव और विकास-

आधुनिक भारतीय जीवन की विडंबना, परिवेश, बदलती मानसिकता, छटपटाहट आज कहानी के माध्यम से चित्रित हुई है- "आज कहानी यातनाओ के जंगल से गुजरते हुए या नीलझील की गहराईयों में डुबते हुए, भुखे और नंगे लोग की तिलमिलाहट व्यक्त करते हुए खोई हुई दिशाओं की तलाश में कही रूकी हुई

जिन्दगी तो एकांत भोगती रहती है। ''[2] युग की करवट के साथ कहानी ने भी परम्परा का ही विकसीत रूप है।

बीसवीं सदी में साहित्य के क्षेत्र में काफी परिवर्तन हुआ। उसी दौर में पाश्चात्य साहित्य का आगमन भी हमारे देश मे हुआ। जिससे हिंदी कथा साहित्य में अभूतपूर्व आंदोलन उठा। अतः तत्कालीन हिंदी गद्य साहित्य पर अंग्रेजी का प्रभाव अवश्य पड़ा है। हिंदी कहानी की यात्रा एक ओर विकास की यात्रा से गुजरी और दूसरी और आन्दोलनात्मक प्रवृत्ति से। हिंदी की पहली कहानी कौन-सी इस संदर्भ में विद्वानों में अलग अलग मत प्रवाह है। हिंदी की मौलिक कहानी कौन-सी है। हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी का पद पाने के लिए हमारे सामने कुछ कहानियाँ आती है। ''इस प्रश्न पर विद्वानों का एक मत नहीं है किंतु हम चाहे किशोरीलाल गोस्वामी की इंदूमती (1900)[3] को हिंदी की पहली कहानी मानें, चाहे आचार्य रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903)[4]'' को अथवा माधव प्रसाद मिश्र की 'लड़की की कहानी' (1304)[6]' या बंग महिला की 'दुलाई वाली'(1907)[7] का लेकिन इसी शताब्दी में हिंदी कहानी का विकासारंभ प्रारंभ हुआ। इस संदर्भ में डॉ.राजेंद्र यादव का मत है कि- ''हिंदी में इस स्वतंत्र विकास का प्रारंभ (हिंदी कहानी के) 'उसने कहा था' (1916) कहानी से माना जा सकता है।''[8]

जहाँ तक कहानी विधा के विकास का प्रश्न है, वहाँ इस विकास की गति को निश्चित करने के लिए उसका काल विभाजन किया जाना आवश्यक है। जो भी हो यह कहना उचित होगा कि स्वातंत्रोत्तर हिंदी कहानी प्रेमचंद और प्रसाद की परम्परा का ही समन्वित रूप है। हिंदी कहानी का विकास सहज प्रक्रिया और आंदोलनात्मक प्रवृत्ति की यात्रा रही है। आधुनिक हिंदी कहानी प्रवृत्ति के अनुसार दो भागों में बाँटा जा सकता है-

1. स्वातंत्रतापूर्व
2. स्वातंत्र्योत्तर
3. स्वातंत्रतापूर्व हिन्दी कहानी आधुनिक युग तक पहुँचने की एक महत्वपूर्ण यात्रा है। प्रेमचंद को हिन्दी कहानी के मसीहा माने जाने का कारण उन्हीं को आधार बनाकर विभाजन करना उचित होगा।

1. पूर्व प्रेमचंद युग
2. प्रेमचंद युग
3. प्रेमचंदोत्तर युग

1.1.1.1. पूर्व प्रेमचंद युग-

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही आधुनिक हिन्दी कहानी अपने विशिष्ट रूप में आरंभ होती है। बींसवी सदी के प्रथम दशक में हिंदी कहानी का उत्थान हुआ परंतु हिंदी कहानी का उद्भव और विकास को निश्चित करते हुए हमारा ध्यान प्राचीन कथा साहित्य पर आकर्षित होता है। "लघुकथा आख्यायिका, आख्यानक, जातक, दंतकथा एवं वार्ताओं के रूप में हमें इसके बीज संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के साहित्य में उपलब्ध होते है। वास्तविकता यह है कि इन कथाओं का उद्देश्य धार्मिक नीतिपरक एवं उपदेशात्मक ही रहा है।"9 कहानियों की कथावस्तु और शिल्प का विवेचन करने से स्पष्ट होता हैं कि कथा साहित्य के आगामी विकास की सारी सम्भावनाएँ उनमें उपस्थित थी।

मध्ययुग में आरम्भिक वर्षों में प्रेमकथाओं का सूत्रपात मुसलमान संस्कृति के प्रभाव के कारण हुआ। कहानी का ध्येय मनोरंजन रहा लेकिन उसके पीछे एक ध्येय वर्तमान रहता है, जो अनुभूति की अभिव्यक्ति में निहित है। भारतीय विद्वानों ने प्राचीन भारतीय संस्कृति व साहित्य में से ही कहानी के बीज ढूँढने की कोशिश की

है। ''कहानी अपने संपूर्ण ऐतिहासिक संदर्भों में युरोप की सर्जना है, विज्ञान चेतना के विकास के दौर की देन है। अपने आधुनिक रूप में वह 19 वीं शती की देन है।''[10] अतः 19 वीं शती में साहित्यिक कहानी का प्रादुर्भाव सारे संसार में हुआ।

प्रेमचंद युग यह कहानी उत्थान का काल था। लेकिन कहानियों की कथावस्तु और शिल्प विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि कथा साहित्य के आगामी विकास की सारी संभावनाएँ उनमें उपस्थित थी। इस काल के कहानीकारों में जयशंकर प्रसाद सर्व प्रमुख है। प्रसाद की आरंभिक कहानियों में ग्राम, तानसेन, रसियाबालम आदि पर बंगला कहानी शैली का प्रभाव था। परंतु बाद में उन्होंने ऐसी मौलिक कहानी लिखना आरंभ किया जो आज भी अपनी भावनिक अलंकृत शैली, वस्तुगठन, उद्देश्य और कला की दृष्टि से हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ मानी जाती है। इसी समय जी.पी. श्रीवास्तव द्वारा पहली कहानी 'इंदू' में प्रकाशित हुई। राधा राधिकारमण प्रसाद सिंह की कहानीकारों में 'कँगना' और 'बिजली' कहानी भी काफी लोकप्रिय रही। कौशिक की 'रक्षाबंधन' कहानी समाज सुधार और पारिवारिक जीवन की विभिन्न पक्षों को उदघाटित करती है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री और विश्वम्भरनाथ जिज्जा ने भी इसी समय कहानियाँ लिखना आरंभ कर दिया था। शास्त्री जी ने 'दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी,' 'ककडी की कीमत ' आदि यथार्थ परक कहानियाँ लिखी।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने सन 1915 में लिखी उसने कहा था कहानी हिंदी साहित्य की महान उपलब्धि मानी जाती है। इसमें पवित्र प्रेम, आत्मार्पण, निःस्वार्थ बलिदान का चित्रण हुआ है। यह कहानी अपने पुलकित रसोद्रेक के कारण हिंदी कहानी साहित्य का 'मील का पत्थर' मानी जाती है। गुलेरी जी ने 'सुखमय जीवन', 'बुध्दू का काँटा' और 'उसने कहा था' कहानी द्वारा उन्हें हिंदी का अमर कथाकार बना दिया है। भगवानदीन की 'प्लैग की चुडैल' (1902) वास्तविक परिस्थिति का चित्रण करनेवाली रचना प्रकाशित हुई। इसी समय केशवप्रसाद सिंह की 'चंद्रलोक की

यात्रा' तथा गिरिजादत्त वाजपेयी की 'पंडितानी' भी विशिष्ट बन पड़ी है। वृन्दावनलाल शर्मा ने राखी बंद भाई कहानी में ऐतिहासिक कहानी का बीजारोपण किया। कलात्मकता और रोमांचकारी प्रसंगों के कारण कहानी विधा अधिक लोकप्रिय हो चली। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अनेक कहानियों का प्रकाशन हुआ।

प्रेमचंद पूर्व युग में उपर्युक्त कहानिकारों द्वाा लिखी गई कहानियाँ हिंदी कहानी हिंदी कहानी के आरंभिक विकास की परिचायक है। यद्यपि इनमें से कई कहानिकारों ने आगे चलकर उनके कहानियाँ लिखी परंतु इस प्रयास के रूप में हिंदी कहानी के भावी विकास की संभावना स्पष्ट होने लगी थी। अतः जिसका विकास आगे चलकर प्रेमचंद युग में हुआ।

1.1.1.2. प्रेमचंद युगीन कहानी-

प्रेमचंद का अविर्भाव हिंदी साहित्य की एक अभूतपूर्व घटना थी। प्रेमचंद की जमाना ऊर्दू पत्रिका में छपा 'सौत', 'पंचपरमेश्वर' (1916) 'सज्जन ता का दंड', (1916), 'ईश्वरीय न्याय' (1917) और 'दुर्गा का मंदिर '(1917) में 'सरस्वती' पत्रिका में छपी कालावधि का विचार किया जाय तो 'इंदू और उसने कहा था' में पंद्रह वर्षो का अंतराल दिखाई देता है। लेकिन राजेंद्र यादव ने 'उसने कहा था ' कहानी को प्रथम आधुनिक हिंदी कहानी का दर्जा देते है। ''पहले महायुध्द की पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई यह कहानी रचना शिल्प की दृष्टि से बहुत आगे की रचना है आधुनिक हिन्दी कहानी का मान्य यही से होना चाहिए ''[11]

प्रेमचंद ने सामाजिक मानव की सामान्य और विशिष्ट परिस्थितियों, मनोवृत्तियों और समस्याओं का अंकन कर हिंदी कहानी को एक यथार्थवादी दिशा और गति प्रदान की। वास्तव में प्रेमचंद ने ही हिंदी कहानी को स्वावलंबी बनाया । इस संदर्भ में डॉ.माधुरी शाह का कथन है कि ''प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को जादू से

मुक्ति दिलाकर उसे यथार्थ की भूमि पर प्रतिष्ठित किया ।"[12] प्रेमचंद से पूर्व कहानियों में पाठक जादू और तिलिस्म की खोज करता था लेकिन प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में उन्हें मुक्ति दिलाकर सामाजिक यथार्थ प्रधान कहानियों का लेखन कार्य आरंभ किया । जी.पी.श्रीवास्तव, गहमरी जैसे लेखक पाठकों के सामने मनोरंजनात्मक कहानियों का लेखन करते थे । नीति, उपदेश, मनोरंजन से कथा साहित्य की रचना की जाती थी । प्रेमचंद ने हिंदी कहानी को सच्चे अर्थों में यथार्थवादी बना दिया । उन्होंने समाज की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण कर पाठक को अपने ओर आकर्षित किया ।

हिंदी कहानी कल्पना के पंख लगाकर पाठकों को परिलोक की सैर करती थी । पाठक का उद्देश्य केवल आनंद उठाना था । लेकिन प्रेमचंद ने सामाजिक विकृतियों का यथातथ्यपरक निरूपण करते हुए सामाजिक परिस्थितियों का खुलकर चित्रण किया । "जिस प्रकार तिलिस्म टूट जाने पर सही चित्र समझ आता है उसी प्रकार प्रेमचंद ने कहानी विधा की इस प्रकार की बँधी हुई मानसिकता से मोक्ष दिलाया । यह एक प्रकार से प्रेमचंद के युग का उनका साहसपूर्ण कदम ही कहलायेगा ।"[13] प्रेमचंद युग के कहानीकार 'पाण्डेय, बेचेन शर्मा 'उग्र' अपने' उपनाम से कहानी क्षेत्र में अवतीर्ण हुए । 'चॉकलेट' नामक कहानी संग्रह उनकी प्रभावोत्पादकता का प्रमाण हैं । उन्होंने सामाजिक विकृतियों का ऐसा नग्न चित्रण किया जो कहीं-कहीं अश्लीलता तक पहुँच गया । कुछ आलोचनों ने उनके साहित्य को 'घासलेटी साहित्य' भी कहा है । उनकी 'दोजख की आग', 'बलात्कार', 'चिनगारियाँ', 'सनकी अमीर', 'जब सारा आलम सोता है' आदि कहानियाँ विवाद का विषय बन चुकी है । इस काल के अन्य कहानीकारों में चण्डीप्रसाद सक्सेना, -हदयेश, रामकृष्णदास, विनोदशंकर व्यास, सियारामशरण गुप्त, गोविंद वल्लभ पंत, पदुमलाल पन्नालाल बक्षी आदि विशेष रूप से उल्लेखणीय हैं ।

प्रेमचंद के अभ्युदय ने कहानी साहित्य में एक नया युग का द्वारा खोला। जिसके कारण प्रेमचंदोत्तर कहानी ने अपना स्थिर रूप धारण कर लिया। प्रेमचंद युग ने आगे की कहानिकारों को नई दिशा प्रदान की। उनकी कहानियों से कहानी साहित्य को एक निश्चित गति प्राप्त हुई, जिसके कारण उन्हें कथा साहित्य के 'एक छत्र सम्राट' माने जाते हैं। "प्रेमचंद की कहानियों की सर्वप्रमुख कलात्मक विशेषता चरित्र-चित्रण की सजीवता है। उनके पात्रों में आत्मिक सौंदर्य, भाव, व्यंजकता और सजीवता है। वे अलौकिक या असाधारण जीव नहीं।उनका कार्य व्यापार, अनुभूतियाँ और भावनाएँ रक्त-माँस से निर्मित जन-साधारण की भाँति है।"[14] आधुनिक भारतीय साहित्य में प्रेमचंद की कहानी कहने की नैसर्गिक प्रतिभा बेजोड़ है। प्रेमचंद की यथार्थवादी परम्परा का समर्थन कई कहानीकारों ने किया। प्रेमचंद की कहानियाँ गांधीवादी कहानीयों का प्रभाव अन्य समसामायिक कहानीकारों के अलावा अन्य कई कहानीकारों उनका प्रभाव पड़ा। प्रेमचंद की यथार्थवादी परम्परा का समर्थन कई कहानीकारों ने किया। प्रेमचंद की कहानियाँ गांधीवाद, मानवतावाद, आदर्शवाद से यथार्थवाद से जुड़ी रही। 1916 से 1936 तक आते-आते प्रेमचदं की कहानियों में प्रगतिशीलता दृष्टिगोचर हुई। उसका समर्थन अन्य साहित्यकारों ने किया।" जो हमें जीवन की सच्चाइयें, संघर्षों से परिचित कराए, बेचैनी पैदा कराए, सुलाए नहीं एक प्रकार से उन्होंने जन सामाजिक परिवर्तन और क्रांति से हितों की पूर्ति का आवाहन किया, लेनिन और मार्क्स के मत को स्थापित किया। "[15]

जिस कहानी परम्परा का आरंभ प्रेमचंद पूर्व युग में हुआ, वह कहानी प्रेमचंद काल में अपनी यौवनावस्था काल में आ चुकी थी। अनेक विषयों, समस्याओं एवं आदर्शों का चित्रण इस काल की कहानियों में हुआ। अतः समाज की कुरीतियाँ दलित, शोषित, निर्धन किसान, मजदूर वर्ग, सर्वहारा वर्ग प्रेमचंद युग की कहानियों

का पात्र बना 1930-36 इस कालखंड में प्रेमचंद की कहानियों का कथ्य तथा स्वर बदलता हुआ दिखाई देता है। "यहाँ इनका आधार मनोवैज्ञानिक विवेचन हो गया और ये जीवन के यथार्थ और स्वाभाविक चित्रण को अपना एकमात्र ध्येय समझने लगी। इनमें कल्पना कम, अनुभूतियों की मात्रा अधिक हो गई, बल्कि अनुभूतियाँ रचनाशील भावना से अनुरंजित होकर कहानी बनने लगी।"[16] जिसके कारण इस युग की कहानियाँ यथार्थ के नग्न रूप को देखती ही नहीं बल्कि उसके पहलु को भी पकड़ती है। इस दृष्टि से 'कफन', 'पूस की रात','नशा', 'शतरंज के खिलाड़ी' हिन्दी साहित्य की बेजोड़ कहानियाँ है।

1.1.1.3. प्रेमचंदोत्तर कहानी-

प्रेमचंद जी ने यथार्थ चित्रण को कहानियों का मूलाधार बनाया। परंतु वे उस यथार्थ को आदर्श में कोई एक सुनिश्चित, सुनियोजित संदेश न दे सके। उसका यह अधुरा कार्य बाद के कहानीकारों ने पूरा किया।

1.1.1.3.1. नये आयामः नई दिशा-

प्रेमचंद के मृत्यु के पश्चात् हिंदी कहानी विविध धाराओं में बँट गई। प्रसाद कहानीधारा और प्रेमचंद कहानीधारा में एक व्यष्टि प्रधान और दूसरी समष्टि प्रधान रही। प्रेमचंद के समान और उनके पश्चात की कहानी घटना, प्रधान, चरित्रप्रधान, वातावरण प्रधान तथा इतिहास प्रधान आदि रूपों में विकसित हुई दिखाई देती है।

१.१.१.३.१.१ सामाजिक कहानी -

सामाजिक कहानियॉ प्रमुखतः समाज से जुड़ी रही। प्रेमचंद के साथ गुलेरी, सुदर्शन तथा कौशिक ने सामाजिक प्रधान कहानियो का लेखन किया। इन सामाजिक प्रधान कहानियों ने धर्म, समाज, जातियता, छुआछुत, अंधविश्वास, अनमेल विवाह,

पर्दापध्दत, वेश्या समस्या तथा किसान मजदूर बेकारी जैसी अनेक समस्याओं का खुलकर चित्रण किया। समाज की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण उनकी कहानियो का केद्रबिंदू रहा। वास्तविकता का यथार्थ चित्रण उनकी कहानियो का केद्रबिंदू रहा। ''प्रेमचंद काल मे सामाजिक कहानियो मे अत्याचार, समाज की कुरीतियों को सुधारने का आग्रह, पीड़ित मानवता के प्रति करूणा का भाव है।''[१८]

प्रेमचंद सामाजिक प्रधान कहानियो का प्रभाव प्रेमचंदात्तर कहानीकारो पर पड़ा जिसके कारण आगेवाले कहानीकारों ने सामाजिकता को आगे जारी रखा। समाज का वर्तमान यथार्थ कहानी मे चित्रित हुआ। १९३६ मे मार्क्सवादी विचारवंत कार्लमार्क्स और फ्राईड जैसे विचारवंतों का प्रभाव सामाजिक कहानियों में चित्रित हुआ है। स्त्री-पुरुष के आये संबंधो के परिवर्तन को कहानी चित्रित करती है। मार्क्सवादी विचारो का प्रभाव यशपाल, भीष्म साहनी, भैरवप्रसाद गुप्त, रांगेय राघव, सांकृत्यायन, अमृतराय आदि कहानीकारों पर रहा। स्वतंत्रता के बाद भी यह विचारधारा अधिक प्रबल रही।

१.१.१.३.१.१मनोविश्लेषणात्मक कहानी -

यह कहानी घटना और कथावस्तु पर अधिक केंद्रित हुई। सामाजिक कहानियो ने समाज बाहय परिस्थितिओं का चित्रण किया परंतु ''मनोविश्लेषणात्मक कहानियो ने व्यक्ति के अंतर संघर्ष को प्रस्तुत किया।''[१९] इन कहानियों व्दारा व्यक्ति के मन की गहराइयों का चित्रण हुआ। समाज को नये दृष्टी में देखकर विद्रोह, अपराध, पाप पुण्य के आगे कहानीकारों ने प्रश्नचिन्ह लगा दिया। इन कहानीकारों में जैनेंन्द्र, इलाचंद्र जोशी प्रमुख रहे। जैनेद्र को मनोविश्लेषणात्मक कहानीओं का आरंभ माना जाता है। व्यक्ति के मन का सूक्ष्म अध्ययन कर उनके आत्मपीड़न को केंद्र में रखा। 'एक रात', 'मित्र विदयाधर,' 'पत्नी' यह कहानियॉं मनोविश्लेषणात्मक कहानियॉं है। व्यक्ति की दबी वासना, कहानियों में मनोविज्ञान व्दारा व्यक्त किया गया।

ऐतिहासिक कहानी - प्रेमचंद की 'वज्रपात' जयशंकर प्रसाद की 'सुंदर बन पड़ी है' सुदर्शन की 'न्यायमंत्री' कहानियॉ ऐतिहासिक विषय पर लिखी गइा। प्रेमचंद के बाद कहानियो ने ऐतिहासिक विषय का सहजता से स्वीकार कर लिया। रांगेय राघव, वृंन्दावनलाल वर्मा तथा आ. चतुरसेन इस प्रकार के कहानीकार रहे है। इस कहानी का रोत का भारत का प्राचीन का गाण करना मुख्य उद्येश्य रहा। जिससे कहानियों में राष्ट्रप्रेम झलकता है। वृंदावनलाल वर्मा की 'तातरवीर' 'एक वीर राजपूत', कहानियॉ महत्वपूर्ण है।

साम्यवादी कहानी -

साम्यवादी कहानी पर मार्क्सवादी कार्लमार्क्स तथा ऐगिल्स के विचारो का प्रभाव दिखाई देता है। साम्यवाद ॲग्रेजी के 'कम्युनिज्म' का पर्याय है। इस प्रकार की कहानियों का प्रारंभ प्रमुखतः प्रेमचंद की अंतिम कहानी व्दारा माना जाता है। साम्यवादी कहानी की विचारधारा सामाजिक यथार्थवाद में विश्वास रखती है। कार्लमार्क्स, ऐजिल्स के सिध्दातों का प्रभाव होने के कारण क्रांति का माध्यम बनाना चाहती है। समाज मे जो निम्न वर्ग है उसके प्रति सहानुभुति रखते हुए रुढी. और शोषण का विरोध कहानियों में हुआ प्रमुखतः यशपाल के कहानी लेखन से इस प्रकार की कहानियों का उदय हुआ यह कहानियॉ मानवतावाद पर विश्वास रखती है। सामाजिक विषमता, वर्गसंघर्ष, रुढ़ी का विरोध और शोषण का विरोध कहानियों का मुख्य स्वर रहा।

साम्यवादी कहानिकारों ने केवल कहानी लेखन नहीं किया बल्कि समस्याओं को उत्तरित भी करते है। पिंजड़े की उड़ान, फूलों का कुर्ता, सबकी इज्जत, भस्मावत चिंगारी इस विचारधारा को लेकर लिखी गई महत्वपूर्ण कहानीयॉ है। इस कहानी धारा के अलावा जासुसी और तिलस्मी कहानियॉ भी लिखी गई। श्रीराम शर्मा ने जंगल, शिकार तथा साहस आदि विषयों पर कहानियॉ लिखी। देवकीनंदन खत्री भी महत्वपूर्ण रहे।

वास्तव मे कहानियों के विषय अलग अलग रहे लेकिन उनका विभाजन प्रवृतित्माक आधारपर किया गया है। १९५० के बाद विषय की दृष्टि से इन कहानियों ने बाद की कहानियों पर अपनी छाप छोड़ी।

स्वातंत्र्योत्तर कहानी -

1.नई कहानी -

स्वातंत्रता के बाद हर क्षेत्र में परिवर्तन आया। नई कहानी स्वतंत्रता के बाद आयी। नई पीढ़ी के कहानीकारों का आरंभिक दृष्टीकोन समाजवादी था। स्वतंत्रता के बाद कहानी को नई कहानी नाम से पुकारा वास्तव मे यह नाम पूर्ववर्ती कहानी से अलग कर देता है। दुष्यंत कुमार ने 'नई कहानी' परंपरा और शीर्षक [२०] निबंध में इस नयेपन पर विचार किया। ''आज की हिंदी कहानी''[२१] लेख मे डॉ. नामवर सिंह ने नामकरण की आवश्यकता पर उठाया।१९५० के कालखंड मे कहानी 'नयी कहानी' नाम से परिचित हो गई। डॉ. सुरेश बाबर का कथन है कि ''आजादी मिलने के बाद समाज मे तीव्र गति से परिवर्तन आया नयी कहानी ने इस परिवेश का चित्रण किया।'' आजादी के बाद सामाजिक ढाँचे मे परिवर्तन आया। मूल्य विघटन की स्थिति निर्मित हुई। देश विभाजन, मोहभंग का सामना करनेवाला समाज यांत्रिकीकरण के कारण अनेक जीवन विसंगतियों का सामना करने के लिए विवश हुआ।''[२२]

नई कहानी मनुष्य को केद्र में रखकर उसका प्रामाणिक चित्रण समाज की विसंगतियों से उसे परिचित करवाया। नई कहानी का यह ''नया मनुष्य नंगा है। उसके चतुर्दिक उदात्तता, आदर्श, महिमा आदि का युगों से जो जाल बुना जाता रहा है उसे आधुनिक विज्ञान ने फाडकर अलग कर दिया है।''[२३] नई कहानी नये संदर्भ, नये दृष्टिकोन तथा नये यथार्थ के चित्रण के लिए नये शिल्प का खोज करती है। अनुभूति की प्रामाणिकता तथा भोगा हुआ यथार्थ से पाठक परिचित हो जाता है। नयी कहानी ने

''आरोपित मूल्यों के प्रति उपेक्षा दिखाते हुए व्यक्ति के परिवेशीय जीवन की यथार्थता पर बल दिया। नयी कहानी का लेखक तटस्थता और निस्संगता के साथ अपने पात्रों को उनके यथार्थ संदर्भों में उपस्थित करता है।''[२४] नई कहानी का प्रारंभ ग्राम कथाओं व्दारा हुआ। आमआदमी की प्रयोग की प्रक्रिया से गुजर रही है। ये सारे प्रयोग जीवन-मूल्यों की तलाश के लिए है।''[२५]

नई कहानी पुराने ढॉचे को तोड़कर जीवन की सच्चाई ग्रहण करती है। ''उसकी औरत औरत है, वह झूठी या वेश्या नहीं है। इसलिए नयी कहानी खल-नायिकाओ से शून्य है जिसकी पहले हर कदम पर जरुरत पड़ती थी।''[२६] नई कहानी ने हिंदी कहानी को एक नइा दिशा प्रदान की। वह सीधे जीवन के यथाथा से जुड़ी रही। ''परिवेश के प्रति ईमानदार, जागरुकता और परिवेश की प्रामाणिक अभिव्यक्ति नई कहानी की उपलब्धि है।''[२७] भीष्म साहनी, कमलेश्वर,मन्नू भंडारी, अमरकांत, फणीश्वरनाथ रेणू, मोहन राकेश, उषा प्रियवंदा ज्ञानरंजन आदि नई कहानी के प्रतिनिधी हस्ताक्षर के रूप में उनका नाम लिया जाता है।

१९५० से १९६० तक का कालखंड नई कहानी का कालखंड माना जाता है। उसके बाद अनेक कहानी आंदोलन शुरु हो गए।

2.साठोत्तरी कहानी -

१९६० के बाद की कहानियाँ साठोत्तरी कहानियों के रुप में पहचानी जाने लगी। इस कालखंड में 'अकहानी', सचेतन कहानी 'सहज कहानी' आदि भागों में कहानी बँट गई। साठोत्तरीकहानी लेखक मुख्य रुप से नई कहानी' का विरोध कर रहे थे। वे स्वयंम को अलग सिध्द करने का प्रयास कर रहे थे। डॉ. सुरेश बाबर का कथन है कि, ''युगीन संक्रमण बोध की इन कहानियों मे जीवन के उन नये पहलुओं को व्यक्त करने की क्षमता है जो वर्तमान जीवन से सम्बध्द है।''[२८]

अकहानी का अर्थ है कहानी न हो। अ-कहानिकारों का दावा है कि वे सारी रुढ़ विशेषताओं का त्याग करते है और सभी प्राचीन रुढ़ियों से निमुक्त है। इसके निमुक्त के पीछे ध्वनि है जो अकहानी। ''अकहानी कहानी की धारणागत प्रतीति से आलग एक अस्थापित कथा धारा है। जो कहानी के सभी वर्गीकरणों, मूल्यांकन, आधारों और पूर्व समीक्षाओं को अस्वीकार करती है।''[२९] अकहानी भावुकता संवेदना, विचारो-तेजना को अस्वीकार करती है और व्यक्तित्व की खोज करती है।

सचेतन कहानी ने संकीर्ण विचारधारा का विरोध किया। तो दूसरी ओर नई कहानी का टुटकर विरोध भी किया। सचेतन कहानी सामाजिक योगक्षेम की विधा है। ''सचेतन कहानी आधुनिक जीवन बोध और मनुष्य को उसकी अनुभूतियों के साथ परिवेश सापेक्ष स्वीकार करती है।''[३०] सचेतन कहानी में समाज सापेक्षता का महत्व है। महीपसिंह की 'कील' हिमांशु जोशी की आदमी जमाने का, धर्मेन्द्र गुप्त की 'वृक्षनायक' सुनिता जैन की 'परदेस' आदि सचेतन कहानी के रुप चर्चित कहानियाँ है।

सहज कहानी को अमृतराय ने प्रस्तुत किया। कहानी आंदोलन के कारण उन्हें ऐसा लगा कि इन आंदोलनों के बीच सहज कहानी कही खो गइ है। सहज कहानी का मूल उद्येश सहजता है। उनके अनुसार ''सहज कहानी से हमारा अभिप्राय इनमें से किसी एक या दो या दस से नहीं बल्कि इन सबसे और प्राय उस मूल कथा रस से है, जो कहानी की अपनी खास चीज है और जो बहुत सी 'नई कही जानेवाली कहानियों में एक सिरे से नहीं मिलती।''[३२] सहज कहानी ने सेक्स का दुरुपयोग और आधुनिकता का प्रखर विरोध किया। अमृतराय के सिवाय अन्य कहानीकार ने सहज कहानी की चर्चा नहीं की। अन्य रचनाकार उसमें शामिल हुये। सहज कहानी अकेले आदमी की कहानी ही बनकर रह गई।

3. समान्तर कहानी -

कमलेश्वर, दामोधर सदर, कामता नाथ आशिष सिन्हा, रमेश उपाध्याय, इब्राहीम शरीफ ने आई आई. टी स्थित हॉस्टेल, बंबई में ११ जून १९७१ में 'आम आदमी' के प्रश्न को उठाया। आम आदमी की तकलीफों की चर्चा की गइ। उसके बाद आखिल भारतीय समान्तर गोष्टीयों का आयोजन हुआ और १९७२ में समान्तर पुस्तक का प्रकाशन हुआ। 'सारिका' पत्रिका में दस समान्तर विशेषांक निकाले गये। समान्तर कहानी आंदोलन का मुख्य हेतू आमआदमी है, जो अपमान से त्रस्त है। अनुभव सिध्द यथार्थ का चित्रण कहानियों में होने लगा। समान्तर कहानीकार दावा करते है कि, ''संपूर्ण आदमी की संपूणा तस्वीर कहानियों में दिखती है।''[३२] कमलेश्वर सारिका पत्रिका से जुड़े रहने के कारण समान्तर कहानी एक आंदोलन के रुप में चर्चित रहा लेकिन 'सारिका'पत्रिका से हट जाने के बाद समान्तर कहानी का जोश धीरे-धीरे कम होता गया। इसके बाद सक्रिय कहानी के १९७९ राकेश वत्स प्रस्तोत रहे।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कहानी की जो धारा इंदूमति से शुरु हूई थी आज महासागर का रुप धारण कर चुकी है। इस धारा ने अनेक प्रकार के थपेंडों से अपना प्रवाह निश्चित किया है। कभी सामाजिक, कभी राजकिय, कभी आर्थिक, कभी सांस्कृतिक स्थितियों का चित्रण करते करते वह यथार्थवादी अतिनग्न यथाथावादी तक पहूँच गयी। आज वह अपना प्रवाह निश्चित किये हुए चल रही है।

१.२ हिंदी कहानी का अर्थ -

इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानी अर्थ, स्वरुप, परिभाषा, शैली एवं संवेदना आदि रुपों में बदली हूई दिखाई देती है। कथा कहने और सुनने की प्रथा मानव का सहजात स्वभाव और आदिम प्रथा है। कहानीव्दारा हम कम शब्दों से अधिक बातों को स्पष्ट कर देते है। आदि काल से मानव अपने विचित्र प्रकार के अनुभवों, प्रकृति संबंधी कल्पित

अनुभवों एवं अनुभुतियों को जीवन में सहज लक्ष्य और प्राकृतिक वस्तुओं, ध्वनियों और स्थानों से संबंध रखनेवाली बातों को मनोरंजन और अनेक प्रकार की जिज्ञासाओं के परामर्श कहा-सुनना आ रहा है ।

१.२.१ इस संदर्भ में एक विशेष प्रकार का स्वरुप एवं पर्यावरण ग्रहण किया जो आगे चलकर कहानी के नाम से अभिहित किया जाने लगा। सामान्यत कहानी शब्द की उत्पत्ति 'कह नानी' इन दो शब्दों से मानी जानी चाहिए। युवक और प्रौढ़ भी कहानी कहने-सुनते आ रहे है, पर वृध्दों के मुख से सुकुमार, बालकिशोर, चिरंतनकाल से आश्चर्यजनक, कुतुहल प्रधान देवी-परियों की कथाएँ सुनते आ रहे हैं ।

इक्कीसवीं सदी में कहानी का अर्थ पूर्णतः बदल गया। वृध्दों की जगह ने ली है। प्रौढ़ वृध्द नाम मात्र रहे गये । कहानी के माध्यम से वृध्दों की पीड़ा, दुख को चित्रित किया जाता है।

१.२.२ इक्कीसवीं सदी में कहानी का अर्थ एकदमसा बदल गया। कहानी कोई बात कह इस आग्रहपर्वूक वाक्य में कह नानी में से भाषा विज्ञान के ''लोप और आगम'' के सिध्दांत के अनुसार नानी शब्द के पहले 'न' का लोप हो गया और बाकी रह गया - कहानी इसका अथा खोजने के लिए हमारे पास कोई विश्वसनीय स्त्रोत नहीं है।

१.३ हिंदी कहानी की परिभाषा -

कहानी विधा पुरातन है। उसकी परिभाषा आज भी उतनी अपूर्ण है, जितनी प्राचीन काल में। वह साहित्य में एक कला के रूप विकसित हो चुका है। साहित्य के अन्य विधाओं की अपेक्षा कहानी विधा ऐसी जो लोकप्रियता के सबसे ऊँचे शिखर पर विराजमान है। आज आधुनिक युग में कहानी उपन्यास की छोटी बहन होती हुई भी अपने कलात्मक और गुणात्मकता के व्दारा साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी है। कम समय में अधिक रोचक बाते यह उसकी विशेषता होने के कारण वह पाठक के मनपटल पर अपनी

अमीट छाप छोड़ जाती है। कहानी युगानुरुप सकारात्मक मूल्यों का चित्रण करती है। उसमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि का लेखा-जोखा रहता है।

कहानी का विकास कब, कहाॅ और किस रूप में हुआ यह बताना आज कठिन है लेकिन उसका अस्तित्व पुराना है। आज भी कहानी उतनी लोकप्रिय है,जितनी पुरातन काल में थी। साहित्य के अन्य विधाओं पर विचार किया जाय तो वह अन्य विधाओं की तरह ही देश काल वातावरण नई परिस्थिति परिवर्तन से विकसित होती रही है। प्राचीन काल की अपेक्षा कहानी आज जिस रूप में विद्यमान है, दोंनों पर्याप्त विभिन्नता है। आज कहानी ने विकसित रुप धारण कर लिया है। धर्म के नाम पर जाति के नाम पर तथा समाज की विभिन्न परिस्थितियों को लेकर आज कहानी की रचना हो रही है।

आख्यायिका, लघुकथा तथा गल्प सभी कहानी नाम से समान्तर है। इसमें कोई भेद नहीं है, दोनों का रुप भी एक ही है। आज की कहानी हमें पुरातन कथा की अपेक्षा विकसित धारण करती हुइा दिखाई दे रही है। ऐसी विकसित कहानी को परिभाषा करना या उसे व्याख्या के रूप या किसी निश्चित शब्दों में बाँध लेना अत्यंत कठीन है क्योंकि वह विकासशील है और कहानी के अतंर्गत ऐसे अनेक तत्व है, जिसे हम शब्दों में रूपाहित नहीं कर सकते। इसलिए कहानी की एक सुनिश्चित परिभाषा करना कठीन है। कुछ आलोचक तथा विव्दानों ने इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है।

अमेरीका के सुप्रसिध्द गल्पकार एडगर एलिन पो. ने कहानी को परिभाषित करते हुए कहा है कि, ''छोटी कहानी एक ऐसा आख्यान है एक बैठक में पढ़ा जा सके और पाठक पर एक ही प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए लिखा गया हो। उसमें ऐसी बातों को त्याग दिया जाता है जो उसकी प्रभावोत्पादकता में बाधक हो। वह स्वतः पूर्ण होती है।''[३३] हिंदी के सुप्रसिध्द कथाकार प्रेमचंद ने कहानी को लेकर इस प्रकार कहा है - ''गल्प ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही

लेखक का उद्येश रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली उसका कथा-विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करता है। उपन्यास की भॉति उसमें मानव जीवन का संपूर्ण तथा बृहद रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जा सकता, न उसमें उपन्यास की भॉति सभी रसों का संमिश्रण होता है। वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भॉति-भॉति के फुल, बेल-बूटे सजे हुए है, बल्कि एक ऐसा गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने सन्मुख रुप में दृष्टिगोचर होता है।''[३४] अंत कहानी लघु आख्यायिका होने के कारण उसमें जीवन के सभी अंगो को उद्घाटित नहीं किया जा सकता। उसमें वह रमणीयता नहीं है, जो समाज के विभिन्न रूपो में फैली हुई हो। लेकिन पाठकों के मन पटल गहरा असर कहानी व्दारा होता है क्योंकि कम समय में कम शब्दों में उसे अधिक से अधिक जानकारी भी मिल जाती है।

वैसे कहानी को अनेक परिभाषाओं में उदभुत व्यक्त किया जा सकता है, उसकी निश्चित कोई परिभाषा देना संभव नहीं है। क्योंकि वह अपने सतत विकसित रूप के गतिकाव्य को अधिक महत्व रहा है, उसीप्रकार आज अतिव्यस्तता इस समय में कहानी अधिक से अधिक लोकप्रिय विधा रही है। गीत जिस प्रकार मनुष्य को आनंद की अनुभुति देते है, उसी प्रकार भी कहानी मनुष्य जीवन के सभी प्रश्नों को उजागर करती है। गीतिकाव्य मे जिस प्रकार पाठक की वैयक्तिक अभिव्यक्ति उजागर होती है, उसीप्रकार कहानी में गीतिकाव्य के समान पाठक वैयक्तिक अभिव्यक्ति की प्रधानता रही है, गीत की तरह की तन्मयता कहानी में होने से पाठक के मन को सहजता से छू जाती है। ''गीति काव्य का क्षेत्र भाव जगत से संबंधित है, जब कि कहानी मे भावाभिव्यक्ति के साथ घटनाओं का चित्रण किया जाता है। गीति काव्य में भव्य-प्रकाशन स्वतंत्र रुप से होता है, किन्तु कहानी में आलम्बन व्दारा गीति काव्य की अपेक्षा कहानी में घटना और तथ्य निरुपन की प्रधानता रहती है।''[३५] वास्तव में गीति काव्य और कहानी में समानता दिखाई देती है। चरित्र चित्रण के माध्यम से कहानी में वैयक्तिकता की प्रधानता दिखाई देती है।

पात्र, घटना तथा वातावरण से कहानी व्दारा प्रभावात्मक ढंग से उद्देश की पूर्ति की जाती है।

१.४ कहानी का स्वरुप -

कहानी के स्वरुप पर विचार किया जाय तो वह स्वरुप परिवर्तित है। कहानी में तथ्यों के माध्यम से या घटनाओं के माध्यम से चरित्र पर प्रकाश डालनेवाला कौतुहलपूर्ण वर्णन है। कहानी में घटना के माध्यम से प्रभाव उत्पन्न कर वह व्यक्ति केंद्रित बन जाती है। कहानी में कहानीकार छोटी से छोटी घटना लेकर तथा कम पात्रों के साहयता से वातावरण तथा दृश्य की सृष्टि करता है। घटना प्रसंग, वातावरण से वह पाठक के मन पर प्रभाव डालती है। कहानी कथात्मक गदय है, जिसमें मानवीय संवेदना का अंकन समग्ररुप में किया जाता है। वह एक लघु गदय प्रकार है, जिसमें जीवन के किसी एक स्थिति का सजीव चित्रण रहता है।

वास्तव में कहानी वह कला है जीवन के समस्त समस्या को हमारे सामने प्रकाशमान करके पाठक के मन मस्तिष्क पर गहरी असर करती है। सजीव व्यक्तियों के माध्यम से तथा सरल भाषा शैली व्दारा हमारे भाव, संवेदना को अभिव्यक्त करना उसका काम होता है। हिंदी कहानी स्वरुप का विवेचन किया जाय तो वह निम्नलिखित भागों में विभाजित हो सकती है।

१.४.१ घटना प्रधान कहानी

१.४.२ चरित्र प्रधान कहानी

१.४.३ वर्णन प्रधान कहानी

१.४.४ भाव प्रधान कहानी

१.४.५ घटना प्रधान कहानी

१.४.१ घटना प्रधान कहानी -

कहानी के नाम से पता चलता है कि इसी प्रकार की कहानियों में घटना प्रसंग को अधिक से अधिक महत्व दिया जाता है। कहानी में चरित्र चित्रण पर ध्यान नही दिया जाता उसमें घटना का विवरण अधिक होता है। इन कहनियों का मुख्य उद्येश कौतुहल तथा औत्सुक्य उत्पन्न करना होता है। इस प्रकार जासूसी कहानियाँ आती है। वही कहानियॉ श्रेष्ठ मानी जाती है, जिस कहानी में बाहय घटना की अपेक्षा आंतरिक घटनाओं पर बल दिया जाता है। इक्कीसवीं सदी की कहानियों के बारे में विचार किया जाए तो ऐसी जासूसी कहानियॉ कम लिखी गई उन कहानियों में समाज के ज्वलंत प्रश्न उठाकर कहानी की रचना की है।

१.४.२ चरित्र प्रधान कहानी -

समस्या मानव जीवन का विस्तार से चित्रण करना इन कहानियों का मुख्य उद्येश रहता है। इस प्रकार की कहानियाँ प्रमुखतः घटना प्रधान कहानियों से भी अधिक श्रेष्ठ मानी जाती है। इन कहानियों में मानव जीवन के समस्त स्वरूप में से किसी एक स्वरुप का विवेचन किया जाता है। इक्कीसवी सदी के कहानीकारों ने इसप्रकार की अनेक कहानियों का लेखन किया। उसमें नासिरा शर्मा की 'आबे तोबा' 'पुराना कानुन', 'सूर्यबाला की', 'थाली भर चाँद', 'यामिनी कथा', 'सुबह के इंतजार तक' सुनिता जैन की, 'निदान परदेश आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण है। इन कहानियों में चरित्र चित्रण के माध्यम से मानवता की स्थापना करने की कोशिश की गई है।

१.४.३ वर्णन प्रधान कहानी-

इस प्रकार की कहानियों में किसी देशकाल, स्थान, परिस्थिति, वातावरण का चित्रण होता है। इन कहानियों में वर्णन की प्रधानता होती है। पात्रों के रंगीन वर्णन व्दारा कहानियों की शुरुवात की जाती है। वर्णन प्रधान कहानियों में चरित्र चित्रण पर अधिक

ध्यान नहीं दिया जाता। "चरित्र चित्रण घटनाओं के स्वाभाविक विकास और कथानक के प्रवाह की ओर ऐसी कहानियों में लेखक का ध्यान नहीं जाता।"[३६] अंतः इन कहानियों वर्णन की प्रधानता होने के कारण घटनाओं का स्वाभाविक विकास और चरित्र चित्रण को कहानीकार न्याय नहीं दे पाता। जिसके कारण उस प्रकार की कहानियाँ कथा तत्व की दृष्टि से श्रेष्ठ नहीं मानी जाती।

१.४.४ भाव प्रधान कहानी-

दार्शनिक विचारों वाले पाठक इसप्रकार की कहानियों को अधिक पसंद करते है। साधारण पाठक उसके प्रति आकृष्ट नहीं हो पाता। इस प्रकार की कहानियॉ मनोभावों का चित्रण करती है। मानसिक चढाव उतार तथा विभिन्न प्रवृत्तियों के संघर्ष का वर्णन अधिक तर इन कहानियों में होता है। इस में कहानी का आरंभ और अंत भी महत्वपूण। होता है। इस प्रकार की कहानियों से कहानीकार के बहुज्ञता का परिचर हो जाता है। भाव को लेकर कहानी का ढाँचा तैयार किया जाता है, जो पाठक के इर्द-गिर्द घुमता हो।

कहानी कहने की मुख्य रुप से ऐतिहासिक या वर्णनात्मक, आत्मकथन प्रणाली, कथोपकथन प्रणाली, पत्रात्मक प्रणाली है। ऐतिहासिक प्रणाली में लेखक एक द्रष्टा की भॉति संपूर्ण कहानी को कहता है। आत्मकथन प्रणाली में एक ही पात्र संपूर्ण कहानी को कहता है। ऐसी कहानियों में यथार्थता की प्रधानता होती है। आजकल हिंदी साहित्य में इस प्रकार की अनेक कहानियॉ लिखी जा रही है। इक्कीसवीं सदी के महिला कहानीकारों ने भी आत्मकथात्मक कहानियों का लेखन किया है। कथोपकथन प्रणाली के अंगर्तत कथोपकथन की सरसता पर ध्यान दिया जाता है। पात्रों का चारित्रिक विकास और घटनाओं कृत्रिम विकास के लिए यह प्रणाली लाभदायक है। पत्रात्मक प्रणाली में कथा का विकास पत्रों के उत्तर-प्रत्युत्तर व्दारा होता है। इस प्रकार की प्रणाली में पात्रों के विकास की संभावना नहीं होती।

१.५ कहानी के तत्व -

कहानियों का लेखन प्रमुख तत्वों के आधार पर किया जाता है। कहानी में जीवन के संवेदनात्मक और बोधात्मक क्षण वैयक्तिक अनुभुति अंग होते हुए भी सार्वजनिक बन जाते है। प्रत्येक क्षण तथा घटना कहानी नहीं हुआ करती बल्कि जिसमें मानवीयता के दर्शन हुआ करते है ऐसे ही क्षण तथा घटना कहानी बन पाती है। ऐसे क्षणों की और घटनाओं का चुनाव करते समय कहानीकार को विशेष सतका रहना पड़ता है। उसे कहानी का ढाँचा तैयार करने के लिए पात्रों की और परिवेश की आवश्यकता पड़ती है। संवाद के माध्यम से कहानीकार पाठकों को आकर्षित कर लेता है। भाषा तथा शैली की अभिव्यक्ति महत्व पूर्ण होती है। इन सब योजनाओं का समग्र प्रभाव बिम्ब बनता है। कहानी के अन्तर बाहय स्वरूप को रुपाहित करनेवाले तथ्य को वास्तव में तत्व कहते है। इन्हीं तत्वों के आधार पर कहानी का पूरा ढॉचा खडा होता है। इन तत्वों के बिना कहानी लिखना असंभव है। कहानी और उपन्यास मे समान तत्व कार्य करते है। आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्य आलोचक के मतानुसार इन तत्वों की संख्या ६ मानी गयी है। पाश्चात्य आलोचक व्दारा वर्णित इन विभिन्न तत्वों का ही आधार लेंगे।

१.५.१ कथावस्तु -

कथावस्तु कहानी का प्राणतत्व है। कहानी का निर्माण कथा वस्तु के बिना संभव नही है, अपितु कथावस्तु ही ऐसा माध्यम है, जो कहानी को निर्माण करती है। अंतः कहानी में सभी तत्व विद्यमान है, जैसे चरित्र चित्रण, भाषा शैली, शिल्प लेकिन कथावस्तु नहीं है, तो वह कहानी कहानी नहीं होती। अपितु कहानी रचना के लिए कथावस्तु का होना अनिवार्य है। ''वस्तुतः कहानी के शरीर में कथावस्तु हड्डियों के सदृश्य है। यदि भाषा, भाव, चरित्र चित्रण या शैली इत्यादी सब तत्व कहानी में विद्यमान हों और कथा वस्तु (Plot) विद्यमान न हो तो वह कहानी अस्थि-रहित शरीर के सदृश्य होगी।''[३७] स्पष्ट

है कि शरीर में प्राण नहीं है, तो वह शरीर निर्जीव मृत समझा जाता है, उसी प्रकार कहानी में कथा वस्तु ही नहीं है, तो वह कहानी-कहानी नहीं कहलायेगी।

कहानी मे कथावस्तु क्रमिक विकास के रुप में और वैज्ञानिक ढंग से उसकी रचना होनी चाहिए। पाठक को कहानी पढ़ते समय कथावस्तु का ज्ञान होना चाहिए। कथावस्तु के क्रमिक विकास के कारण पाठक कथा का रसास्वाद लेता है। प्रत्येक घटना के आगे उसके पूर्व कारणों का विवेचन स्पष्ट रूप से देता चाहिए। कथावस्तु लेखक के मनतव्य की अभिव्यक्ति करता है। कथावस्तु के अनुसार पात्रों का विवरण तथा आगमन सुनिश्चिती किया जाता है।

कथावस्तु के लिए घटनाओं तथा विवरणों का सुनिश्चित आवश्यक है। ''कहानी कथन में क्षिप्रता, गतिशीलता, रसात्मकता और विस्तार पर एकान्वित अपरिहाया तो है ही, उसमें विभिन्न घटनाओं पर निर्णय हो, यह भी अनिवाया है। कथावस्तु जीवित या पुष्पित-पल्लवित करने के लिए व्यक्तियो पात्रो और जीवंत परिवेश वातावरण की योजना की जाती है। उसका रुपायन भाषा व्दारा होता है। उसी को कथ्य नामसे अभिहित किया जाता है। कथावस्तु में घटनाओं की प्रमुखता होती है। कथावस्तु के मुख्य चार भागों विवरण निम्मलिखित है।

१ प्रस्तावना भाग

२ मुख्यांश

३ क्लाइमेक्स

४ पृष्ठ भाग

१.५.१.१ प्रस्तावना :- प्रस्तावना कथावस्तु महत्वपुर्ण भाग माना जाता है। प्रस्तावना मे कथावस्तु निर्मित पात्रो को संक्षेप तथा वैयक्तिक परिचय दिया जाता है। उससे

पा.क.पात्रो के साथ समरस हो जाता है । चारित्रिक विशेषतओं के साथ साथ पात्र किस घटनाओंसे जुडे हुए है अथवा कौन-सी घटना के साथ उसका संबंध यह प्रस्तावनामे स्पष्ट कर दिया जाता है । वार्तालाप, संकेत अथवा विवरण के माध्यम से वर्णन चरित्र चित्रण का परिचय किया जाता है । प्रस्तावना पढ ने से पता चलता है कि कहानी लिखने के पीछे कहानीकार का क्या उददेश रहा होगा ।

१.५.१.२. मुख्यांश :- यह कहानी का मुख्य भाग है । कथा का प्रमुख भाग तथा मुख्य कहानी प्रारंभ होते-होते जब क्लाईमेक्स तक आते-आते चरम सिमा तक पहॅुच जाती है । प्रस्तावना मे परिचय दिया जाता है लेकिन मुख्यांश में कहानी की कथा मुख्य रहती है । वह प्रारंभ से अंत तक मुख्यांश कहानी मे घटनाओका क्रमिक विकास करते-करते ऐसी स्थिति पर पहॅुच जाता है, जहाँ कहानी उग्ररुप धारण करती है । संघर्ष की स्थिति को उद्‌घाटित करते समय पात्रो के अनुकुल अथवा परिस्थिती के अनुकुल उसका विकास होना चाहिए । मुख्यांश अगर क्रमिक विकास नही होता है तो पा.क. मे अविश्वास का भाव निर्माण हो जाता है ।

१.५.१.३. क्लाइमेक्स - प्रस्तावना मे दिया:- हुआ परिचय जब मुख्य रुप से प्रवाह बन जाता है तब वह घटना, प्रसंग वातावरण क्लाइमेक्स तक आ जाता है । जिस परिस्थिति, घटना, और संघषा का प्रारंभ प्रस्तावना से होकर मुख्यांश मे वृध्दि को प्राप्त करता है वह क्लाइमेक्स मे आकार चरम सीमा को प्राप्त कर लेता है । ३९ कहानी के जितने भी तत्व है कथावस्तु, पात्र, शैली, घटना प्रसंग, चरित्र चित्रण, शैली, भाषा आदि सभी तत्व क्लाइमेक्स के लिए महत्वपुर्ण है । इनके बिना क्लाइमेक्स संभव नही है । कहानी की घटना प्रारंभ से अंत तक इसी क्लाइमेक्स का चमत्कारिक ढंग से प्रारंम्भ होता है ।

१.५.१.४ पृष्ठभाग :-

यहॉ कहानी का अंत होता है । कहानी में जो घटना है, वातावरण तथा चरित्र है, इन सब का विकास यहॉ पूर्ण हो जाता है । यहॉ कहानी का परिणाम निहित होता है । पाठक के रसास्वाद की अनुभूति यहॉ समझ में आ जाती है । पृष्ठभाग मे ही संपूर्ण कथा रहस्य का उदघाटन कर देना आवश्यक होता है । आज कल कुछ कहानियों का अंत क्लाईमेक्स तक पहुँचते ही समाप्त हो जाता है।

कथावस्तु में अनावश्यक घटना तथा अनावश्यक पात्र, अस्वाभाविक बातों का समावेश नहीं होना चाहिए । जीवन के कहानीकार का उस घटना या प्रसंग के प्रति सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का होना आवश्यक है । सूक्ष्म निरीक्षण का अभाव है तो कहानी में निरसता आ जाती है । नगन्य घटना भी निरीक्षण शक्ति से उत्कृष्ट कथा वस्तु का स्थान ले सकती है । कथावस्तु में सुसूत्रता की योजना ही उसे सफल बनाने में साहायक होती है ।

१.५.२ चरित्र चित्रण :-

कथानक के साथ कुछ योजित घटनाओं के साथ कुछ व्यक्तियों का संबंध रहता है, उन्हीं व्यक्तियों को पात्र कहा जाता है । पात्र से ही कथानक आगे बढ़ता है और पाठक उन पात्रों के माध्यम से रसास्वाद का आनंद उठाता है । कभी-कभी पाठक पात्र में एकरुप भी हो जाता है । कथानक से अधिक महत्व आज पात्रों को मिल रहा है । कहानी में संपूर्ण चरित्र पर नहीं डाला जाता बल्कि कुछ महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डालकर चरित्रों को प्रकाशित किया जाता है ।

कहानी में किसी घटना या प्रसंग तथा वातावरण परिस्थिति के अनुरुप चरित्र का विकास संभव है । ''कहानीकार को कहानी में चरित्र सृजन का अवकाश कम ही रहता है, पर घटना के विस्तार, वस्तु के घात प्रतिघात व्दारा चरित्र को सॅवारता है-रचनाकार ।''[४०]

कहानियों में चरित्रों का संघर्ष ही कथा बन जाती है और यह संघर्ष चरित्र को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी लाकर खड़ा करता है । प्रेमचंद के 'कफन' (घीसू और माधव)' पूस की रात' (हलकू) शराबी (मधुआ) जैसे चरित्रों ने कथावस्तु को सशक्त बनाया ।

आज कहानी वही श्रेष्ठ समझी जाती है, जिसमें लेखक चरित्रों का विकास करता हुआ किसी परिस्थिति या घटना का यथार्थ चित्रण मनोवैज्ञानिक सत्य की व्याख्या से करे । सफलता पूर्वक चरित्र चित्रण वही कर सकता है, जिसे मनोविज्ञान का ज्ञान हो । बिना मनोविज्ञान के शिवाय चरित्र चित्रण अधुरा है, उसे न्याय नही मिल पाता । कहानीकार पात्र के आन्तरिक वृत्तियों में प्रविष्ट होने के कारण उनका कथावस्तु के माध्यम से सूक्ष्म चित्रण कर सकता है । लेखक कल्पना के आधार पर पात्रों की निर्मिती करता है, लेकिन वह कल्पना में ही रहे या लेखक के इर्द-गिर्द घुमे रहे तो वह पात्र सत्य घटनाओं को नही न्याय दे सकता है और न ही उनके चरित्र का विकास हो पाता है । इसका परिणाम यह होता कि पाठक उनके प्रति आकृष्ट नही हो पाता । ''वस्तुतः पात्रों के स्वाभाविक और सजीव चित्रण के लिए लेखक को अपना व्यक्तित्व पात्रों पर आरोपित नहीं करना चाहिए । उसे अपने व्यक्तित्व को उनसे स्वार्थ पृथक ही रखना चाहिए । चारित्रिक विकास को उपस्थित करने के लिए पात्र वैयक्तिक, मानसिक और सामाजिक परिस्थितियों का विवरण भी पर्याप्त सहायक हो सकता है ।''[४१] अंतः लेखक को यह ध्यान रखना चाहिए कि पात्रों के विकास में स्वयं निजी बातों को महत्व नहीं देना चाहिए । उसे पूर्णतः स्वतंत्रता देनी चाहिए ताकि वह कथावस्तु के साथ आगे बढे और परिस्थितियों का विवरण दे सके ।

चरित्र चित्रण प्रमुख चार प्रकार है । जो निम्नलिखित है -

१.५.२.१ वर्णन व्दारा चरित्र चित्रण -

१.५.२.२ संकेत व्दारा चरित्र चित्रण -

१.५.२.३ वार्तालाप व्दारा चरित्र चित्रण।

१.५.२.१ वर्णन व्दारा चरित्र चित्रण -

इस प्रकार में लेखक किसी घटना, प्रसंग तथा वातावरण का चित्रण कर पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालता है । वर्णन व्दारा किया गया चरित्र-चित्रण को प्रत्यक्ष तथा विश्लेषणात्मक भी कहा जाता है । एक उदाहरण देखिए -

''मौसी के जाते ही वे ठहा के थम जाते है । घर वापस श्मशान सी खामोशी में सॉय-सॉयकर उठता है । मॉ फैली-बिखरी चीजें समेटने लगती है । भाभी दो-तीन या चार दिनो की थकान उतारने खाट पर पसर जाती है और भाई मौसी की लाई ढीली कमीजों-पतलुनों की फिटिंग कराने के लिए पैसे मॉगते हुए मॉ से हुज्जत करने लगते है । सबको मालूम है, उन पैसों में काट-कट कर रुमाल या तौलिए में लपेटी एक-दो बोतलें आएॅगी । उनके बूते पर बैठक में भाई जैसे ही भाई के खस्ताहाल दोस्तों का जमावड़ा जुटेगा, जश्न मनेगा और एक तीखी मिठास के तहत कई सुस्त से हाथ किसी तरह हवा में लहराकर गिरते हुए एक-से-एक हवाई योजना बनाएॅगे ----।''[४२] वर्णनात्मक प्रणाली व्दारा पात्रों के चरित्र विकसित किया जाता है ।

१.५.२.२ संकेतव्दारा चरित्र चित्रण :-

कहानी में आज संकेतों के माध्यम से पात्रों का चरित्र चित्रण किया जाता है । वर्णनात्मक प्रणाली की अपेक्षा संकेत वर्णन का अधिक से अधिक प्रयोग आज कहानी में हो रहा है । यह प्रणाली चारित्रिक विशेषताओं के उल्लेख में अधिक प्रयुक्त होती है । कहानीकार केवल पात्रों के चारित्रिक वृत्तियों का उल्लेख कर स्वयं कुछ न कहकर संपूर्ण उत्तरदायित्व पाठक पर छोड़ देता है । एक उदाहरण देखिए ''सूरज का तंदूर धीरे-धीरे बुझने लगा, किरणों की तेवरियॉ तिरछी पड़ अॅधेरे में गुम हो गइ । हवा की गमी सूखे

पत्तों की तरह झड़ने लगी। आसमान पर चाँद का बारिक चेहरा लचके के टुकडे की तरह टेढ़ा पड़ा था और अफशॉं की शीशी रात के काले दूपटे पर बिखर गई थी।''[४३]

१.५.२.३ वार्तालाप व्दारा चरित्र चित्रण :-

वार्तालाप के माध्यम से पात्रो का चरित्र चित्रण किया जाता है। यह नाटकीय चरित्र चित्रण के लिए अधिक लाभदायी है। वार्तालाप या संवाद से पात्र एक दूसरे के चरित्रों का विकास करते है। वह अपने संवाद भाषा, कथन शैली से अपने चरित्र की व्याख्या भी कर लेते है। इसमें लेखक कुछ नही कहता बल्कि पात्रों को अपने संवाद से चरित्र विश्लेषण करने की स्वतंत्रता भी होती है। एक उदाहरण दृष्टव्य है - नासिरा शर्मा की 'भूख' कहानी रिजवान और गुदड़ीवाला का संवाद नाटकीय ढंग से प्रस्तुत है -''यही हमारा पेशा है।''

''बाप से कहो''

''वह बूढा है''

''भाई से कहो, जमीन हम दिलवा देंगे।''

''मेरा कोई भाई नहीं है।''

''तुम्हारा बाप क्या करता है।''

''फाका।''

''ठीक से जवाब दो।''

''आप जो सवाल पूछते है, उसी का जवाब दे रहा हूँ, जनाब।''

1.5.2.4 घटना प्रधान चरित्र चित्रण -

घटना के बिना कहानी संभंव नहीं है । कहानी की घटना ही पात्रों के चरित्र चित्रण में सहायक होती है । घटना की वृध्दी के लिए वार्तालाप का आश्रय लेना पड़ता है । मुख्य घटना के साथ-साथ उप कथा पूरक रुप में कार्य करती है । यह घटना अप्रासंगिक नहीं होनी चाहिए । वार्तालाप और घटनाओं के माध्यम से पात्रों के चरित्र चित्रण का विकास होता है । इस प्रकार कथा का घटना प्रवाह अक्षुण रहता ही है, साथ उनके चरित्र का क्रमिक विकास सहज ढंग से हो जाता है ।

कथा की स्वाभाविकता के लिए कथोपकथन की आवश्यकता होती है । कथोपकथन व्दारा पात्रों का दृष्टिकोन उनके उद्देश की पूर्ति हो जाती है । कथोपकथन परिस्थिति के अनुरुप हो तो पात्र का चरित्र स्पष्ट होगा । पात्रों के मूख से लम्बे लम्बे कथोपकथन (संवाद) नहीं होने चाहिए । कथोपकथन व्दारा पात्रों के आंतरिक मानसिकता उत्कर्ष हो जाता है । घटना प्रधान चरित्र चित्रण का उदाहरण दृष्टव्य है-

''सैलाब से उजड़ा गॉव जहॉ पानी में तैरते सॉप ने पति को कॉट लिया था । बहते पानी में उसी के सामने वह तड़पता बहता चला गया । वह बस रोती चीखती रही । जब ऑख बन्द करती तो वही अन्तिम दृश्य उसकी ऑखो के सामने आ जाता कि वेग से बहते मटियाले पानी में बकरी, बछडो और बच्चों के साथ उसका लम्बे कद का पति भी उससे दूर चला गया था । पूरे गॉव की तबाही में पॉच लोग बच गये थे ।''[45]

1.5.3 संवाद -

संवाद ही कहानी का मूर्त विधायक रुप प्रदान करनेवाला तत्व है । लेखक रोचक संवादों के माध्यम से कथानक को प्रस्तुत करता है । पात्र अपने संवादों से कथानक को आगे बढाते है । नाटक जैसा प्रभाव उत्पन्न करने के लिए इस प्रणाली का

उपयोग करता है। कहानीकार पात्रों के संवादों से भव्य वातावरण का चित्रण करते हुए उनकी आंतरिक भावनाओं को उजागर करता है। संवाद मुख्यतः नाटक का तत्व रहा है । लेकिन कलात्मक साहित्य में भी लोकप्रिय रहा है । ''संवाद मूलः वस्तुविधान को स्पष्ट करनेवाले तथा गतिशील रखनेवाले, वक्ता पात्रों के अन्त बाहय चरित्रों को अंकित करने में सहायक होने के साथ साथ संक्षिप्त, मनोरंजक, भाव पूर्ण और सरल होने चाहिए।''[46]

नाटकीय संवादों का प्रयोग कर प्रभावशाली रोचक और रस-प्रद संवादों की सृष्टि होती है। पात्रों के संवाद उनकी मनस्थिति को चित्रित कर नाटयात्मक मोड देते है । पात्रो के संवाद कहानी की जीवंतता प्रदान करते है । कहानी की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए संवादों की योजना की जाती है । अगर यह विश्वसनीयता निर्माण नहीं हो पाती तो संवाद असफल कहे जायेंगे। संवादों के व्दारा कथा का विस्तार, चरित्रों का उद्घाटन और देशकाल का भी पर्याप्त बोध हो जाता है । तात्पर्य यह है कि संवाद कथानक के उद्घाटक और उसे गतिशील बनानेवाले पात्र के चारित्रिक गुणों को संपन्न करने में साहयक होते है। वातावरण सहायक सजीव चित्रण करने में भी संवाद महत्वपूर्ण माने जाते है। कहानीकार को इन सारी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

कहानी में वस्तुतः कथोपकथन तीन कार्यों में बहुत सहायक होता है। चरित्र चित्रण में घटनाओं में तथा भाषा शैली को निर्माण करने में संवाद कहानी में प्रवाह, सजीवता उत्पन्न करते है। कहानी में संवाद वातावरण, घटना तथा परिस्थिति के अनुरूप होने चाहिए। स्थिति अनुरूप संवाद नहीं है तो भ्रामक और अस्पष्ट स्थिति निर्माण होगी। लम्बे-लम्बे संवाद कहानी को निरस बना देते है और कहानी में शिथिलता आ जाती है। संवाद मनुष्य के मन पटल पर विगत जीवन की कुछ घटनाएँ

स्मृति पटल पर निरंतर छाप छोड़ जाते है I मनुष्य का मन पूर्व घटित गहन विचारों से संलग्न होने के कारण संवाद का संबंध मनोविज्ञान से होना चाहिए I

कहानी के संवाद में अधिक संयम और नियंत्रण आवश्यकता होती है I संवादों व्दारा आंतरिक मानसिक उत्कर्ष का सुंदर चित्रण उपस्थित किया जा सकता है I संवाद ही कहानी की सशक्तता का प्रमाण है I यह संवाद प्रसंगानुरुप होने चाहिए ताकि पाठक उस संवादों से अपने अंतरिक वेदना को जान सके I ''कथोपकथ व्दारा अन्तर्व्दव्द के अतिरिक्त मानसिक उत्कर्ष का सुंदर चित्रण उपस्थित किया जा सकता है I वार्तालाप जितने भी अधिक मनोभावों के अनुकुल होगें उतने ही अधिक वे कलात्मक और उत्कृष्ट होगें I ''[47] संवाद एक उदाहरण यहॉ दृष्टव्य है-

'पारिजात कहानी की शैलू और ताऊजी के संवाद

''हॉ-हॉ मैंने देखा था रिक्शा रुका था I पहले तो मैंने समझा कोई गलत नंबर पढ़ लिया I

''नहीं-पढ़ा-लिखा अफसर है, गलत नंबर कैसे पढ़ लेगा?''

''किसका भतीजा है''

''इनके सो मेरे भी''

''सगे?''

''हॉ सगे, चचेरे तो अपने ही हुए ना!''

''हॉ हॉ और क्या- मैंने तो इसलिए पूछा कि तुम कहती थी कि तुम्हारा कोई अपना नहीं I अच्छा, इधर कैसे आए I''

''अरे हमी लोगों को देखते-सुनते आए और क्या कि ताऊ ताई के पास दो-चार दिन रह है ।''

''सही बात है ।''

''चलूँ, उसकी बच्ची छोटी है ना, ठिनठिना रही है, नई जगह है ।''

'' सो तो है ही ।''[48]

संक्षेप मे संवादों के माध्यम से ही कहानी में प्रवाहमयता आ जातीा है । घटना, चरित्र चित्रण, भाषा वातावरण के निर्माण में संवाद सहायक होते है । संवादों से ही कहानी का विकास संभव है । कहानी में नाटक जैसा प्रभाव उत्पन्न करने में संवाद महत्वपूर्ण होते है । वार्तालाप जितने भी अधिक मनोभावो के अनुकुल होगें उतने ही वे कलात्मक और उत्कृष्ट होगें ।

1.5.4 देश, काल तथा वातावरण -

इक्कीसवी सदी में हिंदी कहानी के अंतर्गत देश काल वातावरण का चित्रण सुंदर ढंग से किया जा रहा है । वातावरण से कहानी में एकसूत्रता तथा आकर्षकता की वृध्दि की जाती है । यह तत्व कहानी के लिए अत्यावश्यक है । उपन्यास की अपेक्षा कहानी स्थान, काल तथा घटना तथा वातावरण का चित्रण संक्षिप्त रुप में किया जाता है ।

1.5.4.1 वर्णन शैली -

कहानी में यह तत्व सभी तत्वों से संबंधित है । भाव तथा शब्द के वर्णन में वह लेखक के व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित है । सजीव भाषा तथा लोकोक्तियॉ, मुहावरेंदार भाषा, वर्णन शैली की उत्कृष्टता के लिए आवश्यक है । सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभूति तथा गूढ़ भावना का चित्रण वर्णन शैली व्दारा किया जा सकता है, जिसमें

लेखक की सफलता मानी जाती है । लक्षण, व्यंजना तथा शब्द शक्तियों के सामर्थ्य पर ही वर्णन शैली की सफलता निर्भर करती है । वर्णन शैली के माध्यम से लेखक अपनी कल्पना शक्ति का सजीवता तथा जीवंतता का रूप देखने में सफल होता है ।

वर्णन शैली कहानी के लिए अत्यावश्यक तत्व है क्योंकि वर्णन किये बिना कहानी-कहानी नहीं लगती । वर्णन शैली के माध्यम से सामाजिक चित्रों का तथा वातावरण का चित्रण कथाकार करता है । भावुकता, संवेदना को कहानी में जागृत करने का काम वर्णन शैली व्दारा कथाकार करता है । कहानीकार को अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए तथा जहॉ विषय विस्तार की आवश्यकता होती है, वहॉ वर्णन शैली का उपयोग किया जाता है । वर्णन शेली व्दारा कहानीकार अन्य पुरुष या स्त्री पात्र के माध्यम से कथा का विस्तार करता है और अपनी बातको स्पष्ट करता है । यह सबसे प्रचलित शैली है, क्योंकि इसमें कहानीकार को अपने आपको अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता रहती है । पात्रों की भावना और कथ्य का उद्देश कहानीकार इसमें स्पष्ट करता है । अधिकतर कहानियों में घटना तथा वातावरण का चित्रण इस शैली व्दारा किया जाता है । अपने युग के आदर्श तथा भावनाओं से प्रभावित होकर कथाकार वर्णन शैली में नवीनता लाता है और यह उसकी मौलिकता होती है ।

1.5.5 भाषा शैली -

भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे रचनाकार अपने भाव तथा विचारों को पाठक तक पहूँचाता है । भाषा भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । भाषा की जीवंतता ही रचना को सफलता प्रदान करती है । रचनाकार की संवेदना और अनुभूति को साहित्यिक रूप देने की क्षमता भाषा में ही है । भावात्मकता, बिम्बपरकता, व्यंजनात्मक प्रयोग भाषा को अधिक प्रभावशाली बना देते है । रमेशचंद्र का भाषा का संबंध में कहना है कि, ''भाषा यादृच्छिक ध्वनि समूहों की

व्यवस्था है I''[49] भाषा कौशल्य के कारण सामान्य कथ्य भी विशेष रूप में परिणत हो जाता है I यथार्थ की परतों को खोलकर सूक्ष्म अनुभूतियों को पकड़ने का काम भाषा ही करती है I

कहानीकार संवेदनशील प्राणी है, अपने आस पास की परिस्थिति तथा घटनाओं से प्रभावित होकर अपनी भाषा व्दारा उसे समाज के सामने प्रस्तुत करता है I ''भाषा अनुभूति की प्रमाणिकता का महत्वपूर्ण साधन और माध्यम है I अनुभूति की सघनता और उसका गहराई भाषा की सहजता का कारक बनती है I''[50] कहानी की भाषा बहुत सरल होनी चाहिए ताकि वह पाठक को कुछ दे सके I कथानक चाहे कौनसी शैली का प्रयोग करे उसमें सम्प्रेषणता और प्रभविष्णुता रहनी चाहिए I '' भाषा का कहानी के कथानक और पात्रों के मूल परिवेश के साथ इस रुप में जुड़ा रहना आवश्यक है कि कहानी का सभी कुछ सुबोधगम्य हो सके I''[51] लेखक कठिन से कठिन बात को पाठक कहना चाहता है, तो वह बात पाठक सहजता से समझ सके, इसमें लेखक की कुशलता है I कहानी साधारणः सामान्यजन की वस्तु होती है, अन्तः उसकी भाषा भी सरल सुबोध होने की आवश्यकता है I ताकि पाठक का उचित मनोरंजन हो सके I अन्तः सफल कथाकार उसे कहा जाता है, जिसके भाषा सहज, सरल और सुबोध हो I

1.5.6 उद्देश्य -

कहानीकार कहानी लिखते समय उसके पीछे उसके कुछ उददेश्य रहते है I वह समाज की कुरीतिया तथा व्यक्ति की सामाजिक जीवन की समस्या, नारी समस्या तथा समाज के व्यापक प्रश्न का चित्रण करता है I इसमें कथाकार इन समस्याओं से जागृत करने का प्रयास करता है और उसे सुलझाने के लिए प्रेरित भी करता है I कहानीकार सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विषय

अपनाता हुआ कहानी के माध्यम से पाठक के सामने प्रस्तुत करता है ।कहानी का मूल प्रेरणा बिंदू केंद्रिय विचार अथवा भाव होता है ।''[52] कहानी के माध्यम से जीवन के सभी प्रश्नों का चित्रण करने के बाद कहानीकार परिणाम सामने लाता है वह उद्देश है ।

कहानी की सफलता इसमे निहीत है कि वह पाठक के अंन्तरमन को छू सके । पाठक कहानी को पढ़कर अपने उद्देश की पूर्ति कर सके । वास्तव में सामाजिक राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक या सांस्कृतिक पक्ष जो जीवन से जुड़े हुए हो, ऐसे पक्षों का उद्‌घाटन अगर कहानी नहीं करती है, तो वह कहानी कहानी नहीं हो सकती । संप्रेषण की क्षमता से कहानी उच्च कोटि की सफलता प्राप्त कर सकती है ।

तात्पर्य यह है कि जीवन के सभी पक्षों का उद्‌घाटन कहानी में होना चाहिए । समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना करना कहानी का मूल उद्देश होना चाहिए । जीवन के सभी समस्याओं का उद्‌घाटन करते हुए पाठक को उसे सुलझााने का संदेश भी देना उसका काम है । कहानीकार किसी विशेष उद्देश की कामना करता है और वह विशेष उद्देश किसी विशेष आदर्श की स्थापना करता है । यथार्थ जीवन का चित्रण करना ही उसका उद्देश होता है ।

निष्कर्ष-

समग्रतः से कहा जा सकता है कि हिन्दी की यात्रा एक ओर विकास की यात्रा से गुजरी और दूसरी ओर आंदोलनात्मक प्रवृत्ति से । प्रेमचंद युग की कहानियाँ अधिक तर मानव जीवन से जुड़ी रही । सामाजिक समस्या, मनोवृत्ति कहानी ने यथार्थ के धरातल पर लाकर छोड़ दिया । अनेक विषयों का एवं आदर्श का चित्रण इस काल की कहानी में हुआ । प्रेमचंद के बाद हिन्दी कहानी विविध धाराओं में बँट गई । सामाजिक कहानी समाज से जुड़ी रही । धर्म, समाज, जातियता, छुआछुत,

अंध विश्वास, अनमेल विवाह, वेश्या समस्या का खुलकर चित्रण सामाजिक कहानियों में दिखाई देता है। मनोविश्लेषणात्मक कहानी में व्यक्ति के अंतः संघर्ष को प्रस्तुत कर घटना तथा कथा वस्तु को कहानी में प्रमुखता दी। ऐतिहासिक कहानी प्राचीन भारत का गुणगान करना उसका मुख्य उद्देश रहा। साम्यवादी कहानी मार्क्सवाद के विचारों से प्रभावित रही। शोषण का विरोध कहानी का मुख्य उद्देश्य रहा। वर्ग संघर्ष रूढ़ि का विरोध, शोषण का विरोध कहानी में दिखाई देता है। नई कहानी ने परिवेश का चित्रण किया। समाज की विसंगतियों से परिचित कर उसका प्रामाणिक चित्रण नई कहानी ने प्रस्तुत किया। साठोत्तरीय कहानी तीन भागों में बँट गई। समांतर कहानी में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवेश का चित्रण इस कहानी द्वारा हुआ।

उपन्यास की अपेक्षा छोटी होती हुई भी कहानी आज लोकप्रियता के शिखर पर पहुँची है। कम समय में अधिक रोचक बातें उसकी विशेषता है। पाठक के मनपटल पर अमीट छाप छोड़ जाती है। युगानुरूप सकारात्मक मूल्यों का चित्रण कहानी में होता है। धर्म जाति के नाम पर आज कहानी लिखी गई। संकेत प्रणाली का आज अधिक प्रयोग हो रहा है। घटना, प्रसंग, पात्र के माध्यम से वह पाठक के मन पर प्रभाव डालती है। जीवन की समस्त समस्याओं को हमारे सामने प्रकाशमान कर मन मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ जाती है। कहानी का विभाजन पाँच भागों में किया जाता है। घटना प्रधान कहानी में घटना को अधिक महत्व रहता है। कौतुहल तथा औत्सुक्य उत्पन्न करना कहानी का मुल उद्देश रहता है। चरित्र प्रधान कहानी मानव जीवन के समस्त स्वरूप का विवेचन करती है। वर्णन प्रधान कहानी में देशकाल, स्थिति, स्थान, वातावरण का चित्रण होता है। उसमें चरित्र पर ध्यान नहीं दिया जाता। भाव प्रधान कहानी को पाठक अधिक पसंद करते है। इसमें मनोभावों

का चित्रण होता है । कहानीकार के बहुज्ञता का परिचय हो जाता है । यथार्थ की प्रधानता कहानी में होती है ।

मानवीयता के दर्शन जिस घटना तथा प्रसंग में हो वही कहानी बन जाती है । संवाद द्वारा पाठक आकर्षित हो जाता है । कहानी के अंतर एवं बाहय स्वरूप को रूपाहित करनेवाले तथ्य वास्तव में कहानी के तत्व होते है । कथावस्तु कहानी का प्राणतत्व है । कथावस्तु कहानी के शरीर में हड्डियों की तरह है । कथावस्तु न होने से कहानी का निर्माण संभव नहीं है । कथावस्तू के लिए घटना, विवरण आवश्यक है । अनाश्यक घटना, पात्र तथा अस्वाभाविक पात्र का समावेश नहीं होना चाहिए । सुसूत्रता की योजना को सफल बनाती है ।

चरित्र चित्रण से ही कथावस्तु आगे बड़ती है । पात्रों के माध्यम से रसास्वाद का आनंद पाठक उठाता है । मानवीयता के दर्शन जिस घटना तथा प्रसंग में हो वही कहानी बन जाती है । संवाद द्वारा पाठक आकर्षित हो जाता है । कहानी के अन्तर एवं बाहय स्वरूप को रूपाहित करनेवाले तथ्य वास्तव में कहानी के तत्व होते है ।

मनोविज्ञान के बिना चरित्र चित्रण अधुरा है । लेखक के इर्द-गिर्द रहनेवाले पात्रों का विकास नहीं हो पाता । परिणामतः पाठक उनके प्रति आकृष्ट नहीं होता । सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक जीवन सेग जुड़े पात्र पाठक के मन पटल पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं । वर्णन प्रधान कहानी प्रत्यक्ष तथा विश्लेषणात्मक ढंग की होती है । वार्तालाप के द्वारा चरित्र चित्रण किया जाता है । संवाद, भाषा, कथन शैली से अपने चरित्र की व्याख्या भी करते है । इसमें घटना की प्रधानता होती है । संवाद प्रभावशाली, रोचक और रस-प्रद से पाठक मंत्रमुग्ध हो जाता है । संवाद कथानक के उदघाटक और उसे गतिशील बनानेवाले पात्र के चारित्रिक गुणों को संपन्न करने में सहायक होते हैं । संवाद परिस्थिति, घटना के अनुरूप होने चाहिए । लंबे-लंबे संवाद

कहानी में निरसता निर्माण करते है। प्रसंगानुकूल संवाद पाठक की आंतरिक वेदना को जगाते है।

अतः कहानीकार सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विषय अपनाता हुआ कहानी पाठक के सामने प्रस्तुत होती है। कहानी प्रस्तुत करते समय उसे कहानी के तत्वों पर ध्यान देना आवश्यक होता है। वही कहानी सफल मानी जाती है, जो पाठक के मन-पटल पर अमिट छाप छोड़ती है। वह पाठक के अंतर्मन को छू सके। मानवीय मूल्यों की स्थापना करना कहानी का मूल उद्देश्य होता है। यथार्थ जीवन की विसंगतियों को प्रस्तुत कर पाठक को उसे सुलझाने का संदेश भी देती है।

संदर्भ-

1. कहानी : नयी कहानी-डॉ.नामवर सिंह, पृ.213
2. कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन-डॉ.मंजुला देसाई-पृ.41
3. हिंदी कहानी उद्भव और विकास-डॉ.सुरेश सिन्हा, पृ.58
4. हिंदी कहानियों की शिल्पविधि विकास-डॉ.लक्ष्मीनारायण लालपृ, पृ.53
5. पं.माधव प्रसाद मिश्र का प्रमुख कथासाहित्य-मुरारीलाल, पृ.32
6. हिंदी की पहली कहानी-डॉ.देवेश ठाकूर,पृ.17
7. हिंदी साहित्य कोश (प्रथम खंड)- पृ.315
8. कहानी : स्वरूप संवेदना-राजेंद्र यादव-पृ.23
9. कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन-डॉ.मंजुला देसाई-पृ.42
10. वही-पृ.43
11. हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.नगेंद्र-पृ.523
12. कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन-डॉ.मंजुला देसाई-पृ.47
13. वही-पृ.47
14. साहित्य विवेचन-क्षेमचन्द्र 'सुमन', योगेन्द्र कुमार 'मल्लिक', पृ.220
15. कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन-डॉ.मंजुला देसाई, पृ.51
16. हिंदी कहानी का शिल्प विधि विकास-डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल-पृ.93
17. कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन-डॉ.मंजुला देसाई, पृ.52
18. वही-पृ.52
19. वही-पृ.52
20. कल्पना-जनवरी 1956
21. वही
22. हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ-सं.पा.डॉ.सुरेश बाबर-पृ.10

23.हिंदी कहानी परम्परा और प्रगति-डॉ.हरदयाल-पृ.137
24.नई कहानी : उपलब्धि और सीमाएँ-गोरधन सिंह शेखावत, पृ.73
25.नई धारा-फरवरी मार्च 1960, पृ.96
26.नयी कहानी की भूमिका-कमलेश्वर, पृ.15
27.हिंदी कहानी के आंदोलन उपलब्धियाँ और सीमाएँ-रजनीश कुमार-पृ.34
28.हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ-डॉ.सुरेश बाबर, पृ.11
29.कहानी स्वरूप संवेदना-राजेंद्र यादव, पृ.44
30.कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन-डॉ.मंजुला देसाई, पृ.61
31.हिंदी कहानी पहचान और परख-डॉ.इंद्रनाथ मदान, पृ.76
32.नई कहानी की भूमिका-कमलेश्वर, पृ.21
33.साहित्य विवेचन-क्षेमचंद्र 'सुमन' योगेन्द्रकुमार 'मल्लिक', पृ.206
34.वही-पृ.207
35.वही-पृ.207
36.वही-पृ.215
37.वही-पृ.207
38.अंतिम दशक की हिंदी कहानी संवेदना और शिल्प-डॉ.नीरज शर्मा, पृ.159
39.साहित्य विवेचन-क्षेमचंद्र 'सुमन' योगेन्द्रकुमार मल्लिक-पृ.208
40.अंतिम दशक की हिंदी कहानी संवेदना और शिल्प-डॉ.नीरज शर्मा, पृ.159
41.साहित्य विवेचन-क्षेमचंद्र, योगेन्द्र कुमार, पृ.209
42.थाली भर चाँद-सुर्यबाला-पृ.12
43.सबीना के चालीस चोर-नासिरा शर्मा, पृ.163
44.संगसार-नासिरा शर्मा, पृ.95
45.बुतखाना-नासिरा शर्मा, पृ.76

46.भारतीय काव्यशास्त्र-डॉ.सुरेश अग्रवाल-पृ.322

47.साहित्य विवेचन-क्षेमचंद्र 'सुमन', योगेन्द्र कुमार-पृ.211

48.थाली भर चाँद-सूर्यबाला-पृ.78

49.थापा-सितंबर-अक्तूबर-2006, पृ.87

50.अंतिम दशक की हिंदी कहानियाँ-संवेदना और शिल्प-डॉ.नीरज शर्मा-पृ.175

51.भारतीय काव्यशास्त्र-डॉ.सुरेश अग्रवाल-पृ.352

52.वही-पृ.352

द्वितीय अध्याय

2.0 संवेदना और शिल्प : सैध्दांतिक विवेचन

2.1. संवेदना का अर्थ

2.2. संवेदना की परिभाषा

2.3. संवेदना से अभिप्राय

2.4. ऐन्द्रिय बोध और संवेदना

2.5. संवेदना और साहित्य का संबंध

2.6. संवेदना के भेद

2.6.1. रागात्मक संवेदना

2.6.2. दुखात्मक संवेदना

2.7 संवेदना बोध के विविध तत्व

2.7.1. सामाजिक संवेदना

2.7.2. राजनीतिक संवेदना

2.7.3. सांस्कृतिक संवेदना

2.7.4. वैयक्तिक संवेदना

2.8. शिल्प

2.8.1. शिल्प का अर्थ

2.8.2. शिल्प का स्वरूप

2.8.3. शिल्प की अनिवार्यता

2.8.3.1. भाषा

2.8.3.2. शब्द प्रयोग

2.8.4. शैली

2.8.4.1. शैली का अर्थ

2.8.4.2. शैली की परिभाषा

2.8.4.3 शैली के विविध रूप

1. वर्णनात्मक शैली
2. पूर्व दीप्ति शैली
3. आत्मकथात्मक शैली
4. पत्र शैली
5. विवरणात्मक शैली
6. संवाद शैली
7. दिवास्वप्न शैली
8. व्यंग्यात्मक शैली
9. प्रतिकात्मक शैली
10. डायरी शैली

2.8.4.4. फैटेसी

2.8.4.5. कहावतें

2.8.4.6. सुक्तियाँ

निष्कर्ष-

द्वितीय अध्याय

संवेदना का स्वरूप एवं शिल्प : सैध्दांतिक विवेचन

2.0 संवेदना और शिल्प : सैध्दांतिक विवेचन-

कहानी साहित्य में संवेदना ज्ञान का सरल और सहज रूप है ऐसा मनोवैज्ञानिक मानते है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ मनुष्य की संवेदना को विविधता प्रदान करती है। कहानी में संवेदना एक जैसी नहीं होती। कभी उसकी तीव्रता अधिक तो कभी कम होती है। संवेदना एक मानसिक प्रक्रिया है, जो कहानी की आरम्भिक प्रक्रिया है। कहानी का कथ्य किस प्रकार व्यापक अर्थ में लेखकीय संवेदना का रूप है, और किस प्रकार वह संवेदना अपने अनुरूप शिल्प में सुगुंफित होती है, इसका अध्ययन लगभग एक शतक की अवधि में फैली हिंदी कहानी के संदर्भों से विश्लेषित किया गया है।

प्रमुखतः गद्य साहित्य में रागात्मक संवेदना से अन्य संवेदना का स्वरूप प्रकाशित होता है। कहानी में सामाजिक यथार्थ की संवेदना का स्वरूप होता है। संवेदना के स्तर पर कहानी जीवन के विविध पक्षों को पूरी गहराई और मार्मिकता से उद्‌घाटित करती है।

2.1. संवेदना का अर्थ

संवेदना मानसिक प्रक्रिया होने के कारण उद्दीपकों के बारे में ज्ञान हासिल करने के लिए अनेक प्रकार की मानसिक प्रक्रियाएँ होती है। जैसे चिंतन करना, कल्पना करना आदि। इन सबसे पहली मानसिक प्रक्रिया संवेदना होती है। अगर हमें किसी विषय का तर्क करना हो तो उसके लिए आवश्यक है उसका संवेदन होना। सामने दिखाई देनेवाली दृष्टि संवेदना का उदाहरण होता है। संवेदना ज्ञान का सरल

और सहज रूप है। जब हम लोग घटना का दृश्य को देखते है, उस दृश्य का घटना का या प्रसंग के अनुरूप हमारे मन पर वेदना उत्पन्न होती है, उस मन की वेदना को संवेदना कहते है। ''संवेदना हमारे मन की चेतना की वह अवस्था है, जिससे हमें विश्व की वस्तु विशेष का बोधन हो कर उसके गुणों का बोध होता है।''[1]

संवेदना शब्द की व्युत्पत्ति 'सम' उपसर्ग पूर्वक 'विद्' धातु में ल्युट प्रत्यय लगाने से होती है। संवेदनम् - ना (संवेदना) (सम+विद्ल्यूट) प्रत्यक्ष ज्ञान, जानकारी तीव्र अनुभूति भावना अनुभूति, भोगना आदि।''[2] संवेदना को अंग्रेजी के लिए शब्द है- सेंसेशन वहाँ इसका अर्थ है-ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव। ''किसी भी क्रोध युक्त लाल आँखों को देखकर प्रतिपक्षी को जो अनुभूति होती है वही सेंसेशन है।''[3] सम् उपसर्ग के कई अर्थ बताये गए हैं वे हैं- ''समः एक अवयव जिसका व्यवहार समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरन्तरता, औचित्य आदि सुचित करने के लिए शब्द में होता है।''4 हिंदी शब्दकोश में संवेदना का अर्थ है- ''मन में होनेवाला अनुभव बोध (अनुभूति) किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुःख, किसी की वेदना देखकर स्वयं को उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना (सहानुभूति) 3.उक्त प्रकार का दुःख या सहानुभूति प्रकट करने की क्रिया या भाव कन्डोलेन्सा।'' [5] व्यवहारिका हिंदी-अँग्रेजी शब्दकोश में संवेदना का अर्थ है- ''संवेदना अंग्रेजी के सेंसिटिबिटी, सेन्सेशन, सेन्सिबल, फिल्लिंग का समानार्थी शब्द है।''[6] इस संवेदना के अर्थ से ज्ञात होता है कि मन में होने वाला अनुभव। यह अनुभव भिन्न-भिन्न प्रकार के हो सकते है। जीवन का व्यापक अनुभव ही संवेदना है। डॉ.नीरज शर्मा का मत है कि -''किसी की क्रोध युक्त लाल आँखों को देखकर प्रतिपक्षी को जो अनुभूति होती हे वह सेंसेशन है। यह भी भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हे। तथा क्रोध युक्त लाल आँखों को देखने से कोई डर सकता है तो दूसरे के मन में प्रतिक्रिया स्वरूप क्रोध भी

उत्पन्न हो सकता है। और वह क्रोध उसकी आँखों, हाथों या वाणी द्वारा अभिव्यक्त होगा।''[7]

संवेदना को व्यावहारिक दृष्टि से समझा जाए तो हमारे सामने संवेदना का व्यापक अर्थ रूप आयेगा। भोलानाथ तिवारी के अनुसार ''संवेदना, समवेदना, समानुभूति है।''[8] मानक हिंदी कोश में- संवेदना का अर्थ है-''सैन्सेशन, संवेदन, संवेदना क्रोध, चेतना, ज्ञान, इन्द्रियबोध, उत्तेजनापूर्ण, भारी उत्तेजना, स्फुरण, संभ्रम, हंगामा, जोश।''[9] हिन्दी साहित्य कोश में संवेदना शब्द का अर्थ इसप्रकार दिया गया है- ''साधारणतः संवेदना शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। मूलतः वेदना या संवेदना का अर्थ ज्ञान या ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव है। अंग्रेजी में इसके लिए सिमपैथी, फीलिंग या फोलोफिलिंग आदि अनेक शब्द प्रचलित है। मनोविज्ञान में इसका अर्थ ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव या सैन्सेशन के रूप में होता है।''[10] आचार्य नंद किशोर के अनुसार ''संस्कृत के 'विद' से व्युत्पन्न होने के कारण इसका अर्थ अंग्रेजी शब्द सैन्सेशन या परसेप्शन तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि नोलेज या अंडरस्टैंडिंग भी इसी की सीमा में आ जाते हैं। इस प्रकार एक सीमा तक बौध्दिक चेतना भी संवेदना शब्द के अर्थ में समाहित है।''[11]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि संवेदना का अर्थ है-सहानुभूति, भावानुभव, इंद्रियानुभव, बोध, ज्ञान आदि। वस्तुतः संवेदना विभिन्न प्रकार की होती है। समाज में घटित प्रसंग से मनुष्य विभिन्न प्रकार की संवेदना का अनुभव करता है।

2.2 संवेदना की परिभाषा -

भाषा और विचारों की अभिव्यक्ति को साहित्यकार जानता है l संवेदना का संबंध इंद्रियों से है और यह इन्द्रिय हमारे भाव जगत् को प्रभावित करती है। पाश्चात्य विव्दान मॉरिंग ने संवेदना की परिभाषा इसप्रकार की है - ''संवेदना से

तात्पर्य दृष्टि, श्रवण, गंध, स्पर्श तथा दर्द के ज्ञानद्रियों से प्राप्त मौलिक संवेदी आकड़ों से होता है।''[12] जे. पी. दास के अनुसार - ''उद्दीप कों प्राप्त करने की पहली अवस्था को ही संवेदना कहा है।''[13]

मनोविज्ञान के अनुसार - '' संवेदना उत्तेजना के संबंध में देह-रचना की सर्वप्रथम सचेतन प्रतिकिया है, जिसमें हमें वातावरण की ज्ञानोपलब्धि होती है। यथा-हरी वस्तु हरे रंग को देखने की संवेदना मात्र है। उत्तेजना का हमारे मन-मस्तिष्क तथा नाड़ी तन्तुओं व्दारा प्रभाव पड़ने पर ही हमें उसकी संवेदना होती है।''[14] संवेदना को स्पष्ट करते हुए लिखा है, ''संवेदना हमारे मन की चेतना की वह कूटस्थ अवस्था है जिसमें हमें विश्व की वस्तु-विशेष को बोध न होकर उसके गुणों का बोध होता है ।''[15] संवेदना के आधार पर बाहय जगत् के प्रत्ययों को ज्ञान बढ़ता है । मनुष्य की परिस्थितियों से पड़नेवाले सभी प्रभाव संवेदना नहीं कहे जा सकते । हम केवल वहीं संवेदना कह सकते है, जो भावना मनुष्य के लिए उपयोगी है । और वही भावना संवेदना हो सकती है ।

साहित्य मनुष्य की भावनात्मक संवेदना है । मनुष्य की भावात्मक संवेदना को साहित्य मे संवेदना कहा जाता है । ''संवेदना हमारी कोमल अनुभूतियों को उस भाव लोक में ले जाती है, जहाँ कृतज्ञता की मौन स्वीकृति है, रागात्मक ऊष्मा का भाषा रहित सम्प्रेषण है और निनादित होते हुए प्राणों का दिव्य संगीता यदि संवेदना न हो तो मनुष्य पाषण हो जाए ।''[16] विभिन्न परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि संवेदना जीवन का व्यापक अनुभव है ।

2.3 संवेदना से अभिप्राय :-

साधारणतः मनोवैज्ञानिक मानते है कि संवेदना ज्ञान का सहज रुप होता है । जब हम कोई घटना अथवा प्रसंग को देखते है, उस प्रसंग अथवा घटना को देखकर

हमारे मन में जो भाव उत्पन्न होता है, वह संवेदना है। भाव अगर दुःखात्मक है, तो मन में वेदना उत्पन्न होती है, भाव अगर सुखदायी हो तो मन में आनंद भाव उत्पन्न होता है और वही वे मनुष्य की वेदनाओ आनंद संवेदना है। संवेदना से हमे उसके गुणों का बोध होता है।

प्रारंभिक रूप से संवेदना दो प्रकार की होती है - शारिरीक संवेदना और मानसिक संवेदना सुरेश सिन्हा के अनुसार "वह अनुभूति प्रवणता जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता से पूरित होती है।"[17] व्यक्ति से प्राप्त अनुभव की अभिव्यक्ति छन कर आते है, वह संवेदना अधिक दुखदायी होती है। साधारणतः अर्थज्ञान होने पर ही संवेदना का ज्ञान होता है। अर्थज्ञान के बिना संवेदना का ज्ञान नही हो पाता है।

मनुष्य के शारिरीक संवेदना आन्तरिक दशाओं में परिवर्तित होने पर अनुभवीत होती है। मानसिक संवेदना में मनुष्य सुख और दुख दोनों का अनुभव करता है। मनुष्य जो घटना या प्रसंग देखता है, उस घटनात्मक अनुभव को प्राप्त कर वह संवेदना जागृत करता है। यदी घटना दुखात्मक है, तो वेदना की अनुभूति होती है और घटना सुखमय है, तो अनुभूति या संवेदना आनंद प्रवण होती है। जीवन में सुख दुख दोनों प्रकार की संवेदना मनुष्य अनुभवित करता है। सुख और दुख विषय के संबंध में रसेल के विचार है - "सुख संवेदना का लक्षण या अन्य मानसिक घटना है जिसमें किसी घटना के घटित होने को प्रवर्तित किया जाता है और दुःख संवेदना का लक्षण या मानसिक घटना है जिसमें घटना के बाबत प्रेरित या संकल्पित परिवर्तन के कारण कम या अधिक परिवर्तन उक्त घटना के अवसान में होता है।"[18]

आज समाज भ्रष्टाचार, गुटबाजी, वैमनस्य तथा चारित्रीक -हास के कारण मनुष्य अकेलपन की दूनिया में पहूँचकर भी हार नहीं मानता। उसे संघर्ष के लिए

संवेदना ही ऊपर उठाती है l "रागात्मिका वृत्ति के प्रसार के बिना विश्व के साथ जीवन का प्राकृत सामंजस्य घटित नहीं हो सकता l जब मनुष्य के सुख और आनन्द का मेल शेष प्रकृति के सुख सौदर्यं के साथ हो जाएगा, जब उसकी रक्षा का भाव तृण-गुल्म, वृक्ष लता, पशुपक्षी, कीट-पतंग, सबकी रक्षा के भाव से समन्वित हो जाएगा, तब उसके अवतार का उद्येश्य पूर्ण हो जाएगा और वह जगत का सच्चा प्रतिनिधि हो जाएगा l"[19]

तपेश चर्तुर्वेदी के संवेदना को लेकर विचार उद्घृत है - "संवेदना उस काल्पनिक अनुभव की व्याख्या का प्रयास है जिसमें सहज एवं सात्विक रुप में किसी पदार्थ में स्वात्म प्रेक्षपण होता है l"[20] साहित्यकार संवेदना की प्रकिया में स्थितियों को पूर्णतः आत्मसात करता है l सूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करके तथा वस्तुविशेष के गुणों का बोधक करके अनुभूति के रूप में साहित्यिक रूप सौदर्य एवं प्रभाव संवेदना में ही निहित रहता है l रामदरश मिश्र अपने विचारों को व्यक्त करते है कि "संवेदना के बिना साहित्य नहीं बनता चाहे उसमें बुध्दिवाद का कितना भी ऊहापोह क्योंन हो, दर्शन की नयी भंगिमा क्यों न हो l बुध्दी दर्शन, चिन्तन, ज्ञान-विज्ञान सबको पहले जीवन में आत्मसात होना पड़ता है, आत्मसात होकर मानव संवेदना का अंग बनना पडता है l"[21]

अन्तः संवेदना साहित्य की मूल प्रेरणा है l साहित्यकार संवेदना के बिना साहित्य की निर्मिती नहीं कर सकता या संवेदना के बिना साहित्य नहीं है l जीवन का व्यापक अनुभव हमें संवेदना व्दारा ही प्राप्त होता है l

2.4 ऐन्द्रिय बोध और संवेदना -

मनुष्य समाजशील प्राणी है l वह अपने बुध्दिचातुर्य से उचित-अनुचित का निर्णय लेता है l निर्णायक क्षमता होने के कारण वह अपने काम आसान बनाता है l

अन्य प्राणी की अपेक्षा वह विवेक संपन्न है। अपने विचारों के कारण या विवेक का ज्ञान होने से वह निर्णयक्षम है। उसके जीवन के साथ संवेदना हमेशा जुड़ी रहती है। समाज में घटित नित्य घटनाओं का वह अनुभव करता है और उसके बाद उसकी संवेदना प्रतिफलित होती है। अंतः संवेदना के साथ हर मनुष्य का जीवन जुड़ा हुआ है।

मानव और संवेदना दोनों का अटूट नाता है। उसके जीवन में संवेदना का अनन्य साधारण महत्व है। मनुष्य की बौध्दिक क्षमता के आधार पर ही संवेदना का निर्माण होता है। मानव मस्तिष्क से ही संवेदना का परस्पर पुरक संबंध है, क्योंकि मस्तिष्क से ही संवेदना का आरम्भ होता है। इसलिए संवेदना मानव जीवन का अविभाज्य अंग है। इंद्रिय ज्ञान की समष्टि के रुप में मनुष्य की चेतन सत्ता रही है। मनुष्य के अन्तःकरण का विकास होता गया सभ्यता बढ़ती गई। "आरंभ में मनुष्य के चेतना सत्ता अधिकतर इन्द्रिय ज्ञान की समष्टि के रुप में ही रही। फिर ज्यों-ज्यों अन्तःकरण का विकास होता गया और सभ्यता बढ़ती गई त्यों-त्यों मनुष्य का ज्ञान बुध्दी व्यवसायात्मक होता गया। अब मनुष्य का ज्ञान-क्षेत्र बुध्दि व्यवसायात्मक या विचारात्मक होकर बहुत ही विस्तुत हो गया।"[22] सभ्यता और संस्कृति के व्दारा ही संवेदना प्रतिफलित होती है।

समाज मे घटित घटनाएँ संवेदना जागृत करती है। मनुष्य समाज में घटित घटनाओं की अनुभूति करता है और नये-नये अनुभव प्राप्त करता है। उस अनुभव के कारण मनुष्य के व्यक्तित्व में परिवर्तन आ जाता है जिससे संवेदना जागृत हो जाती है और यही संवेदना साहित्य में भी परिवर्तन के लिए सहायक हो जाती है।

प्रमुखतः संवेदना के तीन रुप है।

1. विशिष्ट संवेदना

2. अन्तरावयव संवेदना

3. स्नायविक संवेदना

मुख्यतः बाहरी उत्तेजना और ज्ञानेन्द्रिय के व्दारा उत्पन्न होनेवाली संवेदना को विशिष्ट संवेदना कहते है। यह अवयव से संबंधित होने के कारण इसे इन्द्रिय संवेदना की संज्ञा भी दी जाती है। इस संवेदना के भेद है- त्वचा, रस, प्राण आदि। ''शरीर की भीतरी अवस्था के कारण पैदा होनेवाली पाचन- किया, रक्त संचार और श्वासप्रश्वास कहलाती है। तीसरी संवेदना अर्थात स्नायविक मांसपेशियों और स्नायु ग्रन्थियों आदि के संचालन से उत्पन्न होती है।''[23]

संवेदनशील व्यक्ति अपने अनुभूति और विचार के व्दारा ही संवेदना को प्राप्त कर सकता है। अंतः ज्ञानन्द्रियॉ ही उसे संवेदनाशील बनाती है। इसलिए ज्ञानन्द्रियॉ का संबंध संवेदना से है। ''ऐन्द्रिक संवेदनाएँ बाद में अनुभव के व्दारा वैचारिक संवेदनाओं में प्रतिफलित होती है। किन्तु वस्तु को देखने और महसूस करने की स्थिति में प्रतिकिया के तौर पर हमारे भीतर उसके पक्ष अथवा विरोध में विचार बनने की प्रक्रिया कियाशील हो उठती है।''[24]

मनुष्य मन के भाव और विचार संवेदना के लिए महत्वपूर्ण माने जाते है। इस संबंध में वीरेन्द्र सिंह के विचार विशेष उल्लेखणिय है - ''संवेदना बाहय जगत का ऐन्द्रीय बोध है, वह एक प्रकार से भौतिक जगत का बिम्ब ग्रहण तो होता ही है, पर इसके साथ ही साथ भावों और विचारों का एक संयुक्त समाहार भी 'संवेदना' के गठन में माना गया है।''[25]

कोई भी साहित्यकार के मन में संवेदना के निर्मिती के लिए कोई न कोई कृति अवश्य रहती है, वह उस कृति का आस्वाद लेता है और अपनी संवेदना को जागृत करता है। ''संवेदना समाज परिवेश और मनः स्थिति के धरातल पर होने

वाले सांझे अनुभवों पर निर्भय हुआ करती है ।''[26] अंन्तः संवेदना का जन्म मनुष्य के अनुभव तथा समाज, परिवेश व्दारा मिलनेवाले अनुभव तथा उसकी मनःस्थिति पर अवलंबित है । अनेक प्रकार के अनुभव तथा परिवेश और समाज से संबंधित घटनाऍ नये-नये संवेदना को जन्म देते है । दुखदायी अनुभव से वेदनादायी संवेदना का निर्माण होगा तो सुखदायी अनुभव से आनंददायी संवेदना । कोई साहित्यकार हो जैसे हिंदी साहित्यकार, पाश्चात्य साहित्यकार वह साहित्य में अपनी संवेदनाओं को ही चित्रित करता है । इस संबंध में डॉ. नीरज शर्मा का कथन है कि, ''संवेदना के आधार पर मन में बाहय जगत् के प्रत्यय बनते है और इन्द्रियॉ हमारे भाव जगत् को (उदयोगों को) अधिक प्रभावित करती है ।''[27] मानवीय संवेदना और जीवन दर्शन, जीवन मूल्य में काफी बदलाव आया है, जिसके कारण संवेदना में भी परिवर्तन दिखाई देता है ।

अंन्तः ऐन्द्रिय संवेदना अनुभव के व्दारा वैचारिक संवेदना में परिवर्तन होता है । उस महसूस किये हुए अनुभव मानव को संवेदनशील बनाती है । हर युग के साहित्य में अपने-अपने युग की संवेदनाओं का आधार लिया जाता है । अपनी रचना के माध्यम से ही संवेदनाओं के साहित्यकार समाज में एक नई दृष्टि प्रदान करता है ।

2.5 संवेदना और साहित्य का संबंध -

साहित्य के मूल में संवेदना होती है और उनके ही आधार पर समाज को नई दिशा का प्रदान होती है । साहित्यकार सामान्य मनुष्य की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होता है, जिसके कारण वह अपनी संवेदना को साहित्य में प्रतिफलित व्यक्त करता है । 'सहानुभूति' के लिए संवेदना का प्रयोग किया जाता है लेकिन दोनों में प्रर्याप्त अंतर है । दूसरे के दुःखों को देखकर मन में सहानुभूति का निर्माण होना स्वाभाविक है । इसे संवेदना नहीं कहा जा सकता ।

संवेदना कल्पना आश्रित है, वह न पूर्ण भौतिक है और न पूर्ण मानसिक किसी की वेदना देखकर सहानुभूति जताई जाती है, लेकिन संवेदना में गहराई है। "संवेदना व्दारा ही साहित्य के सृजन के लिए साहित्यकार के मन में सर्वप्रथम भाव उत्पन्न होते है और इन भावों को साहित्यकार अपनी लेखनीव्दारा अभिव्यक्त करता है तभी साहित्य की रचना होती है।"[28]

संवेदना का संबंध ज्ञान से है। समाज परिवेश तथा मनःस्थिति व्दारा उत्पन्न संवेदना ही साहित्य मे प्रतिफलित होती है। मनुष्य की भावना पवित्रा और अपवित्र दोनों प्रकार की भी है। जिसे सद और असद वृत्ति भी कहा जाता है। इसी वृत्तियों के कारण ज्ञानोपलब्धि होती है। हमारे मन मस्तिष्क का प्रभाव पड़ने पर ही हमें उसकी संवेदना होती है।

साहित्य और संवेदना का अटूट नाता है। कोई भी साहित्य क्यों न हो वह संवेदना के बिना नहीं होता तथा उसमें संवेदना न रहने पर वह साहित्य नहीं बन पाता। साहित्यकार लिखते समय संवेदना को मूल आधार मानकर ही लिखता है। साहित्यकार के हृदय मे संवेदनात्मक अनुभूति उत्पन्न होती है और उस उत्पन्न संवेदनात्मक अनुभूति को वह साहित्य में चित्रित करता है।

साहित्यकार अपने मन संवेदनाओं को अपनी कृति में चित्रित करता है। साहित्यकार का व्यक्तित्व महत्वपूर्ण इसलिए है कि वह समाज, परिवेश की संवेदनाओं को ग्रहण करने की क्षमता रखता है और संवेदनाओं को अपनी रचना में प्रस्तुत करता है। साहित्यकार जिस युग का हो वह उसी युग की संवेदनाओं अपनी कृति को आकार देता है। युग के अनुसार संवेदनाओं में परिवर्तन पाया जाता है।

साहित्यकार प्रतिभा संपन्न होने के कारण समस्त मानव जाति की संवेदनाओं को कल्पना के आधार पर आकार देता है। टी. एस. इलियर के अनुसार "रचनाधारी

संवेदना समाज को नुतन अनुभूतियॉ प्रदान करती है, परिवेश अनुभुतियों का बोध कराती है और जिन अनुभूतियों को हम जानते है, किन्तु जिनकी अभिव्यक्ति के लिए हमें शब्द ज्ञात नही है उन्हे अभिव्यंजन प्रदान करती है I इसके परिणाम स्वरुप हमारी चेतना का विस्तार और संवेदनाशक्ति का परिष्कार होता है I"[29] अर्थात साहित्यकार व्दारा मनुष्य को नव-नवीन संवेदना ज्ञात हो जाती है I सामाजिक अनुभूतियों को नया अर्थ देकर हमारी संवेदना शक्ति बढती है I संवेदना ही मनुष्य को अपने व्यक्तित्व का परिचय करवाती है I इसलिए इन दोनों को संबंध परस्परावलंबित है I

2.6 संवेदना के भेद -

समाज में घटित घटना प्रसंग तथा किसी वस्तु या पदार्थ को देखकर मनुष्य के मन में उपजी अनुभूतिसंवेदना होती है I मानव मन में यह अनुभूति भिन्न-भिन्न प्रकार की हो सकती है I जिसके कारण संवेदना भी अलग-अलग प्रकार से उत्पन्न हो जाती है I अनुभूति के आधार पर उपजी संवेदना के प्रमुखतः दो भेद है I

2.6.1 रागात्मक संवेदना -

द्वेषात्मक संवेदना प्रमुखतः व्देष, ईर्षा, राग, क्रोध, घृणा आदि भावों से संबंधित है I किसी घटना, प्रसंग या वस्तु को देखकर हमारे मन में राग, व्देष, ईर्षा आदि भावों की निर्मिती होती है, तो वह द्वेषात्मक संवेदना से संबंधित है I इन भावों को कहानीकार रचना का अंग बनाना चाहता है तो वह द्वेषात्मक संवेदना है I संयोगात्मक, वियोगात्मक तथा मानवेतर प्रेमपरक इसके विभेद है I

अंन्तिम दशक की कहानियॉ प्रमुखतः इस रागात्मक संवेदनाओं को मूर्त करने में तत्पर है I उदा. 'कामरेड़ का कोट' यह संवेदना दिखाई देती है I "जिददी ठण्ड थी कि मच्छरों की तरह उनकी देह के नंगे हिस्सों पर डंक चुभा देती थी I"[30]

2.6.2 दुखात्मक संवेदना -

औदयोगिकरण के कारण पूँजीवादी समाज का वर्चस्व बढ़ गया । परिणाम स्वरूप मनुष्य अपने परिवेश से कटा । भारत में अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन होनेसे प्रतियोगिता के बढ़ने से पुरानी पीढ़ी की उपेक्षा होने लगी । नई पीढ़ी ने स्वयं को अलग शाबित करने की कोशिश की । परिणाम यह हुआ कि समाज बिखर गया, परिवार तथा पति-पत्नी के रिश्तों में काफी बदलाव आया । परिवार का विघटन, परिवारिक जीवन समस्या, मनुष्य की पीड़ा, मानसिक घुटन, उत्पीड़न जैसी समस्या बढ़ गई ।

'छप्पन तोले का करधन' की दादी अपनी नियति, नरकीय वेदना भोगने के लिए विवश है ।

वह अपने पुत्र से कहती है - "रामे जब तेरे पिता फिरंगी को मारकर फरार हुए थे तब मेरे पास दस तोला सोना था । मैंने अपने तीनों छौनों को किस तरह से पाला पोसा, तुम दोनों भाइयों को पढ़ाया । चार तोला बचा था जिन्हें मैंने दोनों बहु में बराबर बॉटा और उसपर भी तुम सबने मिलकर मेरे साथ जो किया है बेटा उसे भगवान ही नहीं सारा गॉव देख रहा होगा । अभी तो बेटा वह दाल भात डयोठी पर रख जाती है । करधन मैंने दे दिया तो फिर कौन-सी आस रह जाएगी? करधन हो किन हो, वह मेरे लिए और तुम सब की आस के लिए जरुरी है, बेटा ।"[31]

2.7 संवेदना बोध के विविध तत्व -

साहित्य का संबंध मानव हृदय से संबंधित है । इसलिए साहित्यकार समाज में फैले समस्त वातावरण तथा सामाजिक जीवन को स्वयं अनुभवित करता है तथा उसे अपने खुले ऑखो से देखता है । उसके साथ घटित हर घटना तथा भाव से साहित्यकार उत्तेजित हो जाता है और उस घटना तथा भाव को अपनी रचना बनाता

है । साहित्यकार की अनुभूति एक विशिष्ट रूप ग्रहण करती है । सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक इन सभी परिस्थितियों एवं विषमताओं पर उसकी नजर होने के कारण वह समाज का यथार्थ अंकन करता है ।

2.7.1 सामाजिक संवेदना -

मनुष्य का संबंध समाज से होने के कारण सामाजिक संवेदना उसके लिए महत्वपूर्ण रहती है । समाज के महत्व को स्वीकारना यह सामाजिक संवेदना ही है । मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण उसका समाज के साथ अटूट संबंध रहता है । वह समाज के बिना नहीं रह सकता । अंतः समाज के बिना उसका अस्तित्व नहीं के बिना है । साहित्यकार भी एक मनुष्य होने के कारण समाज की अनुभुतियों को स्वीकारता है और उस अनुभूति को साहित्य में चित्रित करता है ।

संवेदना के बिना कृति का निर्माण होना संभव नही है । साहित्यकार अपने अनुभवों का चित्रित करता है और कृति को समझने के लिए संदर्भो को भी देखा जा सकता है । साहित्यकार के रचित अनुभव सामाजिक होते है । सामाजिक जीवन यथार्थ को संवेदना के स्तर पर व्यक्त करता है । ‘‘रचनाकार सामाजिक यथार्थ को संवेदना, भावना और मूल्यों के स्तर पर व्यक्त करता है । साहित्य एक सामाजिक कर्म है, जिनकी सारी प्रकिया सामाजिक इतिहास के भीतर घटित होती है । साहित्य में समाज गहरे में बैठा रहता है ।’’[32] समाज व्दारा ही व्यक्ति को उचित दिशा-निर्देश मिलता है । समाज से जुड़ने के कारण हर व्यक्ति को अपने अस्तित्व की पहचान हो जाती है । मनुष्य के विकास को रेखांकित करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा लिखते है कि ‘‘मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास उसके सामाजिक जीवन से संभव हुआ है । इसलिए व्यक्ति और समाज की स्वाधीनता परस्पर विरोधी न होकर एक दुसरे से आश्रित है ।’’[33]

समाज मे रहनेवाले व्यक्ति का व्यवहार समाज के अनुकुल होता है, आवश्यकता नुसार उसमें परिवर्तन आता है । अंतः समाज एक संगठन है, जिसमे मनुष्य अपने औपचारिक संबंधों में बॅधे रहते है । सुरेशचंन्द्र शर्मा के अनुसार ''समाज और व्यक्ति के सापेक्ष सम्बन्ध को प्रभावित करने में युग विशेष की जीवन दृष्टि का योग रहता है । अंन्तः सामाजिक अंतः प्रकियाओं के औचित्य - अनौचित्य का युग विशेष के संदर्भ में भी विश्लेषण किया जा सकता है । जो सामाजिक नैतिकता, मनुष्य-मनुष्य बीच की विषमता को दूर करके मानव सत्य की प्रतिष्ठा करती है । वह सर्व कालिक नैतिकता है ।''[34] अंतः समाज के सहयोग से ही मनुष्य अर्जित ज्ञान प्राप्त कर सकता है और अपनी अनुभूति क्षमता और संवेदनशीलता को संपन्न कर सकता है । समाज मानव के अंतरक्रिया का प्रतिमान है जिसके व्दारा समाज के सदस्य अपना निर्वाह करते है ।

समाज में व्यक्तियों के आपसी संबंध और व्यवहारों की विधियों की प्रधानता रहती है । ''समाज स्वयं एक संघ है, एक संगठन है, औपचारिक सम्बन्धों का योग है - जिसमें सहयोगी व्यक्ति आपस में आबध्द है ।''[35] समाज में जो सार्वजनिक नियम है, वह सार्वजनिक रुप से होते है । उसी के अनुसार समाज की गतिविधियॉ परिलक्षित होती है । समाज में ही रहकर वह अपने सामाजिक संबंधों को तथा अपने अस्तित्व को जान सकता है । मनुष्य अपनी सुक्ष्मतम-से-सूक्ष्मतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाज पर निर्भर रहता है । वह संबंध सामाजिक , आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक हो सकते है ।

व्यक्ति के समूह से ही समाज बनता है । अज्ञेयजी अपने विचार प्रकट करते हुए कहते है कि ''समाज से अभिप्राय है, वह परिवृत्ति जिसके साथ व्यक्ति किसी प्रकार अपनापन महसूस करें ।''[36] मनुष्य के आपसी संबंध के कारण ही वह समाज में रहकर एक पूर्ण व्यक्ति बन जाता है । अंतः साहित्य में वर्णित सामाजिक परिवेश

तथा सामाजिक समस्याओं के आधार पर हम साहित्यकार के सामाजिक चिन्तन को समझा जा सकता है । व्यक्ति हमेशा सामाजिक परिवेश में आवेष्टित रहता है । इसलिए व्यक्ति पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है । समाज व्यक्तियों का समुह है । अपने कार्य, व्यापार, अपना हित, दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह अन्योन्याश्रित रहता है । समाज में उनका अनेक व्यक्तियों के साथ आदान-प्रदान होता है । समाज केवल व्यक्तियों का समूह को नहीं कहा जा सकता । समाज की परछाई व्यक्ति के दर्पण में प्रतिबिंबित होती है । अंतः व्यक्ति से ही समाज जीवित रहता है, समाज से व्यक्ति नहीं । समाज और मनुष्य के अंतः संबंधो की चर्चा करते हुए डॉ. मंजुर सैय्यद का मत है कि, ''समाज मनुष्य के समूह का नाम नहीं, वह मनुष्यों के अंतः सम्बन्धों की जटिल व्यवस्था है, जिसके अतंर्गत सामूहिक जीवन की गतिविधियॉ एवं व्यवहार अनुस्युत रहते है ।''[37]

व्यक्ति महत्वपूर्ण है क्योंकि समाज का निर्माण इनसे ही संभव है । व्यक्ति ही समाज को सार्थकता देता है । एक संवेदनशील साहित्यकार अपनी प्रतिभा से समाज के ताणे बाने को तथा विविध समस्याओं को एक विशिष्ट रुप से साहित्य में चित्रित करता है । शेखर शर्मा का मत है कि, ''समाज यदि एक और लेखक के व्यक्तित्व के माध्यम से साहित्य का रुप ग्रहण करते हुए व्यक्ति की सीमा से सीमित हो जाता है तो दूसरी ओर व्यक्ति की विशिष्टता के स्पर्श से विशिष्ट हो उठता है, इस लिए प्रत्येक सार्थक रचना समाज के जीवन में नवीन योगदान देती है ।''[38] अंतः समाज साहित्य की कर्मभूमि है । प्रत्येक युग का साहित्य समाज की चित्तवृत्तियों का अध्ययन कर उसकी युग चेतना को प्रतिबिंबित करता है । साहित्यकार प्रत्येक स्तर पर समाज से जुड़ा हुआ होता है । वह एक सामाजिक प्राणी होने कारण अपने दृष्टि को न समाज के व्दारा ही सजग बनाता है । केवल व्यक्ति के समूह को समाज नहीं कहा जाता ।

साहित्य की कर्मभूमि समाज होने के कारण शाश्वत है । साहित्य समाज से और समाज के लिए होता है । धर्मवीर भारती के विचार विशेष उल्लेखनिय है - “व्यक्ति बनकर तो भीड़ बनती है । ईंट मकान की ईकाई जरूर है, लेकिन ईट मिलकर मकान नहीं ढेर बनता है । असल में मकान बना है ईंट-ईंट के बीच का संबंध वह कम जिससे आपने उन्हें परस्पर संबंध दिया है, तभी तो ईट मिलकर कभी तो दीवार बनती है कभी मीनार । व्यक्ति व्यक्ति के बीच का वही संबंध ही वह कडी है, जो व्यक्ति के ओर समाज के अस्तित्व को विकास और प्रगति के सार्थक करता है ।”[39] साहित्यककार युग चेतना से प्रभावित होकर सामाजिक समस्या, रीतिरिवाज, चुनौतियाँ तथा भाव, विचार, मानवीय व्यवहार आदि को साहित्य में प्रतिबध्द करता है । साहित्यकार की व्यक्तिगत संवेदन सामाजिक जीवन से मुक्त होकर व्यापक रूप ग्रहण करती है ।

हर एक समाज की अपनी-अपनी मान्यताएँ तथा विचारधारा होती है । हिंदू समाज में विवाह को प्रवित्र बंधन माना गया है, विवाह विच्छेद की कल्पना भी नहीं की जा सकती । इसके विपरीत अमेरीका में विवाह विच्छेद तथा विधवा विवाह को मान्यता दी गई । मानव स्वभाव और युग परिवर्तन के अनुसार समाज में बदलाव आना स्वाभाविक है । मनुष्य परिवार, समाज, राष्ट्र सभी में परिवर्तन दिखाई देता है । इसलिए जैसे-जैसे मानवीय मूल्यों में परिवर्तन दिखाई दे रहा संवेदना भी परिवर्तित हो रही है । नये रुप में संवेदना सामने आ रही है । संवेदना केवल अनुभव प्रेरित होने के कारण साहित्यकार नये रुप में सामने आनेवाली संवेदना से अनभिज्ञ होने के कारण साहित्य में नही रह पाता, जिसके कारण हमें नये युग की विचारधारा का ज्ञान नहीं हो पाता । समय के अनुसार मानवीय संवेदना में परिवर्तन दिखाई देता है । जिसके कारण व्यक्ति की विचारधारा में भी काफी परिवर्तन आ रहा है ।

संवेदनाओं के आधार पर ही समाज की संस्कृति का अध्ययन किया जा सकता है । संवेदना व्यक्तित्व की व्याख्या करना है, और व्यक्ति उस व्याख्या के अनुरुप अपने को ढॉलने की कोशिश करता है । मानवीय इच्छाओं की पूर्ति करना तथा मानव समाज में एकता स्थापित करने का महत्वपूर्ण माध्यम संवेदना को माना जाता है । व्यक्तित्व के निर्माण उसकी उच्च कोटी की संवेदना पर भी निर्भर करता है । अतः सामाजिक संवेदना के आधार पर समाज का गहराई से अध्ययन किया जा सकता है । सामाजिक विकास के माध्यम संवेदना को ही माना जाता है । वह जन समाज की रीढ़ होने के कारण, इसी के सहारे समाज अस्तित्ववान होता है ।

2.7.2 राजनीतिक संवेदना -

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजनीति ने भारतीय जनजीवन को विशेष प्रभावित किया । स्वतंत्रता के बाद एक युग की समर्पित और दूसरा युग की सुरवात नये संकटो के साथ उभरकर सामने आया । भारत-पाकिस्तान का बॅटवारा हो गया परिणाम स्वरुप हिंदू-मुस्लिम दंगों में अनेक लोगों ने अपनी जान गवाई । इन परिस्थितियों को स्वतंत्रता के बाद नई पीढ़ी निरन्तर इसे भोगती आयी । बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महॅगाई के कारण लोगों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा । डॉ. अजय पटेल के विचार ध्यातव्य है - ‘‘देश के स्वतंत्र होने के पश्चात राजनीतिक क्षेत्र में ऐसी धॉधली मची कि सच्चे देश भक्त पीछे रह गये और स्वार्थी सत्ता लोलूप तत्वों ने शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली । स्वार्थपरता, सत्ता लोलुपता, भ्रष्टाचार एवं दलबदल प्रवृत्ति जैसी अनेक विध बुराईयो ने भारतीय राजनीति को भ्रष्ट, खोखली एवं नीति विहीन बना दिया ।’’[40]

स्वतंत्रता के बाद विभाजन से जिन हालातों को सामान्य जन ने महसूस किया इससे पता चलता है कि राजनीतिक परिवर्तन जनता के लिए कितना निरर्थक शाबित

हुआ। भ्रष्ट शासन व्यवस्था ने जनता की भावनाओं को तहस-तहस कर रखा। इसका गहरा प्रभाव आम आदमी पर पडा। स्वार्थी नेताओं की पोल खोलते हुए डॉ. अर्जुन चौहान लिखते है कि ''सत्तासीन प्रायः स्वार्थीसीन होता गया। उसने जनता को बेवकूफ बनाने का ही हमेशा प्रयत्न किया। अॅंग्रेजी नीति अपना कर जाति का तथा धर्म आदि के नाम पर जनता का बॅंटवारा कर दिया मूल उद्देश अपने स्वार्थ को हाथियाना ही रहा।''[41] स्वातंत्र्योत्तर राजनीति में रक्षक ही भक्षक बनने की प्रवृत्ति राजनेताओं में दृष्टिगत होती है।

भारत की जनता ने आशा की थी कि नया राष्ट्रीय जनतंत्र अतीत अभिशापों को मिटा देगी। पूॅंजीपतियों शक्तियों से जकड़े आम आदमी को मुक्त कर देगी लेकिन जनता का यह सपना चूर-चूर हो गया। सभी राजनेता खुर्ची के लिए जनता का खून चुसने लगे। जनता मे असुरक्षितता की भावना निर्माण हुई। स्वतंत्रता के बाद आम आदमी की सुरक्षा, रोजी, रोटी, कपड़ा, मकान के साथ शिक्षा, आरोग्य, रोजगार की पूर्ति करने शासन असफल रही। देश स्वतंत्रता मिलते ही विभाजन की विर्भिषिका ने एक नया संकट खड़ा कर दिया। हिंदू-मुसलमान एक दूसरे के खून के प्यासे बन गये। लोगों का भविष्य अनिश्चित हो गया इस खोखली राजनीति की चर्चा करते हुए 'हजार घोड़ो का सवार' उपन्यास का गीधू कहता है - ''यह साली कैसी आजादी है? कैसी व्यवस्था है? कैसा न्याय है? क्यों नहीं रौंद डाला जाय इसे। यदि आजादी के बाद भी गरीबों को इसी दुर्दशा में जीना है तो खाक है, यह आजादी यह स्वतंत्रता।''[42]

आज साहित्य में राजनीतिक संवेदना प्रासंगिक हो उठी है क्योंकि राजनीति के संबंध में संवेदना को अलग करके लिखना असंभव है। कोई भी साहित्यकार अपने साहित्य को राजनीति से अलग नहीं रख सकता। साहित्य में किसी राजनीतिक-व्यक्ति या दल को अपनाया नहीं जाता बल्कि संपूर्ण राजनीतिक

विचारधारा को स्थान दिया जाता है । यह विचारधारा संवेदना से जुड़कर साहित्य में अपना स्थान प्रतिष्ठित करती है । साहित्यकार आनेवाले युग के राजनीतिक व्यवस्था की चर्चा करते हुए हमारे सामने राजनीतिक व्यवस्था का चित्र उपस्थित करते है । नामवर सिंह का कथन है कि ''सन 1935 के जमाने में साहित्य और राजनीति के संबंध को लेकर गरम चर्चा चल पड़ी । जिस तरह छायावादी युग में 'साहित्य समाज का दर्पन है' कहने की हवा थी, उसी तरह इस युग में साहित्य और राजनीति की घनिष्ठिता पर जोर दिया जाने लगा था ।''[43]

आज भारतीय राजनीति नतभ्रष्ट हो गई । देश में अन्न की समस्या, जन संख्या समस्या, बेकारी की समस्या ने जनता को पीड़ित कर रखा है । देश के विकास के लिए बाधा बन गई । स्वकिय रक्षक ही भक्षक बनने की प्रवृत्ति से मानवीयता के खिलाफ विश्वासघात है । स्वातंत्रता के बाद भारतीय नागरीक अधिक निर्धन और मजबूर होता चला गया । बेरोजगारी, मँहगाई के कारण लोगों की लूटमार, आतंक, हिंसा, अपराध, हत्या, जातिवाद, अलगाववाद आदि प्रवृत्तियाँ उभरकर सामने आयी । इस राजनीति केवल नारों की राजनीति बन गई । जिसके कारण भारतीय जनता अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठी । राजनीति के प्रति जनता में विद्रोह भाव अधिक दिखाई देता है । स्वतंत्रता के बाद गांधीजी के सिध्दांत सिध्दांत ही रहे । लोगो को यह आस लगाई थी कि आर्थिक पराधिनता तथा पिछडेपन तेजी समाप्त होगा । लेकिन सारी आशाओं पर पानी फेर गया ।

सन 1943 में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा परिणाम स्वरूप लाखों लोग मर गये । लोगों के मन में असंतोष की भावना निर्माण हुई । अन्न संकट मुँह फैलाकर सामने आया । देश की अखंडता, एकता, भाईचारा को ठेस पहूँची समाज जाति-धर्मो में बँट गया । जनता के मन संकुचित सांप्रदायिकता सदा के लिए बस गई । अखण्डता की जड़े हिल गई । इन तमाम परिस्थितियों को नई पीढ़ी निरन्तर भोगती रही ।

पूँजीपतिओं की शक्तियों से सारी जनता बेडियों में चूर-चूर हो गई । स्वातंत्रोत्तर के बाद राजनीति तत्वहीन, मूल्यहीन, लक्ष्यहीन हो गई जिससे आम जनता त्रस्त हो गई । स्वार्थ, पदलोलुपता के कारण सामान्य जनता का जीवन शोचनीय बन गया ।

उपर्युक्त राजनीति की स्थिति होने के कारण जन सामान्य में आंदोलन की भावना तेजीसे जागृत होना स्वाभाविक था । देश प्रेम की भावना समाप्त हो गई । भारत को स्वतंत्रता दिलानेवाले देशभक्त के प्रति प्रेम की भावना समाप्त हो गई । इसी राजनीतिक संवेदना को साहित्यकार ने अपने साहित्य में उतारा है । आज की स्थिति का अवलोकन किया जाय तो आज मनुष्य अपने विकास के लिए अनेक समस्याओं का संघर्ष करता हुआ दिखाई दे रहा है । इन सभी राजनीतिक परिस्थितियॉ और मानवीय संवेदना को साहित्यकार अपने साहित्य में इन सभी संवेदना को जन्म दे रहा है या देता आ रहा है । इसलिए राजनीति और संवेदना दोनों का महत्व साहित्यकार के लिए समान है ।

2.7.3 सांस्कृतिक संवेदना -

'संस्कृति' शब्द अँग्रेजी के कल्चर का पर्याय माना है । हिंदी विश्व कोश में इसका अर्थ है - ''शुध्दि, सफाई 12, परिस्कार 13, सजावट, अराइश 14, सभ्यता, रहन-सहन आदि की रुढ़ी शइस्तगी 15, चोवीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा आदि ।''[44] संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृति शब्द 'सम' उपसर्ग के साथ 'कृत' धातु मं सुत का आगमन करके 'वित्तन' प्रत्यय लगाने से बना है ।''[45] आधुनिक हिंदी शब्द कोश में संस्कृति का अर्थ है - ''स्त्री से शुध्दी, विकास, उन्नयन, परिस्कार, सभ्यता, सुधार 2. किसी देश या किसी जाति की सामाजिक परम्परागत क्षमताओं और कलात्मक क्रियाकलापों का उनके जीवन में व्यवहार रुप, मनुष्य की आंतरिक मानसिकता उसके सौदर्यमूलक कार्यकलाप और अभिरुचियों का समष्टि रुप ।''[46]

इसका तात्पर्य यह हुआ कि संस्कारक्षम आचार विचार एवं व्यवहार, नैतिक मूल्य ही संस्कृति है l मनुष्य को समाज से जुड़ने के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता पड़ती है वे सारे तत्व संस्कृति उसे प्रदान करती है l राहुल सांकृत्यायन के अनुसार ''एक पीढ़ी आती है, वह अपने आचार, विचार, रुचि-अरुचि, कलासंगीत, भोजन छाजन या किसी और दूसरी आध्यात्मिक धारणा के बारे में कुछ स्नेह की यात्रा अगली पीढ़ी के लिए छोड़ जाती है l एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी के बाद तीसरी और आगे बहुत सी पीढ़ियॉं आती-जाती रहती है, और सभी अपना प्रभाव अगली पीढ़ी पर छोड़ती जाती है l यह प्रभाव (संस्कार) 'संस्कृति' है l''[47]

समाज, धर्म, दर्शन, कला संस्कृति के मूलतत्व है l यह तत्व ही संस्कृति को गौरव की परिपुष्ट करते है l संस्कृति सुन्दर सरिता के समान स्वच्छंद भाव से निरन्तर प्रवाहित रहती है l प्रकाश आतुर के अनुसार ''संस्कृति का अर्थ सिर्फ नाच गाना नहीं है l जो सामान्यतः समझ लिया जाता है, इसके अन्तर्गत हमारे चिंतन और कलात्मक सृजन की वे समस्त क्रियाएॅं समाहित हो जाती है, जो इन्सानी व्यक्तित्व और जिन्दगी समाहित हो जाती है l''[48] प्रत्येक देश की अपनी-अपनी संस्कृति होती है और व्यक्ति उसके अनुसार ही आचरण करता है l डॉ. देवराज की दष्टि में ''संस्कृति वस्तुतः उन गुणों का समुदाय है, जिन्हें मनुष्य अनेक प्रकार की शिक्षा व्दारा अपने प्रयत्न से प्राप्त करता है l संस्कृति का संबंध मुख्यतः मनुष्य की बुध्दी, स्वभाव और मनोवृत्तियों से है l संक्षेप में सांस्कृतिक विशेषताएॅं मनुष्य की बुध्दी एवं स्वभाव की विशेषताएॅं होती है l''[49] संस्कृति से हमारा जीवन सुन्दर एवं ऊॅंचा बनता है l जो व्यक्ति केवल व्यवसायी है, उनका उद्देश केवल वितरण या विनिमय करना है उनका व्यक्तित्व महत्वपूर्ण नहीं बन पाता l हमारी आध्यात्मिकता, विनयशीलता, संवेदनशीलता उदारता, साहस निर्भिकता यह तत्व हमें संस्कृति से मिलते है l जिसमें मानवीय व्यक्तित्व का परिस्कार और परिमार्जन होता है l

हर एक देश की संस्कृति ऐतिहासिक और भौगोलिक विशिष्टता से देश की सांस्कृतिक मूल्यों को निर्धारित करती है । भारतीय संस्कृति के अतंर्गत आध्यात्मिकता, पुनर्जन्म, कर्मफल विश्वकल्याण आदि सिध्दांतों का महत्व है । वर्तमान भारतीय संस्कृति को स्पष्ट करते हुए पं.जवाहरलाल नेहरु का सर्वधा सर्वश्रृत है- "भारतीय जनता की संस्कृति का रुप सामाजिक है और इसका विकास धीरे धीरे हुआ है । एक ओर तो इस संस्कृति का मूल आर्या से पूर्व मोहनजोदडो आदि की सभ्यता तथा द्रविडों की महान सभ्यता तक पहुँचता है । दूसरी ओर इस संस्कृति पर आर्यो की गहरी छाप है, जो भारत में मध्य एशिया से आये थे । आगे चलकर यह संस्कृति उत्तर-पश्चिम में आनेवाले तथा फिर समुद्र की राह से पश्चिम से आनेवाले लोगों से बार-बार प्रभावित हुई । इसप्रकार हमारी राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय तथा नये उपकरनों को पचाकर आत्मसात करने की अपूर्व योग्यता है ।"[50] जीवन और जगत् के चिन्तन की व्यापकता को समेटती हुई संस्कृति के मूल्य मानव केंद्रित होते है ।

व्यक्ति को समाज का आधार माना गया है । यह समाज व्यक्तियों के कारण नतभ्रष्ट ना हो जाए इसलिए उसे एक सूत्र में पिरोये रखने के लिए कुछ मूल्य या सूत्र बनाये गये है, वह सूत्र अथवा मूल्य ही संस्कृति है । धर्म और समाज का गठन सांस्कृतिक मूल्यों पर निर्भर है । मानव जीवन में धर्म और संस्कृति का महत्व पूर्ण स्थान है । मनुष्य सत्य-असत्य तथा अच्छे-बुरे को पहचानने की शक्ति संस्कृति प्रदान करती है । संस्कृति के नैतिक मूल्यों के आधार पर धर्म समाज में मानवता की स्थापना करता है । डॉ. सरिता शुक्ला का कथन है कि, "हर धर्म के मूल में एक सांकेतिक जीवन दर्शन होता है, जो मानवता का विकास करता है । व्यक्ति को शान्ति देता है जिससे वह आगे बढ सके ।"[51] भारत वर्ष की सामाजिक व्यवस्था संस्कृति पर आधारित है, जिसका दर्शन हमें धर्म में होता है । मनुष्य अपने जीवन

निर्वाह के लिए धर्म, परम्परा, आचार-विचार का सहारा लेता है और यह सब संस्कृति उसे प्रदान करती है। अतः संस्कृति से ही आदर्श समाज की कल्पना की जा सकती है।

संस्कृति समाज की विभिन्न जातियाँ, एवं उसके रहन-सहन, खान-पान, वेशभुषा, संगीत, कला, शिक्षण, साहित्य, धर्म आदि अनेकानेक पहलुओं का चित्राकन करती है। समय बदलने से मनुष्य और समाज में परिवर्तन आता गया। इसी कारण स्वतंत्रता के पश्चात परिवर्तित समाज की संस्कृति को रेखांकित करते हुए डॉ. शोभा देशपांडे ने लिखा है - ''स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा, विज्ञान, उदयोग ओर महानगरीय संस्कृति ने भारतीय जनमानस मे नई चेतना जगाई। जिससे हमारे परम्परागत समाज की नींव हिल गई और हम सही अर्थो में पाश्चात्य जीवन शैली भी न अपना सके। एक त्रिशंकू, दिग्भ्रमित, अजनबी, अवांछित स्थिति में परम्परा और प्रगति, प्राचीनता और नवीनता, पौर्वात्म और पश्चिमी सभ्यता के मध्य राह में खो गये है।''[52] भारतीय जनता ने विदेशी संस्कृति को आत्मसात करके नये-नये विचारों को अवगत कराया। विश्व परिवा की भावना लोगों में निर्माण हूई। लेकिन मानव अस्तित्व के लिए बढ़ते खतरों के कारण इस भावना को आघात पहुँचा।

आधुनिक युग में संस्कृति के लिए सभ्यता का प्रयोग होने लगा लेकिन दोनों मे पर्याप्त अंतर है। वे दूसरे के पूरक है। डॉ. प्रसन्नकुमार आचार्य के शब्दों में ''संस्कृति बौध्दीक विकास की अवस्थाओं को सूचित करती है और सभ्यता के परिणाम स्वरुप शारिरीक और भौतिक विकास होता है। संस्कृति का संबंध आत्मा से और सभ्यता का कार्यकलाप से है।''[53] सभ्यता हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और संस्कृति मनुष्य को संस्कार से विभूषित कर उसे सदा के लिए प्रेरित करती है। भगवत शरण उपाध्याय लिखते है कि, ''सभ्यता और संस्कृति मनुष्य के प्रेरणा विजय के परिणाम है। जिनसे से प्रथम आदिम, बनैली स्थिति से सामाजिक

जीवन की ओर मनुष्य की प्रगति का नाम है l व्दितीय में प्रगति की सत्य, शिव और रूचिर परम्परा का l"[54] सभ्यता साधन और संस्कृति साध्य होने से दोनों को अलग नही किया जा सकता, सभ्यता में हमारी रहन-सहन, कार्य प्रणाली, भौतिक साधन मनुष्य के विकास के सूचक है l संस्कृति हृदय को उदात्त बनाकर मन को पवित्र बना देती है l सभ्यता स्थूल और संस्कृति सूक्ष्म है l

मनुष्य जिस प्रकार व्यवहार करता है, उसी प्रकार संगठनों का निर्माण करता है l इसके विपरीत संस्कृति मानवजीवन को प्रभावित करती है l संस्कृति एक प्रकार से जीवन पध्दति है l संस्कृति समाज जीवन के हित को देखकर नैतिक मूल्यों की स्थापना करके उसका समुचित विकास करती है l सभ्यता की सारणियों से गुजर कर ही हम संस्कृति के मूल्यों से अवगत हो जाते है l डॉ. महेंद्र रघुवंशी का कथन है कि "सभ्यता बहिर्मुखी है, तो संस्कृति अन्तर्मुखी l सभ्यता नवीन अविष्कारों उत्पादन के साधनों से अपने स्वरुप को और उन्नत करती हुई जीवन यात्रा को सुगम तथा सरल बनाती है l पर संस्कृति इनसे बेखबर रहकर भी अपना जीवन दर्शन विकसित करती है l"[55] सभ्यता और संस्कृति का अवलोकन करने के पश्चात एक ही बात स्पष्ट हो जाती है कि दोनों एक ही सिक्के के दो पहलु है l

साहित्यकार समाज की जीवन गाथा को चित्रित करते समय समाज की संस्कृति महत्वपूर्ण होती है l संस्कृति के आदर्श आचार-विचार का ज्ञान हमें साहित्य व्दारा ही प्राप्त होता है l बदलते हुए सांस्कृतिक मूल्य साहित्य में प्रामाणिक रुप में प्रतिपादीत होते है l संस्कृति के ज्ञान का आधारभूत तत्व साहित्य है l संस्कृति को जानने के लिए हमारे साहित्य को जानना आवश्यक है l डॉ. राधेश्याम शर्मा का मत है कि "कल्पना की दृष्टि से देखें तो दोनों में ही उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है l एक में आदर्श समाज की परिकल्पना में मनुष्य की सृजीनशील कल्पना का हाथ होता है तो साहित्य में सम्प्रेषण में वह साहित्यकार की 'रुपाव्यापार विधान' की शक्ति के

रुप में सकिय रहती है ।"[56] सामाजिक उपयोगिता पर लक्ष्य देकर साहित्य मानवीय संवेदना को जागृत करता है । साहित्य समस्त मानव जाति को संस्कार से परिष्कृत करता है ।

किसी भी देश की संस्कृति जानने के लिए उस देश के साहित्य को जानना आवश्यक है । डॉ. शिवशंकर त्रिवेदी लिखते है कि "सांस्कृतिक चेतना विकासशील होकर जब सृजनात्मक बन जाती है, तभी साहित्य का उदभव होता है, किसी भी जाति या वर्ग का कलात्मक या सृजनात्मक उन्मेष संस्कृति के अतंर्गत आता है । और वह सृजनात्मक एकता और सौंदर्य वृत्ति की उत्पता प्राप्त कर लेते है तभी साहित्य सृजन होता है ।"[57] समाज व्दारा संस्कृति के जीवन मूल्यों की रक्षा की जाती है । हमारे रीति-रिवाज, आचार-विचार, नीति-धर्म, परम्परा, पर्व, त्यौहार आदि संस्कृति के प्राणतत्व साहित्य में प्रतिबिंम्बित होते है । अंतः समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना कर संस्कृति के मूल तत्वों की रक्षा करना साहित्य का लक्ष्य है । साहित्यकार पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव संस्कृति का पड़ता है और वह समाज को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है । जिस साहित्य में संस्कृति के नैतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति होगी वही साहित्य कठोर आघातों का सामना करने की क्षमता भी रखता है । प्रत्येक युग की मानवीय संवेदना के साथ संस्कृति जुड़ी रहती है । परिवर्तन के अनुसार मानवीय मूल्यों में भी परिवर्तन संभव है । संस्कृति उसे मानवता, बंधुता की ओर प्रेरित कर आदर्श मूल्यों की ओर सद्प्रेरित करती है ।

2.7.4 वैयक्तिक संवेदना -

प्रत्येक युग की जो वैयक्तिक संवेदना है, उसका अपना सुगंठित स्वरुप होता है । इस स्वरुप संबंध उस युग के साहित्य से जुड़ा रहता है । सामाजिक,

राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों में विषमता के कारण समाज की एकता की भावना लुप्त हो गई और समाज व्यक्ति में विभाजित हो गया।

प्रमुखतः वैयक्तिक संवेदना को साहित्यकार ने दो स्तरों पर प्रतिपादित किया। एक स्वयं की अस्मिता गढ़ने का और लेखन की विशिष्टता का तो दूसरा समाज में व्यक्ति का स्थान और उसकी सुरक्षा। आज व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के प्रति अधिक जागृत हो गया जिसका परिणाम यह हुआ है कि अंधविश्वास, रुढ़ि परम्पराओं से उसका विश्वास उड़ने लगा। "अपनी सारी आत्मचेतना में वह अपने व्यक्तित्व को समष्टि की व्यापक चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम स्वीकार करती है।"[58] आज प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के पीछे दौड रहा है। जिससे उसकी आत्मचेतना बलवती हो गई है।

आज महानगरों की अपेक्षा गॉव में धन की कमी है। चेतना के साथ संवेदना का गहरा संबंध है। एक ही युग के अनेक प्रकार के लोगों की भिन्न-भिन्न चेतना हो सकती है। इस भिन्न-भिन्न चेतना को साहित्य स्वीकारता है। आज व्यक्ति अपने युग की मान्यताओं को अपने अनुसार स्वीकार करता है। व्यक्तित्व के प्रति हर एक व्यक्ति जागरुक होने के कारण उसकी संवेदना भी अलग-अलग होती है। इस संबंध में शेखर शर्मा का कथन है कि "आज व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के प्रति इतना जागरुक हो चुका है, कि उसने 'हमारा देश स्वतंत्र है और 'हम सब स्वतंत्र है' की अनुभूति से सके राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने की अपेक्षा प्रान्त, जाति और व्यक्ति के स्वर 'मैं' स्वतंत्र हूँ तथा स्वतंत्रता का उपभोग करना मेरा अधिकार है कि व्यक्तिवादी चेतना से प्रेरित होकर समूचे राष्ट्रीय जीवन में बिखराव की स्थिति पैदा कर दी है।"[59]

स्वतंत्रता के बाद परिस्थितियॉ बदली जिसके कारण साहित्य में भी परिवर्तन आ गया । सामाजिक यथार्थ असंगतियॉ तथा संवेदनाओं को साहित्य ने चित्रित किया। श्रीपत राय का कथन विशेष उल्लेखनिय है -''समसामायिक संवेदना में विराग, कुण्ठा, निस्संगता सब जीवित तत्व है, इन मानसिक स्थितियों को वे केवल नकार सकते है,जिनका जीवन सम्बन्धी समस्याओं में कोई रस नहीं है । जो समाज इन आधारभूत प्रश्नों को न अनुभव के धरातल पर न चिन्तन के धरातल पर स्वीकार करता है, वह समाज जीवित नहीं है । उसके जीवित रहने या न रहने से अन्तर भी क्या पड़ता है? यही तो अस्तित्ववादी भी समाज से पूछता है । इसी के समाधान में आज का संवेदनशील लेखक अपनी मेधा का उपयोग कर लेता है ।''[60] अंतः लेखक व्यक्ति में एक ओर संवेदना जगाता है तो दूसरी ओर चेतना भी जगाने का काम करता है । साहित्यकार ने पुरानी संवेदना की अपेक्षा नई संवेदनाओं को अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दी है । यह सब युग परिवर्तन का ही परिणाम है ।

अंतः कहा जाता है कि युग परिवर्तन के कारण मनुष्य की संवेदना में भी परिवर्तन आया और इस परिवर्तन को साहित्यकार ने अपने साहित्य में वाणी दी है।वैयक्तिक संवेदना समाज पर ही आश्रित है, पर अपनी अलग विशेषताओ को रेखांकित करती है । वैयक्तिक संवेदना में व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के प्रति अति जागृत तथा संवेदनशील रहता है। चेतना के माध्यम से ही वैयक्तिक संवेदना को गति मिळती है।

2.8 शिल्प -

2.8.1 शिल्प का अर्थ -

संसार का प्रत्येक रचनाकार अनुभव को शिल्प के माध्यम से स्थापित करता है। रचनाकार के रचनात्मक अनुभव से शिल्प परावर्तित होता है। शिल्प के व्दारा ही

रचनाकार अपने अनुभव को अभिव्यक्त करता है। साहित्यकार अपने सामाजिक संदर्भो एवं बदलते परिवेश को साहित्य में रुपायित करता है, तभी उसे निश्चित शिल्प का सहारा लेना पड़ता है।

बृहद हिंदी पर्यायवाची कोश में शिल्प का अर्थ है - ‘‘कला, कुशलता, दस्तकार, कारीगर, हुनरा आदि।’’[61] ‘‘हिंदी पर्यायवादी कोश में शिल्प का अर्थ है - 1) आर्ट, कला, हुनर 2) कारीगरी, दस्तकारी।’’[62]

संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर में ‘‘संज्ञा (पु) (सं) हाथ से कोई चिज बनाकर तैयार करने का काम।’’[63] शिल्प शब्द शिल्प धातु और पक प्रत्यय से बना है।

संस्कृत ॲग्रेजी शब्द कोश के अनुसार - ‘‘शिल्प शब्द की व्युपत्ति शिल (बनना या उघना) धातु और पक (शिल पक) प्रत्यय से हुई है।’’[64] शील शब्द योग से बना है। ‘‘शिल का अर्थ है - चाल, व्यवहार, स्वभाव, उत्तम आचरण, अभ्यास आदि।’’[65] कोई भी कलाकार अभ्यासव्दारा ही कला का मार्जन करता है।

शिल्प विधि अथवा रचना पध्दती को अंग्रेजी में टेकनीक (Technique) शब्द का प्रयोग होता है। हिंदी में शिल्प, शिल्प विधी, शिल्प विधान आदि शब्दों का प्रयोग होता है। अंग्रेजी में शिल्प के लिए टेकनीक (Technique) के अतिरिक्त मेकनिक्स (Mechanics) सेटिंग (Setting) आर्टीस्ट्री (Artistrx) कन्ट्रक्शन (Constrution) तथा डिझाइन (Design) जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

शिल्प शब्द मुखतः मूर्तिकला तथा वास्तुकला से संबंधित है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार ‘‘शिल्पी पहले अगनढ़ शिला खण्डों की धैर्य के साथ अराधना करता है।’’

बृहद हिन्दी कोश में शिल्प का अर्थ है - ''कला आदि काम (वात्स्यायन ने चौसठ कलाये गिनाई है) हुनर कारी गरी, दक्षता, हस्तकर्म, रुप, आकृति निर्माण, धार्मिक कृत्य -अनुष्ठान। ''[67] वैज्ञानिक परिभाषा कोश में शिल्प का अर्थ है - ''साहित्यिक क्षेत्र में रचनाकार की वह कलागत दक्षता या निपुणता है, जिसके व्दारा वह अपनी कृति में अर्थ गांभीर्य विचार प्रभाव तथा शैली का निर्वाह करता है। ''[68]

अंतः शिल्प शब्द का शाब्दिक अर्थ है- चाल, व्यवहार, दस्तकारी, कारागीरी आदि।

2.8.2 शिल्प का स्वरुप

शिल्प विधि का शाब्दिक अर्थ है ''शैली से ज्यादा व्यापक वह उपादान जिनके व्दारा रचनाकार अपनी भावनाओ को किसी विशेष ढंग से व्यक्त करता है।''[69] बृहद हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश भाग - 2 के अनुसार टेकनीक के लिए शिल्पी विधि पध्दती रचना प्रणाली आदि का प्रयोग हुआ है।''[70] अर्थात शिल्प विधि का अर्थ है हाथ से किसी वस्तु को बनाने की पध्दत। शिल्प के माध्यम से ही रचनाकार अपने अनुभवों को कलात्मक अभिव्यक्ति देने में समर्थ होता है। अपनी अनुभूतिको व्यंजित करना तथा रचनाकार के दृष्टिकोन को साकार करने में शिल्प महत्वपूर्ण होता है। डॉ. लक्ष्मी नारायणलाल शिल्प विधान को रचना का व्यापक तत्व मानते हुए शिल्प के स्वरुप का विवेचन करते हुए लिखते है कि - ''जब भाव और अनुभूति की प्रेरणा मनुष्य के मन और मस्तिष्क में घनीभुत होती है, जब वह उसकी अभिव्यक्ति मे संलग्न होता है। अभिव्यक्ति के लिए वह कभी वाणी का सहारा लेता है। कभी आकृति का लेकिन वह अपने भाव प्रकाशन में अधिक से अधिक रोचकता, आकर्षकता और प्रभविष्णुता लाने के लिए अन्य रुप विधाओं की योजना करता है।''[71]

साहित्य निर्माण में शिल्प की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिल्प के माध्यम से ही रचनाकार अपने अनुभवों को अभिव्यक्त दे पाता है। रचनाकार की अनुभूति को व्यंजित करने के काम शिल्प के व्दारा ही संभव हो पाता है। शिल्प को परिभाषित करते हुए डॉ. जवाहर सिंह ने कहा है- ''शिल्प विधि से तात्पर्य किसी कृति के निर्माण की उन सारी प्रकियाओं तथा रचना पध्दतियों से है, जिनके माध्यम से रचनाकार अपनी अमुर्त जीवनानुभुतियों, मन प्रभावों और भावों को मुर्त रुप देकर अधिकाधिक संवेद्य और सौदर्यमूलक बनाता है।''[72] रचनाकार अपने अनुभव के आधार पर अपने भावों और विचारों का अभिव्यक्ति देता है, तब वह शिल्प का सहारा लेता है। शिल्प के व्दारा ही रचना को सवारा जा सकता है। इस संदर्भ डॉ. मंजुला देसाई का कथन है कि ''शिल्प तो कहानी की सूक्ष्मतम एवं गहतम अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। कहानीकार की अंतः प्रेरणा जब यथार्थ के धरातल पर व्यक्त होती है तब उसे सार्थक कलात्मक अभिव्यक्ति के स्तर ही पकड़ा जा सकता है।''[73] जटिल भाव बोध की अभिव्यंजना को शिल्प से व्यंजित किया जाता है।

साहित्य निर्माण में शिल्प की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस संदर्भ में डॉ. सुरेश बाबर का मत है कि ''शिल्प विधान रुप और अरुप के बीच, अनुभूति और अभिव्यक्ति के बीच तथा लेखक और पाठक के बीच का अनिवार्य माध्यम है। जब तक साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति की अनिवार्यता बनी रहेगी, तब तक अभिव्यक्ति के प्रकार के रूप में शिल्प का महत्व बना रहेगा।''[74] शिल्प विधि से रचनाकार अपनी अनुभूति और संवेदना को पूर्ण रुप देता है। शिल्प विधि के कारण ही संप्रेषणीयता, जटीलता, दुरुहता, सांकेतिकता, बिम्ब आदि का प्रभाव रचनाकार पर पड़ता है। कोई भी रचना प्रस्तुत करने में शिल्प महत्वपूर्ण होता है।

शिल्प के सहारे ही रचना पाठक तक मार्मिक ढंग से प्रस्तुत की जा सकती है। इससे स्पष्ट करते हुए बसंती पंत ने लिखा है कि "शिल्प किसी साहित्यिक कृति की रचना-प्रणाली का ही नाम है। शिल्प का मुख्य प्रयोजन रचना की बाहयकृति का निर्माण करना है। संक्षेप में रचना शिल्प का आशय किसी साहित्यिक कृति का रुप-निर्माण, रुप-रचना, रचना-विधान या रूप, विधायक तत्वों के आधार पर संयोजन है।"[75] रचनाकार अपनी कल्पनाओं को या विचारों को मूर्तरुप देकर उन्हें अधिक से अधिक सौदर्यमूलक बनाने का काम करते है। शिल्प के माध्यम से ही रचनाकार अपने लक्ष्य की प्राप्ति करता है। रचनाकार नये-नये शिल्प का प्रयोग कर अपनी अनुभूति को अधिक सुंदर बनाने का प्रयास करता है।

2.8.3 शिल्प की अनिवार्यता -

प्रत्येक रचनाकार अपनी-अपनी रचनाओं में शिल्प का प्रयोग करता है। शिल्प का प्रयोग रचना को सफलता प्रदान करता है। जो रचना को एक विशिष्ट आकार देता है, एक शक्ल देता है। शिल्प रचनाकार के लिए साधन है। साहित्यकार अपने मनोभावों, आवेगों तथा संवेदनाओं को एक स्थिर शिल्प के माध्यम से देता है। शिल्प के व्दारा कहानीकार अपनी कहानी पन को बनाए रखने के लिए या अधिक से अधिक प्रभावी बनाता है। वह अपने अनुभव को अभिव्यक्ति देने के लिए अपने अनुरुप शिल्प का प्रयोग करता है। डॉ. हनुमंत शेवाळे का कथन उल्लेखनिय है - "शिल्प ही वह साधन है, जिसके व्दारा कहानीकार अपने विजय की खोज जॉच पड़ताल और विकास करता है। शिल्प कहानीकार के मनोभावों को आकर देने के लिए सहायक सिध्द होते है। कहानी में कथावस्तु पात्र/चरित्र/संवाद, देशकाल वातावरण, भाषा शैली और उद्देश इन छः तत्वों से हर एक के साथ शिल्प होता है। कहानी में इन तत्वों का समावेश करने के लिए शिल्प का आधार लेना पड़ता है।"[76] अंतः कहानीकार

अपनी हर रचना में शिल्प का आधार लेता है और आकर्षक शिल्प पाठक को रचना पढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

प्रत्येक रचनाकार की अलग-अलग दृष्टि होती है। अपनी अपनी दृष्टि से रचनाकार शिल्प का प्रयोग अपनी रचना में करता है। परिवर्तन के साथ-साथ भी शिल्प में भी नये-नये प्रयोग हुऐ है। कहानीकार नये-नये शिल्प का प्रयोग अपनी कहानियों में करता है। उन्होंने शिल्पगत विशेषताओं को अपनाकर सहजता से शिल्प का प्रयोग अपनी कहानी में किया है। डॉ. लक्ष्मी नारायन लाल का कथन उध्दृत है - "कहानी के उक्त तत्वों से कहानीकार किसी एक या एकाधिक तत्वों पर बल दे सकता है। फिर भी समस्त तत्वों का सामूहिक प्रभाव कहानी कला की महत्वपूर्ण आत्मा है क्योंकि प्रत्येक तत्व अपने अपने स्थानपर विशिष्ट और मूल्यवान है। किसी न किसी रुप और स्तर में उन तत्वों का सहारा कहानीकार को अवश्य लेना पड़ता है।"[77] अंतः कहानी में रचनाकार शिल्प का सहारा लेकर ही अपने भाव तथा विचारों को अभिव्यक्ति देता है। अर्थात रचना की विशिष्ट योजना को शिल्प कहा जाता है। जिसका सहारा हर रचनाकार को लेना पड़ता है।

शिल्प का प्रयोग करते समय रचनाकार को यह ध्यान देना आवश्यक है कि अति शिल्प का आग्रह ना करे। अति शिल्प के आग्रह से रचनाकार को असफलता की ओर जाना पड़ता हे। इसलिए रचना शिल्प का संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है। अंतः रचना में शिल्प संतुलन रहे इसका ध्यान रचनाकार को होना चाहिए। शिल्प ही लेखक के पहचना का द्योतक बन जाता है। डॉ. त्रिभुवन सिंह के विचार के अनुसार - "शिल्प अथवा रचना का संबंध उस परिणति से है, जो कृति को सभी रचना-विधायक तत्वों के सहयोग से कृतिकार की प्रतिभा व्दारा प्राप्त होती है।"[78] रचनाकार को अपनी रचना में अधिक से अधिक रोचकता, आकर्षण, और प्रभविष्णुता लाने के लिए शिल्प का सहारा लेना पड़ता है। हर रचनाकार की

अभिव्यक्ति पध्दति तथा ढंग भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। अर्थात उसकी अभिव्यक्ति पध्दति, ढंग तथा कौशल को ही शिल्प कहा जाता है।

रचनाकार जीवन सत्य को अभिव्यक्ति देने के लिए उचित शिल्प का सहारा लेता है। शिल्पगत विशेषताओं के प्रयोजन सहजता से आत्मसात करके नये-नये प्रयोग कहानी में हुऐ है। शिल्प के भिन्नता के कारण ही पाठक साहित्य के प्रकारों को अच्छी तरह समझ लेता है। उत्कृष्ट शिल्प ही अभिव्यक्ति के सफल बना सकता है। सफलता के लिए रचनाकार को अतिशिल्प का आग्रह ना करते हुए उचित शिल्प का ही प्रयोग करना चाहिए। रचनाकार को अपनी वैचारिक दृष्टि के लिए कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल-वातावरण, भाषा, शैली आदि तत्वों का सहारा लेता है। इन सभी में भाषा महत्वपूर्ण है। रचना की सफलता भाषा की सम्प्रेषणीयता पर ही निर्भर है। संक्षेप में शिल्प वह साधन है, जिसके माध्यम से रचनाकार अपनी रचना को सहजता से प्रस्तुत करता है।

2.8.3.1 भाषा -

रचनाकार अपनी रचना को अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए सशक्त भाषा का प्रयोग करता है। भाषा भावाभिव्यक्ति का सहज माध्यम है, जिसके व्दारा हम अपने भावों को तथा विचारों को आसानी से दूसरों तक पहूॅचा सकते है। भाषा को विचार विनिमय का प्रमुख साधन माना गया है। लेखक अपनी मुर्त कल्पनाओं को भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त करता है। भाषा के संबंध में डॉ. सुरेश बाबर के विचार उध्दृत है - ''भाषा मनोभावों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। शैली उस साधन का उपयोग करने की रीति अथवा पध्दति है। भाषा की शक्ति पर शैली की उत्कृष्टता अवलम्बित होती है।''[79] अतः भाषा पर ही रचना की सफलता-असफलता निर्भर करती है। इसलिए रचनाकार को सशक्त भाषा का प्रयोग करना

चाहिए। कथावस्तु में रोचकता तथा प्रवाहमयता लाने के लिए चित्ताकर्षक भाषा एवं शैली की आवश्यकता होती है।

रचनाकार की सफलता-असफलता का श्रेय भाषा को ही जाता है। भाषा के व्दारा एक व्यक्ति के भाव, विचार दूसरे व्यक्ति के हृदय तक पहुँचने का काम किया जाता है। भाषा के अभाव में समाज गुँगा ही है। व्यक्ति और समाज को जोड़ने का महत्वपूर्ण काम भाषा का है। साहित्यकार लोकजीवन के अनुभवों को अपनी रचना में व्यंग्यात्मकता, बिम्बात्मकता, संगीतात्मकता ध्वन्यात्मकता, प्रतिकात्मकता आदि के व्दारा अभिव्यक्त करता है। भाषा भाव, विचारों का आदान-प्रदान का साधन है। अतः स्पष्ट है कि अपने भाव तथा विचार और भाषा का समन्वित रुप ही साहित्य है। रचनाकार की अनुभूतिको साहित्यिक रूप देने की क्षमता भाषा में होती है। डॉ. भोलानाथ तिवारी का कथन है कि - ''भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को दूसरों पर व्यक्त करते हैं या सोचते है।''[80] भाषा के माध्यम से ही रचनाकार अपनी संवेदना को व्यक्त कर सकता है।

जीवन के यथार्थ के साथ जुड़ने से भाषा भी यथार्थ होनी चाहिए। पाठक को आनंद की अनुभूतिभाषाव्दारा ही प्राप्त होती है। भाषा और शिल्प किसी भी साहित्यिक कृति के लिए अत्यावश्यक है। सूक्ष्म मनोभाव और जटिल से जटिल स्थितियों की प्रस्तुति भाषा व्दारा ही संभव होती है। भाषा भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, तो शिल्प भावाभिव्यक्ति में स्वच्छंद प्रणाालली का नाम है। भाषा के माध्यम से रचनाकर उच्च कोटि का स्थान प्राप्त करता है। किसी भी साहित्य की निर्मिती के लिए भाषा अनिवार्य है, भाषा के बिना साहित्य की कल्पना ही नहीं हो सकती। भाषा कृति का सबसे प्रभाव ढंग होने के कारण वह रचनाकार की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना जाता है। कथा साहित्य में भाषा की रोचकता ही पाठक को तन्मय करा देती है।

भाषा की जीवंतता ही साहित्यिक कृति को सफलता प्रदान करती है। जिस रचना की भाषा कथ्य को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकती है, वही रचना सार्थक या सफल हो सकती है। उपन्यास की भाषा संबंधी अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. सुरेश सिन्हा का मत है कि ''विकलांग भाषा उपन्यास के कथ्य यको न तो समर्थ बना सकती है न किसी संवेदनशीलता की प्रतीति ही दिला सकती है। वह मानवीय संदर्भो को कोई सार्थक संज्ञा भी नहीं दिला पाती। अपनी सूक्ष्मता, पैनेपन एवं काव्यात्मक, व्यंजनाओं से रहे ही उपन्यास की भाषा आज अर्थयुक्त हो सकती है।''[81] अंतः स्पष्ट है कि कोई भी रचना हो, कहानी है उसे सार्थक बनाने के लिए सशक्त भाषा का प्रयोग आवश्यक है। मानवीय संदर्भो को तथा संवेदनशीलता को उध्दृत करने के लिए सशक्त भाषा का होना जरुरी है। साहित्य सृजन के समय साहित्यकार सहजता से भाषा से जुड़ जाता है और रचना पूरी हो जाती है।

विश्व में कोई भी दो व्यक्ति समान नही है। शारिरीक दृष्टी से समानता होते हुए भी आचार-विचारों में भिन्नता पाई जाती है। भाषा के अभिव्यक्ति का ढंग भी अलग-अलग होता है। रचनाकार की मानसिकता को उजागर करनेवाली भाषा ही सर्वश्रेष्ठ है। भाषा ही रचना के अन्य तत्वों को संगठित करती है। भाषा के सहजता, सुंदरता, प्रभावोत्पादकता, शुध्द, स्वाभाविक परिष्कृत आदि गुण महत्वपूर्ण होते है। भाव और विचार साहित्य के प्रधान तत्व है, भाषा ही उन्हें मुर्त रुप देती है। रचनकार हमेशा नई भाषा की तलाश में रहता है। कथ्य के अनुरुप ही वह नई भाषा का प्रयोग करता है।

भाव को मूर्त रुप प्रदान करना तथा एक दूसरे की कमी को पूरा करना यह संभव भाषा व्दारा ही है। साहित्यकार अपनी भाषा व्दारा पाठक पर अपना प्रभाव एवं रोचकता उत्पन्न करने का काम करता है। युग के अनुरुप भाषा में परिवर्तन आते है। नये भाव तथा विचार के प्रस्तुतिकरण की क्षमता भाषा में नही होती इसलिए यह

परिवर्तन आता रहता है। पाठक को अंत तक रचना पढ़ने की रोचकता बनी रहनी चाहिए। भाषा में शब्द संस्कार का विशेष महत्व है। साहित्यकार साधारण भाषा को अपनी कुशलता से विशेष भाषा बनाने का सामर्थ्य रखता है। चतुर्भुज सहाय ने लिखा है कि - ''भाषा मुख्य रुप से विचारों एवं भावों के सम्प्रेषण का साधन है।''[82]

साहित्य में भाषा का एक अलग स्थान निहित है। भाषा भौगोलिक एवं प्रांतिय वातावरण के अनुसार परिवर्तित होती है। मानव विकास के साथ भाषा का भी विकास होता है। जीवन के यथार्थ को उदघाटित करने का काम साहित्य व्दारा ही होता है। भाषा की जीवंतता ही साहित्यिक कृति को सफलता प्रदान करती है। अंतः भाषा भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा के व्दारा ही जनजीवन का संचालन होता है। इसलिए व्यक्ति के सामाजिक जीवन के लिए भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

2.8.3.2 शब्द प्रयोग -

शब्द ही भाषा का अस्तित्व है। भाषा की दीवार शब्दों पर ही टिकी हुई है। भाषा में सर्वप्रथम स्थान भाषा का ही है। शब्द का अर्थ ध्वनि है। और वही ध्वनि भाषा को समर्थ बनाने का काम करती है। आचार्य दण्डी ने इस संदर्भ में 'काव्यदर्श' ग्रंथ में लिखा है कि ''शब्द की ज्योति से ही विश्व उदभाषित है, अगर शब्द नही रहते तो इस दूनिया में अन्धेरा ही छाया रहता है।''[83] शब्द के बिना किसी भाव या विचारों को उदघोषित करना असंभव है।

हमारे मन की बात को स्पष्ट करने में शब्द ही सबसे बड़ा साधन है। शब्द से ही भाषा का निर्माण संभव है। भाषा संघटना में शब्द से ही भाषा का निर्माण संभव है। भाषा संघटना मे शब्द को ही सबसे बड़ा स्थान है। शब्द सामाजिक जीवन के संदंर्भो के साथ अत्यंत घनिष्टता पूर्वक जुड़ जाते है। साहित्यकार बोलचाल की भाषा

को अत्याधिक प्रभावशाली एवं स्वाभाविक बनाने के लिए सार्थक शब्दों का प्रयोग करता है। जिसके कारण रचना में सजीवता, रोचकता, प्रवाहशीलता एवं स्वाभाविकता आ जाती है।

भाषा के मुल शब्द को तत्सम शब्द, संस्कृत-पाकृत से परिवर्तित होकर हिंदी में आये हुए तदभव शब्द तथा देशज शब्द, विदेशी भाषा के विदेशी शब्द तथा अरबी, फारसी, तुर्की आदि कई शब्द हिंदी में आये है। साहित्यकार अपनी रचना में सार्थक शब्दों का प्रयोग कर रचना को सफल बनाने का प्रयास करता है।

2.8.3.3 शैली -

साहित्यकार रचना में अपने अनुभव, भाव तथा विचारों को अभिव्यक्त करता है। समाज जीवन की अनुभूतियों को रोचक, प्रभाव, चमत्कारी, सजीव तथा हृदयस्पर्शी, मार्मिकता से प्रस्तुत करता है। इन अनुभुतियों को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करने में शैली महत्वपूर्ण है। चाल, रीति, पध्दती आदि सभी शब्द शैली के पर्यायवाची है। साहित्य में शैली को महत्वपूर्ण स्थान है।

2.8.3.3.1 शैली का अर्थ -

हिंदी का 'शैली' शब्द अँग्रेजी के 'स्टाईल' और संस्कृत के 'रिति' शब्द से संबंध रखता है। नालंदा शब्द सागर में शैली का अर्थ है - "1. चाल, ढंग 2. प्रणाली / तज 3.प्रथा/रिवाज 4. वाक्य रचना का वह ढंग जो लेखक की भाषा संबंधी निजी विशेषताओं का सूचक होता है। स्टाइल 5. समुह जिनकी विशेषताओं में उनके कर्ताओ की मनोवृत्ति की एकरुपता के कारण सामान्य हो कलम।"[84] भोलानाथ तिवारी ने शैली शब्द के मूल 'शील' शब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही माना है और स्पष्ट किया है कि "शील एक देवता विशेष है, जिसका मेध्य अंजली विधा है। इस विधा में 'लीपना' 'अंजना' तथा पालिश करना आदि का आना 'शील' शब्द के अर्थ के

स्तर पर 'शैली' के नीकट लाता है।''[85] रचनाकार का संबंध अपनी एक विशिष्ट अभिव्यक्ति शैली से रहता है। वह अपनी रचना प्रचलित शैली में प्रस्तुत करता है। रचनाकार की रिति, पध्दति तथा ढब ही शैली है।

2.8.3.3.2 शैली की परिभाषा -

डॉ. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने शैली की परिभाषा देते हुए कहा है कि - ''शैली भाषा तथा साहित्य को जोड़नेवाली संकल्पना है, जिसके संदर्भ में कहा जाता है कि शैली सहेतुक भाषिक अभिव्यक्ति है और दूसरी ओर साहित्य और कला को जोड़नेवाली संकल्पना है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि शैली कलात्मक सौदर्य की संरचना है।''[86]

बाबु गुलाबराय का मत है कि ''शैली में न तो इतना निजीपन हो कि वह सनक की हद तक पहुँच जाए और न इतनी सामान्यतः हो की वह नीरस और निर्जीव हो जाए। शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रुप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।''[87]

आचार्य श्यामसुंदरदास ने शैली की व्याख्या इस प्रकार दी है - ''भाव, विचार और कलपना तो हम में नैसर्गिक अवस्था में वर्तमान रहती है और साथ ही साथ उन्हें व्यक्त करने की स्वाभाविक शक्ति थी। इसमें रहती है। यदि उस शक्ति को बढ़ाकर सुसंस्कृत और उन्नत करके हम संसार के ज्ञान भण्डार की वृध्दि करके उसका बहुत कुछ उपकार कर सकते है। इसी शक्ति को साहित्य में 'शैली' कहते है।''[88]

समय स्थिति तथा विषय के रुप शैली की विभिन्न पध्दतियों का होना जरुरी है। साहित्यकार के लेखन की पहचान शैली व्दारा ही होती है। भाव, विचार को सम्प्रेषित करनेवाली प्रणाली ही शैली है।

2.8.3.3.3 शैली के विविध रुप -

युग बोध और युग के सत्य को प्रस्तुत करने के लिए रचनाकारों ने अनेक शैलियों का प्रयोग किया। । समसामायिक सामाजिक चेतना के सृजन हेतु विविध शैलियों तथा शैली के उत्पादनों को स्वीकार करते हुए उसे यथा प्रसंग प्रदर्शित किया । रचना को गतिशीलता, जीवंतता एवं प्रभावमयी बनाने के लिए विभिन्न शैलियों का प्रयोग रचनाकार ने अपनी रचना मे किया । शैलियों के विविध रुप इस प्रकार है-

वर्णनात्मक शैली -

इस शैली में रचनाकार अन्य पुरुष के रुप में कथा का विस्तार करता है । विषय विस्तार की जहॉ आवश्यकता होती है वहॉ रचनाकार अपनी बात स्पष्ट करना चाहता है, वहॉ वर्णनात्मक शैली अपनाई जाती है । इसमें रचनाकार को अपने आपको अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता रहती है ।

1. **पूर्व दीप्ति शैली -** पूर्व दीप्ति या प्लैश बैक शैली में जीवन की घटनाओं का वर्णन स्मृति-पटल के रुप में होता है । जीवन के सुख और दुख की घटनाऍ मनुष्य की मन पटल पर अजरामर रहती है । परिस्थितिनुरुप मन पटल की घटनाऍ प्रस्तुत होती है । अंतः अतीत की घटनाओं को पुनः प्रस्तुत करना यह पूर्व दीप्ति शैली है ।
2. **आत्मकथात्मक शैली -** प्रथम पुरुष की ओर से प्रस्तुत किये जानेवाली रचना की शैली आत्मकथात्मक शैली कही जाती है । इस शैली में 'मैं' की माध्यम से रचना को प्रस्तुत किया जाता है । इसमें घटना की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्व दिया जाता है ।

3. **पत्र शैली -** पत्राात्मक शैली में लिखी गई रचना की कथावस्तु का विकास अपने आत्मीयजनों को लिखे गये पत्रों के माध्यम से होता है।पात्रों की आंतरिकता को अधिक स्पष्ट करने के लिए वह शैली अधिक उपयुक्त है। प्रत्यक्ष रुप में बात कहने में संकोच होता है, वही बात हम पत्र व्दारा कह सकते है।

4. **विवरणात्मक शैली -** विवरणात्मक शैली परंपरागत है। सामान्यतः इस शैलीव्दारा घटनाओ का विवरण प्रस्तुत किया जाता है। कहानी तथा उपन्यास विधाओं में अस विवरणात्मक शैली का प्रयोग अधिक किया जाता है। घटनाओं का विवरण पात्रों व्दारा प्रस्तुत किया जाता है। परिवेश का यथार्थ चित्रण तथा प्रामाणिकता का आभास दिलाने के लिए रचनाकार इस शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में करता है।

5. **संवाद शैली -** संवाद शैली का प्रयोग नाटय विधा में अधिक मात्रा किया जाता है। कथानक में जीवंतता लाने के लिए रचनाकार इस शैली का प्रयोग करता है। पात्रों के संवादों से कथावस्तु प्रस्तुत होती है, या गति प्रदान की जाती है। कहानी, उपन्यास विधा में इस संवाद शैली का सफलता के साथ प्रयोग किया जाता है।

6. **दिवास्वप्न शैली -** मनुष्य अचेतन मन की बातें जादातर स्वप्न में देखता है। जादात्तर स्वप्न की बातें उसकी कल्पना पर आधारित होती है। रचनाकार इस शैली का प्रयोग अपनी कथावस्तु को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है।

7. **व्यंग्यात्मक शैली -** चर्तुर्वेदी के अनुसार 'आलम्बन के प्रति तिरस्कार, उपेक्षा या भर्त्सना की भावना लेकर बढ़नेवाला हास्य 'व्यंग्य' कहलाता है।''[89] सर्जनात्मक लेखन में इस शैली का प्रयोग किया जाता है। समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है।

8. **प्रतीकात्मक शैली -** कठिन भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतिकात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है । प्रतीक के पीछे कोई भाव या विचार रहता है । प्रतीक तथा प्रतीकात्मक चरित्रों व्दारा रचनाकार विचार बिन्दुओं को संकेतित करता है ।

10.डायरी शैली-

अपने जीवन की घटनाओं, प्रसंगों, अनुभवो को डायरी शैली में प्रस्तुत किया जाता है । डायरी हररोज लिखी जाती है । आत्मसंघर्ष तथा मनो विश्लेषणात्मक चित्रण के लिए यह शैली अत्यंत उपयुक्त है । चरित्रों का विकास डायरी शैली के माध्यम से किया जाता है । कहानी तथा उपन्यास विधा में इस शैली का प्रयोग किया जाता है । इसके अतिरिक्त काव्यात्मक शैली, चेतना-प्रवाह शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली का भी प्रयोग रचनाकार अपनी रचना को सफल बनाने के लिए करता है ।

2.8.3.4 फैंटेसी -

बृहद हिंदी कोश में इसका अर्थ है ''भावना, कल्पना, विलक्षण अथवा अदभुत कल्पना, हवाई कल्पना, रचना, रुप, विचार, लहर, मौज, सनक, भावनाशक्ति, कल्पनाशील, मनोरथ, सृष्टि करने की क्षमता है ।''[90]

नगेद्र के अनुसार ''इसका अर्थ स्वप्न चित्र है । फैंटसी के प्रयोग में रचनाकार के मुख्य तीन उद्देश है पाठक का मनोरंजन करना यथार्थ से पलायन करना तथा सदोष मानव एवं उसके व्दारा निर्मित दोषयुक्त संसार के प्रति नया दृष्टिकोन उपस्थित करना ।

2.8.3.5 कहावतें - रचनाकार अपनी रचनाओं मे कहावतों का प्रयोग कर रचना में चमत्कार के लिए करता है l कहावतों में गागर में सागर भरने की क्षमता होती है l कहावतें पाठकों पर अपना अलग छाप छोड देते है l

2.8.3.6 सुक्तियॉ- जीवन सत्य को उदघाटित करने के लिए रचनाकार सुक्तियों का प्रयोग करता है l अपने विचार पाठक तक पहॅुचाने के लिए रचना में सुक्तियों का प्रयोग किया जाता है l रचना में प्रभाव उत्पन्न करने का काम सुक्तियॉ करती है l

निष्कर्ष -

समग्रतः कहा जा सकता है कि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियॉ मनुष्य की संवेदना को विविधता प्रदान करती है l तर्क करने के लिए हमे पहले संवेदन होना आवश्यक है l संवेदना ज्ञान का सरल और सहज रुप है l जीवन का व्यापक अनुभव ही संवेदना है l संवेदना का संबंध हमारी इन्द्रियों से है और यह इंन्द्रिय हमारे भाव जगत को प्रभावित करते है l समाज में घटित प्रसंग से मनुष्य विभिन्न प्रकार के अनुभव लेता है l संवेदना के आधार पर ही बाहय जगत के प्रत्ययो का ज्ञान बढ़ता है l मनुष्य की परिस्थिति अनुरुप पड़नेवाले सभी अनुभव को संवेदना नहीं कहा जा सकता l

कोई घटना या प्रसंग देखकर हमारे मन में जो भाव उत्पन्न होना ही वह संवेदना है l बिना अर्थज्ञान से संवेदना का ज्ञान नहीं होना l मानसिक संवेदना में मनुष्य सुख और दुख दोनों प्रकार की संवेदना का अनुभव करता है l साहित्यकार संवेदना के बिना साहित्य निर्मिती नही कर सकता l मानव और संवेदना का अटुट संबंध है l मनुष्य की बौध्दिक क्षमता के आधार पर ही संवेदना निर्माण होती है l समाज में घटित घटनाओं का ंवेदना जागृत करती है l मानव मस्तिष्क और संवेदना का गहरा संबंध है l संवेदनशील व्यक्ति अपने अनुभव व्दारा ही संवेदना को प्राप्त

करता है। मनुष्य मन के भाव संवेदना के लिए महत्वपूर्ण माने जाते है। साहित्यकार के मन में रचना लिखते समय कोई न कोई संवेदना अवश्य रहती है और रचना के माध्यम से वह पाठक की संवेदना को जागृत करता है। अपनी रचना के माध्यम से ही रचनाकार संवेदना को एक नई दृष्टि प्रदान करता है। संवेदना के आधार पर ही बाहय जगत् के प्रत्यय बनते है।

संवेदना और साहित्य का गहरा संबंध है। साहित्य के मूल में संवेदना होती है। समाज, परिवेश तथा मनःस्थिति व्दारा उत्पन्न संवेदना ही साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। साहित्यकार जिस युग का हो उसी युग की संवेदना रचना में प्रस्तुत होती है। संवेदना के बिना साहित्य हो ही नहीं सकता। साहित्यकार के मन में संवेदनात्मक अनुभूति निर्माण होती है। उस अनुभूति को वह साहित्य में चित्रित करता है। रचनाधर्मी संवेदना समाज को नई दिशा प्रदान करता है। रागात्मक और दुखात्मक संवेदना के भेद है।

मनुष्य का संबंध समाज से है, इसलिए सामाजिक संवेदना उसके लिए महत्वपूर्ण है। रचनाकार सामाजिक यथार्थ को संवेदना के धरातल पर प्रस्तत करता है। संवेदना व्यक्ति की व्याख्या करती है और व्यक्ति उस व्याख्या के अनुरुप स्वयंम को ढॉलने की कोशिश करता है। आज समाज में राजनीतिक संवेदना प्रासंगिक हो उठी है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य आज जागृत हो गया है। भारतीय राजनीति के बदलते स्वरुप को देखते हुए लोगों में असंतोष की भावना दिखाई देती है। साहित्यकार इस प्रकार की मानवीय संवेदना को अपने साहित्य के व्दारा वाणी प्रदान करता है।

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता, पुनर्जन्म, कुंडली आदि कई बातों का महत्व रहा है। धर्म और समाज का गठन सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है।

स्वतंत्रता के पश्चात परिवर्तित संस्कृति का चित्रण रचनाकार ने किया है। प्रत्येक युग के मानवीय संवेदना के साथ संस्कृति जुड़ी रहती है। प्रत्येक युग की वैयक्तिक संवेदना उसका अपना एक सुगंठित रुप होता है। वैयक्तिक संवेदना समाज पर आश्रित रहती है।

प्रत्येक रचनाकार अपने अनुभवों को शिल्प के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। बदलते परिवेश तथा सामाजिक संदर्भ को अभिव्यक्त करने के लिए उसे शिल्प का ही सहारा लेना पड़ता है। जटिल भावबोध की अभिव्यंजन के शिल्प से व्यंजित किया जाता है। किसी कृति की रचना-प्रणाली का नाम शिल्प है। रचनाकार अपने कल्पना और भावों को मूर्त रूप देने के लिए अधिक से अधिक सौदर्य मूलक बनाने के लिए शिल्प का सहारा लेता है। रचना की विशिष्ट योजना ही शिल्प है। शिल्प के माध्यम से रचनाकार जीवन सत्य का अभिव्यक्ति दे पाता है। भाषा की जीवंतता रचना को सफलता प्रदान करती है। जीवन के यथार्थ को उदघाटित करने का काम साहित्य का है। अंतः रचनाकार अपनी रचना को प्रस्तुत करते समय भाषा विशेषताओं को तथा शिल्प का सहारा लेता है।

संदर्भ -

1. हिंदी साहित्यकोश - संपा. धीरेन्द्र वर्मा - पृ. 863
2. संस्कृत हिंदी कोश - वामन शिवराम आपटे - पृ. 1049
3. अन्तिम दशक की हिन्दी कहानियॉ - संवेदना और शिल्प - डॉ. नीरज शर्मा - पृ. 28
4. हिंदी शब्द सागर - (10 भाग) श्याम सुंदरदास - पृ 4839
5. मानक हिंदी कोश - रामचंद्र वर्मा (5 भाग) - पृ. 237
6. व्यावहारिक हिन्दी - अंग्रेजी शब्दकोश - भोलानाथ तिवारी तथा महेंद्र - पृ. 646
7. अन्तिम दशक की हिंदी कहानियॉ - संवेदना और शिल्प - डॉ. नीरज शर्मा - पृ. 28
8. हिंन्दी पर्यायवाची कोश - भोलानाथ तिवारी - पृ. 626
9. मानक हिंदी कोश - (5 भाग) - संपा. रामचंद्र वर्मा - पृ. 1236
10. हिंदी साहित्य कोश - संपा. धीरेन्द्र वर्मा (भाग 1) - पृ. 863
11. अज्ञेय की काव्य तितीषी - आ.नन्द किशोर पृ. 17
12. आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान - अरुणकुमार सिंह और आशिषकुमार सिंह - पृ. 99
13. वही- पृ. 99
14. हिंदी साहित्य कोश - (भाग 1) - पृ. 863
15. वही- पृ. 863

16. अन्तिम दशक की हिंदी कहानियॉ - संवेदना और शिल्प - डॉ. नीरज शर्मा ऊ

पृ. 29

17. हिंदी उपन्यास - सुरेश सिन्हा - पृ. 57

18. सर्वेश्वर की काव्य संवेदना और संप्रेषण - हरिचरण शर्मा - पृ. 112

19. चिंतामणी भाग - 1 आ. रामचंद्र शुक्ल - पृ.4

20. कविता में संवेदना का स्वरुप - तपेश चर्तुवेदी - पृ. 112

21. आधुनिक हिन्दी कविता - रामदरश मिश्र- पृ. 23

22. चिंतामणी भाग - 1 आ. रामचंद्र शुक्ल - पृ.103

23. हिंदी साहित्य कोश -(भाग 1) धीरेन्द्र वर्मा - पृ. 863

24. समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक -शेखर शर्मा - पृ. 24

25. अस्मिता के संवेदन - वीरेंन्द्र सिंह - पृ. 31

26. वही- पृ. 25

27. अन्तिम दशक की हिन्दी कहानियाँ ः संवेदना और शिल्प डॉ.नीरज शर्मा,

पृ.30

28. हिन्दी कविता ः संवेदना और दृष्टि-राम मनोहर त्रिपाठी-पृ.36

29. वही-पृ.36

30. कामरेड का कोट-सृंजय-पृ.110

31. तिरिछ-उदय प्रकाश-पृ.58

32. समाजवादी यथार्थवादी और नागार्जुन-प्रेमलता दुआ-पृ.19/28

33. स्वाधिनता और राष्ट्रिय साहित्य-डॉ.रामविलास शर्मा-पृ.33

34. निराला के साहित्य में सामाजिक चेतना-सुरेश शर्मा-पृ.16/17

35. Principles of society-F.H.Gindwings-John Moreqy-p.11

36. सर्जन और संदर्भ-अज्ञेय-पृ.17

37. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामाईक दृष्टि-डॉ.मंजूर सैय्यद-पृ.52

38. समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक-शेखर शर्मा-पृ.33

39. प्रगतिवाद एक समीक्षा-धर्मवीर भारती-पृ.61

40. नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में युगबोध-डॉ.अजय पटेल-पृ.137

41. विमर्श के विविध आयाम-डॉ.अर्जुन चव्हाण-पृ.125

42. समग्र उपन्यास-कमलेश्वर-पृ.404

43. कविता के नये प्रतिमान-नामवर सिंह-पृ.84

44. हिन्दी विश्व कोश-नगेंद्र-पृ.444

45. बृहद हिंदी कोश-कालिका प्रसाद-पृ.635

46. आधुनिक हिंदी शब्दकोश-गोविंद चातक-पृ.605

47. संस्कृति और सौंदर्य-डॉ.रामसजन पाण्डेय-पृ.06

48. मधुमती-सितम्बर-1986-पृ.02

49. संस्कृति और सौंदर्य-डॉ.रामसजन पाण्डेय-पृ.11

50. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन-डॉ.सुरेश बाबर-पृ.70

51. धर्मवीर भारती युगचेतना और अभिव्यक्ति-डॉ.सरिता शुक्ला-पृ.117

52. आठवे दशक के हिन्दी उपन्यासों में आधुनिक बोध-डॉ.शोभा देशपांडे-पृ.79

53. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता-डॉ.प्रसन्न कुमार आचार्य-पृ.4

54. सांस्कृतिक भारत-भगवत शरण उपाध्याय-पृ.12

55. छठे दशक के उपन्यासों में लोक संस्कृति-डॉ.महेंद्र रघुवंशी-पृ.46

56. साहित्य एवं संस्कृति चित्रण-डॉ.राधेश्याम शर्मा-पृ.102/103

57. आ.हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना-डॉ.शिवशंकर त्रिवेदी-पृ.26

58. समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक-शेखर शर्मा-पृ.31

59. वही-पृ.31/32

60. समकालीन में नयी संवेदना-विकल्प कथा साहित्य विशेषांक-श्रीपतराय-पृ.27/28

61. बृहद हिन्दी पर्यायवाची शब्दकोश-गोविं चातक-पृ.268

62. हिंदी पर्याय वाची कोश-डॉ.भोलानाथ तिवारी-पृ.602

63. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, संपा.रामचंद्र वर्मा-पृ.925

64. संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी. बी.एस.आप्टे-पृ.1554

65. हिन्दी शब्दकोश का संक्षिप्त संस्करण-रामचंद्र पाठक-पृ.610

66. कला और संस्कृति-वासुदेव अग्रवाल-पृ.232

67. बृहद हिंदी कोश-कालिका प्रसाद-पृ.567

68. वैज्ञानिक परिभाषा कोश-बदरीनाथ कपूर-पृ.205

69. बृहद हिन्दी कोश-कालिका प्रसाद-पृ.1130

70. बृहद अंग्रेजी हिंदी कोश-सं.सत्यप्रकाश बलभद्र प्रसाद-पृ.1390

71. हिन्दी कहानी में शिल्प विधि का विकास, डॉ.लक्ष्मी नारायण लाल-पृ.01

72. हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि-डॉ.जवाहर सिंह-पृ.01

73. कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन-डॉ.मंजुला देसाई-पृ.205

74. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन-डॉ.सुरेश बाबर-पृ.170

75. हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास-डॉ.प्रताप नारायण टण्डन-पृ.346

76. महीपसिंह की कहानी कला शिल्प के परिपेक्ष्य में-डॉ.हनुमंत-पृ.153

77. हिंदी कहानियों में शिल्प विधि का विकास-डॉ.लक्ष्मी नारायण लाल-पृ.295

78. हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग-डॉ.त्रिभुवन सिंह-पृ.240

79. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन-डॉ.सुरेश बाबर-पृ.186

80. भाषा विज्ञान-प्रयोग-डॉ.भोलानाथ तिवारी-पृ.9

81. हिन्दी उपन्यास-डॉ.सुरेश सिन्हा-पृ.364

82. भाषा-नवंबर-दिसंबर-2005-पृ.99

83. कुमार कृष्ण की कविताएँ : अनुभूति और उसकी रचनात्मकता-इन्द्रबहादूर

सिंह-पृ.43

84. नालंदा शब्द सागर-श्रीनवलजी-पृ.1358

85. शैली विज्ञान-भोलानाथ तिवारी-पृ.11

86. संरचनात्मक शैली विज्ञान-डॉ.रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव-पृ.291

87. सिध्दात और अध्ययन-बाबू गुलबिराय-पृ.190

88. उपन्यास सिध्दात और समिक्षा-डॉ.मख्खनलाल शर्मा-पृ.86

89. नवम् दशक के उपन्यास : संवेदना और शिल्प-डॉ.कल्पना हसाके-पृ.237

90. बृहद अँग्रेजी-हिंदी कोश-हरदेव बाहरी-पृ.690

तृतीय अध्याय

3.0 इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण की कहानियों में परिवेश एवं परिस्थितियाँ

3.1. इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण की कहानियों में सामाजिक परिवेश एवं परिस्थितियाँ

3.2. इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण की कहानियों में राजनीतिक परिवेश एवं परिस्थितियाँ

3.0 इक्कीसवीं सदी जे प्रथम दशज ज्ी हिंदी जहानियों में परिवेश एवं परिस्थितियाँ:-

प्रस्तावना :

साहित्यकार आम आदमी की अपेक्षा समाज जीवन का अंकन अधिक तीव्रता से करता है। समाज साहित्य से प्रभावित होता है और साहित्य समाज से "कवि और लेखक को बनाता है, तो लेखक और कवि समाज को।"[1] लेजज समाज की जाति, काल और स्थिति से प्रभावित होकर साहित्य की निर्मिती करता है। सुखी जीवन की कल्पना करके मनुष्य आज भौतिकता की ओर अधिक झुका हुआ दिखाई देता है। परिणाम स्वरूप उसे अनेक समस्यओं से जुड़ना पड रहा है। समाज के बदलते स्वरूप के कारण समस्याएँ भी कालानुरूप बदलती रहती है। इस बदलते जीवन स्वरूप को आठवें दशक की महिला कथाकारों ने विविध जीवन संदर्भों पर साधिकार लेखन किया है। हिंदी कहानी के क्षेत्र में अपनी सक्रियता दिखाते हुए इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशज ज्ी जहानियों में सामाजिक जीवन की ज्वलंत समस्याओं को चित्रित किया है। इस अध्याय में -ासिरा शर्मा ज्ी जहानियों में चित्रित सामाजिक परिवेश के विविध पहलुओं पर तृतीय अध्याय में विस्तार से विवेचन प्रस्तृत करने से पहले हम कहानियों का परिवेश के अनुसार विभाजन करेंगे।

3.1. सामाजिक परिवेश एवं परिस्थितियाँ:-

आधुनिक जीवन के प्राय: सभी विषयों में दाम्पत्य तथा दाम्पत्येत्तर संबंध मूल्यों जा -हास, तलाक, विधवा जीवन, व्यक्ति की यौनभावनाएँ, वेश्याजीवन आदि से संबंधित आत्याधिक उत्कृष्ट कहानियाँ की रचना की हैं। नया कथ्य तथा निरन्तर नये-नये प्रयोग उनकी कहानियों की खास विशेषता रही है। अपने परिवेश, की गतिविधियाँ, संवेदनाएँ, घटनाएँ आदि का वर्णन उनकी कहानियों में

चित्रित हैं। इस संदर्भ में नासिरा शर्मा का कथन है कि "अधिकतर लेखक परिवेश पर लिखते हैं, क्योंकि उनकी भावभूमि की प्रामणिकता उसी में निहित होती है और वही इन्सानी स्वभाव की जटिलता का रहस्य खोलते हैं।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि इक्कीसवीं सदी के कहानिकार में मानसिकता प्रारंभ से ही समाजधर्मी और यथार्थपरक रही हैं।

बाल्यावस्था में लड़कियों का विवाह होने पर उन्हें कम उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारी सँभालनी पड़ती है। खेलने-खाने की उम्र में ही बालिका का शारीरिज-मानसिक शोषण किया जाता है। भारतीय समाज में अनेक धर्मों में ऐसे विवाह संपन्न होते हैं। कम उम्र में किए गये ऐसे विवाह को भारतीय कानून के अनूसार बालविवाह कहा जाता है। बाल विवाह का प्रमुख कारण है आर्थिक स्थिति और अशिक्षा। इन्हीं दो कारणों से आज नारियों का जीवन नरकीय बन चूका है। इस संबंध डॉ. मंजुर सैय्यद ने अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहा है कि "विभिन्न जातियों-उपजातियों के परिवारों में परंपरागत प्रथा का पालन करनेवाले कुछ परिवार हैं जो अशिक्षा एवं नासमझ जे जारज जुसुम जोमल बालिकाओं का बालविवाह जैसी कुप्रथाओं की बलि चढ़ा देते हैं।"[3] जरीबी, दहेज, अशिक्षा के कारण अधिकतर माता-पिताओं की इच्छा होती है कि किसी तरह उसका विवाह हो जाए। आज समाज में अधिकतर निम्नवर्ग में इसप्रकार के विवाह दिखाई देते हैं। बाल विवाह के कारणों की मीमांसा करते हुए डॉ. नागेश राम त्रिपाठी का कथन है कि, "धार्मिक भावना ने इसे बल दिया है, ज़ृषि प्रधानता, कुलीन विवाह, दहेज प्रथा, अशिक्षा, संयुक्त परिवार प्रथा आदि इसके प्रमुख कारण रहे हैं।"[4]

नासिरा शर्मा की कहानियों में बालविवाह प्रथा का चित्रण 'वही पूराना झ ूठ' कहानी के माध्यम से किया है। मुस्लिम समाज में इस प्रकार की प्रथा हमें अधिक दिखाई देती है। कहानी की नायिका रज्जो भी एक अनाथ लड़की का

पाल-ा-पोषण करती है। बड़ी होने पर उस अनाथ लड़की (जाहिदा) के विवाह को लेकर चिंतित है। उसे पता है अविवाहित लड़कियों के प्रति युवकों के मन में वासना भरी रहती है। इसलिए वह जाहिदा का विवाह उम्र से पहले सलीम से तय करती है। बेसहारा रज्जो चाहती है कि कल गाड़ी छुटने से पहले उसे किसी मर्द के हवाले करे। जो उसका सहारा होगा। वह सोचती है कि "आखिर औरत जात है, घर तो बसाएगी। सलीम न सही तो बरकत और बरकत न सही तो कोई लुला-लँगडा। आखिर मर्द का बच्चा औरत के लिए बड़ा मायने रखता है।"[5]

"विधि नियम के अनुसार पति-पत्नी का संबंध विच्छेद तलाक है।"[6] "तलाक-पुं "(अ) 1 पति और पत्नी का विधि या नियम के अनुसार वैवाहिक संबंधों ज ा होनेवाला पूर्ण विच्छेद।2 बोल-चाल में, किसी चीज को सदा के लिए छोडना या त्याग देने की क्रिया या भाव। क्रि. प्र. देना।"[7] नारी स्वातंत्र्य को लेकर अनेक विद्वानों के विचार नई करवटें ले रहे हैं। आज वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी के बीच संघर्ष, द्वंद्व होने पर वैवाहिक जीवन सुरक्षित रहे यह आवश्यक नहीं है। पति-पत्नी के संबंध में दरार उत्पन्न होती है, तो उनके सामने अपनी स्वतंत्रता के लिए तलाक का रास्ता होता है। इस तलाक को लेकर डॉ. मंजूर सैय्यद ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि "नारी सुधार एवं वैज्ञानिज चिंतन से, धर्मा-ध प्राचीन रूढ़ियों के जर्जर एवं क्षीण होने से विवाह-विच्छेद की समस्या उत्पन्न हुई है।"[8] आज तलाक संबंधी नियमों में बहुत व्यापक बदलाव हो चुका है। इसी बदलाव के कारण आज विवाह ईश्वर निर्मित संबंध न मानकर रह गया है।

आज तलाक एक प्रमुख समस्या बन गई है। प्राचीन काल में पति के मृत होने पर उसे पुर्नविवाह की अनुमति दी जाती थी। आज नारी शिक्षित होने के कारण अपने स्वाभिमान तथा अपने अस्तित्व के लिए वह समझौता नहीं कर रही

है। पति-पत्नी में सामन्जस्य की कमी होने कारण वह तलाक को अपनाकर अपना सुखी जीवन बिताना चाहती है। नारी आर्थिक संपन्न होने के कारण वह पति के दबाव तंत्र को सहने को तैयार नहीं है। इन्हीं परिस्थितिओं के कारण आज तलाक की संख्या में वृध्दि हो रही है। तलाक समस्याओं के कारण आज कई स्त्रियों का जीवन दुखमय बन गया है। "न्याय-व्यवस्था तलाक पीड़ितों के लिए है किंतु उसका पालन करने में पक्षकार की ओर से अन्याय, अटकावं, अटकलें, समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।"[9]

'दादगाह' कहानी में एक पत्नी अपने पति से मुक्त होना चाहती है। वह न्यायाधीश अकबर तेंहराची से कहती है- "मेरे रहते यह दूसरी औरतों के साथ घुमे, कहाँ का इन्साफ हैं? मैं एक मिनट इस बेवफा हरजाई मर्द के साथ नहीं रह सकती हूँ।"[10] ज़मरा नं 59 में एक और पति की शिकायत करती हुई कहती है कि मेरे पति होटल में ले जाने के बजाए जहाँ मौत होती है, वहाँ ले जाते हैं। रोज-रोज रोने से जब उदासी घिर आती है तो वे मन ही मन हँसते हैं। नासिरा की 'संगसार', 'नई हुकुमत' कहानियाँ भी तलाक समस्या को चित्रित करती हैं। लेखिका ने पति-पत्नी के दरारों के कई कारणों को रेखांकित किया है।

भारतीय समाज में विवाह एक सामाजिक संस्कार के रूप में माना जाता है। नारी का जीवन एकाकी अपूर्ण रहता है। पति के बिना उसका जीवन सुखमय नहीं बन सकता। सन्तान प्राप्ति के लिए विवाह प्रथा का आरंभ हुआ।.समाज में विवाह धार्मिक नीति-नियमों के अनुसार होते थे। शिक्षित समाज अपने व्यक्ति स्वातंत्र्य का अनुभव करने लगा। परिणामत: विवाह संबंधी पूरानी मान्यता समाप्त होने लगी। माता-पिताओं की विवाह संबंधी विचारधारा और पुत्र-पुत्रियों की विचारधारा में बदलाव आया। इस संबंध में डॉ. मंजूर सैय्यद के विचार ध्यातव्य है- "पुरूष स्त्री का स्वामी कम और साथी ज्यादा का विचार प्रबल होता गया है।

विवाह सात जन्मों का पवित्र संबंध या बंधन नहीं बल्कि एक समझौता मात्र है। इसलिए परंपरागत विवाह संबंधी रितियों, नीतियों को आधुनिक विचारों के आगे मात खानी पड़ी है।"[11] इसी कारण आज अधिकतर विवाह असफल हो रहें है। गृह व्यवस्था जो भली-भाँति संचालन के लिए पति-पत्नी में सांमजस्य की भावना आवश्यक होती है। विवाह के सफलता और असफलता पर अपने विचार स्पष्ट करते हुए डॉ. सुधा अरोड़ ने लिखा हैं कि "सफल विवाह वह माना जा सकता है, जहाँ पति-पत्नी विवाह को सफल बनाने के लए परस्पर त्याग करते हैं या आवश्यक समझौता करने को तत्पर दिखाई देते हैं। असफल विवाह वह माना जाता है, जहाँ पति-पत्नी में समझौते के बदले असहिष्णुता की भावना है या दोनों के अहं का टकराव है या फिर एक दुसरे की विवशता है या फिर घर-बाहर जी समस्या के कारण एक दूसरे के प्रति उपेक्षा की भावना है।"[12]

भारतीय समाज में सुख प्राप्ति, संतान प्राप्ति के लिए विवाह प्रथा का प्रारंभ हुआ। "विवाह संस्कार भारतीय संस्कृति में ही नहीं, संसार की सभी संस्कृतियों में एक महत्त्वपूर्ण संस्कार माना गया है। धर्म का एक बहुत बड़ा हिस्सा विवाह और गृहस्थ संबंधी आदेशों-निर्देशों से भरा पड़ा है।"[13] भारतीय समाज में आज विवाह संबंधी परम्परागत मान्यताएँ समाप्त हो रही हैं। आज नारी पति को देवता के रूप में नहीं एक जीवनसाथी के रूप में देखती हैं। डॉ. पांडूरंग पाटील ने विवाह संबंधी अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहा है- "आधुनिक युग में विवाह एक धार्मिक संस्कार न रहकर एक आर्थिक समझौता होता चला जा रहा हैं।"[14] पति को परमेश्वर मानकर एक ही पति को हर जन्म में प्राप्त करनेवाली नारी आज दिखाई नहीं दे रही है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण आनेवाले काल में विवाह का तात्पर्य केवल सेक्स बनकर रह जायेगा।

इक्कीसवीं सदी के कहानिकारों में मुस्लिम समाज में विवाह संबंधी कई समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है। नासिरा शर्मा जी की कहानी

'ओर गोमती देखती रही' कहानी में पत्नी भौतिक सुख के प्राप्ति के लिए उनका वैवाहिक सुखी जीवन बिखर जाता है। दोनों के परस्पर संबंध में विश्वास न होने के कारण दोनों के संबंध में कटूता निर्माण होती है। "विवाहिक जीवन में ज़हर घुलता ही इस कारण से हैं कि एक साथी लगातार नए अनुभव से गुजरता आगे बढ़ता रहता है। दूसरा वहीं अटका खड़ा उस जड़ अवस्था में पडा रह जाता है, जहाँ से दोनों चले थे। इसलिए हर रोज बदलती इस दुनिया में जीवन साथी भी अपनी रफ्तारवाला ही चुनना चाहिए। इसलिए वह अक्सर अपनी सहेलियों से कहती है कि उठो नौकरी करो, इस अय्याशी भरी इतराहट में भौतिक सुविधाएँ तुमसे तुम्हारा पति छीन लेगा।"[15]

मुस्लिम परिवार में विवाह के संबंध में जासज्र जा-ादा-ा जो विशेष महत्त्व दिया जाता है। नासिरा शर्मा की 'ताबूत' कहानी इसी दृष्टिकोन को प्रस्तुत करती है। 'ताबूत' कहानी की सैयदा ज़ी समस्या भी यही है- "वह ठहरी इमाम की औलाद खरी सैयदा मॉ-बाप लड़के की नौकरी और पढ़ाई से कई ज्यादा उसकी हड्डी और खानदान देखते हैं। बरसों से जोडा मिलाया जा रहा है। कभी लड़का तो ज़भी लड़की उम्र में बड़े निकलते हैं, तो कभी खानदान में खोट तो कभी---।"[16] विवाह के अवसर पर मुस्लिम समाज में खानदान को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

मुस्लिम समाज में लड़की शिक्षित होने के कारज उसे अपने योग्य वर नहीं मिल पाता। उच्च शिक्षा प्राप्त कर वह परिवार का आर्थिक बोझ दूर ज़र-ने ज़ी कोशिश करती है। मुस्लिम समाज में लड़के अधिक पढ़े-लिजे -ा हो-ने ज़े ज़ारज उच्च शिक्षित लड़कियों को वर मिल-ाा कठिण हो जाता है। 'इस समस्या को 'ताबूत' कहानी चिजित करती है।

प्रेमविवाह में आपस में विश्वास की कमी हो जाने पर कई बार पति-पत्नी के बीच कुछ ऐसे तन्तु टूट जाते हैं, कहानी में उनके संबंधों में ज़लह निर्माज

होता है। 'पतझड का फूल' कहानी में इस कलह का वर्णन हुआ है। "दोनों एक दुसरे पर मरते हैं।----पर लडते समय दोनों कुत्ते बिल्ली की तरह एक-दुसरे जो नोचते हैं कि उन्हें रोकना मुश्किल हो जाता है। शायद इसका कारण कम आय और अधिक व्यय था, फिर दोनों जी कम उम्र होना हैं।"[17] अपरिपक्व अवस्था में किया गया विवाह भावी जीवन में तक्रार करने में बीत जाता है। कम उम्र में उत्कटता, कल्पना, कोमलता का मूल्य समझ न आने के कारण सुखमय विवाहितों की संख्या कम हो रही है। 'बंद दरवाजा' कहानी भी इसी समस्या को चित्रित करती है।

वेश्या व्यवसाय अधिकतर आर्थिक कारणों से, सामाजिक कुप्रथाओं से त्रस्त होकर तथा मनोवैज्ञानिक या अन्य कारणों से वेश्या इस व्यवसाय में आयी है। इन सब में आर्थिक कारण प्रमुख माना जाता है। केवल नारी अपनी अतृप्त वासना के लिए वेश्या नहीं बनती बल्कि विवाहपूर्व स्थिति, पारिवारिक समस्या, पति द्वारा विश्वासघात तथा सामाजिक कुप्रथाओं से पीसती हुई स्त्री अपने आर्थिक स्वावलम्बन के लिए इस मार्ग को अपनाती है। डॉ. पांडूरंग पाटील ने इस वेश्याओं की परिस्थिति का अंकन करते हुए कहा है कि "आर्थिक संरक्षण के अभाव में तथा अनमेल वैवाहिक सम्बधों के कारण उत्पन्न मनोवैज्ञानिक असंगतियों ने भी स्त्रियों को वेश्या बनने की प्रेरणा प्रदान की। समाज मे नारी जा संपत्ति जे अधिकारों से वंचित होना भी इसका प्रमुख कारण बना क्योंकि आर्थिक अभाव में नारी के लिए जीवन रक्षा का और कोई उपाय नहीं दिखाई देता था।"[18] समाज की कुप्रथाओं से पीसती नारी वेश्या व्यवसाय करने के लिए विवश हो जाती है। हमारे समाज से ही उनकी उपज होती है।

आज तक वेश्या समस्या पर अनेक साहित्यकारों ने लेखन कार्य किया है परंतु आज तक उनकी परिस्थिति सुधारने में कोई ठोस हल नहीं निकाल सका। आज समाज में वेश्याओं से सभी घृणा ही करते हैं, लेकिन वह वेश्या मनुष्य की

वासना की तृप्ति करती है। बढ़ती आबादी के कारण आज अनेकानेक समस्या पैदा हो रही है। वेश्याओं का जीवन आज असुरक्षित है। मनुष्य अपनी वासना की तृप्ति करता है, उसके साथ प्रेम भी करता है लेकिन अपनाने की बात आने पर मुँह फेर लेता है। पुरूष की भोगवादी दृष्टि ही नारी को वेश्या बनाती है। कोई भी -ारी अपनी इच्छा से वेश्या का रूप स्वीकार नहीं करती अपितु अधिक उसके पीछे पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, कारण होते हैं या पुरूष उसका उपभोग करके छोड़ देता है।

आज वेश्या व्यवसाय का नया रूप उभरकर सामने आ रहा है। आज फॅशन के युग में लड़कियाँ अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए वेश्या व्यवसाय को अपनाती है। उच्च सोसायटी की लड़कियाँ आज मॉडेलिंग के नाम पर जुले आम कॉलगर्ल का व्यवसाय करती हुई दिखाई दे रही है। आज वेश्या इस कुत्सित धन्धे को छोड़कर प्रतिष्ठित जीवन व्यतित करना चाहती है किंतु जीवन की अनिश्चयता को झेलती वह मानसिक रोगी होती चली जा रही है। अतः स्त्रियों को अनेक कारणों से अपना शरीर बेचना पड़ रहा है। सामाजिक प्रथाओं से पिसती नारी के सामने वेश्या बनना यह एक मात्र उपाय शेष बचा है। संपत्ति से वंचित होना तथा मनोवैज्ञानिक असंगतियों के कारण उसे वेश्या ब-ा-ने ज्ञी प्रेरणा मिलती है। आज वेश्या के पास केवळ शरीर बच गया है। उसी शरीर को विक्रय वस्तु बनाकर आर्थिक स्वावलम्बन उसका हेतु बन गया हैं। नारी अपने इच्छा से इस व्यवसाय को स्वीकार नहीं करती, बल्कि उसके पीछे, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक कारण प्रमुख रहा हैं। मनुष्य केवल उसका उपभोग करके छोड देता है।

अमृता ठाकुर की कहानी 'बरक्स' में पति-पत्नी के बिघडते हालात को चित्रित करती है। पत्नी से हुई गलती पति मॉफ नही करता। अतः नायिका के मन में विद्रोह भावना जन्म लेती है।-"प्रतीक को रोहित के बारे में बता दे। उसे

भी पता चले कि छले जानेपर कैसा महसूस होता है।"[19] 'कमाई' ज्हा-ी वेश्या बनने के लिए नारी की विवशता पर प्रकाश डालती है। कई स्त्रियाँ अपनी परिस्थिति के सामने हार मानकर इस व्यवसाय को स्वीकारने के लिए मजबूर हो जाती है। "बेटे के बड़े होने के कारण वह ग्राहकों के साथ बाहर जाने लगी थी, फिर यह काम उसने दिन के समय मजबूरी के कारण शुरू कर दिया----।"[20]

ज्ाली रूपा की रूपा एक बाल विधवा है। अपनी विवशता के कारण उसके जीवन में आये तीन मर्द ज्े कारण उसका जीवन नरकीय बन जाता है। उसे विवश होकर एक इस्पेक्टर की रखैल बनकर रहना पड़ता है। बाद में वह पागलसी हो जाती है। 'दरवाज-ए-कजविन' कहानी की नायिका मरियम को कोठे पर पहुँचानेवाला उसका पति मकजिद था। सुहागरात के दिन बिस्तर से साफ रूमाल निकाल ने पर सभी के मन में संदेश उभरा कि बहु कुँवारी नहीं है। पति के चुप रहने पर उसे वेश्या जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ता है।

नारी विधवा होने से उसका तन-मन तथा अस्तित्व भी विधवा हो जाता है। समाज के द्वारा उसका शोषण किया जाता है। डॉ. क्षितीज धुमाळ ने विधवा की दयनीयता की स्थिति उजागर करते हुए लिखा है ज्ि "विधवा नारी जाति के लिए अभिशाप माना जाता है। भारतीय संस्कृति में विधवाओं का जीवन अत्यंत उपेक्षित, तिरस्कृत, अशुभ, घृणात्मक माना जाता है। भारतीय समाज सुधारकों ने इस अमानवीय स्थिति को परिवर्तित करने का प्रयास किया है। विधवा पूनर्विवाह का कानून पारित ज्िया गया है। परंतु आज भी ग्रामांचलों में परम्परागत विधवाओं और आधुनिक विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है।"[21] पति के मृत्यु ज्े बाद उसके जीवन की प्रसन्नता, जीवतता, आनंद ही समाप्त हो जाता है। इस संदर्भ में डॉ. शशी जेकब ने लिखा है कि "इस जीवन में इच्छा, उमंग, उल्लास, उत्साह का कोई स्थान नहीं होता। अगर होता है तो केवल व्यथा का वेग, अंदर ही अंदर खून सूखता रहता है। किंतू होंठ जरा भी नहीं हिलते।"[22] पुरूष प्रधा-ा

संस्कृति की दानवी प्रवृत्ति ने उसे बंदिस्त बनाया। समाज में विधवाओं की दयनीयता नासिरा शर्मा की कहानियों के माध्यम से स्पष्ट करना हमारा अभिष्ट हैं। 'खुदा की वापसी' कहानी की बदली का पति स्वर्गवासी होता है। कुछ ही दिनों में उसे घर से बाहर निकाल दिया जाता है। "हप्ते भर पहले दोनों जेठों ने कमरे खाली करवा लिये। सामान बाहर फेंज दिया उसमें किरायेदार रख लिये हैं। बीच में पड़ोसी पड़े तो उनसे भी तू-तू मैं-मैं हो गयी। बेकार की हाथापाई में कोई क्यों पड़ता है सो एक-दो दिन पड़ोसियों ने जैसे-जैसे अपने घर रखा। फिर सलाह दी कि भाई से कहकर इन पर केस करवा दो, तभी तुम्हारा हिस्सा मिलेगा।"[23]

समाज सदा पुरूष प्रधान रहने के कारण नारी ऐसे समाज व्यवस्था में पल-ने जे जारण वह निरंतर मानसिक एवं सामाजिक तनावों से ञस्त रही। समाज में नारी का शोषण बहुआयामी है। आज भी स्ञी पीड़ित एवं प्रताड़ित दिखाई देती है। वह पूर्ण स्वतंञ नहीं हो पायी है। उसका जीवन अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार से भरा हुआ हैं। पुरूष अपनी शक्ति एवं चातुर्य से नारी को बंदी बनाना चाहता है। डॉ. निर्मला जैन नारी शोषण की सच्चाई बताते हुए कहा है कि "कड़वी सच्चाई यह है कि पुरूष प्रधान समाजों में सदियों से महिलाओं दमन और शोषण होता आ रहा है। समाज में उनकी भूमिका और उनकी सामाजिक हैसियत का निर्धारण पुरूष के द्वारा हुआ है।"[24]

डॉ. निर्मला जैन के लेख 'कथा और नारी संदर्भ' से पहले भारतीय समाज में नारी को देवता के समा-ा माना जाता था लेकिन उसी भारतीय समाज में नारी वर्ण अधिक पीड़ित रहा। नारी सामाजिक कुरितियों, प्रथाओं तथा अंधविश्वासों जी सबसे ज्यादा शिकार बनती जा रही। "अछूत सामाजिक घृणा का पाञ रहा, लेकिन समाज ने धर्म का आश्रय लेकर उसके मृत्यूदण्ड का विधान नहीं रच डाला, लेकिन सती-प्रथा के रूप में समाज ने नारी के लिए पतिव्रत्य-धर्म जी

स्थाप-ा की, जो सामूहिक आत्महत्या को स्वीकृति देना ही था।"[25] -िसंदेह -ारी अछूत वर्ग से अधिक पीड़ित रही।

पुरूष प्रधान संस्कृति में नारी को गौण स्थान प्राप्त हुआ है। पिता, पति, पुत्र की सर्वस्व में ही नारी अपना समग्र जीवन व्यतीत करती है। भारतीय संस्कृति के मानदण्डों के अनुसार वह पुरूष समर्पिता बनने में धन्य मानती है। परिणाम स्वरूप नारी पारिवारिक तथा सामाजिक धरातल पर अनेक समस्याओं से त्रस्त हैं। फिर भी कई नारियाँ परम्परा से विद्रोह कर अपने हक्कों एवं अधिकार के प्रति सचेत होकर अपनी समकालीन समस्याओं से संघर्ष रत है। जालिंदर इंगले ने लिखा है कि "नारी को शक्तिहीन, अबला समझ्ज र पुरूष वर्ज हमेशा नारी वर्ग का शारीरिक, मानसिक, बौध्दिक, लैंगिक शोषण करता आया है। परंतू अब नारी में संघर्ष भावना जागृत होकर अन्याय के विरूध्द प्रतिरोध करने में सक्षम हुई है।"[26] -ारी शोषज को चित्रित करते हुए नासिरा शर्मा ने अनेक कहानियाँ लिखी हैं।

मैत्रेयी पुष्पा की 'प्लाह'कहानी की साधना के माता-पिता उसकी शादी जल्द करावा देते हैं बल्कि साधना को पुलिस अफसर बनना था। उसके सपने बिखर जाते हैं। वह शादी करने के लिए विवश हो जाती है। साधना अपना विरोध दर्शोती है। "समवयस्कों ने बहुत समझाया कि विश्वनाथ, आगे बुढ़ापा ही बुढ़ापाहै, कैसे पालोगे ? अपनी रोटी कातो ठौर ठिकाना नहीं।"[27] घुटन 'कहानी की नायिका महरूख की घुटन भरे जीवन की कहानी है। वह अपने घुटन से विवश होकर आत्महत्या करती है।

नासिरा शर्मा की 'पत्थर गली' कहानी में परिवारवालों से शोषण ज ा चित्रण हुआ है। कहानी की नायिका फरीदा आगे पढ़ाई नहीं कर पाती। रूढ़िवादी माँ और सामंती मानसिकता से ग्रस्त भाई दोनों उसका जीवन उजाड़ देते हैं। फरीदा अपने ही परिवारवालों से शोषण का शिज ार बनी है। वह सोचती है की

"इस घर में लगता था कि जाने उसकी आत्मा कहाँ, किस पत्थरीली में भटक रही है, जहाँ कोई भी विज्ञास का द्वार नहीं है। बस, सफेद चिकने बड़े-बड़े पत्थर हैं। पत्थर की गली और पत्थर के कूचे-दर-कूचे हैं।"[28]

'ततइया' कहानी की नववधू शन्नो को शराबी बलात भगा ले जाता हैं। बाद वह बेहोश हो जाता है। उसका पति उसे ढूँढ निकालता है। शन्नो निर्दोष है लेकिन उसकी सास अपने बेटे को कहती है - "इस जूठे पातल को मैं नहीं रज-नेवाली------इसके हाथ-पैर तोड़ इसको गंगाली में बहाए आओ।"[29] इसी कारण सास बहु पर अनेक लांछन लगाकर अपमानित करती रहती है।

'जूदा जी वापसी' कहानी संग्रह की 'दूसरा कबूतर' कहानी नारी शोषण को चित्रित करती है। 'दूसरा ताजमहल' संग्रह की 'गली घूम गई' के कुमार साहब अपनी चार संताने और पत्नी को होते हुए भी दूसरी शादी करते हैं। 'आबे-तौबा की सनोहर खानम का पति वृदधावस्था में सीग़ा करते हैं। (विवाह)। इस प्रकार की कई स्त्रियाँ आज अपने शोषण के लिए विवश है।

स्वातंत्रोत्तर भौतिक प्रगति के कारण समस्त समाज का ढाँचा ही बदल गया। अर्थ केन्द्रित समाज व्यवस्था के विविध रूप दृष्टिगोचर होने लगे। भ्रष्टाचार, अपराध, हत्या, बेरोजगारी में वृध्दि हुई। अर्थ केन्द्रित समाज व्यवस्था में अजनबीपन, परायापन, पति-पत्नी के संबंधों में अलगाव की स्थिति निर्माण हुई। इस संबंध में डॉ. पुष्पपाल सिंह का मत है कि "मानवीय संबंधों को बेमानी या बेमतलाब का बोझ देने की रस्मा भी बना रहा है।"[30] समाज में प्रारंभ से ज-या जो यह शिजा दी जाती है कि वह विवाह के पश्चात पति धर्म को अच्छी तरह निभाये।

आज समाज में अनेक वैवाहिक कुरीतियों ने दाम्पत्य जीवन में विष घोल दिया है। दाम्पत्य जीवन में सुख के लिए आवश्यक है, परस्पर वैचारिक एकता,

स्वभावगत साम्य किंतू वैवाहिक कुरीतियों के कारण गुणों के स्थान पर धन को महत्त्व दिया गया। पति पत्नी का वैवाहिक जीवन सुखी क्यों नहीं है, इसके अनेक ज़ारज हैं - अनमेल विवाह, अवैध प्रेम संबंध, परस्पर वैचारिक एकता का अभाव, पारस्पारिक अविश्वास इन्हीं कारणों से आज दाम्पत्य संबंधों में बिखराव दिखाई देता है। डॉ. गोरखनाथ तिवारी का मत है कि "पुराने समाज की संयुक्त तो आर्थिक परिवर्तनों के कारण और कुछ सामाजिक परिवेश में बदलाब के कारण इस प्रकार का विघटन दिन-प्रति-दिन गम्भीर होता जा रहा है। इस परिवर्तन में पारिवारिक स्तर पर संबंधों के सारे मूल्य बदल दिए गये हैं।"[31] ॎासिरा शर्मा ॎे अपनी कहानियाँ दाम्पत्य संबंधों के बिखराव को चिजित करती है।

सूर्यबाला की 'नकिन्नीन' कहानी की असिया पति सुख से असंतुष्ट है, इसलिए वह दूसरे व्यक्ति के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करती है, इतना ही नहीं वह अपने पति को छोडने की भी बात करती है। अपनी वासना की पूर्ति के कारण दोनों पति-पत्नी संबंधों में दरार पड़ गई।

समाज में एकाकी नारी की ओर से आदर्श धर्म प्रचलित रहेगा, तब दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं बन सकता। पुरूष की स्वेच्छाचारी वृत्ति और विलासी जीवन के कारण पत्नी की हमेशा उपेक्षा ही होती है। 'नई हुकूमत' कहानी की नायिका हाजरा का पति दूसरा विवाह करता है, तब हाजरा ंअपने पति से संबंध रखना नहीं चाहती।

मैत्रेयी पुष्पा की 'पगलागयी है' कहानी की नायिका भाग्यवती अपने पति से बेहद प्यार करती है। लेकिन परिवार में अहंकार के कारण दोनों को अलग होना पड़ता है। इस पति-पत्नी के विघटन के पीछे उनके पिताओं की प्रमुख भूमिका होती है। वे दोनों का संबंध विच्छेद करवा देते हैं। जमीर को धमकाते हुए उनके पिताजी उन्हें कहते हैं कि खैर, अब ब्याह वहाँ हुआ है, तो हुआ है।

ज्ौन जिहर करे। पर जीना ने तो पंडित के सामने, अग्नि के समक्ष उसके फेरे डालने की जरूरत ही नहीं समझी।"[32]

यौन शोषण का सिलसिला आज भी जारी है। यौन शोषज े ज ारज -ारी का जीवन नरकीय बन जाता है। आज के युग में अर्थ को अधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है। यौन संबंधों के बारे में देखा जाय तो अर्थ का भी इसमें महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। डॉ. मंजूर सैय्यद ने लिखा है कि "इस प्रकार का अपराध वर्ण, द्वेष, जाति, वैमनस्य तथा कामभावना की तृप्ति हेतू एवं मनोविकृति की अवस्था में किया गया भावना विरोधी कार्य यौन अपराध कहा जाता है।"[33] वास्तव में भारतीय समाज में सबसे अधिक पीड़ित एवं बन्धन ग्रस्त नारी का जीवन है, इसलिए उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

आज नारी का अनेकानेक रूपों में यौन शोषण किया जाता है। असहाय हो-े ेे ज ारज वह इस अत्याचार को चूपचाप सहने के लिए बाध्य रहती है। कामकाजी स्त्रियों को अधिक यौन शोषण का सामना करना पड़ता है। पुरूष प्रधान संस्कृति के कारण उसे पूरूष के कैदखाने में तरह-तरह की यातनाएँ सहनी पडती हैं। महानगरों में तथा सांप्रदायिक दंगो में अधिक इस समस्याओं से पीड़ित नारी हमें दिखाई देती है। नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों में इस घिनौने अत्याचार का बेवाक चित्रण किया है। इस दृष्टि से उनकी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ हैं - 'प्रोफेशनल वाइफ', 'आबे-तौबा', 'तक्षशिका', तिसरा मोर्चा', 'ततइया', 'मेरा घर कहाँ', 'इब्ने मरियम', 'बड़े परदे का खेल', 'विलाव', 'गुंचा-दह-ा', 'जुंज़ा आसमान', आदि।

ुसुम अंसल के द्वारा लिखित कहानी की सोनामाटी में बेटी हिरा पर एक पड़ोसी बलात्कार करता है, तब सोनामाटी व्याकूल हो जाती है। सोनामारी में बदले की भावना जाग जाती है।

'-ाासिरा शर्मा ज्ी 'आबे तौबा' कहानी की नायिका ससुन है। एक कामकाजी महिला है। कामकाजी नारी पुरूषों के साथ काम करते समय अक्सर वासना का शिकार बनती है। ससु-ा यही त्रासदी से त्रस्त है। शमशाद सेक्स पर बहस ज्रज्े उसके अंदर सोयी हुई भोली-भाली औरत को जगाता है। ऑफिस की मीटिंग समाप्त हो जाने के बाद पूरा स्कूल खाली हो चूका था सिर्फ शमशाद और सूसन दोनों ही रह गये थे। शमशाद उसे अपने वासना का शिज्ार ब-ाा-ाा चाहता है। "यूरोप में रहकर जाने कैसे समय का मूल्य न समझ सका? उसने पर्स उठाया, थोडा पहलू बदल कर उठने का उपक्रम किया और तब ही बिना कुछ कहे शमशाद ने एकदम से सूसन का हाथ अपने हाथ में लिया----सूस-ा कुछ कहे----- उसे रोके, उसने सूसन को अपने समीप कर उसके गर्दन का चुम्बन ले लिया।"[34] शमशाद पूरी तरह से उस पर हावी हो गया था। "शमशाद का हाथ उसके शरीर के नाजूक मुलायम हिस्सों पर पहूँच गया। एक चुथन, एक मसल-ा-------पर्स उसके हाथ से गिर गया। शमशाद ने अपनी उँगलियाँ बाहर निकालीं। उसे सूँघा, गहरी लम्बी साँस, ''कितनी प्यारी महक है? लो, खूद सूँघों अपने तन की खूशबू को।'' फिर वह सब कुछ होता चला गया जिसका सूसन को वहम और गुमान न था।"[35] सूसन शमशाद को प्रतिरोध करती हुई कहती है - "इस खण्डहर में तुम्हें क्या मिलेगा?--------- ''खण्डहर ही में तो खजाना होता है और मुझे उसी खजाने की तलाश है।'' शमशाद ने उसके कपोल को, बगल को और सीने की तेजी से सूँघते हुए कहा, ''अजीब खूशबू है तुम्हारे बदन की।'' जब तक वह अपने को छूड़ाती, प्रतिरोध करती, सबकुछ इतना आगे बढ गया था जहाँ कोई भी रोकथाम अब अपना अर्थ खो बैठी थी। नाजूक लतर के समान उसका बदन और ऊँचा-चौड़ा क़द्दावर दरखता।"[36] ज्ामकाजी स्त्रियों का यौ-ा शोषज ज्ो ज्हा-ी में चित्रित करती है।

नारी तथा पूरूष के यौन इच्छा से अवैध संबंध स्थापित होते हैं। अपनी वासना की तृप्ति के लिए उचित-अनूचित की ओर उनका ध्यान नहीं रहता। आरंभ से ही स्त्री पूरूष में परस्पर आकर्षण रहा है। भारतीय समाज को प्रेम व्यवस्था को आवश्यक माना गया है। विवाह बाहय प्रेम संबंधों को अवैध तथा अनौचित्य माना गया है। स्वतंत्रता के बाद और पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव जिसके कारण समाज जीवन में तेजी से परिवर्तन आया। परिणामत: संस्कृति के नैतिक मूल्यों का -हास हो गया। "प्राचीन परम्पराओं को, रीति-रिवाज, व्रत, त्यौहार आदि प्रेरक अच्छाइयों को पाश्चात प्रभाव के कारण हम भूल रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में भारतीय सभ्यता, संस्कृति के विकास में मानवीय मूल्यों में अवरोधकता भी दिखाई देती है।"[37] जिससे समाज का वातावरण ही दूषित हो गया।

पाश्चात्य का बढ़ते प्रभाव से इस प्रकार के संबंध बढ़ रहे हैं। आज शादी से पहले ही शारीरिक संबंध रखना आम बात हो गई है। विवाह के बाद में पति-पत्नी दूसरों की तरफ आकर्षित होकर अपनी यौन तृष्णा तृप्त करते हुए दिखाई देते हैं। राम नरेश त्रिपाठी इस अवैध काम सम्बन्धों की मीमांसा करते हुए कहते हैं कि "हमारे देश और समाज में जहाँ विवाह व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर होकर परिवार के संबंधों की स्थिति स्वाभाविक होती है। ऐसी स्थिति में कहीं स्त्री, कहीं पुरूष और कहीं दोनों ही पति-पत्नी के वैध नाते को अर्थ हीन बनाते हुए चोरी छिपे अनैतिक काम व्यापारों में लीन हो जाते हैं।"[38]

आज समाज में अवैध काम संबंधों के पहलू के कारण नजर आते हैं। कभी आर्थिक प्राप्ति के लिए, कभी काम वासना की तृप्ति के कारण इस प्रकार के संबंध स्थापित हो जाते हैं। इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों ने अपनी कहानियों में इस वर्तमान सच्चाई को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

'कहो, ना' की नायिका विवाहित है। विवाहित होते हुए भी वह अन्य पुरूष के साथ अवैध संबंध रखती है और अपने पति को मन:स्ताप देती हुई उसके मौत का कारण बन जाती है। वह प्रेमी के साथ गुलझर्रे उडानी है। "बंधन चाहे कितना ही रेशमी हो- हम जब जब उससे मुक्त होना ही चाहते हैं।"[39]

'शिवानी कहानी की चाँद विवाहित फिर भी वह रविभूषण नामक विवाहित पुरूष के साथ प्रेम करती है। दि-ा रात फोन पर दोनों के बीच प्रेम की बाते चलती है। नयना के जीवन में नया बदलाव आया। -ाय-ाा रविभूषज ्रे साथ प्रेम के संबंध बनाना चाहती है, इसलिए वह उसे मिलने बंबई चली जाती है। अत: नयना अपने पति के होते हुए भी रविभूषण के साथ संबंध स्थापित करना चाहती है।

'मिस्त्र की मम्मी' कहानी ्री नायिका 'योता' एक विवाहित स्त्री है। व्यापार के सिलसिले में पति शहाब निरंतर बाहर रहने के कारण योता अपने ही घर में अकेलेपन की व्यथा झेलती है। वह अपनी यौन तृप्ति के लिए विवाह पूर्व मित्र पुरूष के प्रति आकर्षित होकर उसके बच्चे की माँ बनना चाहती है। अपनी इच्छा वह कुरूश के सामने व्यक्त करती है- "कभी हमने नहीं चाहा था, मगर अब लगता है उस घुटन भरे सैलाब में डूबने से बचने का एक ही तरीका है कि मैं माँ बन जाऊँ। एक ऐसे बच्चे की माँ, जो खूले दिमाग और सेहतमन्द जिस्म का मालिक हो। जिसके चेहरे पर दौलत नहीं, बल्कि बुध्दि की प्रखरता हो।"[40]

'बुतखाना' कहानी संग्रह की कहानी 'नमक दान' की नायिका गुल का जमाल नामक युवक के साथ प्रेमविवाह होता है किंतू बिजनेस के कारण जमाल अन्य युवती से संबंध बढ़ाता है। 'मरियम' कहानी की नायिका मरियम युनिवर्सिटी में अध्यापक है। वह कुँवारी होकर भी लड़कों के साथ बेटा का रिस्ता जोड़कर उनके साथ शारीरिक संबंध रखती है। मरियम ने "सुरेश की जिंदगी खराब कर

दी भैया-बेटा करके। इस रिश्ते के आड़ में खूब शिकार खेलती हैं।"[40] 'लुज ा इ ांेज ा' ज हा-ी विवाह बाहय संबंध पर आधारित हैं।

सुर्यबाला की कहानी 'संताप' की नायिका नीलम मकान खरीदने के लिए ठेकेदार रामसिंह से आर्थिक सहायता की अपेक्षा करती हुई उसके साथ शारीरिक संबंध रखती और अपनी बेटी को भी उसके पास नौकरी के लिए भेजती है। रामसिंह यह सोचता है कि उसकी हालत पर रोनेवाला कोई नहीं था। छीटों से तर-ब-तर चेहरे ने आँखें खोली और दृष्टि क्षत-विक्षत पक्षी-सी तडफड़ाने लगी।"[41] वर्तमान समय में बढ़ रहे अनैतिक संबंध तथा विवाहोत्तर संबंध में वृध्दि हुई है।

परिवार समाज की नींव है। प्राचीन भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति तथा विज्ञान, भौतिकता का बढ़ते प्रभाव के कारण सभ्यता की गरिमा नष्ट हो रही है। जिसमें समाज में परिवर्तन हुआ है। संयुक्त परिवार को जीवित रखने में समाज व्यवस्था असमर्थ रहीं है। डॉ. सरला दुबे ने परिवार के विघटन की परिस्थितियों का अंकन करते हुए कहा है कि "पारिवारिक विघटन वह अवस्था है जिसमें परिवार के सदस्यों में हितों, उद्देशों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं की एकता के अभाव से उनमें प्रेम, सहयोगिता तथा आत्मत्याग की भावनाएँ नहीं हैं। जिसके कारण परिवार अपने प्रमुख कार्यों को करने में असफल है और पारिवारिक जीवन सुखी नहीं है।"[42] अत: परिवार में पारस्परिक स्नेह, ममता की, उत्तरदायित्व की अपरिमित भावना विद्यमान न होने से परिवार का विघटन हो रहा हैं।

आर्थिक विषमता, मूल्यहीन शिक्षा, स्वतंत्र की चाह, विलासी जीवन आदि के कारण पारिवारिक संबंधों में तनाव चूकी स्थिति उत्पन्न हुई हैं। इसलिए संयुक्त परिवार की कडियाँ चूर-चूर होकर एकल परिवार निर्माण हो रहा है। नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों में पारिवारिक संबंधों में बढ़ती तनाव की स्थितियों को रेखांकित किया है, उसे हम यहाँ पर देखने का प्रयास करेंगे। 'दुनिया' कहानी में

नायिका शोभना द्वारा व्यर्थ पारिवारिक संबंधों को चित्रित किया गया है। शोभना कॉलेज में अध्यापक की नौकरी कर रही है। अपने पिता के मृत्यू की खबर सुनकर भी वह अपने काम में व्यस्त है। पारिवारिक संबंधों में आयी गिरावट कहानी चित्रित करती है। शोभना का व्यक्तित्व "कहीं न ठहरना, किसी की न सुनना जो लोभ में जाता है उसी को स्वीकार करना। अपनी सत्ता को संचालित करते हुए विस्तार की तरफ बढ़ना।"[43] इसप्रकार शुष्ज बन गया। अपने पिता का देहांत हो जाने पर भी वह नहीं जाना चाहती। इस प्रकार के बदलते पारिवारिज संबंध समाज में दिखाई देते हैं।

-ासिरा शर्मा ज़ी 'जूदा ज़ी वापसी' कहानी संग्रह की कहानी 'मेरा घर कहाँ' की नायिका सोना को अपने बाप और पति के रिश्ते में आई 'गिरावट' कहानी में प्रस्तुत है। सोना को "बाप और पति का घर का जादू झूण साबित हुआ।"[44] अत: आज लोग जितनी तेजी से अपनी प्रगति कर रहें, उतनी ही तेजी से अपनी संस्कृति को भूल रहे हैं। जिससे बदलते पारिवारिक संबंध एक समस्या बन रहे हैं।

आज महानगर के आकर्षण के कारण लोग गाँव से शहर आ रहे हैं। इस बदलते परिवेश के स्वंय संवेदना रहित बन जाता है। महानगरीय जीवन में नैतिक मूल्यों के मानदण्ड बदल गये हैं। महानगरीय में मनुष्य संवेदनहिन बन जाने के कारण उसकी मनोदशा विक्षिप्त हो जाती है। नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों में इसी मनोदशा का चित्रण किया है। उनकी कहानियों के माध्यम से इस प्रकार की मनोदशा को स्पष्ट करना हमारा अभीष्ट है।

मेहरून्निसा परवेज की 'शिनाख्त' कहानी का पति पक्का शराबी और विवेज़हि-ा पशु है। वह प्रत्यक्ष अपनी बेटी को वासना का शिकार बनाना चाहता है। मौत हो जाने पर मौत के संदर्भ में पूछने पर पत्नी शिनाख्त करने से इन्कार ज़रती है। वह लडकी से कहती है-"बत्ती मैंने उसे पहचान लिया। देख यह-यह

पड़ी है लाश।"[45] कहानी महानगर में बढती अमानवीयता को चित्रित करने में सफल रही हैं।

'इब्ने मरियम' कहानी भोपाल गॅस दुर्घटना के बाद वहाँ ऊे लोजों ऊे साथ उन्ही ऊे संबंधियों ने रिश्ता तोड़ लिया था। महानगर की भीड़-भाड़ में दो व्यक्तियों के संवेदनापूर्ण भावनात्मक रिश्ते खत्म हो गये हैं। इन्हीं का मार्मिक वर्ज-ा ञहा-ी में है। इस कहानी का नायक ताहिर बटुएवाला उसकी एक विवाहित पुञी को उसके ससुरालवाले अपनाने से इन्कार कर देते हैं। इस बात पर वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। ताहिर बेटी के ससुरालवालो से कहता है-"तुम कल तक हमप्याला, हमानेवाला थे, हमकिताब, नमक-शरीफ भाई थे और आज जब हम रिश्तेदार बन बैठे, एक जान तो कालिब बन बैठे तो यह कैसी कैंची चला दी तुमने? दिलों को यूँ मत ञाटो------समधी बनकर यह तो ताचश्मी कैसी? मैंने और मेरी बेटी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? कहाँ जाएगी मेरी यह फूल-सी बच्ची? इस बुढ़ापे में मेरे मुँह पर कालिख मत पोतो इफ्तखार।"[46] महा-ाञर ऊे व्यक्ति के सम्बन्धों में मुदृलता के जगह खुरदुरापन अधिक हैं।

स्वातंञ्योंत्तर काल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के नाते नारी में 'स्व' की अनुभूति तथा व्यक्ति स्वातंञता की भावना बढ़ गई है। शिक्षा के आधार पर नौकरी प्राप्त कर उसे आर्थिक सुरक्षा और आत्मसजगता प्रदान की है। वह आज ञिसी भी रूप में स्वंय को हीन तथा कमजोर मानने को तैयार नहीं है। डॉ. तारा अग्रवाल -े नारी स्वतंञता की चर्चा करते हुए कहा है- "वह अब नियतिवादी नहीं बल्कि कर्मवादी बन गई है। न वह अपनी स्वतंञता को किसी के हाथों सौंपना चाहती है न किसी के लिए अपनी भावनाओं का बलिदान करना चाहती है।"[47] नारी आज किसी भी रूप में पुरूषो से हिन मानने को तैयार नहीं है।

नारी शिक्षित-दीक्षित होने के कारण परिवार तथा समाज द्वारा लादे गए बंधनों को तोड़कर पुरूषों के समान अधिकारों और पदों को प्राप्त कर रही है।

आज नारियों का अस्तित्व पुरूषों के समकक्ष हैं। निम्नवर्गीय, मध्यवर्गीय तथा उच्चवर्गीय स्त्रियों में 'स्व' की अनुभूति की भावना का उद्‌घाटन हुआ है। "आज स्त्री-पात्रों ने वे -ाजाब उतार फेंके हैं, जो मर्द मानसिकता ने उन्हें पहना रखे थे। मातृत्व और वात्सल्य की देवी का मुखौटा, क्षमाशील देवी सती का मुखौटा, जलनशील ईर्ष्यालु दूसरी औरत का मुखौटा, गहने-कपड़े की शौकिन स्त्री का मुखौटा। अब जाकर कहीं स्त्री के चारो तरफ का बुना रूढ़ तिलस्म टूट रहा है और उसमें चेतना जन्म ले रही है... यहाँ वहाँ छुपने को मजबूर ये औंरते अब अपने बुर्के तथा घुंघट हटाकर सामने आ रही है।"[48] नारी जीवन में आए इस परिवर्तन को लक्षित करके नासिरा शर्मा ने ऐसी स्वतंत्र, विचारवान नारी पात्रों का आधार लेकर अपनी कहानियों की सृष्टि की है।

'बुतखाना' संग्रह की कहानी 'अपनी कोख' स्त्री की आत्मनिर्भयता की कथा है। साधना जे सास को अपनी गोद में पोता खिलाने का अरमान है। अतः वह साधना की दोनों लड़कियों की उपेक्षा करती है। पुत्रियों के साथ भेदभाव को देखकर साधना व्यथित हो जाती है। तीसरे गर्भ का परिक्षण करने के बाद पता चलता है कि वह लड़के का है। इसलिए वह ॲबार्शन करती है। वह स्वंय इस संदर्भ में फैसला करती है।

ृष्णा अग्निहोत्री की 'एक भटकता मन' ऐसी पत्नी का चित्रण है जिसमें जीवन में पति प्रेम जे अभाव ने खामोशी भर दी है। वह पढ़ी लिखी नहीं है, लेजि-ा वह जिसी--ा-किसी रूप में प्यार की प्यासी ही रही है। चाहे वह पति, बेटे, माँ-बाप आदि। प्यार पाने के लिए वह दूसरी शादी भी कर सकती थी। पर एक आदर्शवादी पत्नी यह नहीं करती। वह अपने पति से कहती है- "चले आओ न। कितनी बार बुला चुकी हूँ। जितनी मैं तुम्हारे पास आती हूँ, तुम उतने ही दूर चले जाते हो, इस लुका-छुपी के खेल से तंज आ चुकी हूँ, तुम्हें जो नौकरी पसंद नही थी, उसको छोड देने की चिन्ता ही क्यों ? मुझे जो जीवन पसन्द नहीं

उससे सुलह कर, क्या हम दोनों अकेली बिंदू का पेट नहीं भर सकते ? इतना भी क्या तुम मुझे नहीं दे सकोगे।" [49]

दीप्ती खंडेलवाल कहानी की युवतियाँ अपने घुटनभरे जीवन से मुक्ति का समाधान खोजने में समथ हैं। सामिन अपने पिता से कहती है- "आपकी मजबूरी समझती हूँ, इसलिए चाहती कि अपनी पढ़ाई का खर्च पार्ट टाइम जॉब से निकालूँ आखिर इतना पढ़कर घर में बैठना अच्छा नहीं लगता । फिर अच्छी नौकरी के लिए एम.ए तो करना पडेगा।"[50] सामिन घर के बंधनों ज्ञे पार ज्र आत्मनिर्भर बनना चाहती है। बहन और हुमैरा सहगल अस्पताल में नौकरी कर आत्मनिर्भर बनती है।

'मेरा घर कहाँ' कहानी की नायिका सोना को उसका पति घर से निकाल देता है। मेहनत-मजदूरी करके वह स्वयंनिर्भर बन जाती है। उसकी सुंदरता को देखकर मजदूर उसके साथ शादी करने के लिए तैयार हो जाते थे। लेकिन सोना अब किसी पर भी आश्रित नहीं रहना चाहती। वह स्वंय संघर्ष करती हुई, मेहनत-मजदूरी करती हुई अपनी स्वतंत्र व्यक्तित्व की भावना से प्रेरित होती है।

आज समाज में मुख्य समस्या दहेज है। आज समाज में अर्थ की महत्ता अधिक होने के कारण हर पुरूष दहेज मिलने की लालसा रखता है। दहेज के ज्ञरज हर रोज किसी न किसी बहु को मौत के घाट उतार दिया जाता है। आज इन्सान पढ़ा लिखा होने के बावजूद भी दहेज का आकांक्षी है। इस कुप्रथा के कारण परिवार में बहु की दशा चिंताजनक हो गई है। प्राचीन ज्ञाल में दहेज प्रथा को अच्छे रूप में स्वीकार किया जाता था। कन्या पक्ष अपनी स्वेच्छा से उपहार तथा वस्तुएँ दी जाती थी लेकिन आज वर पक्ष की ओर से तय किया जाता है। हिंदू धर्म में दहेज समस्या ने आज विक्राल रूप धारण कर रखा है।

विवाह में आज लोग सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए लड़की विवाह में दहेज का भी सहारा लेने लगे हैं। यह कुप्रथा आज सामाजिक प्रतिष्ठा का विषय बन रहा है। दहेज का आज खुले रूप में पालन हो रहा है। समाज में स्त्रियों पर किये जाने वाले अत्याचारों में दहेज प्रमुख कारण रहा है। "कम दहेज या दहेज न लाने पर सास-ससूर, पति अथवा अन्य सम्बन्धियों के ताने जीवन भर सुनते रहना और घुट-घुट कर जीना।"[51] जिसके कारण वह भीतर-ही-भीतर घुटती रहती है। माता-पिता की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उन्हें अपनी पूत्री की विवाह में अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। इस कुप्रथा को नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

नासिरा शर्मा की 'संदूकची' कहानी दहेज की स्थिति को रेखांकित करती है। कहानी की नायिका के नाना की सोने की दुकान थी, वह कहती है कि "जब पिताजी से रिश्ता तय हुअस था, तो दादी ने पूरे सौ तोला माँगा था। पिताजी का घर मध्यवर्गीय था। माँ बताती है, तब यह माँग किसी को घर में अखरी नहीं थी, क्योंकि तेरे पिताजी जैसा लड़का इतने पर भी पापा को सस्ता लगा था।"[52]

'बावली' कहानी अपिया के पिताजी ने शादी में दहेज कम देने के कारण उसकी सांस उसे ताने देती है, उसे साथ देनेवाला उसका पति भी इसमें शामिल हो जाता है। तब उसे बड़ा दुख होता है। "चौथी की रस्म के बाद उन्होंने अम्मा से शिकवा किया था कि उन्हें बज्जो से कम दहेज क्यों दिया गया? इस शिकवे में उनके शौहर जमील भी शामिल थे। -----बड़ी बहनोई नईम भाई कम-से-ज़म बज्जो के कुछ माँगने या ले जाने के वक्त बेचैन होकर कहते तो थे कि अरे ! यह क्या तकल्लुफ है- हर बार लड़की के आने पर दहेज थोड़ा दिया जाता है।"[53] अधिक पुत्रियाँ होने के कारण माता-पिताओं को लड़की के शादी में दहेज एक समस्या बन जाती है।

दहेज समाज को एक कलंक है। सरकार द्वारा इसे रोक लगाने के लिए अनेक कानून बनाये गये हैं। फिर भी यह प्रथा समाज से पूरी तरह से समाप्त नहीं हो पायी है। चोरी-चूपके इस प्रकार का व्यवहार वधू-वर पक्ष में होता रहता है। आर्थिक अभाव के कारण कई ऐसी युवतियाँ हैं, जो शादी से वंचित रह जाती है।

हिंदू समाज की अपेक्षा मुस्लिम समाज की स्त्री पर अनेक पाबदियाँ हैं जिससे उसे छुटकारा पाना मुश्किल है। मुस्लिम औरत को अपने धर्म का पूरा ज्ञान न होनेपर भी उसे अपने धर्म के मामले में आँख बंद करके विश्वास करना पड़ता है। अधिकतर औरतों को पढ़ा लिखा नहीं जाता। परिवार में भी उन्हें दुय्यम स्तर दिया जाता है। "------घरेलू मामलों में शौहर का कहना मानना ही जन्नत जाने के दरवाज़े की कुँजी है।"[54] अपनी इस त्रासद स्थिति को झेलने के लिए वह मजबूर हो जाती है। मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा या पढ़-प्रतिष्ठा पाने के लिए सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती।

मुस्लिम समाज की लड़कियों की पाबंदियों को चित्रित करती हैं। कहानियों में तीन युवतियों की व्यथा है। उनके बडे भाई साहब उन्हें कहते हैं- "लड़कियों को घर में रहना चाहिए। करम पतली और हाथ मुलायम रखने की कोशिश करनी चाहिए। मर्दनुमा लड़कियाँ औरतें नहीं होती है।"[55] फरीदा लड़की होने के नातें स्वतंत्र निर्णय नहीं ले पाती। महाविद्यालयीन शिक्षा में कौन-सा विषय ले यह भी निर्णय स्वयंम् नहीं ले पाती। अपने बहन के साथ भाई का व्यवहार भी नफरत से भरा हुआ था। फरीदा की अवस्था परिवार की इस त्रासदी से किस प्रकार हुई देखिए- "फरीदा का चेहरा जाने कितनी ऋतृओं की मार खायी चट्टान की तरह सख्त और भावना हिन-सा हो गया है। बस, चेहरे पर दो आँखे हैं, जिनमें जमाने भर का दुख पिघले सीसे की तरह देखने वालों को अहसास दिलाना है।"[56]

मुस्लिम समाज में मह्र पर नारी का अधिकार रहता है। निकाल के समज इस्लाम धर्म अनुसार वधु को मह्र देना अनिवार्य है। यह दो प्रकार से दिया जाता है- निकाह के समय या जब वधु मांग करे उसी समय मह्र अदा करना पड़ता है। "जिस मर्द ने भी किसी औरत से थोड़े या ज्यादा मह्र पर निकाह किया और उसके दिल में मह्र अदा करने का इरादा नहीं है तो उसने औरत को धोका दिया, फिर वह मह्र अदा किये बिना मर गया तो वह अल्लाह तआला के हुजूर इस हाल में हाज़िर होगा कि ज़िना का मुज्रिम होगा।"[57] निजाह जे समय दो-नों की रजामंदी से मह्र निर्धारित किया जाता है।

इस्लाम धर्म के अनुसार वधु को मह्र दिया जाता है। तीन मास तक वधु का गुजारा हो सके इतना मह्र उसे दिया जाता है। नासिरा शर्मा -ने मह्र संबंधी अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहा है कि "अधिकतर होता यह है कि मेहर की रकम को पति पहली रात ही भावना के क्षणों में पत्नी से माफ कर लेता है। स्थिति के बदलने पर जब पत्नी तलाक पाकर अलग हो जाती है तो गुजारे का सवाल तो देना दूर रहा, मेहर की रकम देते हुए भी एलान कर दिया जाता है कि बेगम ने वह पहले ही माफ कर दिया था।"[58] नासिरा शर्मा ने इस बदलती परिस्थिती का चिञण अपनी कहानी में किया है।

'खुदा की वापसी' कहानी इसी समस्या को चिञित किया गया है। इस कहानी की नायिका फ़रजाना जुबैर की शादी हो जाती है। सुहागराञि के पूर्व फ़रजाना का पति जुबैर पत्नी से मह्र माफ करवाता है। उसने अपने पत्नी के सामने यह शर्त रखी थी कि "उसने शर्त लगायी थी कि वह मेरा घुँघट तब तक नहीं खोलेगा, जब तक नगद मेहर की रकम अदान करेगा या फिर मैं उसे माफ जर दूँ-----।"[59] फ़रजाना पति के प्यार भरी बातों में फँस जाती है। फ़रजाना के लिए यह परिक्षा की घडी थी। वह सोचती है- "मेहर माफ करती हूँ, तो------ पहले ही दिन सब हार बैठती हूँ। कोई दावा, कोई जोर, कुछ भी-------मेहर

माफ नहीं करती हूँ, तो मोहब्बत से हाथ धोती हूँ, जिन्दगी भर इल्जाम ढोती हूँ जि मुझे रूपयों से प्यार था।"[60] फ़रजाना अपने पति से मेहर माफ करती है, लेजि-न उसे पश्चाताप होता है।मेह्र की रकम कितनी भी हो, पति सुहाग रात्रि के समय वह उसे माफ करवा लेता है। वर्तमान समय में मह्र को लेकर चल रही धोखाधड़ी का वर्णन नासिराजी ने किया है।

हमारा समाज पुरूष प्रधान होने के नाते लड़की की अपेक्षा लड़के को अधिक महत्त्व देता है। पुत्री के जन्म पर सभी दुखी हो जाते हैं और लड़के के जन्मपर सभी खुशियाँ मनाते हैं। आज स्त्री भी लड़के की अपेक्षा करते हुए लडकी के साथ भेदभाव करती है। पढ़ाई के मामले में भी परिवार लड़की से अधिक लड़के की तरफ ध्यान देता है। लड़की के शादी के समय उसका मशवरा या उनकी मंशा नहीं पूछी जाती। परिवारवाले ही उसका विवाह तय कर देते हैं।

मृदूल गर्ग ने अपनी कहानियों के माध्यम से इस भेदभाव को रेखांकित किया है। समाज की वास्तविकता सामने लाने का प्रयास अपनी कहानिओं के माध्यम से जर-ने जा प्रयास किया है।

मैत्रेयी पुष्पा जी जहा-नी 'बोझ' की फरीदा औरत होने के नाते घुटन का अनुभव करती है। वह कहती है- "आखिर मैं क्या करूँ? मैं कहाँ जाऊँ? युँ पड़े-पड़े जीना भी कोई जीना है।"[61] महाविद्यालयी-न शिजा में जौ-न-सा विषय ले, यह भी भाई तय करता है। अपने ही परिवार में वह घुटन भरा अनुभव करती है। उस पर अनेक निर्बंध लगाये जाते हैं। परिवारवालों के इजाजत के बिना वह कुछ नहीं जर सजती थी। आज अनेक ऐसी युवतियाँ हैं जो अपने ही परिवारवालों से घुटन भरा जीवन जीने के लिए विवश है।

'संताप' कहानी की नायिका अपने भाई का आदेश नहीं मागती। उसकी दादी उसे अपने भाई की माफी माँजने कहती है। यहाँ हमें स्त्री-पुरूष भेदभाव जी

प्रवृत्ति में नारी भी शामिल हुई दिखाई देती है। वह कहती है- "उसे अपने भाई के हाथों मार खानी पड़ी थी। अचानक कलेजा चीरती हुई चील निकल गई थी उसकी। औरतें घबड़ाकर दौड पड़ी। दीवार से टिकी-टिकी चीखकर एक तरफ लुढ़क गई थी वह। अरे पानी लाओ पानी।"[62]

'अपनी कोख' कहानी की नायिका साधना की सास अपने गोद में पोता खिलाने का अरमान रखती है। इसलिए वह बहु का बार-बार गर्भ परिक्षण करती है। उसकी दोनों लड़कियों की उपेक्षा करती है। 'संगसार' कहानी में असिया अनैतिक संबंध में पकड़ी जाने पर उसे संगसार करने का आदेश दिया जाता है बल्कि उसके साथ संबंध रखने वाले मर्द को क्षमा की जाती है। नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों के माध्यम से इस भेदभाव की चर्चा करते हुए औरत को बन्धनों को काटने की, मुक्तभाव, से जीने की प्रेरणा देने की कोशिश की है।

भारतीय समाज पुरूष प्रधान होने के कारण नारी को समाज में दुय्यम स्थान ही दिया जाता है। इसलिए नारी की शिक्षा में परिवार की जिम्मेदारी महत्त्वपूर्ण है। अधिकतर गाँव में रहनेवाली नारी अशिक्षित होती है। अशिक्षित नारियों से शिक्षित वर्ग लाभ उठाकर उनका शोषण करता है। अशिक्षित होने के कारण वह अपने शोषण को भी नहीं जानतीं। अशिक्षित होने के कारण उन्हें मजदूरी करनी पड़ती है। परिवार का हर कोई उसपर अधिकार जताने का प्रयास करता है।

आज के युग में स्त्रियों में जागरूकता आने के कारण वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई है। स्त्रियों का शोषण दो तरफा होता है, एक परिवार से और समाज से। नारी को शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नासिरा शर्मा अपनी कहानियों में इन्हीं समस्याओं पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। नासिरा शर्मा की चिमगादड़े और दहलीज कहानी इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण है। लडकियों के घरवालों का कहना था कि "लडकियाँ

पढ़कर समझदार हो जाती है, फिर बड़ी-बड़ी बातें करने लगती है। मियाँ उन्हें न शराबी चाहिए न जुआरी। अरे हम शराब न पिएँ तो इतनी मेहनत का काम कैसे करें?।"[63] मिसिज गोवा लड़कियों की मॉ ने शिक्षा के संदर्भ में बताया कथन सुनाती है- "साब, काम का बहुत हरज होगा। अभी तो यह हमारा हाथ बँटाते हैं, वहाँ निठल्ले बैठे कुर्सी तोडेंगे। फिर मसला फीस का भी था, पाँच रूपया भी लड़कियों पर इन्हें खर्च करना अखरता था, क्योंकि तालीम की ओर न उनका ध्यान है न उससे प्यार। कौंडी-कौड़ी बचाकर के फीस जमा कहाँ से करते। फिर माँओ का डर था, पढ़-लिखकर लड़कियों की शादियों में अडचन पड़ेगी।"[164] अंत नारी की शिक्षा के संदर्भ में परिवार की मानसिकता का रेखांकन हुआ है। इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण की कहानीकारों ने अपनी कहानियों द्वारा सामाजिक परिवेश को प्रस्तुत करते समय समाज का वास्तविक रूप अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है।

3.1 इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की कहानियों में राजनीतिक परिवेश एवं परिस्थितियाँ -

प्रस्तावना-

समाज और राजनीति का घनिष्ठ संबंध है। शासन कर्ता मनुष्य के जीवन संबंधी निर्णय लेते हैं। यदी वह निर्णय अच्छे हो या उसकी पूर्ति की जाय तो वह शासन आदर्श बन जाता है, और मनुष्य के जीवन के लिए वरदान बन जाता है, लेकिन आज राजनीति में मनुष्य के जीवन के प्रति आस्था कम हुई हैं। आम आदमी कदम-कदम पर राजनीति का हस्तक्षेप महसूस करके स्वयंम् को कमजोर समझ रहे हैं। राजनीति का दूसरा नाम भ्रष्टाचार आज उभरकर सामने आया है। मनुष्य द्वारा निर्मित व्यवस्था ही 'शासन' कहलाती है, इसलिए मनुष्य और उसका संबंध अभिन्न है। राजनीति और मनुष्य के संबंध को रेखांकित करती हुई डॉ.मीना कुमारी का कथन विशेष उल्लेखनीय है- "राजनीति समाज का ऐसा

पहलु है जो विभिन्न कोनों से सामाजिक जन-जीवन को प्रभावित करता है। प्रत्येक समाज की व्यवस्था वहाँ की राजनीति के स्वरूप का निर्धारण करती है।"[65] मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण वह राजनीति से दूर नहीं रह सकता। मनुष्य के जीवन पर सीधा प्रभाव राजनीति का अवश्य रहता है। इसलिए समाज को राजनीति से दूर या राजनीति को समाज से दूर करके नहीं देखा जा सकता समाज और राजनीति का संबंध एक ही सिक्के के दो पहलु है।

स्वतंत्रता के बाद राजनीति ने भारतीय जनजीवन को विशेष प्रभावित किया। स्वतंत्रता के बाद शासन व्यवस्था ने जनता के साथ खिलवाड़ किया। नेताओं की स्वार्थ वृत्ति, पदलोलुपता के कारण जन-जीवन शोचनीय हो गया। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महँगाई के कारण लोगों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। ऐसे भ्रष्ट, स्वार्थी नेताओं की मूल्य हिनता को स्पष्ट करते हुए डॉ.अजय पटेल के विचार ध्यातव्य है-"देश के स्वातंत्र्य होने के पश्चात राजनीतिक क्षेत्र में ऐसी धाँधली मची कि सच्चे देश भक्त पीछे रह गये और स्वार्थी व सत्तालोलुप तत्वों ने शासन की बागड़ोर अपने हाथों में ले ली। स्वार्थपरता, सत्तालोलुपता, भ्रष्टाचार एवं दलबदल प्रवृत्ति जैसी अनेक विध बुराइयों ने भारतीय राजनीति को भ्रष्ट, खोखली एव नीति विहीन बना दिया।"[66] उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता के बाद समाज व्यवस्था पर भ्रष्ट राजनीतिक नेताओं का प्रभाव अधिक रहा। परिणाम स्वरूप जनता में राजनीति के प्रति ईर्ष्या का भाव अपने-आप निर्माण हो गया। इस स्वार्थ राजनीति ने समाज व्यवस्था को खोखला बना दिया। स्वार्थ ही आज राजनीति में मुख्यत: देखा जाता है। परिणाम स्वरूप प्रजातंत्र शासन का अर्थ ही बदल गया। स्वार्थ की पूर्ति में लगे राजनीतिक नेताओं ने सामान्य जनता का शोषण आरंभ कर दिया। आम आदमी के लिए राजनीति एक समस्या बन गई। मधुकर सिंह ने इसी भ्रष्ट राजनीति को रेखांकित करते हुए कहा है कि-"आज का राजनीतिक परिदृश्य इस

ज्दर गलाज़त से भर गया है कि अच्छे-बुरे की पहचान ही खो गई हैं।"[67] आज भी भ्रष्ट राजनीति के कारण जन-जीवन में पर्याप्त बदलाव आया है। यह बदलाव स्वार्थ नेताओं के कारण हुआ है। लोग भी अपना स्वार्थ देखने लगे। नेता लोग अपने स्वार्थ के लिए राजनीतिक सत्ता द्वारा शोषण, अत्याचार, अवैध कार्य से जनता के भक्षक बन गये हैं। राजनेताओं के स्वार्थ के कारण शासन का ढ़ाँचा डॉवाडौल हो गया।

राज्य की उन्नति के लिए किए गये निर्णयों से लोगों में संतोष की प्राप्ति होती है। राजनीतिक व्यवस्था को उत्तम जब माना जाता है, जिसमें जन-जीवन की सुखशांति व्याप्त हो। समाज को उन्नति के रास्ते पर ले जाने वाली व्यवस्था का नाम ही 'राजनीति' है। डॉ.भगवतशरण अग्रवाल के शब्दों में "राज्य से संबंधित वह नियम जो राज्य को उन्नति की ओर ले जाए। राज्य का संबंध जिसी--ा-किसी समाज अथवा अनेक समाजों से अवश्य होता है और इसलिए राजनीति राज्य के समाज अथवा समाज को उन्नति की ओर ले जानेवाली विधा का नाम है।"[68] नेताओं ने अपनी स्वार्थ वृत्ति त्यागकर ऊच-नीच का भेद-भाव समाप्त कर समानता अपनानी चाहिए। देशहित का प्रयास कर जनता के रक्षक बनना चाहिए। लेकिन आज की राजनीति नारों की राजनीति रही हैं। बड़े-बड़े वायदे करके भारतीय िनरजर-अज्ञानी जनता को नेता बेवकूफ बना रहे हैं। वर्तमान राजनेता चुनाव के समय गरीबी हटाव, नारी सुविधा जैसे आश्वासन देते हैं। चुनाव जितने के बाद जनता के ही भक्षक बन जाते हैं। विद्रुप राजनीति के कारण भाई-भतीजावाद, असुरक्षा की भावना लोगों में बढ़ने लगी।

स्वतंत्रता के बाद भारत विभाजन हुआ लेकिन विभाजन के बाद जिन हालातों को सामान्य जन ने महसूस किया इससे पता चलता है कि राजनैतिक परिवर्तन जनता के लिए कितना निरर्थक है। भ्रष्ट शासन व्यवस्था ने जनता की भावना और विचारों को अपने नियंत्रण में कर लिया। आम आदमी इस व्यवस्था

ज्ञी एक कठपुतली बनकर रह गया है। स्वार्थी वृत्ति के कारण राजनीति दूषित रूप धारण कर रही है और उसमें आम आदमी दो पाटों के बीच कुचला जा रहा है। राजनीतिक सत्ता अगर अपने पास है, तो कुछ भी करने पर भी फर्क नहीं पड़ता। हमारा राजनीतिक भ्रष्टाचार चुनाव से ही शुरू होता है। चुनाव जितने के लिए लाखों रूपये खर्च किये जाते हैं। सभी तरीके अपनाकर इस धन को चुनाव जितने के बाद कमाया जाता है। परिणाम स्वरूप इसका गहरा प्रभाव आम आदमी के जीवन पर पड़ता है। स्वार्थी नेताओं की पोल खोलते हुए डॉ.अर्जुन चव्हान लिखते हैं कि -"सत्तासीन प्रायः स्वार्थीसीन होता गया, उसने जनता को बेवकूफ बनाने का ही हमेशा प्रयास किया। अँग्रेजी नीति अपनाकर जाति वर्ग तथा धर्म आदि के नाम पर जनता का बँटवारा कर दिया। मूल उद्देश्य अपने स्वार्थ को हथियाना ही रहा।"[69] राजनीतिक षड़यंत्र के कारण ही जन-जीवन शोचनीय हो गया। नेता लोग अपने इच्छा के अनुसार दल-बदल ही करते हैं। आर्थिक लाभों के कारण नेता लोग राष्ट्र की संपत्ति हडप कर रहे हैं। राष्ट्र उन्नति के लिए तथा राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के लिए राष्ट्र के प्रति आत्मीय निष्ठा की भावना तथा राष्ट्रीय की भावनाओं का विकास नेताओं में होना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद गांधी जी के सिध्दांत सिर्फ सिध्दांत ही रहें।

संक्षेप में भारतीय राजनीति के प्रति जनता में विद्रोह भाव अधिक दिखाई देता। जिसके परिणाम स्वरूप आण्णा हजारे ने दिल्ली में किया भ्रष्टाचार जन आंदोलन में लोगों ने शासन के विरोध में मत प्रदर्शित किया। आज के नेताओं की कथनी और करनी में प्रर्याप्त अंतर आया है। राष्ट्रनेता समाज हित के बदले स्वहित में पूरी तरह डूब गयें हैं। सामान्य जनता की भावनाओं को स्पर्श कर अपना स्वार्थ सिध्द करना वर्तमान राजनीतिज्ञों का व्यवसाय बन गया। मानव की अस्मिता का सजग प्रहरी साहित्यकार जनजागृति के लिए भ्रष्ट राजनीति और

राजनेताओं की भ्रष्ट चालों को जनता के सामने प्रस्तुत कर जनता के आक्रोश को वाणी देता है। अंतः आज के राजनीति में स्वार्थ ही परमार्थ बन गया है।

3.2. इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण की कहानियों में राजनीतिक परिवेश-

स्वातंत्र्योत्तर राजनीति में देश की आम जनता भूखमरी, बेकारी की समस्याओं से त्रस्त हुई। रक्षक भक्षक बनने के कारण समाज में आतंक तथा असुरक्षितता की भावना निर्माण हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राजनीतियों की मानसिकता स्वतंत्रता के उद्देश्य से हट गई। नैतिक मूल्यों का ऱ्हास होने के कारण राजनेता आम जनता को फसाने के लिए विविध हथकंड़ों का प्रयोग करने लगे। केवल चुनावी प्रक्रिया के दौरान जोशीले भाषणबाजी, नारेबाजी कर कुर्सी हासिल करना राजनेताओं का लक्ष्य हैं। राजनेताओं के कारण सांप्रदायिकता का जहर समाज में घोल दिया जाता है। परिणामतः भाईचारे की भावना संशय में परिणत हुई। इस दिशाहिन राजनीति के संबंध में डॉ.श्यामचरण दुबे का कथन सत्य प्रतीत होता है-"आज राजनीति बहरों का संवाद बन गई है और अंधे हमें रास्ता दिखा रहें हैं।"[70] भारतीय राजनीति में शासन व्यवस्था द्वारा जनता का अमानुष शोषण हुआ।

शासन व्यवस्था के प्रति कहानी में जैसे संवेदनशील व्यक्तित्व का स्वर विद्रोही हो जाना स्वाभाविक ही है। इक्कीसवीं सदी के प्रथम कहानिकार ने अपनी कहानियों में लोगों के अज्ञान तथा अशिक्षा का लाभ उठाकर उन्हें भरमानेवाले राजनीतिक लोगों की स्वार्थी प्रवृत्ति का भी पर्दापाश किया है। धर्म का गलत इस्तमाल कर लोगों की भावना भडकाकर सांप्रदायिकता का ज़हर राजनेताओं ने फैला। जिसके कारण लोगों में अविश्वास, संशय, नफरत के भाव पैदा हुए हैं। लोगों की सेवा करना, उनका रक्षण करना इस मूल उद्देश्य से राजनीति दूर जा चुकी है। आज युवा वर्ग इस भ्रष्ट राजनीति का शिकार हो चुका है। आज भारतीय राजनीति अनेक समस्याओं से त्रस्त है। इक्कीसवीं सदी

जे कहानियों में राष्ट्रीय तथा आंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का चित्रण मिलता है। उन्होंने राजनीतिक कहानियाँ लिखकर अपनी साहसिकता का परिचय दिया है।

इक्कीसवीं सदी की कहानियों में राजनीतिक संदर्भ के विविध आयाम परिलक्षित होते हैं, इन आयामों का अध्ययन प्रस्तुत हैं।

विश्व में मानवतावाद के लिए शान्ति अनिवार्य है। परंतु आज हर देश 'बम और युध्द' की विनाशक प्रवृत्तियों को बढावा दे रहा है। शस्त्रों की निर्मिती विश्व मानवता के खिलाफ है। अपनी ताकद तथा वर्चस्व अजमाने के लिए आज आतंकवाद फैल रहा है। आतंकवाद राजनीति की ही उपज है। आतंकवाद को बढ़ाने का षड़यंत्र राजनेताओं द्वारा किया जाता है। स्वतंत्रता पूर्व आम आदमी में अपने देश को अँग्रेजों की गुलामी से मुक्त करने की भावना थी। आज इस देश में प्रेम की भावना नष्ट होकर आतंकवाद, जातीय विद्वेष, सांप्रदायिक संघर्ष बढ़ चुका है। सन 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या, राजीव गांधी की हत्या आतंकवादियों ने ही की थी। विश्वबंधुत्व की भावना पर आज आतंकवादियों ने तोफ डाग दी है। इस संदर्भ में डॉ.सुकुमार भंडारे ने उचित लिखा है- "आज मानवता मर रही है और दानवता अट्टहास कर रही है।"[71] आज मनुष्य अपने अधिकारों को पाने के लिए हथियार उठाकर हिंसा का मार्ग अपना रहा है। अपने पर हुए अन्याय, अत्याचार को मिटाने के लिए कुछ लोग आतंकवाद का रास्ता अपनाते हैं। आज भारत आतंकवाद से परेशान हैं।

भ्रष्ट राजनीति के कारण आतंकवाद को बढ़ावा मिल जाता है। आज भारत और पाकिस्तान के बीच आतंकवाद की समस्या बड़ी चिंताजनक बनती जा रही है। आतंकवादी विभिन्न कारणों से तनाव की स्थिति उत्पन्न करते हैं। इक्कीसवीं सदी की कहानियों में आतंकवाद से पीड़ित आम आदमी की त्रासदी को रेखांकित किया। इस संदर्भ उनकी 'तीसरा मोर्चा', 'पराजीत', 'राख', 'छाँह', 'बोझ', 'पनाह', 'आमोख़्ता' तथा 'मोमजामा' कहानी महत्वपूर्ण हैं।

'तीसरा मोर्चा' कहानी कश्मीर में चल रहे आतंकवाद को चित्रित करती है। हिंदूओं को कश्मीर छोड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा है। रहेमान और राहुल दो-ों दोस्त है। रहेमान के पिताजी को डर है कि आतंकवादी रहेमान को अपने में शामिल ना करें। उसके पिताजी नहीं चाहते कि रहेमान भी गलत रास्ते पर जाये। रहेमान के पिताजी कश्मीर छोड़कर कई दूर जाउ्र बसाना चाहते हैं। वे नहीं चाहते कि बेटा किसी पुलिस की गोलियों का शिकार बने। "उसके बूढे माँ-बाप काफी दिनों से जिद बाँधे हुए थे कि इससे पहले कि सर पर कफ़न बाँधे दसते उसे उठा ले जाएँ वह कुछ दिनों के लिए रूपोश हो जाए। वरना वह भी दूसरे नवजवानों की तरह धर लिया जाएगा और गलत रास्ते पर चलने के लिए मजबूर हो जाएगा या फिर सुरक्षा पुलिस एवं फौज की गोली का निशाना बन मर-खप जाएगा"[72] जाति, धर्म के नाम पर कश्मीर में फैला यह आतंक ने कई बेगुनाह लोगों की जिंदगी को तबाह किया। पुलिस कर्मचारियों द्वारा एक जवान औरत पर बलात्कार किया गया। राहुल और रहेमान की मदद को उस औरत ने ठुकरा दिया। वह कहती है- "मैं एक औरत हूँ और औरत की अस्मत तो हिंदू-मुसलमान नहीं होती---- हिंदू और मुसलमान तो सिर्फ मर्द होते हैं, जो अपने मजहब के उन्माद में औरत की आबरू लूटकर अपना धर्म निभाते हैं----मैं जौ-ा हूँ----मेरा नाम, मेरा मजहब क्या है ? मेरा मोहल्ला, मेरा पता क्या है ? बताऊँ आपको कि मैं दो बच्चों की माँ हूँ और बच्चों का बाप साल-भर से लापता है।" [73] एक स्त्री के माध्यम से लेखिका ने आतंकवाद का भयानक चेहरा हमारे सामने रखा है। कहानी कश्मीर में फैले आतंकवाद को चित्रित कर वहाँ के लोगों की दर्दनाक जिन्दगी को प्रस्तुत करती है।

राजनीति के कुटिल षड़यंत्रों के कारण जनता के मन में राष्ट्र के प्रति जनता के मन में प्रेमभाव, बलिदान, त्याग की भावना समाप्त हो चुकी हैं। मानव घृणा, अहंकार, जाति, धर्म, वर्ण, वर्ग भेद की कगार पर खड़ा है। आज 'नीति'

ञा राज न होकर 'राज' की 'नीति' हो गई है, परिणामतः आज मानव प्रेम, मानवीयता, भाईचारा, आत्मीयता लगभग समाप्त हो चुकी है। नैतिक मूल्यों ऱ्हास होने के कारण मनुष्य आपस में बँटकर अपने अस्तित्व को नष्ट करने पर तुला है। राजनीति की मूल्यहीनता को रेखांकित करते हुए डॉ.के.पी.जया ने लिखा है कि "स्वातंत्र्योत्तर राजनीति ने राजनीतिक आदर्शों और मूल्यों को तोड़ा और लोक तंत्र के नाम पर मूल्य हिनता, अवसरवादिता, भ्रष्टाचार आदि बढ़ते गए। देश के महान नेताओं ने देश की स्वतंत्रता के लिए जिस त्याग, बलिदान और तपस्या का आदर्श प्रस्तुत किया था, उन सब को स्वतंत्र भारत के कर्णधारों एवं नेताओं ने अपने स्वार्थ सिध्दि के लिए तमाम कर दिया।"[74] आज मनुष्य का जीवन भ्रष्ट राजनीति के कारण अनेक समस्याओं से त्रस्त है। चारों तरफ हाहाकार, अस्थिरता, आतंक, दहशत फैली हुई दिखाई, देती हैं। खोखली नारेबाजी ने समाज को खोखला बना दिया है। भारत-पाक विभाजन राजनेताओं के स्वार्थ सिध्दि का परिणाम है। सीमाओं के दायरे सीमित होते ही परिचित-अपरिचित हो गये थे। विभाजन के पूर्व और पश्चात जो दंगे हुए, हत्याएँ, लुटमार आंतक आदि ने मानवीय मूल्यों के पतन की पराकाष्टा है।

स्वतंत्रता के बाद बदले परिवेश, जीवन मूल्यों का विघटन एवं रिश्तों के टूटन आदि के कारण मानवीय नैतिक दृष्टिकोण अनैतिक हो गया। इक्कीसवीं सदी ञी ञहा-नीयों में मनुष्य में खत्म होती जा रही संवेदना के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, जो मानव मूल्यों के पतन तथा संवेदनशून्यता से परिचित कराते हैं। मानवीय हीनता तथा संवेदनशून्यता का बयान 'रिझञ', 'धोजा', 'जो माँ हसती हैं', 'उज्रधारी', 'ठंडा बस्ता', 'गूँगा' आसमान आदि कहानियों में हुआ है।

चुनाव प्रणाली के द्वारा ही लोकतंत्र को जीवित रखा जाता है, इसलिए लोकशाही में लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वतंत्रता के बाद भारत में अपनी सरकार चुनने का अधिकार लोगों को प्राप्त हुआ है। जनता उसी परम्परा का

निर्वाह आज तक कर रही है। जनता द्वारा चुनी गई सरकार जनता की सेवा करे, उनकी समस्याओं को दूर करें, यही उद्देश्य उसके पीछे रहता है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व.राजीव गांधी ने मतदान की उम्र इक्कीस साल से हटाकर अठारह साल कर दी। इससे उन्होंने चुनाव प्रणाली में युवकों का सहभाग बढ़ाया। इसलिए लोक चुनने का अधिकार अठारह साल के युवकों को प्राप्त हुआ।

जनता के द्वारा चुने गये लोकतंत्र से समता, बंधुता की भावना फैल जाय, समाज में शांति फैल जाए, सर्वधर्म की समभाव की भावना से व्यवहार हो, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हो यही इच्छा जनता की होती है। परंतु दुख की बात यह है कि चूने गये राजनेता अपनी स्वार्थ सिध्दि के लिए जनता का ही खुन चुसने लगते हैं। चुनाव के समय किये गये सभी वायदे भूलकर नेता लोग पूँजी इकट्ठी करने में जूड़ जाते हैं। जिससे देश में अनाज की समस्या, बेकारी, भूज, सुरक्षा की समस्या, जनसंख्या की समस्या बढ़ रही है। लोकतंत्र का आज का स्वरूप अत्यंत विकृत होता जा रहा है। धर्म के नाम पर आपसी फूट पाड़कर नेता लोग अपनी स्वार्थ सिध्दि करते हैं। जनता को झूठे प्रलोभन देकर उन्हें गुमराह बनाया जाता है।

आज कुटिल राजनीति के कारण राजनीति नैतिकता विहिन हो गई है। भ्रष्टाचार के कारण कई योजना कागज पर ही दिखाई देती है। भ्रष्टाचार से जनतंत्र की नींव हिल रही है। इस सत्य को उद्घाटित करते हुए डॉ.अरूणेन्द्र राठौड ने लिखा है कि- "जनतंत्र में चुनाव का बड़ा महत्व है। परंतु चुनावी प्रक्रिया आज दूषित एवं षड़यंत्र पूर्ण हो गई है। आज लोकसभा से लेज्र लेज्र ग्रामसभा तक चुनाव जातिवाद एवं धर्मवाद के आधार पर लड़े जा रहे हैं। प्रत्याशी और व्यवस्था की मिली भगत तथा लाठियों के जोर पर फर्जी मतदान एवं 'बूथ केचरिंग' किए जा रहे हैं। चुनाव से पहले व्यापारियों एवं पूँजीपतियों से अंदरूनी साँठ-गाँठ करके 'पार्टी चंदा' के नाम पर मोटी रकम वसूल की जाती

है। परिणाम स्वरूप चुनावों उपरांत सरकार एवं व्यवस्था पर पूँजीपतियों का अधिपत्य हो जाता है और बाजार उन्हीं के इशारे पर नाचने लगता है। महँगाई का ग्राफ बढ़ जाता है और गरीब, निम्न मध्य वर्ग बढ़ती कीमतों की चक्की में पिसते रहते हैं।"[75] नेतागण अपने वक्तृत्व कौशल एवं राजनीतिक पैंतरों से जनता की प्रशंसा को प्राप्त करते हैं। चुनाव के समय हाथ जोड़कर लोगों के सामने वोट मागनेवाले नेता चुनाव के बाद अपनी ही स्वार्थ सिध्दि में जुड़ जाता है। सुधा अरोडा की 'मैथीली' कहानी में इसी भ्रष्ट मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है। अपनी बेटी की हालात को नज़र अंदाज कर वह चुनाव जीतने में व्यस्त है। राजनीति की सफलता के बाद वह बरकत से प्रतिशोध लेना चाहता है। कहानी द्वारा राजनेता अपने अधिकारों का दुरूपयोग कर तथा अपनी शक्ति द्वारा किस प्रकार हथकड़े अपनाते है इसका चित्रण प्रस्तुत हुआ है।

सत्ता के द्वारा किये जानेवाले अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के विरूध्द आवाज उठानेवालों की जुबान खींचने की प्रणाली राजनीति में होती है। राजनेता लोग अपने स्वार्थ के लिए गुंडों की फौज खड़ी कर राजनीतिक फैसले करता है। 'आवाजें अँधेरे की' कहानी में बीड़ी बनाने वाले मजदूरों को चित्रित किया हैं। बीड़ी बनानेवाला यूहीं गरीबी भोजता है। चौदह साल की फरीदा को उसकी माँ ने अठन्नी देकर अनाज खरीदने भेजा। तब दुकानदार हँसा। अठन्नी में क्या आयेगा। वह ठेकेदार के पास काम माँगने गयी। ठेकेदार की नज़र उसपर पड़ती हैं। वह सीधे-सीधे कहता है- "तू छोकरी हठीली ज्यादा है, अरे जिस्म को क्या चाटेगी। मैं भी रोटी को तरस रहा हूँ। तु निकाल हो हाँ भर दें.. राशन, दवाई की कमी नहीं रहेगी।"[76] सूर्यबाला की कहानी "खोह" में भ्रष्ट राजनिती का खुलकर चित्रण हुआ है। नायिका 'नीना' भ्रष्ष्ट राजनिती का शिकार हो जाती है। "मैं मरती जा रही हूँ। भाभी जी अब मुझे कोई नहीं जिला सकता न। मेरी हँसती-खेलती दुनिया मुझसे छिन जाएगी।"[77] आत्मकेंद्रित राजनीति के कारण

अमानवीयता की स्थिति उग्र रूप ले रही है। आज नेताओं के सामने देशहित, एवं मानवहित का कोई मूल्य नहीं है। वह सत्ता, पद और प्रतिष्ठा को भ्रष्टाचार तथा गुंडागर्दी का परवाना मानते हैं।

राजनेता लोग चुनाव जीतने के लिए भोली-भाली जनता को बेवकुफ ब-ाज र अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की सिध्दि करते हैं। जनता नेताओं के झूठे वायदों से ठज रही हैं। नेता लोग विरोधी दल के राजनेताओं के प्रति जनता को भडकाने की चुनावी नीति है। राजनीति की नशा में वह दौड़ता रहता है। इस दौड़ में वह जनकल्याण की भावना को भूल जाता है। राजनेता परिस्थिति का लाभ उठाकर अपने दाँवपेचों का इस्तेमाल अच्छी तरह करता है। इसी दाँवपेच के अनुसार 'यही तक' कहानी चित्रित हुई है। "चुनाव का जोर शहर में जगह-जगह हर तरह के वायदे जनता से किये जा रहे थे। इन लड़कों को भी खूब मजा आ रहा था। रात गये तक शहर की चहल-पहल देखते हुए घूमते रहते थे। कहीं कुछ बॅट रहा होता तो खाने से भी नहीं चुकते थे। चुनाव खत्म हुआ तो नए आये नगरपालिका के उम्मीदवार की जीत में चहल-पहल रही फिर उनको वायदा याद दिलाया गया। विपरित दल वालों ने विरोधी नारे लगा जुलूस निकाला। पोस्टर चिपकाए थू थे---हाय हुआ---।"[78] अतः आज राजनीति ने व्यापार का रूप धारण करने के कारण प्रतिष्ठित परिवार परम्परा से राजनीति में सक्रिय है। वर्तमान चुनाव प्रणाली में हर प्रत्याशी लाखों रूपया खर्च करके जनता को प्रलोभनों से, कुटिलता से, अनैतिकता से अपने मायाजाल में फँसाकर राजनीति में सफल हो जाता है। उसका यथार्थ चित्रण इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की ज हानि‍यों में प्रस्तुत कर राजनीतिक अपराधीकरण को रोकने के प्रयासों को रेखांकित किया है।

विश्व मानवता की उदात्त भावना सुख-शांति के लिए आवश्यक है। परंतु आज हर देश स्वयंम् को बलशाली समझ-ने जे लिए 'बम और युध्द ' को बढ़ावा

दे रहा है। जिसके कारण आपसी देश के संबंधों में टकराव उत्पन्न हो गया है। आज भी भारत-पाकिस्तान के संबंध बँटवारे के बाद भी सुधर नहीं पाये है। दोनों देशों ज्ी दुश्मनी विश्व मानवता के लिए घातक साबित हो रही है। हर देश में शस्त्रों की निर्मिती में एक प्रकार की होड़ लगी हुई दिखाई देती है, यही शस्त्रों की निर्मिती विश्व में अशांति निर्माण करती है। अपनी ताकद और वर्चस्व अजमाने की ओढ़ में आतंकवाद इतना फैल चुका है कि विश्व मानवता की भावना लुप्त हो चुकी है। राजनेता लोग धर्म के नाम पर एक-दूसरे को उकसाकर साम्प्रदायिकता का ज़हर आपस में फैला देते है। जिसमें मनुष्य एक-दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखता है। व्यक्ति-व्यक्ति में अलगाव की भावना तीव्र हुई। वैश्विक अशांति के कारण देश के अंतर्गत जातिभेद, धर्मभेद, वर्णभेद की समस्याओं से आम आदमी का जीवन आतंकित हो गया। सांप्रदायिकता की भावना विश्व मानवता में बाधक रूप में दिखाई देती है। राजनेताओं की कुटनीति और परिवर्तित मानसिकता ने सामान्य मनुष्य की अवस्था दयनीय हो गई। इस संबंध में सुकुमार भंडारे ने उचित ही लिखा है-"आजादी के अट्ठावन्न वर्षो के बाद भी स्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। आम जनता फूटपाथ पर भूखे पेट दिन काट रही है। कीड़े-मकोड़ों के समान जीवन जीने के लिए विवश हो गई है।"[79] राजनेताओं ने अपने स्वार्थ के लिए लोगों में अस्थिरता उत्पन्न का राजनेताओं द्वारा विश्व मानवता, अखण्डता, एकता जैसी राष्ट्रीय भावनाओं की क्रूर चेष्टा की गयी। समाज में सामूहिक मानवता निर्माण होने के बजाय दलगत राजनीति के कारण लोगों के संबंधों में दरारे पड़ने लगी। नासिरा शर्मा ने 'दीवार-दर-दीवार' कहानी में घर के सदस्यों के वैचारिक मतभेदों को चित्रित किया है। "घर में जितने सदस्य होते, उतने ही विचार और मतभेद का होना आवश्यक था। भाई-भाई आपस में भिड़ नाते थे। हर इन्सान का अपना एक उसूल था।"[80] आज राजनीति ने हर घर में प्रवेश कर घर-घर में दुश्मनी निर्माण कर अपनी शक्ति जुटाई है। "मोहंदिस आगा धार्मिक यानी हिज्बउल्लाही थे, सत्तापार्टी के कट्टर अनुयायी थे, बेटा

साम्यवादी और बेटी शैदा मुजाहिद यानी इस्लामी गुरिल्ला जो सत्तापार्टी की कड़ी आलोचक थी और अब बची माँ, कुबरा खानम, वे केवल तमाश्ची थीं।"[105] अत: आज राजनीति समाज में फूट पाड़ने के लिए विभिन्न हथकंडों को अपनाती है। राजनेता लोग सत्ता हासिल कर मानव हित का कोई मूल्य नहीं रखते।

सत्ताधारी जनता के अधिकारों की रक्षा करने के बजाय जनहित विरोधी ज़ाम करके अपने अधिकारों का दुरूपयोग करते हैं। सत्ताधारियों की दृष्टिहीन राजनीति समाज विकास के लिए विनाशक है। आज की राजनीति सिध्दांतहीनता, भ्रष्टाचार, अमानवीयता, रिश्वतखोरी, गुंडागर्दी में ही फँस गई है। परिणाम स्वरूप राष्ट्र कल्याण की भावना का अभाव आज के राजनेताओं में दिखाई देता है। समाज का आर्थिक, सामाजिक विकास को गौण स्थान दिया जा रहा है। स्वार्थी नेता अपनी प्रतिष्ठा, सत्यनिष्ठा, अपनी ईमानदारी को बेच रहे हैं। इस संबंध में डॉ.विपिन गुप्त के विचार ध्यातव्य हैं कि-"आज जबकि लोक तांत्रिक व्यवस्था है, तो भी राजनीति में जुझनेवाले का लक्ष्य कुर्सी प्राप्त करना हो गया है और सत्ता में आने पर उसकी नजर लुट तत्व पर टिक गई है। राज्य की सुरक्षा, जनहित, आर्थिक विकास, सामाजिक संदर्भ सभी गौण विषय बन गये हैं। इसे भ्रष्ट राजनीति का नाम दिया जा सकता है।"[81] अत:स्वार्थी राजनेता देश के लिए सर्वस्व अर्पण करने की भावनाओं को तिलांजलि दे रहा है। वह अपने स्वार्थ के लिए अपने देश की अस्मिता को दाँव पर लगा देते हैं।

राजनेता अपने स्वार्थी सिध्दि के लिए आम आदमी से संबंध तोड़ देते हैं। भड़किले भाषण देकर लोगों को भड़काया जाता है। आज आतंकवाद देश के सामने बड़ी समस्या है। वही आतंकवाद जनता की एकता को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। राजनीतिक कुचक्र, अपराधिक तत्वों से साँठ-गाँठ से राष्ट्र-ज़ल्याज की कोई योजना राजनीतिज्ञों के पास नहीं है और इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण

ने अपनी कहानियों में राजनेताओं की भ्रष्ट प्रवृत्ति का पर्दापाश करने का प्रयास किया है। आज राजनीति ने मनुष्य-मनुष्य के बीच दरारें खड़ी कर दी है।

मंजुला भगत की कहानियाँ उस घटना का जिक्र करती है, जिसमें सरकार के साथ बगावत करने पर सिर्फ मौत की सजा दी जाती थी। इंसानी आवाज मशीनगनों के आवाज में डूब जाती थी। सत्ता के माध्यम से आम जनता पर किये अत्याचार का वर्णन करके अत्याचारी शासन व्यवस्था की पोल खोलने का काम किया है। आज राष्ट्र कल्याण की भावना राजनेताओं में न होकर अपनी ही आर्थिक परिस्थिति को सदृढ़ बनाने का उनका उद्देश्य रहा है। राष्ट्र तथा जनता के प्रति हमदर्दी केवल राजनेता लोग केवल अपने फायदे के लिए जताते हैं। इसी कारण राष्ट्र कल्याण की भावना का अभाव राजनेताओं में पाया जाता है।

विश्व में मानवता की उदात्त भावना सुख शांति के लिए आवश्यक है। परंतु आज हर देश में बम और युध्द की विनाशक प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिल रहा है। अपने ताकद का वर्चस्व दिखाने का प्रयास आज हर देश कर रहा है। जिससे आम आदमी जीवन असुरक्षित हो गया है। आतंकवाद फैलाने के कारण मानवता की भावना खण्डित हो चुकी है। एक-दूसरे के संबंध में शत्रुता निर्माण हो रही है। बलवान राष्ट्र दुर्बल पर अपना अधिपत्य स्थापित कर अपने वर्चस्व को कायम रखने का प्रयास कर रहा है। परिणाम स्वरूप आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है। राष्ट्र-राष्ट्र के प्रति शत्रुता पनप रही है। विश्व में शांति के सभी प्रयास विफल होते नजर आ रहे हैं। जातिभेद, वर्णभेद, वर्गभेद के कारण आम आदमी का जीवन असुरक्षित नजर आ रहा है। ऑस्ट्रीलिया और भारत के बीच वर्णभेद के कारण जनता में शत्रुता का भाव अपने-आप पनपने लगता है।

युध्द से कई राष्ट्रों को दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं। शस्त्र की निर्मिती की होड़ में हिंसाचार बढ़ रहा है। युध्द के कारण नरसंहार, रक्तपात, तथा आपस में द्वेष और घृणा भाव बढ़ रहे हैं। जिसके कारण देशों की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल

हो जाती है। अंतर्राष्ट्रिय स्तर पर महासत्ता प्राप्त करने की लालसा के कारण युध्द की छाया से आम आदमी हमेशा घिरा हुआ दिखाई दे रहा है। इस संबंध में -ासिरा शर्मा -े ज्हा है ज्ि-"आज पूरा विश्व अशांत है। लगातार कुछ देश युध्दरत हैं। आतंकवाद, असंतोष, असहिष्णुता, अपमान, अमानवियता का भूकंप पूरे संसार ज्ो झंझोड़ रहा है।"[82] आज भारत और पाकिस्तान तथा भारत और चीन के संबंधों में कटुता निर्माण हो गई है। युध्द का परिणाम आम व्यवस्था बिघड़ जाती है।

मैत्रेयी पुष्पा ज्ी 'छुटकारा' ज्हा-ी दलितों पर किये गए अत्याचार पर प्रकाश ड़ालती है। नायिका की माँ अपनी मुक्ति के लिए अपने गुरूजी के पास चली जाती है। पर वहाँ भी उसे मुक्ति नहीं मील पाती वह सोचती है-"ज्हाँ जाऊंगी वापस अपनी घर नहीं। नहीं वह तो छूट चुका।"[83]

आज संप्रदाय श्रेष्ठता तथा हितों की भावना बढ़ती जा रही है। यह संकुचित, स्वार्थी भावना से परस्पर घृणा, द्वेष की भावना पनप रही है। साम्प्रदायिक संकुचित भावना से हिंसा की आग भडक रही है। आज हमारे देश में महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश को लेकर साम्प्रदायिक संकुचित भावना को बढ़ावा मिल रहा है। जिससे दोनों प्रदेश में हिंसा बढ़ती जा रही है। परिणामत: आज मा-ाव प्रेम, मित्रता, भाईचारा, शांति, उदारता, सहिष्णुता, निष्ठा जैसे मानवीय मूल्यों का ऱ्हास हो गया है। मानव सांप्रदायिकता में बँटकर विनाश की कगार पर खड़ा हुआ है।राजनीति के कुटिल षड़यंत्रों के कारण राष्ट्र के प्रति त्याग, बलिदान की भावना समाप्त होकर स्वार्थ केंद्रित हो गयी है। राजनेताओं से सत्ता प्राप्ति के लिए सांप्रदायिकता को कुटघरे में खड़ा किया है। डॉ.जाकिर शेख बशीर राजनेताओं की सांप्रदायिक भावना की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि- "राजनीति में संप्रदाय को विशेष महत्व प्राप्त होता है क्योंकि राजनेता किसी सम्प्रदाय विशेष से संबंधित होता है, वह अपने सम्प्रदाय के विकास के लिए

तत्पर रहता है। कभी-कभी वह सम्प्रदाय का उपयोग सत्ता प्राप्त करने तथा कुर्सी बचाने के लिए करता है।"[84] राजनेता अपने स्वार्थ के लिए जनता में साम्प्रदायिकता की आग भड़काकर अपनी स्वार्थ की पूर्ति करते है।

आज हमारे देश में सांप्रदायिकता की आग भड़क रही है। परिणामत: सांप्रदायिक दंगे हो रहे हैं। सांप्रदायिकता राजनेताओं को किस प्रकार लाभदायी है, इस संबंध में सुनिल कुमार अग्रवाल के विचार हैं-"साम्प्रदायिकता भारतीय राजनीति के दाँव-पेचों की उपज है। राजनीतिज्ञ अपने लाभ के लिए साम्प्रदायिकता की भावना फैलाते हैं और जरूरत पड़ने पर दंगे भी कराते हैं। राजनीति का अपराधीकरण हो रहा है। समाज विरोधी तत्वों को संरक्षण देकर उनकी आड़ में साम्प्रदायिकता का जुआ खेला जाता है।"[85] राजनीति में सांम्प्रदायिकता की भावना उग्र रूप धारण कर रही है। परिणाम स्वरूप राजनीति में असंतुलन अशांति, आतंक, दहशतवाद,गुंडागर्दी की प्रवृत्तियाँ प्रबल हो रही है। कुसुम अंसल, शिवानी, सूर्यबाला की कहानी में सांप्रदायिकता का वर्णन हुआ है। कहानी का नायक समीह इस सांप्रदायिक संकुचित भावना का शिकार है। समीह बर्तन को बुलाई करने का काम करता है। वह अपना नाम बदलकर उसी इलाके में बर्तनारें को बुलाई करने के लिए आता है। जहाँ उसके माता-पिता की हत्या करके उसका मकान छीन लिया जाता है। समीह (लच्छू) उस पूराने बर्तनों के संबंध में पूछता है, तब उसकी जमकर पिटाई होती है।

15 अगस्त 1947 की स्वतंत्रता प्राप्ति से भारतीय राजनीति में एक नया मोड़ आया। भारत-पाक विभाजन के समय हुए दंगे, फसादों से समता, बंधुता की भावना खण्डित हुई। भारत विभाजन राजनेताओं के स्वार्थ सिध्दि का परिणाम है। सीमाओं के दायरे सीमित होने पर परिचित भी अपरिचित हो गये थे। विभाजन के पश्चात जो हिंदू-मुस्लिम में दंगे हुए, उसमें आगजनी, बलात्कार, हत्याएँ आदि रोंगटे खड़े करनेवाले अमानवीय कृत्य ने मानव जीवन को अस्तित्वहीन बना

दिया। यह विभाजन दो देशों के बीच न होकर दो दिलों के बीच का विभाजन है। इस विभाजन की भीषण घटनाएओं का परिणाम आम आदमी को भुगतना पड़ा। अंग्रेजों की कुटनीति से भारत दो दिलों में बँट गया। दोनों को एक दूसरे से भड़का कर सांप्रदायिक दंगे भड़काए।

आज भी भारत-पाकिस्तान उसी बँटवारे के परिणाम को भोगते नजर आ रहे हैं। आज भी हिंदू-मुस्लिमों में द्वेष की भावना दिखाई देती है। दोनों एक-दूसरे के खून के प्यासे बन गये हैं। राजनेता लोग इसी का लाभ उठाकर मनुष्य मनुष्य से बाँटने का प्रयास कर रहे हैं। धर्म के नाम पर भड़काकर राजनेता अपनी स्वार्थ सिध्दि कर लेते हैं। विभाजन के बाद भारतीय मुसलमान पाकिस्तान में चले गये और पाकिस्तान से हिंदू भारत। इसी बीच कई लोगों की हत्या हुई। सर्वधर्म समभाव की भावना समाज से लुप्त हो गई और समाज में आतंक और असुरक्षितता निर्माण हुई। इस विभाजन की त्रासदी को हम आज भी एक ज़ख्म ब-ाज्र सह रहे हैं। उसी विभाजन की परिनीति स्वरूप आज भी दोनों देशों के बीच शत्रुता कायम है। सियासी नेताओं के व्यक्तिगत आकांक्षाओं और नफे नुकसान के हाथों अंजान गुनाह सिर्फ उनके जीवन तक सीमित नहीं रह जाता है, बल्कि पूरी कौम सहती, सारा मुल्क झेलता और नई आनेवाली नस्लें भी आरोपों के घेरे में फँसी सदियों से तड़पती है। नेताओं की आकांक्षा हेतु जातिवादी तनाव निर्माण हुआ और बँटवारे की आग भड़क गई। नासिरा शर्मा ने इसी बँटवारे की भीषणता का चित्रण अपनी कहानियों में चित्रित किया है।

'कच्ची दीवारें' कहानी के इब्नेमियाँ विभाजन के बाद भारत रहना पसंद ज्रते हैं, लेकिन उनके सभी रिश्तेदार पाकिस्तान में है। "ब्याह कर वह लाहौर से इलाहाबाद आयी थी। इत्तेफाक से ससुरालवाले भी धीरे-धीरे ज्रज्रे पाकिस्तान चले गये। चचा को बहुत बुलाया गया, बहुत जोर दिया गया मगर वह राजी न हुए।.. चची के मायकेवालों और अपने घरवालों से उन्होंने दो टूक बात

ज़ी थी कि मेरा वतन हिंदूस्तान है, हम दोनों को वही रहना है।"[85] विभाजन से उभरता आतंकवाद का सिलसिला और उसकी शिकार होती निरीह जनता की विवशता कहानी में समग्र चेतना के साथ चित्रित है। विभाजन से उपजी भयावहता और विकृतता के प्रति नासिरा शर्मा ने चिंता व्यक्त की है।

स्वातंत्र्योत्तर विषम राजनीतिक के परिणाम स्वरूप लोगों को अपना देश छोड़कर अन्य देशों में वास्तव करना पड़ता है। स्वातंत्र्योत्तर प्राप्ति के बाद भारत-पाक विभाजन हुआ। भारत में रहनेवाले मुसलमान पाकिस्तान चले गये और पाकिस्तान में रहनेवाले कई मुसलमान भारत आये। भारत से पाकिस्तान जा बसे मुसलमानों की स्थिति मुहाजिर जैसी रही। शरणार्थी बनने पर मजबूर हुए लोग अस्तित्वहीन बन गये।

समग्रत: कहा जाता है कि इक्कीसवीं सदी की कहानियों में अनेक प्रसंगों, संदर्भो द्वारा भ्रष्ट राजनीति को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। बदलती राजनीति की भ्रष्ट नीति, राष्ट्रीय भावनाओं की उपेक्षा, आम आदमी की अवहेलना, आतंकवाद, जातिवाद के संवेद-नशील हृदय को झकझोर देती है। आज इस भ्रष्ट राजनीति के कारण देश की एकता, अखण्डता, राष्ट्रीयता, भाईचारा समाप्त होकर समाज जाति-धर्मों में विभाजित हुआ। इसलिए उनके लेखन में राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय विकास के खिलाफ भ्रष्ट राजनेताओं के प्रति आक्रोश का स्वर बुलंद है। स्वतंत्रता के बाद गांधीजी के सपनों का भारत सपनों में ही खो गया। 'सेवा के बदले मेवा' ने राजनीति का स्तर पूरी तरह गीर चुका। स्वार्थ, सत्तालोलुपता, मूल्यहिनता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, जातिवाद आदि कई मुखवटे राजनीति ने धारण किये। जिसके कारण आम आदमी में असुरक्षितता की भावना निर्माण हुई। राजनीति पर लोगों का विश्वास ही उड़ गया। जातिभेद, वर्णभेद, भाषाभेद, क्षेत्रवाद के कारण आम आदमी का जीवन मौत से बेहत्तर बन गया। आज राजनीति चिंता का विषय है, क्योंकि रक्षक ही भक्षक बन चुके है।

सांप्रदायिता का ज़हर राजनेताओं ने समाज में फैला देने के कारण भाई-चारे की भावना संशय में परिणत हुई। मँहगाई, बेकारी ने जनता का खून लिया। आंतक, असंतोष, अविश्वास की भावना लोगों में पैदा होने लगी। जातिवाद, बलात्कार, आतंकवाद, लूटमार, हत्या अपराध बढने लगे। राजनेता 'स्वान्त सुखाय' में डूबने के कारण राजनीति नतभ्रष्ट हो गई। आम आदमी को इस दल-दल से बचाने के लिए इक्कीसवीं सदी के ज्हानिकारों ने भ्रष्ट राजनीति के प्रति लिखा व्यंग्य अपनी कहानियों में व्यक्त किया।

संदर्भ-

1. शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन-टी.मीनाकुमारी, पृ.80
2. राष्ट्र और मुसलमान, -ाासिरा शर्मा, पृ.196
3. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामाईक दृष्टि, डॉ.मंजुर सैय्यद, पृ.123
4. अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ.नागेश राम त्रिपाठी, पृ.184
5. इन्सानी नस्ल, नासिरा शर्मा, पृ.101
6. वहीं, पृ.102
7. मा-ाज हिंदी ज ोश, सं.बदरी-ाथ ज पूर
8. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामाईक दृष्टि, डॉ.मंजुर सैय्यद, पृ.162
9. वही, पृ.163
10. शामी कागज, नासिरा शर्मा, पृ.37
11. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामाईक दृष्टि, डॉ.मंजुर सैय्यद, पृ.150
12. साठोत्तरीय हिंदी उपन्यासों में नारी, सुधा अरोड़ा, पृ.263
13. नारी शोषण आईने और आयाम, आशारानी व्होरा, पृ.236
14. देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य - डॉ. पांडूरंग पाटील पृ.
15. दूसरा ताजमहल - -ाासिरा शर्मा - पृ. 66
16. पत्थर गली - -ाासिरा शर्मा - पृ. 93 / 94
17. शामी कागज - -ाासिरा शर्मा - पृ. 23
18. देवेश ठाकूर और उनका उपन्यास साहित्य - डॉ. पांडूरंग पाटील पृ. 80
19. स्त्री को पुकारता है स्वप्न, संपा. गीताश्री/अरूणा सिंह, पृ-28

20. वही

21. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्ति मूलक अनुशीलन - डॉ.क्षितीज धुमाळ - पृ. 138

22. महिला उपन्यासकारों की रचना में वैचारिकता - डॉ. शशी जेकब - पृ. 57

23. जुदा ज्ी वापसी - -ाासिरा शर्मा - पृ. 136

24. हंस - जुलाई. 1994 पृ. 40

25. हिंदी उपन्यास : समाज शास्त्रीय अध्ययन - डॉ. चण्डी-प्रसाद जोशी - पृ. 113

26. समकालीन हिंदी उपन्यास - वर्ग एवं वर्ण संघर्ष - डॉ. जालिंदर इंगळे - पृ. 166

27. ललमनियाँ, मैत्रेयी पुष्पा- पृ. 108

28. पत्थरगली - -ाासिरा शर्मा - पृ. 156

29. गूँगा आसमान - -ाासिरा शर्मा - पृ. 111

30. समज्ाली-ा हिंदी ज्हा-ी - पुष्पपाल सिंह - पृ. 9

31. अंतीम दशक के हिंदी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. जोरखनाथ तिवारी - पृ. 110

32. ललमनियाँ, मैत्रेयी पुष्पा - पृ. 101

33. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामायिक दृष्टि - डॉ. मंजुर सैय्यद - पृ. 127

34. शामी कागज - -ाासिरा शर्मा - पृ. 116

35. वही - पृ. 116 / 117

36. वही - पृ. 117

37. साठोत्तरीय हिंदी उपन्यास - डॉ. एम. बी. पटेल, डॉ. दिलीप मेहरा - पृ. 39

38. अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययनराम नागेश त्रिपाठी - पृ. 175

39. थाली भर चाँद-सूर्यबाला, पृ.145

40. शामी कागज - -ाासिरा शर्मा - 30

41. थाली भर चाँद, सूर्यबाला - पृ. 85

42. सामाजिक विघटन - डॉ. सरला दूबे - पृ. 118

43. इनसानी नस्ल - -ाासिरा शर्मा - पृ. 93

44. जुदा जी वापसी - -ाासिरा शर्मा - पृ. 152

45. आदमी और हव्वा, मेहरून्निसा परवेज- पृ. 30

46. इब्ने मरियम - -ाासिरा शर्मा - पृ. 147

47. मृदुला गर्ग का कथा साहित्य - डॉ. तारा अग्रवाल - पृ. 108

48. वही - पृ. 109

49. कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी, डॉ.बालजी भूरे- पृ. 82

50. इब्ने मरियम - -ाासिरा शर्मा - पृ. 68

51. साठोत्तरीय हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ- डॉ. विजया वारद (राजा) पृ. 91

52. दूसरा ताजमहल - -ाासिरा शर्मा - पृ. 155/156

53. पत्थर गली - -ाासिरा शर्मा - पृ. 15

54. राष्ट्र और मुसलमान - -ाासिरा शर्मा - पृ. 92

55. वही - पृ. 92

56. राष्ट्र और मुसलमान - -ाासिरा शर्मा - पृ. 93

57. सर्वश्रेष्ठ रसूल, मुहम्मद का आदर्श जीवन - डॉ. मुहम्मद अब्दूल हुई रह,पृ. 703

58. राष्ट्र और मुसलमान - -ाासिरा शर्मा - पृ. 268

59. जुदा ज्ी वापसी - -ाासिरा शर्मा - पृ. 20

60. वही. पृ. 19

61. ललमनि-ियाँ, मैत्रेयी पुष्पा - पृ. 93

62. थाली भर चाँद, सूर्यबाला, पृ.84

63. जुदा ज्ी वापसी - -ाासिरा शर्मा - पृ. 67

64. सबीना के चालीस चोर - -ासिरा शर्मा - पृ. 157

65. शिवप्रसाद सिंह के कथासाहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ.टी. मी-ा ुमारी पृ.80

66. नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में युग बोध- डॉ.अजय पटेल, पृ.137

67. ्‍मलेश्वर, संपा, मधु्‍र सिंह, पृ. 150

68. हिंदी उपन्यास और राजनीतिक आंदोलन, डॉ.भगवत शरण अग्रवाल, पृ.18

69. विमर्श विविधआयाम, डॉ.अर्जुन चव्हाण, पृ.125

70. संक्रमण की पीड़ा, श्यामचरण दुबे, पृ.108

71. समकालीन हिंदी उपन्यासों में राजनैति् चित्रण, डॉ. सुकुमार भंडारे, पृ.65

72. इब्ने मरियम, नासिरा शर्मा, पृ.65

73. वही- पृ.68

74. कथाकार कमलेश्वर, के.बी.जया, पृ.11

75. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युगचेतना, डॉ.अरूणन्द्र राठौड, पृ.240/241

76. जुदा ्ी वापसी, -ासिरा शर्मा, पृ.55

77. थाली भर चाँद, सूर्यबाला, पृ.136

78. यही तक, राणी सेठ, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ.160

79. समकालीन हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक चित्रण, डॉ.सुकुमार भंडारे, पृ.65

80. संजसार, -ासिरा शर्मा, पृ.34

81. हिंदी नाटक में समसामाईक परिवेश, डॉ.विपिन गुप्त, पृ.08

82. राष्ट्र और मुसलमान, नासिरा शर्मा, पृ.15

83. हंस, -वम्बर 1993, पृ.157

84. नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामायिक बोध, डॉ.शाकिर शेख बशीर, पृ.144

85. गाँधी और सांप्रदायिक एकता, सुनिल कुमार अग्रवाल, पृ.2

86. पत्थर गली, नासिरा शर्मा, पृ.131

चतुर्थ अध्याय

4.0 ''इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के हिंदी कहानियों में चित्रित विविध समस्या

प्रस्तावना-

4.1. सामाजिक समस्या

4.1.1. विवाह समस्या

4.1.2. विधवा की दयनीयता

4.1.3. नारी का दमन और शोषन

4.1.4 दाम्पत्य संबंधों में बिखराव

4.1.5. यौन शोषण

4.1.6. वैश्या व्यवसाय

4.1.7 अवैध काम संबंधों की समस्या

4.1.8. दहेज

4.1.9 नारी शिक्षा का अभाव

4.2. राजनीतिक समस्या

4.2.1. चुनाव प्रणाली

4.2.2. विभाजन की त्रासदी

4.2.3. आतंकवाद

4.2.4. नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन

4.2.5. राष्ट्र कल्याण की भावना का अभाव

4.2.6. सांप्रदायिक संकुचित भावना

4.3. आर्थिक परिस्थितियाँ

4.3.1. आर्थिक वैषम्य

4.3.2. अर्थ लोलूपता

4.3.3. अर्थ प्राप्ति के लिए अवैध धन्दे

4.3.4. बेरोजगारी एवं दरिद्रता

4.3.5. मूल्य वृध्दि की समस्या

4.3.6. उच्चवर्ग का विलासी जीवन

4.3.7. आम आदमी का शोषण

4.3.8. प्रशासकीय व्यवस्था का आर्थिक शोषण

4.3.9. बाल मजदूरी

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

4.0 इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानियों में चित्रित समस्याः-

प्रस्तावनाः-

भारतीय समाज में आरंभ से स्त्री को 'शक्ति-पूजा' का सर्वोच्य स्थान दिया गया लेकिन धीरे-धीरे स्त्री की अवस्था बदल गई । पुरुष प्रधान संस्कृति ने उसे बंदिस्त बना लिया । कौमार्य अवस्था से लेकर वृद्ध अवस्था तक वह आश्रित हो गई । परिवार से लेकर समाज में उसका अस्तित्व गौण बन गया ।

परिवार समाज की नींव होता है । परिवार से संबंधित सभी पहलुओं पर सामाजिक बोध के अन्तर्गत विचार किया जाता है । स्त्री पुरुष में कई भेदभाव किया जाते हैं । विवाह के बाद भी यह भेद भाव चलता रहता है ।समाज में आज नारी विभिन्न समस्याओं का सामना कर रही है । सामाजिक, आर्थिक ,राजनैतिक, धार्मिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण इक्कीसवी सदी के कहानीकारों ने अपने कहानियों में किया । यौन शोषन ,विधवा जीवन, वेश्या जीवन ,भ्रष्टाचार, तलाक तथा राजनीतिक चुनाव प्रणाली, महंगाई, बेरोजगारी, विभाजन की त्रासदी मध्यवर्ग की अर्थलोलुपता ,आतंकवाद ,सांप्रदायिकता जैसी समस्यओं से समाज का आम आदमी त्रस्त है । इन्हीं समस्याओं का विस्तार से अध्ययन प्रस्तुत करना हमारा उद्देश्य है ।

4.1 सामाजिक समस्याः-

मनुष्य जन्म से ही समाज का एक अभिन्न अंग बन जाता है । परिवार में पति-पत्नी नैतिकता पूर्ण जीवनयापन कर अपनी संतान को संस्कारक्षम बनाने का प्रयास करते हैं।" परिवार संस्कार की प्रथम पाठशाला है ।"[1] वही संस्कार उसके

लिए आजीवन बनकर समाज का अभिन्न अंग बनकर रह जाते है । साहित्यकार समाज जीवन से जुड़ने के कारण वह समाज जीवन के विभिन्न प्रश्नों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है । आधुनिक जीवन के प्रायः सभी विषयों में दाम्पत्य तथा दाम्पत्येत्तर नर संबंध, मूल्यों का -हास तलाक शुदा, विधवा जीवन व्यक्ति की यौन भावनाएँ, वेश्या जीवन ,बहुविवाह, बालविवाह आदि संबंधित उत्कृष्ट कहानियों की रचना इक्कीसवी सदी में हुई ।अपने परिवेश की गति विधियाँ,संवेदना,घटनाएँ आदि का चित्रित उस समय के कहानीकारोंने अपनी कहानियों में किया । इस संदर्भ में नासिरा शर्मा का कथन है कि-" अधिकतर लेखक परिवेश पर लिखने है, क्योंकि उनकी भावभुमि की प्रामाणिकता उसी में निहित होती है और वही इन्सानी स्वभाव की जटिलता रहस्य खोलते हैा "[2] इक्कीसवीं सदी की कहानियो मे विविध समस्याओं का चित्रण हुआ है- जैसे

4.1.1 **विवाह समस्या :-**

भारतीय समाज में विवाह को एक सामाजिक संस्कार माना गया है। नारी का जीवन पुरुष के बिना अधुरा है । सन्मान प्रप्ति के लिए विवाह प्रथा का आरंभ हुआ। पति के बिना उसका जीवन सुखमय नहीं बन पाता । समाज के धार्मिक नीति-नियमों के आधार पर विवाह होते है । आज शिक्षित समाज अपने व्यक्ति स्वतंत्र के प्रति जागृत हो गया । विवाह संबंधी पुरानी मान्यता तथा विचार धारा में बदलाव आया । माता-पिता के विवाह संबंधी विचार और पूत्र-पुत्रियों की विचारधारा में आमुलाग्र बदलाव की स्थिति उत्पन्न हुई । इस संबंध में डॉ. मंजूर सैय्यद के विचार विशेष उल्लेखनिय है- "पुरुष स्त्री का स्वामी कम और साथी ज्यादा का विचार प्रबल होता गया है । विवाह सात जन्मों का पवित्र संबंध या बंधन नहीं बल्कि एक समझौता मात्र है । इसलिए परम्परागत विवाह संबंधी रीतियों,नीतियों को आधुनिक विचारों के आगे मान रवानी पडी है।"[3] इसी कारण आज विवाह संस्था

असफल हो रही है । गृह व्यवस्था को भली-भाँति सफलता के लिए पति-पत्नी में सामंजस्य की भावना आवश्यक होती है ।

पुरानी विवाह संस्था के प्रति शिक्षित वर्ग की मानसिकता बदल गई है। नारी विवाह जैसे बंधन में बंदिस्त नहीं रहना चाहती । इसलिए पति-पत्नी का पवित्र रिश्ता कायम नहीं बन पाता। विवाह की सफलता और असफलता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. सुधा अरोडा ने लिखा हैं कि '' सफल विवाह वह माना जा सकता है, जहॉं पति-पत्नी विवाह को सफल बनाने के लिए परस्पर त्याग करते हैं, या आवश्यक समझौता करने को तत्पर दिखाई देते है । असफल विवाह वह माना जाता है, जहॉं पति-पत्नी में समझौते के बदले असहिष्णुता की भावना है, या दोनों में अंहकार टकराव है या फिर एक दुसरे की विवशता है या फिर घर-बाहर की समस्या के कारण एक दूसरे के प्रति उपेक्षा की भावना है।''[4] अतः वैवाहिक जीवन को सफल बनाने के लिए दोनों में परस्पर प्रेम की भावना तथा सांमजस्य की भावना का होना आवश्यक है । जहाँ ये दोनों भावनाएँ नहीं विवाह वे असफल हो जाते हैं ।

भारतीस समाज में विवाह संबंधी पुरानी मान्यता बदल रही है। आज शिक्षित नारी पति को देवता के रूप में नही बल्कि एक जीवन साथी के रुप में देखती है । विवाह संबंधी अपने विचार व्यक्त करते समय डॉ. पाडुरंग पाटील ने लिखा है कि '' आधुनिक युग में विवाह एक धार्मिक संस्कार न रहकर एक आर्थिक समझौता होता चला जा रहा है । ''[5] भारतीय समाज में सुख,शांती तथा संतान प्राप्ति के लिए विवाह प्रथा का आरंभ हुआ । लेकिन आज नारी पति को परमेश्वर मानकर तथा सात जन्मों तक पति की कामना करने वाली स्त्री दिखाई नहीं पड रही है । भारतीय संस्कृति में विवाह का महत्व प्रतिपादित करती हुई आशा रानी व्होरा ने लिखा है-'' विवाह संस्कार भारतीय संस्कृति में ही नहीं, संसार की सभी संस्कृतियों में

महत्वपूर्ण माना गया है । धर्म का बहुत बडा हिस्सा विवाह अैार गृहस्थ संबंधी आदेशों निर्देशों से भर पडा है।''[6] लेकिन पुत्र और पुत्रियों के विचार अपने माता-पिताओं से भिन्न नजर आ रहे है । विवाह पवित्र बंधन है दो दिलो का मिलन है । यह धारना अब बदल रही है । एक जीवन साथी के रुप में पति को स्वीकार किया जा रहा है । पाश्चात्य प्रभाव के कारण आनेवाले कल में विवाह का तात्पर्य केवल सेक्स बनकर रह जायेगा ।

स्त्री -पुरुष की रुचि भिन्नता तथा जीने के तरीके में अंतर के कारण तनाव की स्थिति उत्पन्न होने पर तलाक की स्थिति उत्पन्न होती है । नासिरा शर्मा ने मुस्लिम समाज में विवाह संबंधी कई समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है । नासिरा शर्मा की ' ओर गोमती देखती रही' कहानी में पत्नी भैातिक सुख के प्राप्ति के लिए उसका वैवाहिक सुखी जीवन बिखर जाता है । दोनों में परस्पर संबंध में विश्वास न होने के कारण संबंध में कटूता निर्माण होती है । ''विवाहिक जीवन में जहर घुलता है कारण से हैं कि एक साथी लगातर नए अनुभव से गुजरता आगे बढता रहता है। अटका खडा उस जड अवस्था में पडा रह जाता है, जहाँ से दोनों चले थे। इसलिए हर रोज बदलती इस दुनिया में जीवन साथी भी अपनी रफ्तारवाला ही चुनना चाहिए । इसलिए वह अक्सर अपनी सहेलियों से कहती है कि उठो नौकरी करों । इस अय्याशी भरी इतराहट में भैातिक सुविधाएँ तुमसे तुम्हारा पति छीन लेगा । ''[7]

प्रेम विवाह में आपस में विश्वास की कमी हो जाने पर कई बार पति- पत्नी के बीच कलह निर्माण हो जाता है । ' पतझड का फूल 'कहानी में इस कलह का वर्णन हुआ है -''दोनों एक -दूसरे पर मरते हैं -- पर लड़ते समय दोनों कु-ते बिल्ली की तरह एक दूसरे को नोचते है कि उन्हें रोकना मुश्किल हो जाता है । शायद इसका कारण कम आय और अधिक व्ययथा, फिर दोनों का कम उम्र होना है ।''[8]

अपरिपक्व अवस्था में किया गया विवाह कई बार तकरार करने में बीत जाता है । कम उम्र के कारण उत्कटता , कोमलता समझ न आने पर सुखमय विवाहितों की संख्या कम हो रही है। सूर्यबाला की 'सिर्फ मैं' कहानी में मेघा एक शिक्षित युवती है, वह अपने प्रेमी को समझाती है कि " अपनी पसंद मेरे ऊपर लादने की कोशिश मत करना । तुम कोई कविया कलाकार तो नहीं, बल्कि मैं तो तुमसे एक ओर बात कहना चाह रही थी कि अपना नाम मैं शादी के बाद भी मेघा शुक्ला ही रखूँगी । तुम चाहे ' मेघा पांडे ' या 'मिसेस पांडे' किस्म की दकियानुसी जिद तो नहीं करोगे न?" [9] कहानी की मेघा शादी के बाद अपने पति के बंधन में नहीं रहना चाहती । वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करना चाहती है । दोनों में अहं का टकराव है। या एक दूसरे की विवशता है, जिसके कारण ऐसे विवाह भी असफल हो जाते है।

मुस्लिम समाज में अक्सर खानदान को महत्व दिया जाता है। नासिरा शर्मा की 'ताबुत ' कहानी इस दृष्टिकोन को प्रस्तुत करती है। 'ताबुत ' कहानी की सैयदा की समस्या भी यही है " वह ठहरी इमाम की औलाद खरी सैयदा माँ बाप लडके की नौकरी और पढाई से कई ज्यादा उसकी हडी और खानदान देखते है । बरसों से जोडा मिलाया जा रहा था । कभी लडका तो कभी लडकी उम्र में बडे निकलने है, तो कभी खानदान में खोट तो कभी।"[10] अपरिपक्व अवस्था में किये गये विवाह भावी जीवन में तकरार करने में बीत जाते है ।

4.1.2 विधवा की दयनीयता :-

नारी विधवा होने से उसका तन-मन तथा अस्तित्व भी विधवा हो जाता है । उसका जीवन आश्रित हो जाता है । समाज द्‌वारा उसका शोषण किया जाता है । डॉ.क्षितिज धुमाळ ने विधवाओं की दयनीयता की स्थिति उजागर करत हुए कहा है कि " वैधव्य नारी जाति के लिए अभिशाप माना जाता है। भारतीय संस्कृति में

विधवाओं का जीवन अत्यंत उपेक्षित, तिरस्कृत, अशुभ घृणात्मक माना जाता है। भारतीय समाज सुधारकों ने इस अमानवीय स्थिति को परिवर्तित करने का प्रयास किया है। विधवा पुनःर्विवाह का कानून पारित कराया गया है । पंरतु आज भी ग्रामांचलो में परम्परागत विधवाओं और आधुनिक विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है ।''[11]

पुरुष प्रधान संस्कृति ने नारी को अपने सींकजे में बन्द कर रखा है। पति के मृत्यु के बाद उसके जीवन की प्रसन्नता, आनंद ही समाप्त हो जाता है। डॉ शशी जेकब ने लिखा है कि '' इस जीवन में इच्छा ,उमंग उल्लास,उत्साह का कोई स्थान नहीं होता अगर होता है तो केवल व्यथा का वेग, अंदर ही अंदर खून सुखता रहना है । किंतु होठ जरा-भी नहीं हिलते । ''[12]

विधवाओं की दयनीयता पर नासिरा शर्मा की 'बचाव' कहानी प्रकाश जलती है । कहानी की नायिका का पति स्वर्गवासी हो जाता है । कुछ दिनों के बाद उसे घर के बाहर निकाल दिया जाता है। '' हप्ते भर दोनों ने कमरे खाली करवा दिये । सामान बाहर फिकवा उसमें किरायेदार रख लिये है । बीच में पडोसी पडे तो उनसे तू-तू , मैं-मै हो गयी । बेकार की हाथापाई में कोई क्या पडता सो एक दो दिन पडोसियों ने जैसे-जैसे अपने घर रखा । फिर सलाह दी कि भाई से कहकर इन पर केस करवा दो, तभी तुम्हारा हिस्सा मिलेगा। ''[13] 'आखिरी पहर' कहानी भी विधवा जीवन की त्रासदी को व्यक्त करती है ।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'पगला गयी है' भाग्यवती कहानी की नायिका का विधवा जीवन अनेक त्रासदिओं से बीता है। पति न रहने पर उसका जीवन शुष्क बन जाता है। '' वह सारे दिन कोठे में छिपी बैठी रही। फिर समय के अन्तराल ने बता दिया कि वह विधवा हो गयी। तब से आज तक उसका तन ,उसका मन ,सम्पुर्ण

अस्तित्व विधवा है । होंस-उमंग, पहनना-ओठना ,सजना-सँवरना उसके लिए वर्जित है । औरतें उसे सगुन-सात-मंगल कार्योसे बचाती है । सुबह सवेरे उसका किसी के आगे पड़ जाना अशुभ है। '' [14]

4.1.3 नारी का दमन और शोषन :-

समाज में नारी शोषण बहुआयामी भी है । सदियों से शोषण चला आ रहा है । समाज पुरुष प्रधान होने के कारण नारी कहा निरंतर मानसिक एवं सामाजिक तनावों से त्रस्त रही । आज भी स्त्री पीडित एवं शोषित दिखाई देती है । वह आज भी पूर्ण स्वतंत्र नहीं है। उसका अस्तित्व दूसरों पर निर्भय है । जिसके कारण उसका जीवन अपमान, उपेक्षा एवं निरस्कार से भरा हुआ है। पुरुष अपने बुध्दिचातुर्य से उसे बंदी बनाना चाहता है । हर समय उसे कमजोर बनाने का षडयंत्र रचाया जाता है। पति को परमेश्वर तथा स्वयंम् को पतिधन मानकर उसे अपना जीवन पति के प्रति समर्पित करना पडता है।

नारी शोषण से उसका जीवन नरकीय बन जाता है। डॉ. निर्मला जैन ने नारी शोषण की सच्चाई को रेखांकित करते हुए कहा है कि'' कडवी सच्चाई यह है कि पुरुष प्रधान समाज में सदियों से महिला ओं का दमन और शोषण होता है। समाज में उसकी भूमिका और उनकी सामाजिक हैसियत का निर्धारग पुरुष के द्वारा हुआ है। ''[15] समाज में नारी को दुय्यम स्थान दिया जाता है। उसे सदैव पुरुष वर्ग के वर्चस्व में अपना जीवन व्यतीत करना पडता है ।

पहले भारतीय समाज में नारी को देवता के समान माना गया था लेकिन उसी भारतीय समाज ने आगे चलकर नारी का अधिक शोषण किया । नारी सामाजिक कुरिनियों ,प्रथाओं तथा अंधविश्वासों की सबसे ज्यादा शिकार बनती जा रही है ।'' नारी अछूत सामाजिक घृणा का पात्र रही, लेकिन समाज ने धर्म का आश्रय लेकर

उसे मृत्युदण्ड का विधान पति-धर्म की स्थापना की, जो सामूहिक आत्महत्या को स्वीकृति देना ही था ।"[16] निसंदेह नारी अछूत वर्ग से भी अधिक पीडित रही । औरत का पतन और शोषण आरम्भ से होता आ रहा है।

हमारी पुरुष प्रधान संस्कृति होने के कारण नारी को गौण स्थान प्राप्त हुआ । संस्कृति के अनुसार वह अपने पुरुष समर्पित बनने को धन्य मानती है। परिणाम स्वरुप नारी पारिवारिक तथा सामाजिक धरातल पर अनेक समस्याओं से त्रस्त है। नारी आज शिक्षित होने के कारण अपने अधिकार के प्रति सचेत हो गई और वह अन्याय के विरुध्द प्रतिरोध करने में सक्षम हो गई । नारी के संघर्ष भावना को व्यक्त करते हुए डॉ. जालिंदर इंगले ने लिखा है --" नारी को शक्तिहीन अबला समझकर पुरुष वर्ग हमेशा नारी वर्ग का शारिरीक मानसिक ,बैध्दिक, लैंगिक शोषण करता आया है । पंरतु अब नारी में संघर्ष भावना जागृत होकर अन्याय के विरुध्द प्रतिरोध करने में सक्षम हुई है ।"[17] अपने अस्तित्व के प्रति वह सजग होने के कारण वह आज संघर्षरत् है । इक्कीसवीं सदी की महिला लेखिका ने नारी शोषण का चित्रण अपनी कहानियों में किया है

नासिरा शर्मा द्वारा लिखित 'अपनी कोख' कहानी की साधना के माता-पिता उसकी शादी समय से पहले ही करवा देते है । साधना पुलिस अफसर बनना चाहती थी । देखे हुए सारे सपने उसके चुर-चुर हो गया । साधना अपना विरोध दर्शाती है। " साधना ने पिछले पन्द्रह दिनों से घर में तुफान मचा रखा था । सबको डर था कि वह मेंहदी भी लगवाएगी या नहीं। घूँघट काढना, नथ पहनना तो दूर की बात थी, मगर माँझे के दिन से रीढ की हडी जैसे टूट गई थी साधना की।"[18] 'पत्थर गली कहानी में परिवार वालों से शोषण का चित्रण हुआ है । कहानी की नायिका फरीद अपने परिवारवालों के कारण आगे पढाई न कर पाई । रुढ़िवादी मॅा और परम्परागत मान सिकता के कारण उसका जीवन उजाड जाता है । वह सोचती है कि

" इस घर में लगता था कि जाने उसकी आत्मा कहॅा, किस पथरीली में भटक रही है,जहाँ कोई निकास का द्वारा नही । बस सफेद चिकने बडे-बडे पत्थर है । पत्थर की गली और पत्थर के कुचे-दर- कुचे।[19] " उसी प्रकार ननइया, " गली घूम गई 'घूटन' नासिरा शर्मा की कहानियाँ नारी शोषण को चित्रित करती है।

मैत्रेयी पुष्पा की 'फैसला ' कहानी में रनवीर की पत्नी गाँव की प्रधान बन जाती है। प्रधान बनने पर भी गाँव के सारे फैसले रनवीर ही लेता है । रनवीर अपने पति होने का हक बजाता है। उसका मानसिक शोषण उसके पति द्वारा ही होता है। गाँव के फैसले में वह भाग लेना चाहता है, लेकिन रनवीर उसे गाँव के फैसले में भाग नहीं लेने देता जब वह एक बार गाँव के फैसले में भाग लेने गई थी तब रनवीर उसे कहता है" यह रोज-रोज की नौटंकी ! रात-दिन की नाटकबाजी! बताओ कब बन्द करोगी ?" [20] गाँव की प्रधान होते हुए भी वह गाँव पंचायत में हिस्सा नहीं ले पाती । इसका कारण है, उसका पति रनवीर ।

4.1.4 दाम्पत्य सम्बन्धों में बिखराव :

स्वातंत्र्योत्तर के बाद अर्थ को अधिक महत्व प्राप्त हुआ भौतिक प्रगति के कारण समाज का ढाँचा बदल गया । समाज अर्थ केन्द्रित हो गया । जिसके कारण हर मनुष्य के मन में धन की लालसा निर्माण हुई । जिसके कारण भ्रष्टाचार, अपराध हत्या तथा बेरोजगारी में वृध्दि हुई। तथा अलगाव की स्थिति निर्माण हुई। इस संदर्भ में डॅा,पुष्पपाल सिंह का मत है कि " मानवीय संबंधों में बेमानी या बेमतलब का बोझ देने की रस्म भी बना रहा है।" [21] समाज में प्रारंभ से कन्या को यह शिक्षा दी जाती है कि वह शादी के बाद अच्छी तरह पति धर्म को निभाये ।

समाज अर्थ केन्द्रित हो गया । आज समाज में अनेक वैवाहिक कुरीतियों ने दाम्पत्य जीवन में विष घोल दिया है । दाम्पत्य जीवन में सुख के लिए आवश्यक है

कि परस्पर वैचारिक एकता किंतु वैवाहिक कुरीतियों के कारण गुणों के स्थान पर धन को महत्व दिया गया । आज पति -पत्नी का वैवाहिक जीवन सुखी क्यों नही है ,उसके अनेक कारण है जैसे- अनमेल विवाह , अवैध प्रेम, परस्पर वैचारिक समानता का अभाव पारस्परिक अविश्वास इन्ही कारणों से आज दाम्पत्य संबंधों में बिखराव दिखाई दे रहा है । डॉ. गोरखनाथ तिवारी ने लिखा है कि' पुराने समाज की संयुक्त तो आर्थिक परिवर्तनों के कारण और कुछ सामाजिक परिवेश में बदलाव के कारण इस प्रकार का विघटन दिन-प्रति दिन गंभीर होता जा रहा है । इस परिवर्तन में पारिवारिक स्तर पर संबंधों के सारे मूल्य बदल दिये गए है । ''[22] पुरुष की स्वेच्छाचारी वृति और विलासी जीवन के कारण पत्नी की हमेशा उपेक्षा ही होती है । केवल नारी से आदर्श धर्म ही प्रचलित होगा मान्यता पर जीवन सुखी नहीं बन सकता। कभी कभी अपनी वासना की पुर्ति के लिए पति-पत्नी के संबंधों में दरार पड जाती है। इक्कीसवी सदी की महिला लेखिकाओं ने दाम्पत्य संबंधों में पडी दरार के कारणों को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है । इस संदर्भ में सूर्यबाला की 'सिर्फ मैं' रमन की चाची : पराजिन मैत्रेयी पुष्पा की- 'बोझ,' ' अब फुल नहीं खिलते', 'रिजक' नासिरा शर्मा की 'संगसार', 'बन्द दरवाजा' : 'सबीना के चालीस चोर', 'विरासन' आदि कहानियाँ दाम्पत्य संबंधों के बिखराव को चित्रित करती है।

समाज में अनेक वैवाहिक कुरीतियों ने दाम्पत्य जीवन में विष घोल दिया है । पारस्परिक अविश्वास के कारण संबंधों में बिखराव आ जाता है । 'बन्द दरवाजा' कहानी की नायिका शबाना अपने पति से बेहद प्यार करती है । लेकिन परिवार में अहंकार के कारण दोनों को अलग होना पडता है । इन पति-पत्नी के संबंधों के पीछे पिता की भूमिका प्रमुख रही है ।जमीर को थमकाते हुए उसके पिताजी उसे कहते है कि '' एक औरत के लिए जमीर की पुकार तुम्हे बेकरार कर रही है ? नालायक अब मैंने उसके साथ तुम्हें देखा तो जायदाद से आक कर दूॅंगा समझे । ''[23]

सूर्यबाला की कहानी ' न किन्निन ' कहानी दाम्पत्य संबंध का बिखराव को चित्रित करती है । " चार दिनों बाद लौटी तो बिलकुल बदली चुप-सी जैसे कोई दुःखांत फिल्म देखकर लौटी हों । भाई ने बताया- वहाँ सब चुप ,शांता तबसे अकेली कहाँ तक रोती-कलपती । मैसाजी को सख्त चिढ है रोने -कलपने, चीखने-चिल्लाने से जो हो गया, सो हो गया-जो स्थिति सामने है, उसे पुरी समझदारी से सँभालना चाहिए, बस।"[24]

4.1.5 यौन शोषण :-

आज भी नारी यौन शोषण का शिकार है । यौन शोषण के कारण नारी का जीवन नरकीय बन जाता है । उसे अनेक प्रकार की यातनाओं का सामना करना पडता है । आज के युग में अर्थ को अधिक महत्व प्राप्त हुआ है । यौन शोषण के पीछे अर्थ भी एक महत्व पुर्ण कारण हो सकता है । डॉ, मंजुर सैय्यद ने यौन शोषण के कारणों की मीमांसा करत हुए लिखा है कि 'इसप्रकार का अपराध, वर्ण, व्देष, जाति, वैमनस्य तथा काम भावना की तृप्ति हेतु एवं मनोविकृती की अवस्था में किया गया भावना विरोधी कार्य यौन अपराध कहा जाता है। "[25] आज भारतीय नारी का जीवन अनेक बंधनों से ग्रस्त है, वह आज भी पीड़ित है जिसके कारण उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है।

आज भारतीय नारी का अनेकानेक रुपों में यौन शोषण किया जाता है। शोषण में बंधी नारी अत्याचार को चुपचाप सहने के लिए बाध्य रहती है। कार्यालयीन स्त्रियों को इस समस्याओं का अधिक सामना करना पडता है। पुरुष प्रधान संस्कृति के कारण उसे पुरुष के कैदखाने में अपना जीवन व्यतीत करना पडता है । नारी को अनेक यातनाएँ सहनी पडती हैं। अधिकतर महानगरों में यौन शोषण का शिकार अधिक दिखाई देता है।

इक्कीसवीं सदी की महिला कहानीकारों ने नारी का यैान शोषण को अपनी कहानियों में चित्रित किया है । जिसमें सूर्यबाला नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, सुधा अरोडा, मेहूरून्निसा परवेज, ममता कालिका , चित्रा मुदगुल प्रमुख हैं ।

नासिरा शर्मा की 'मेरा घर कहाँ 'कहानी में यौन शोषण का चित्रण हुआ है। कहानी की नायिका सोना अपने ही मालिक के घर यौन शोषण का शिकार बनती है । घर में नौकरानी का काम करने वाली सोना को छोटे साहब " एक रात सोना जब गहरी नींद में सो रही थी, तो उसे सपने में लगा कि दाे मजबूत बाँहे उसे अपनी कसाव में पकड रही है । इतने दिनों बाद पति का स्पर्श उसे सोते में भी सुख दे रहा था । तथा ठण्ड की झुरमुरी से वह उठा। अँधेरे में उस पर कोई झूका था । उसकी गरम साँसे उसके चेहरे को छू रही थी। --कैान -- कौन ? सहमी - सी सोनो बोला !चूप---किसी को पता भी नहीं चलेगा---- उठ चल मेरे कमरे में, वहॉ नरम बिस्तर है, आराम से लेटना---उठ ।"[26] बिलाव कहानी की सोना मारी की दोनों बेटियों पर उसका पति बलात्कार करता है, और छोटी बेटी हिरा पर एक पडोसी बलात्कार करता है,तब सोना मारी व्याकुल हो जाती है ।

4.1.6 वेश्या समस्या :-

नारी अधितर आर्थिक कारणों से त्रस्त होकर तथा मनोवैज्ञानिक या अन्य कारणों से वेश्या इस व्यवसाय में आयी है । इसमें सबसे अधिक महत्वपुर्ण कारण आर्थिक ही रही है ।आज केवल नारी अपनी अतृप्त वासना के लिए वेश्या नहीं बनती बल्कि विवाहपुर्व स्थिति, पारिवारिक समस्या, पति द्वारा विश्वासघात तथा सामाजिक कुप्रथाओं के कारण उसे अपनी इच्छा न होते हुए भी इस व्यवसाय को स्वीकार करना पडता है । वेश्या बनने के पीछे स्त्रियों की अनेक प्रकार की विवशताएँ होती है । " केवल वासनात्मक तृप्ति के लिए कोई स्त्री वेश्या नहीं बन जाती है ।

उसके पीछे अनेक कारण होते है। पारिवारिक समस्याएँ ,पति के साथ झगडे तथा उसका दुर्व्यवहार ,विवाहपूर्व स्थापित अवैध संबंध, किसी प्रेमी द्‌वारा विश्वासघात आदि ऐसे अनेक कारण है, जो नारी को वेश्यालय तक पहुँचा देते हैं । '' [27]

नारी आज अनेक कारणों से आर्थिक स्वावलम्बन के लिए इस मार्ग को अपनाती है। डॉ. पाडूरंग पाटील ने इस वेश्याओं की परिस्थिति का अंकन करते हुए कहा है कि'' आर्थिक संरक्षण के अभाव में तथा अनमेल वैवाहिक संबंधों के कारण उत्पन्न मनोवैज्ञानिक असंगतियों ने भी स्त्रियों को वेश्या बनने की प्रेरणा प्रदान की ।समाज में नारी का संपप्ति के अधिकारों से वंचित होना भी इसका प्रमुख कारण बना क्योंकि आर्थिक अभाव में नारी के लिए जीवन रक्षा का और कोई उपाय दिखाई नहीं देता था । ''[28]

आज तक वेश्या के जीवन की सभी समस्याओं पर कई साहित्यकारों ने लेखन कार्य किया है, पंरतु आज तक वेश्या के जीवन में परिवर्तन नहीं आ पाया है और नहीं कोई ठोस उपाय किये गये है। वेश्या वर्ग के प्रति सभी लोग घृणा का भाव ही रखते है. लेकिन वेश्या मनुष्य की काम वासना की तृप्ति करती है, समाज का एक वर्ग नारी को सुरक्षित करने का काम करती है ।आज बढती आजादी के कारण समाज में अनेकानेक समस्या बढ रही है । आज वेश्या का जीवन असुरक्षित है । मनुष्य उसे केवल काम वासना की नजर से ही देखता है। उसके साथ प्रेम भी करता है, पुरुष की यह भोगवादी वृति के कारण ही नारी वेश्या बनती जा रही है । कोई भी नारी इच्छा से वेश्या नहीं बनती उसके पीछे अनेकानेक कारण होते हैं ।

आज के जमाने में नारी का एक नया रुप भरकर सामने आ रहा है। इस फॅशन के युग में लडकियाँ अपनी जरुरतों को पूरा करने के लिए इस वेश्या व्यवसाय को स्वीकार रही है । उच्च वर्ग की लडकियाँ आज कॉलगर्ल के नाम पर यह व्यवसाय

कर रही है । आज वेश्या संगठित होकर प्रतिष्ठित जीवन व्यतित करना चाहती है। किंतु समाज की अवहेलना से वह मानसिक रोगी होती चली जा रही है । अनेक कारणों से आज स्त्रियों को अपना शरीर बेचना पड रहा है । अनेक सामाजिक कुरितियों के कारण वह वेश्या बनने पर मजबूर हो जाती है । मुख्यतः संपत्ति की कमी होने के कारण वह वेश्या बनती जा रही है । अपने शरीर का विक्रय करके केवल अर्थ प्राप्ति करना उसका एक मात्र हेतु होता है । वेश्या बनने पर मजबूर होनेवाली स्त्रियों के कारणों पर विचार करते हुए बिंदू अग्रवाल ने लिखा है कि " नारी किसी रुचि विशेष के कारण वेश्या नहीं बनती अपितृ समाज की परिस्थिति ही उसे ओर ढकल देती है । उसकी महादयनीय स्थिति समाज की विषमता उसके शोषण तथा उस उत्पीडन पर आधारित है । "[29] मनुष्य केवल उसका उपभोग करके ही छोड देता है । अपने इच्छा से वह इस व्यवसाय को स्वीकार नहीं करती बल्कि उसके पीछे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक कारण प्रमुख रहे है।

इक्कीसवी सदी के कहानीकारों ने वेश्या व्यवसाय पर अपनी कहानियों द्वारा प्रकाश डालने की कोशिश की है। दीप्ती खंडेलवाल, मुदुला गर्ग, कुसुम अंसल, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा आदि कई कहानीकार प्रमुख रही हैं । नासिरा शर्मा की 'मटमैला पानी' दरवाज-ए-काजवीन', 'गूॅंगा आसमान' कहानियॅा प्रमुख रही है। गूॅंगा आसमान 'में पुलिस द्वारा वेश्याओं पर किये गये अत्याचार का वर्णन किया गया है। फरशीद नामक औरत को पकडकर जब लाता है और उसे भोगने का प्रयास करता है तब " उसने अपने तेज दॅंातों से काट खाया । वह तन फरोश औरत थी, यही उसका जुर्म था। मगर वह अपना पेशा मरजी से करती थी, किसी की जोर - जबरदस्ती से नहीं, आखिर यह उसका खानदानी धन्धा था, जिसके अपने उसूल और हिसाब किताब थे । वह किसी की तावेदार नहीं थी।"[30] कई स्त्रियाँ हालात के आगे हार कर इस व्यवयाय को स्वीकारती है। 'मटमैला पानी कहानी इस

विवशता पर प्रकाश डालती है । ''बेटे के बडे होने के कारण वह ग्राहकों के साथ बाहर जाने लगी थी, फिर यह काम उसने दिन के समय मजबूरी के कारण शुरु कर दिया। '' [31]

4.1.7 अवैध काम सम्बन्धों की समस्या :-

यौन इच्छा से स्त्री और पुरूष अवैध संबंध स्थापित होते हैं । अपनी वासना की तृप्ति के लिए दोनों को इस अनुचित घटना की और दोनों का ध्यान नहीं रहता पाश्चात्य प्रभाव के कारण स्त्री-पुरुष में अधिक आकर्षण निर्माण हुआ है । भारतीय संस्कृति में अवैध प्रेम संबंध को अनुचित तथा माना है । समाज में प्रेम व्यवस्था को आवश्यक माना गया है । स्वतंत्रता के बाद भारतीय मानस में तेजी से बदलाव आया । यह बदल व पाश्चात्य प्रभाव के कारण रहा है ।परिणाम स्वरुप हमारे नैतिक मूल्य के प्रति लोगों में नित्साह दिखाई देने लगा। हमारे रीति-रिवाज रिवाज बदल गये। नैतिक मूल्यों का -हास हो गया ।'' प्राचीन परम्पराओं को रीति-रिवाज, व्रत, त्यौहार आदि प्रेरक इच्छायों को पाश्चात्य प्रभाव के कारण हम भूल रहे है । ऐसी परिस्थितियों में भारतीय सभ्यता संस्कृति के विकास में मानवीय मूल्यों में अवरोधकता भी दिखाई देती है । ''[32]

पाश्चात्य प्रभाव के कारण संस्कृति के मानवीय मूल्य लग-भग समाप्त हो रहे है । पाश्चात्य प्रभाव से अनैतिक संबंध अधिक बढने लगे । आज शादी से पहले ही शारीरिक संबंध रखना आम बात हो गई है । विवाह के बाद भी पति-पत्नी अपनी यैान तृष्णा के लिए इस प्रकार के संबंध रखने लगे ।राम नागेश त्रिपाठी इस अवैध सम्बन्धों की मीमांसा करत हुए लिखते है कि '' हमारे देश और समाज में जहाँ विवाह व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर होकर परिवार के संबंधों कठोर नियंत्रण में संपन्न होते है । वहाँ अवैध व अनैतिक की स्थिति स्वाभविक होती है । ''ऐसी

स्थिति में कहीं स्त्री,कहीं पुरुष और कही दोनों ही पति पत्नी के वैध नाते को अर्थहीन बतात हुए चोरी छिपे अनैतिक काम व्यापारों में लीन हो जाते है ।''[33]

आर्थिक प्राप्ति अधिक न होना, तो कभी काम वासना की तृप्ति के कारण इस प्रकार क संबंध स्थापित हो जाते हैं। इक्कीसवीं सदी के कहानी कारों ने इस वर्तमान सच्चाई को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

नासिरा शर्मा की 'दूसरा ताजमहल ' कहानी की नयना विवाहित होते हुए भी विवाहित रवि भूषण नामक पुरुष के साथ प्रेम करती है। दोनों भी रात में फोन पर प्रेम की बाते करत है। इस प्रेम के कारण नयना के जीवन में एक नया बदलाव आ जाता है।'' उसने थकान की जगह खुशमिजाजी आ गई थी। सजने-सँवरने की इच्छा के चलते उसने क्रीम सेट का ढेर लगा दिया और हर रात रवि भूषण के बुलावे पर उसका मन बंबई जाने को मचलने लगा ।उसने अपने घर में एक ओर घर नजर आने लगा। बातों की लय में दोस्ती का अनुराग मर्द- औरत की चाहत में बदल चुका था।''[34] 'यहूदी सरगर्दान' कहानी के डॉ. बोरहान के सहर नामक एक विवाहित के साथ विवाहित संबंध स्थापित हो गये । डॉ. बोरहान चार बच्चे का पिता है।

4.1.8 दहेज :-

आज समाज में दहेज नामक समस्या ने मनुष्य-मनुष्य के संबंधों में जहर घोलने का काम किया है। अर्थ को अधिक महत्व प्राप्त होने के कारण आज पुरुष दहेज मिलने की लालसा रखता है। इस दहेज के नाम पर आज अनेक स्त्रियों को मौत के घाट उतार दिया जाता है। इस प्रथा के कारण नारी का जीवन चिंताजनक बन गया है।

प्राचीन काल में इस प्रथा को अच्छे रुप में स्वीकार किया गया था। कन्या की ओर से अपनी इच्छा से उपहार दे दिए जाते थे, लेकिन आज वर पक्ष की ओर तय

किया जाता है, कि क्या लेना है। आज दहेज ने समाज के नैतिक मूल्यों का -हास कर दिया है। आज विक्राल रुप धारण करके दहेज नारी के लिए अभिशाप बन गया है।

दहेज देना यह एक सामाजिक प्रतिष्ठा समझी जा रही है। लोग सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए लडकी की विवाह में दहेज का सहारा ले रहे है। यह कुप्रथा आज सामाजिक प्रतिष्ठा बन गई है। डॉ. विजया वारद इस संबंध में कहती है.कि '' कम दहेज या दहेज न लाने पर सास-ससूर ,पति अथवा अन्य सम्बन्धियों के ताने उसका पर्यन्त सुनने रहना और घुट-घुट कर जीना ।''[35] जिसके कारण उसका जीवन नरकीय बन जाता है । खुले पन में दहेज का पालन होता हुआ दिखाई दे रहा है । आर्थिक परिस्थिति ठीक न होने पर भी माता-पिता ओं को अपनी लडकी के विवाह में दहेज की पूँजी करने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है । इक्कीसवी सदीं के कहानीकारों ने इस समस्या का चित्रण अपनी कहानी में किया है।

नासिरा शर्मा की 'बावली' कहानी अपिया के पिताजी ने शादी में दहेज कम देने के कारण उसकी साँस उसे ताने देती है। उसका पति भी अपनी माँ को साथ देता है, तब उसे बहुत दुःख होता है। ''चौथी की रस्म के बाद उन्होंने अम्मा से शिकवा किया था कि उन्हें बज्जो से कम दहेज क्यों दिया गया ? इस शिकवे में उनके शौहर जमील भी शामिल थे । --- बडी बहनोई नईमभाई कम-से-कम बज्जो के कुछ माँगने चाले जाने के वक्त बेचैन होकर कहने तो थे कि अरे ! यह क्या तकल्लुफ है- हर बार लडकी के आने पर दहेज थोडा दिया जाता है।''[36]

आज दहेज के कारण नारी का जीवन नरकीय बनता जा रहा है। यह समाज को एक कलंक है। इस कुप्रथा को पुरी तरह से समाप्त करने के लिए सरकार की

ओर से अनेक कानून बनाये गये फिर भी उस पर पुरी तरह रोक पाने में सरकार यशस्वी नहीं हो पायी है। चोरी चुपके इस प्रकार के व्यवहार वर-वधु पक्ष में होते हैं। आर्थिक अभाव के कारण आज अनेक युवतियों को शादी से वंचित होना पड़ रहा हैं।

4.1.9 नारी शिक्षा का अभावः-

भारतीय संस्कृति में पहले नारी को देवता का स्थान दिया जाता था लेकिन समय बदलता गया वैसे-वैसे नारी के प्रति सम्मान की भावना समाप्त होने लगी । भारतीय समाज पुरुष प्रधान होने के कारण समाज में नारी को हमेशा दुय्यम स्थान ही दिया जाता रहा है। नारी शिक्षा की जिम्मेदारी परिवार पर है। माता-पिता पढे-लिखे न होने के कारण भी लडकी को शिक्षा नहीं दी जाती । गाँवों में रहनेवाली स्त्री आज सबसे अधिक अशिक्षित है। शिक्षित समाज ऐसे अशिक्षित वर्ग का लाभ उठाकर उनका शोषण करता है। पढे-लिखे न होते के कारण वह अपने शोषण को भी नहीं जान पाती । अशिक्षित होने पर उसे दूसरे के यहाँ मजदूरी करनी पडती है।परिवार में भी उसका स्थान दुय्यम हो जाता है, परिवार का हरा एक सदस्य उस पर अधिकार जताने की कोशिश करता है। अंतः यह सब नारी शिक्षा के अभाव के कारण ।

समाज पुरुष प्रधान होने के कारण उसकी शिक्षा की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता लेकिन आज नारी अपने अधिकार के लिए लड रही है, धीरे-धीरे वह शिक्षा ग्रहण करती हुई स्वयंम् के पैरों पर खडी हो रही है। नारी को शिक्ष प्राप्त करने के लिए करना पडता है। उसे परिवार और समाज के साथ संघर्ष करना पडता है।परिवारवाले सोचते हैं कि पढी-लिखी लडकी हो जाने पर उसने कोई गैर काम न करे इसलिए उसकी पढाई पर रोक लगा दी जाती है।

इक्कीसवीं सदी की कहानियों में नारी की शिक्षा संदर्भ में परिवार की मानसिकता का भी वर्णन हुआ है। 'दहलीज' कहानी की सकीना इंटर पास हुई है। उसकी आगे की पढाई बन्द कर दी जाती है। सकीना आगे पढकर नैाकरी करके अपने पैरों पर खडा होना चाहती है, लेकिन परिवार वाले विरोध करते है। उसकी दादी सकोना से कहती है-''बँधी मुठी लाख की, खुली तो राख की। चुप-चाप घर बैठ कर माँ का सिलाई में हाथ बॅटाओ वरना आरिफ मियाँ की इज्जत पर राह चलते ढेले फिकेंगे --- निगोडा मोहल्लन भी कैसा है नदीदें का ---जैसे औरत कभी देखी नहीं, सर झुकाकर अपने काम से नागझॅाक में लगे रहेंगे ---खुदा चाहा तो साल छल महिने में तेरी डोली उठ जायेगी''[37] सकीना बार-बार अपने परिवालों को मनाने का काम करती है, लेकिन परिवार वाले मानने को तैयार नहीं है। उसे आगे पढाने में सभी परिवार वाले विरोध करत है। आज भी नारी अपने शिक्षा के संदर्भ में स्वतंत्र निर्णय लेने में स्वतंत्र नहीं है। शिक्षा किसकी करनी है, यह निर्णय भी परिवारवालें लेते है। इसलिए उसका चारों ओर के शोषण होता रहा है।

4.2 राजनीतिक समस्या :-

देश को स्वतंत्रता मिलने पर जनतंत्र भी स्थापना हुई है। इस जनतंत्र को देश की सत्ता स्थापित करने में मतदाता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। चुनाव की प्रकिया द्वारा राजनेता का चुनाव होता है। इस चुनाव द्वारा राजनेता शासन प्रणाली स्थापित करते है और जनता की सेवा करते हैं। राजनेताओं का संबंध समाज से होता है। वह समाज को प्रगति की ओर ले जाते है। आज हर व्यक्ति के जीवन में राजनीति एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। समाज की आवश्यकता नुसार सुधार एवं परिवर्तन करना राजनीति का उद्देश रहता है। राजनीति के स्वरुप की चर्चा करते हुए डॉ.एल.एल.वर्मा का कथन है कि '' राजनीति विशिष्ट प्रकार के अतः संबंधो का नाम है। ऊपरी तौर पर वह विशिष्ट मनुष्यों और समुदायों या समूहों

संचालित होती है, पर वास्तव में वह सर्वत्र विद्यमान है। ''[38] चुनाव राजनीति को गतिमान बनाना है।

समाज को राजनीति से दूर करके नहीं देखा जा सकता राजनीति और समाज का संबंध एक ही सिक्के को दो पहलु है। शासन कर्ता मनुष्य के जीवन संबंधी निर्णय लेते है। निर्णय अगर अच्छे होतो वह मनुष्य के लिए वरदान बन जाते है। लेकिन आज राजनीति का दूसरा नाम भ्रष्टाचार उभरकर सामने आ रहा है। मनुष्य के जीवन पर सीधा प्रभाव राजनीति का पडता है। नेताओें की स्वार्थ पटुता, कुपमण्डूता और संकीर्ण भावनाओं के कारण देश के विकास की गति में अवरोध उत्पन्न हुआ है। देश में आज हर आदमी राजनीति के चक्र में पिसता जा रहा है। जनता की दुरावस्था के लिए आज पूर्णतः राजनीति ही उत्तरदायित्व है। डॉ. पारुकान्त देसाई के कथन से स्पष्ट होता है, '' नेहरु के समय में ही डॉ. राम मनोहर लोहिया ने यह सत्य आकडों सहित संसद भवन में रखकर विस्फोट किया था कि आज भी देश के कोटी-कोटी जन गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करते है और जिनकी व्यक्तिगत दैनिक आय अमूल्य तीन आने से अधिक नहीं है।गरीबी के स्थान पर गरीबी हट रहे है। गरीबी, बेरोजगारी, महगाई, भ्रष्टाचार, काला बाजार, तस्कर व्यापार आये दिन -दूने रात चैागुने बढ रहे है। शहीदों का स्थान शोहदोंने लिया है और देश की राजनीति का चित्र -हासोन्मुख तथा कालिमा युक्त होता जा रहा है।''[39] स्वार्थ भरी राजनीति से देश में लुटमार ,हिंसा, अपराध, हत्या,बलात्कार जातिवाद, आतंकवाद बढता चला गया है। इसका असर आम आदमी पर अधिक रहा। मधुकर सिंह ने इसी भ्रष्ट राजनीति को रेखांकित करते हुए कहा है कि'' आज का राजनीतिक परिदृश्य इस कदर गलाजन से भर गया है कि अच्छे -बुरे की पहचान ही खो गई है। ''[40] चुनाव से ही हमारा राजनीतिक भ्रष्टाचार की शुरुवात होती है। चुनाव में लाखों रुपये खर्च किए जाते है और चुनाव के बाद धन की कमाई शुरु हो

जाती है। आम आदमी इस व्यवस्था का कठपुतली बनकर रह गया है। स्वार्थी नेताओं की पोल खोलते हुए डॉ, अर्जुन चव्हाण लिखते है, कि " सतासीन प्रायः स्वार्थीसीन होता गया ,उसने जनता को बेवकुफ बनाने का हमेशा प्रयास किया । अँग्रेजी नीति अपना कर जाति वर्ग तथा धर्म आदि के नाम पर जनता का बॅटवारा किया । मूल उद्देश्य अपने स्वार्थ को हथियाना ही रहा।"[41] आज राजनीति के षडयंत्र के कारण आदमी का जीवन शोचनीय बन गया ।

संक्षेप में भारतीस जन-मानस में राजनीति के प्रति विद्रोह तथा उदासिनता का भाव दिखाई देता है। राष्ट्रनेता राष्ट्रहित के बदले स्वहित में पूरी तरह डूब गये है। राजनेता अपने इच्छा के अनुसार दल बदल कर रहे है। मानव की अस्मिता का सजग प्रहरी साहित्य कार जन जागृति के लिए भ्रष्ट राजनीति और भ्रष्ट राजनेताओं का जनता के सामने प्रस्तुत किया है ।

4.2.1 चुनाव प्रणालीः-

भारतीस राजनीति में चुनाव प्रणाली को सबसे अधिक महत्व है । चुनाव के द्वारा ही लोकतंत्र को जीवित रखा जा सकता है । लोकशाही प्रणाली में चुनाव को सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है । भूत पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी जी ने अठारह साल के युवक- युवतियों को मतदान करने का अधिकार दे दिया । जिसके कारण चुनाव प्रणाली में युवक-युवतियों का सहयोग बढ गया । चुनाव के द्वारा ही हम लोकतंत्र को चुनते है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय जनता को अपनी सरकार चुनने का अधिकार प्राप्त हुआ है।जनता के द्वारा चुनी गई सरकार जनता की सेवा करे यही उद्देश्य उसके पीछे रहता है। जनता मतदान करक अच्छी सरकार चुनने का काम करती है, लेकिन यदी उस शासनने जनता की भलाई के निर्णय नहीं लिये तो वह शासन के प्रति विद्रोह करता है ।

जनता जब चुनाव के द्वारा शासन को नियुक्त करती है, तब उसके पीछे सर्वधर्म समभाव, बंधुता , समता की भावना समाज में फैल जाय यही उद्देश्य रहता है । जनता की आवश्यकताओं की पुर्ति करे यही जनता की इच्छा होती है । लेकिन राजनेता चुनाव जितने के बाद सारे वायदें भूल जाता है । चुनाव आज पैसों से जिताये जा रहे है । जितने के बाद ठेर सारा धन कमाना यही उसका लक्ष्य रह जाता है । शासन अपनी आवश्यकताओं की प्रति करे यही इच्छा जनता की होती है। परंतु दुःख की बात यह है कि चुने गये राजनेता अपने स्वार्थ के लिए जनता का खून चुसने लगते है। धर्म,जाति के नाम पर फुट डालकर राजनेता अपना स्वार्थ सिध्दि कर लेते है । जिसके कारण समाज में बेरोजगारी भुख ,सुरक्षा की समस्या बढ रही है।

आज जनता में राजनीति के प्रति विद्रोह भाव दिखई देता है । राजनीति नैतिकता विहित हो गई है। भ्रष्टाचार के कारण देश की प्रगति में बाधा उत्पन्न हो जाती है। कई योजना कागज पर ही दिखाई देती है। इस सत्य को उद्घाटित करत हुए डॉ.अरुणेन्द्र राठौड ने लिखा है कि " जनतंत्र में चुनाव का बडा महत्व है। पंरतु चुनावी प्रक्रिया आज दुषित एवं षडयंत्र पूर्ण हो गई है । आज लोकसभा से लेकर ग्राम सभा तक चुनाव जातिवाद एवं धर्मवाद क आधार पर लडे जा रहे है। प्रत्याशी और व्यवस्था की मिली भगत तथा लाठियो पहले व्यापारियों एवं पूँजीपतियों से अंदरुनी साँठ-गाँठ करक पार्टी चंदा के नाम पर मोटी रकम वसूल की जाती है। परिणाम स्वरुप चुनावों उपरांत सरकार एवं व्यवस्था पर पूॅजीपतियों का अधिपत्य हो जाता है और बाजार उन्हीं के इशारे पर नाचने लगता है। महँगाई का ग्राफ बढ जाता है और गरीव निम्न मध्यवर्ग बढती कीमतों की चक्की में पिसते रहते है।"[42] नेतागण सामान्य जनता को लुभाकर वोट प्राप्त करते है, वोट प्राप्ति के बाद नेता अपने स्वार्थ सिध्दि में जुड जाते है।सत्ता के द्वारा किये जानेवाले अन्याय,

अत्याचार तथ्या शोषण के विरुद्ध आवाज उठानेवाले आम आदमी का आवाज खींचने की प्रणाली राजनीति में होती है।

इक्कीसवीं सदी की कहानीकारों ने अपनी कहानियों में भ्रष्ट राजनीति का जनता के सामने यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। नासिरा की 'दूसरा कबूतर ' कहानी में इसी भ्रष्ट मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है। सुलतान अहमद एक राजनीतिक नेता है। वह चुनाव में खडा है। सफिया को अपने पति से धोखा मिलने पर बिलख-बिलख कर रोती है। सुलतान अहमद उसका बाप चुनाव कार्य में व्यस्त है। वह चुनाव जीतना चाहता है। सुलतान अहमद सोचता है" चुनाव जीतने के बाद बरकत को किसी -न-किसी रुप में मजा चखा सकते है। अभी खामोश रहना ही बेहतर है। बस उसकी पार्टी पावर में आने भर की देर है, सब कुछ सुधर जाएगा।"[43] राजनीति में दाँवपेच का महत्व अधिक है। गलियों के शहजादे कहानी इसी स्थिति को उद्घाटित करती है। " चुनाव को जोर शहर में जगह-जगह हर तरह जनता से वादे किये जा रहे थे । इन लडकों को भी खूब मजा आ रहा था ।राते गये तक शहर की चहल-पहल देखते हुए घुमते रहते थे । कहीं कुछ बँट रहा होता तो खाने से भी नहीं चुकते थे । '[44]

आत्म केंद्रित राजनीति के कारण अमानवीयता की स्थिति उग्र रुप धारण कर रही है। आज नेताओं के सामने कोई देश हित ,राष्ट्रहित, मानवहित का कोई मूल्य नहीं है। इसलिए चुनावी राजनीति में आज अनीति अधिक दिखाई दे रही है। लखों रुपये खर्च करके जनता को प्रलोभनों से, कुटिलता से अनैतिकता से अपने मोहजाल में फॅसाकर अपनी स्वार्थ सिध्दि कर लेते है। राजनेता सत्ता को पद और प्रतिष्ठा तथा भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी का परवाना मान लेता है। राजनेता अपने स्वार्थ के लिए गुंडों की फौज खडी करते है। इसलिए चुनावी राजनीति के प्रति लोंगो के मन अविश्वास की भावना अधिक दिखाई दे रही है।

4.2.2 विभाजन की त्रासदी :-

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति से राजनीति में एक नया मोड़ आया। भारत -पाक विभाजन के बाद हुए दंगे,फसाद के कारण समता, बंधुना की नैतिक भावना ही समाप्त हो गई। भारत -पाक विभाजन यह राजनेताओं की स्वार्थ सिध्दि का परिणाम रहा है। इस परिणाम को झेला आम आदमी ने । विभाजन के बाद सीमाओं का दायरा नया हुआ और जो परिचित थे वे भी अपरिचित लगने लगे । हिंदू-मुस्लिम इस विभाजन के कारण आज भी एक दूसरे के खून के प्यासे बन गये है। भाईचारे का भाव समाप्त हो गया । इसी का फायदा राजनेता लोग उठाते है।

हिंदु-मुस्लिम विभाजन के पश्चात बलात्कार, हत्याएँ आगजनी आदि ने मानव जीवन को अस्तित्वहीन बना दिया। यह विभाजन दो देशों के बीच न होकर दो दिलों के बीच का विभाजनथा । इस विभाजन के परिणाम आम आदमी को भुगतना पडा । अँग्रेजों की कुटनीति सफल हुई। हिंदु-मुस्लिम एक दुसरे के खून के प्यासे बने । इसका परिणाम यह हुआ कि आज भी हिंदु-मुस्लिम में भाईचारा स्थापित नहीं हो पाया। दोनों भडकाकर आज सांप्रदायिक दंगे करवाये जाते हैं।

आज भी हिंदू-मुस्लिम में व्देष की भावना दिखाई देती है। आज भी दोनों देश भुगत रहे है। राजनेता लोग इसी का लाभ उठाकर मनुष्य -मनुष्य को बाँटने का काम कर रहे है। धर्म के नाम पर दोनों को भड़काया जाता है । राजनीति करनेवाले राजनेताओं दोनों को भडकाकर वे अपनी स्वार्थ सिध्दि कर लेते है। विभाजन के बाद भारत में रहनेवाले मुसलमान पाकिस्तान चले गये और पाकिस्तान में रहनेवाले हिंदू भारत में आ गये । इस समय दोनों को भी अपनी संपत्ति गवानी पडी। इसीबीच आतंक और असुरक्षितता की भावना निर्माण हुई । शत्रुता के नाते सर्वधर्म समभाव की भावना समाप्त हो गई । विभाजन की त्रासदी को दोनों देश एक

जख्म बनकर सह रहे है । आज भी इस विभाजन के कारण दोनो देशों मे शत्रुता का भाव कायम है । इस विभाजन के परिणाम को रेखांकित करती हुई नासिरा शर्मा ने लिखा है कि " सियासी नेताओं के व्यक्तिगत आकांक्षाओं और नफे नुकसान के हाथों अंजान गुनाह सिर्फ उनके जीवन तक सीमित नहीं रह जाता है, बल्कि पुरी कौम सहती सारा मुल्क झेलता और नई आनेवाली नस्लें भी आरोपों के घेरे में फॅसी सदियों से तडपती है ।"[45] जातिवादी आग के कारण बॅटवारे की आग भडक गई । आज भी यह आग हमें दोनों देशों के बीच सुलगती हुई दिखाई है ।

इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों ने इस विभाजन की त्रासदी को अपनी कहानियों में अंकित किया है ।नासिरा शर्मा की 'सरहद के इस पार ' कहानी विभाजन की त्रासदी को प्रस्तुत करती है ।विभाजन के बाद भारत में रहनेवाले मुस्लिम लोगों की यह कहानी है ।शहर में तनाव बढ जाता है । उस समय मुसलमानों को पाकिस्तान के नाम पर उलहना दी जाता है । यह देखकर रेहाना विचलीत हो जाता है।रेहान पागल हो जाता है,तब वह कहना है "अँग्रेजों ने हमें फसाद की शक्ल में पाकिस्तान तोहफे में दिया है और हम इस जख्म को तब तक जीयेंगे, पालते रहेंगे ?करें भी क्या ?कर ही कुछ नहीं सकते है । अपाहिज जो ठहरे --।"[46] विभाजन के कारण जातियता की आग दोनों धर्मों में सुलगती रही।

'कली दीवारें ' कहानी के इष्ने मियॉं के सभी रिश्तेदार पाकिस्तान में हैं और इष्नेमियॉं भारत में ही रचना पसंद करते है।" ब्याह कर वह लाहैार से इलाहाबाद आयी थी ।इ-तेफाक से ससूरालवाले भी धीरे-धीरे करक पाकिस्तान चले गये । चचा को बहुत बुलाया गया, बहुत जोर दिया गया मगर वह राजी न हुए ।-- चची के मायकेवालों और अपने घरवालों से उन्होंने दो टूक बात की थी कि मेरा वतन हिंदुस्थान है, हम दोनों को वही रचना है ।"[47]

4.2.3 आतंकवाद :-

आज वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास हर देश कर रहा हे। इस स्पर्धा के कारण बस और युद्ध की विनाशक प्रवृतियों को बढावा मिल रहा है। विश्व में शांति स्थापित करने के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है। लेकिन इस स्पर्धा के युग में हमें चारों ओर अशांति ही दिखाई देती है। शस्त्रों की निर्मिती मानवतावाद के लिए घातक है । आतंकवाद ही राजनीति की उपज है । राजनेता अपने स्वार्थ सिध्दि के लिए आतंकवाद को बढावा देते है। अँग्रेजों की जुल्मी शासन व्यवस्था से मुक्त करना हर एक भारतीय का सपना था । स्वतंत्रता के बाद देश में आतंकवाद जातिय विव्देष, सांप्रदायिक संघर्ष बढ चुका ।

सन 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या तथा राजीव गांधी की हत्या आतंक वादियों ने ही की थी। आतंकवाद के कारण चारों तरफ अशांति फैल जाती है । विश्व बंधुत्व तथा मानवता को आतंकवाद ने लगभग समाप्त कर रखा है । आज सभी देशों को आतंकवाद की समस्या ने घेर रखा है । भारत में आतंकवाद का संकट हमेशा मँडरा हुआ दिखाई देता है । निरपराध लोगों की हत्या की जाती है। डॉ,सुकुमार भंडारे ने इस आतंकवाद के संबंध में उचित ही लिखा है,'' आज मानवता मर रही है और दानवता अट्हास कर रही है ।''[48] आज व्यक्ति अपना वर्चस्व दिखा ने के लिए हथियार उठा रहा है अपने पर हुए अन्याय, अत्याचार को मिटाने के लिए कुछ लोग आतंकवाद का रास्ता अपना रहे हैं । आतंकवाद के कारण अनेक देश परेशान है । भारत के लिए यह एक बडी समस्या बन गई है ।

भ्रष्ट राजनीति के कारण आतंकवाद को बढावा मिल जाता है । भारत-पाकिस्तान के बीच आतंकवाद की समस्या बडी चिंताजनक है । पाकिस्तान की ओर से हमेशा भारत में आतंक फैला जाता है । इसी कारण दोनों देशों में तनाव की

स्थिति उत्पन्न हो जाता है । नासिरा शर्मा की 'तीसरा मोर्चा,पनाह,मोमजामा कहानी आतंकवाद के पीडित आम आदमी की त्रासदी को व्यक्त करती है ।'तीसरा मोर्चा 'कहानी कश्मीर में चल रहे आतंकवाद को चित्रित करती है । हिंदुओं को कश्मीर छोडने के लिए आतंकवादी मजबूर कर रहे है । रहमान और राहुल दोनों दोस्त है । रहमान के पिताजी को डर है कि आतंकवादी रहमान को अपने में शामिल ना करे ।इसलिए रहमान के पिताजी कश्मीर छोडना चाहते है । रहमान के पिताजी ''उसके बुढे माँ-बाप काफी दिनों से जिद बाँधे हुए थे कि इससे पहले कि सर पर कफन बाँधे दसते उसे उठाले जाएँ वह कुछ दिनों के लिए रूपेश हो जाए । वरना वह भी दूसरे नवजवानों की तरह धर लिया जाएगा और गलत रास्ते पर चलने के लिए मजबूर हो जाएगाा या फिर सुरक्षा पुलिस एवं फैाज की गोली का निशाना बन मर-खप जाएगा।''[49]

4.2.4 नैतिक मूल्यों का अवमूल्यनः-

ॲंग्रेजों की जुलमी शासन व्यवस्था को समाप्ज कर भारत में लोकतंत्र की स्थापना करना लोंगो का मुख्य उद्देश्य रहा । लोकतंत्र के कारण अन्य राष्ट्रों के समान हमारी भी अलग पहचान बन पायेगी ,लेकिन यह धारणा गलत साबित हुई । राजनेताओं की सत्तालो लोलुपता के कारण जनतंत्र से उसका विश्वास उड गया। आम आदमी के लिए राजनीति एक समस्या बन गई । जाति,धर्म,वर्ण,वर्ग, भेद के कगार पर समाज खडा हो गया । 'नीति' का राज न होकर 'राज' की नीति हो गई है । परिणाम स्वरुप मनुष्य का राजनीति के प्रति विश्वास उडता गया। समाज में भाईचारा आत्मीयता तथा मानवता का -हास हो गया । नैतिक मूल्यों का -हास होने के कारण समाज का बॅटवारा हुआ ।

स्वतंत्रता के बाद राजनेताओं ने भारतीय जनता के साथ खिलवाड किया। स्वतंत्रता दिलानेवा ने सच्चे देशभक्तों के प्रति उदासिनता छा गई । डॉ, अजय पटेल के विचार ध्यातव्य है-''देश के स्वतंत्रता होने के पश्चात राजनीतिक क्षेत्र में ऐसी धाँधली मची कि सच्चे देश भक्त पीछे रह गये और स्वार्थी ,सत्ता लोलुप तत्वों ने शासन की बागडोर अपनी हाथ में ले ली। स्वार्थ परता सत्ता लोलुपता,भ्रष्टाचार एवं दलबल प्रवृति जैसी अनेक विविध बुराइयों ने भारतीय राजनीति को भ्रष्ट खोखली एवं नीति विहिन बना दिया।''[50] आज मनुष्य का जीवन भ्रष्ट राजनीति के कारण अनेक समस्याओं से त्रस्त है। चारें तरफ हाहाकार अस्थिरता , आतंक फैल हुआ दिखाई देता है। मूल्यहीनता को रेखांकित करते हुए डॉ. के.जी.जया ने लिखा है कि'' स्वातंत्रोत्तर राजनीति ने राजनीतिक आदर्शो और मूल्यों को तोडो और लोकतंत्र के नाम पर मूल्य हिनता अवसरवा दिता, भ्रष्टाचार आदि बढते गए। देश के महान नेताओं ने देश की स्वतंत्रता के लिए जिस त्याग बलिदान और तपस्या के कर्णधारों एवं नेताओं ने अपने स्वार्थ सिध्दि के लिए तमाम कर दिया। ''51 भ्रष्ट राजनीति का परिणाम आम आदमी के जीवन पर अधिक पडा। नेताओं के खोखले नारेबाजी ने समाज को खोखला बना दिया। विभाजन के बाद परिचित अपरिचित हो गये। विभाजन के समय हुए दगों के कारण मानवीय नैतिक मूल्यों का -हास हो गया।

स्वातंत्रता के बाद नींवहीन, तत्वहीन, लक्ष्यहीन राजनीति के कारण देश का आम आदमी त्रस्त है। राजनीति पार्टियों में नैतिक मूल्यों के स्थान पर स्वार्थपटुता विकसिम हुई। छल-कपट से युवा पीढी दिग्भ्रमित हो गई ।लोंगो का भविष्य अनिश्चित हो गया। जनता की ओर से चुने जाने के बाद राजनेता अपने नैतिक मूल्यों को भूलकर सत्ता का उपयोग स्वार्थ सिध्दि के लिए करने लगा। नैतिक मूल्य का -हास से राजनीति सें भ्रष्टाचार का बोल बाला बढ गया। यह आजादी सिर्फ

राजनेताओं की आजादी बन कर रह गई। इक्कीसवी सदी के कहानीकारोंने इस मूल्य हिनता का वर्णन अपनी कहानियों में किया है ।

नासिरा शर्मा की ' दीमक' कहानी में नायिका की पँाचो संतानों के सत्ता से विद्रोह करने के कारण उनकी बलि चढाई जाती है । उनके घर में एक-एक करके पॅाचो के जनाजे उठे । 'तीसरा मोर्चा' कहानी कश्मीर में चल रहे अत्याचार का वर्णन करती है। 'चार बहने' शिश महल की ' कहानी भ्रष्ट राजनीति तथा मूल्य हिनता को चित्रित करती है। चुडियाँ बेचनेवाले व्यक्ति की चारों बेटियों पर चाचा की बुरी नजर है। चाचा के गुंडागर्दी का परिणाम उन्हें भूगतना पडता है। चाचा नदीम उन्हें वासना की नजर से देखता है । '' बारह-तेरह साल की नाजूक सी लडकी मदनी हाथ की जलन से तडपने लगी। सीने में दर्द की तेज मे बेकरार हो उसने अपने दँात हाथों पर गाड दिये । गिरफत ढीली हुई । वह तडपकर पीछे मुडी तो धक से रह गयी । ऑसूओं से भरी आँखे फटी की फटी रह गई । रुँधे गले से सिर्फ इतना निकला 'नदीम चाचा आप । '' [52]

4.2.5 राष्ट्र कल्याण की भावना का अभाव :-

स्वतंत्रता के बाद भारतीय जनमानस को राजनीति ने अधिक प्रभावित किया । शासन कर्ता मनुष्य के जीवन संबंधी निर्णय लेते है, यही वह निर्णय अच्छे हो तो वह मनुष्य के लिए वरदान बन जाता है, लेकिन आज राजनीति में मनुष्य के जीवन संबंधी आस्था कम हो गई है । स्वतंत्रता के बाद राजनेताओं ने जनता के साथ खिलवाड हो गई है। राजनीति व्यवस्था को उत्तम जब माना जाता है, जिसमें जन-जीवन की सुख शांति व्याप्त हो । आज नेताओं में राष्ट्र कल्याण की भावना का अभाव दिखाई देता है । भ्रष्टाचार उनका दूसरा नाम उभरकर सामने आया है । इस वर्तमान परिस्थिति को बदलने के लिए आण्णा हजारेजी ने दिल्ली में जंतर मंतर

पर जो आंदोलन किया था, इन आंदोलन में लोगों ने काफी मात्रा में शासन के विरोध में अपना मत प्रदर्शिन किया था ।

सत्ताधारी जनता की सेवा करने के बजाय जनहित विरोधी काम कर रहे है । इस भ्रष्ट राजनीति के कारण समाज विकास में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। आज राजनीति गुंडागर्दी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद अमानवीयता में फँस गई है । परिणाम स्वरुप राजनेताओं के पास राष्ट्र कल्याण की कोई योजना नहीं है । समाज का सामाजिक ,आर्थिक विकास में उनके पास कोई कार्यक्रम नहीं है । राजनेता अपन पद ,प्रतिष्ठा तथा ईमानदारी को बेच रहे है । परिणाम स्वरुप भारतीय जनमानस में राजनीति के प्रति विद्रोह का भाव दिखाई देता है । इस संबंध में डॉ, विपिन गुप्त ने अपने विचारों को उद्धृत किया है-'' आज जबकि तांत्रिक व्यवस्था है,तो भी राजनीति में जुझनेवाले का लक्ष्य कुर्सी प्राप्त करना हो गया है अैार सत्ता में आने पर उसकी नजर लुट तत्व पर टिक गई है । राज्य की सुरक्षा जनहित ,आर्थिक विकास, सामाजिक संदर्भ सभी गैाण विषय बन गये है । इसं भ्रष्ट राजनीति का नाम दिया जा सकता है। ''[53]

भ्रष्ट राजनीति के कारण आम आदमी के जीवन में अनेक समस्या खडी हो जाती है। भडकिले भाषण करके लोगों भडकाया जाता है। आतंकवाद आज देश के सामने सबसे बडी समस्या है। यहीं आतंकवाद जनता की एकता को तोडने की कोशिश करता है। राजनेता और अपराधी लोगों की सॉठ-गॉठ होने से उनके पास कोई राष्ट्र कल्याण की योजना नही है। कुर्सी प्राप्त करने के बाद जनता के पैसों की लूट करना यही एक कार्यक्रम राजनेताओं का रहा है। इक्कीसवी सदी की कहानीकारोंने राजनेताओं की भ्रष्ट प्रवृत्ति का पर्दापाश किया है।

नासिरा शर्मा की 'यहूदी सरर्गदान' कहानी में धर्म ईरान की निवासियों का खूनचुस रहा है। धर्म के नाम पर उनकी एकता में फूट डालने की कोशिश की जाती है। " हम ईरानी पहले मरना पसंद करते है। उस समय हमारे ईरान में शहीद होन का चलन आम नहीं हुआ था । हमारे कूचे और बाजार सडक और फुटपाथ जब से लाशों से पटने लगे है। हम मौत नहीं संग्राम चाहते है, जिसमे दिवानावार इन विदेशियों के जडे जड से उखाड फेके ।" [54] आज राष्ट्र कल्याण की भावना राजनेताओं में होकर अपनी ही आर्थिक परिस्थिति को सुधारने का एक मात्र लक्ष्य बन गया है।

4.2.6 सांप्रदायिक संकुचित भावना :-

आज सांप्रदायिकता की संकुचित भावना बढती हुई दिखाई देती है। जिसके कारण समाज की एकता को ठेच पहुँच जाती है। इस संकुचित भावना से घृण ,व्देष की भावना लोगों में पनप रही है। सांप्रदायिक संकुचित भावना के कारण हिंसा की आग भडक उठी है। कुछ राजनैतिक लोग महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश को लेकर लोगों के मन में सांप्रदायिक संकुचित भावनाओं को बढावा दे रहे । जसके कारण दोनों प्रदेश के लोगों में हिंसा की भावना रही है। भाईचार, उदारता, सहिष्णुता, मित्रता, मानवप्रेम जैसे नैतिक मूल्यों का -हास हो गया।

इस सांप्रदायिकता की भावना के कारण मनुष्य -मनुष्य में शत्रुता की भावना पनप रही हैं। आज मानव संकुचित सांप्रदायिकता में बॅटकर विनाश की कगार पर खडा हुआ है। कुटिल षडयंत्रो के कारण देश प्रेम, बलिदान, राष्ट्रप्रेम की भावना समाप्त हो गई है। डॉ.सुकुमार भंडार राजनेताओं की सांप्रदायिक भावना की चर्चा करत हुए लिखते है कि" राजनीति में सांप्रदायिकता को विशेष महत्व प्राप्त होता है, क्योंकि राजनेता किसी संप्रदाय विशेष से संबंधित होता है, वह अपने संप्रदाय के

विकास के लिए तत्पर रहता है। कभी-कभी वह संप्रदाय का उपयोग सत्ता प्राप्त करने तथा कुर्मी बचाने के लिए सांप्रदायिकता की आग भडकाकर अपनी स्वार्थ की पूर्ति करते है।''[55]

आज हमारे देश में आग भडक रही है। परिणामतः सांप्रदायिकता के दंगे भडक उठे है। भारतीय राजनीति की ही सांप्रदायिकता उपज है। सांप्रदायिकता की आग भडकाकर राजनेता अनेक स्वार्थ की सिध्दि करते हैं। समाज विरोधी तत्वों को संरक्षण देकर सांप्रदायिकता को बढावा दिया जाता है। राजनीति में बढते सांप्रदायिकता के कारण अशांति,दहशदवाद ,आतंकवाद ,गुंडागर्दी, असंतुलन की प्रवृत्तियॉ प्रबल हो रही है ।

इक्कीसवीं सदी की कहानियों में इस संकुचित सांप्रदायिकता का चित्रण हुआ है। नासिरा शर्मा की 'असली बात' कहानी हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिकता तनाव के कारण कर्फ्यू लगाया जाता है। '' अफसर तो सबकी कमर की हडी तोडने की प्रण ले चुका था ,दोनों मोहल्लों के गरीबों ने पछताना शुरु कर दिया था । सुस्ती अब उदासी में बदल गई । मजदूर ने मजदूरीसे हाथ धोए ,दूकान दारोंने ग्राहकों से चुल्हे तो घर-घर दूसरे दिन से ठंडे पडने लगे थे । कर्फ्यू खुलता तो भी घंटे -भर को तो खरीदारी की सकत किसमें थी '' [56]सांप्रदायिक दंगों के कारण गरीबों के कारण अधिक नुकसान होता है

4.3.आर्थिक परिस्थितीयाँ-

आर्थिक दृष्टि से सबलता प्राप्त करना मनुष्य का उद्देश्य होता है। 'अर्थ' से ही मनुष्य का जीवन कामयाब होता है, इस दृष्टि से जीवन में अर्थ को सर्वाधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है। डॉ.एम.के.गाडगील अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं जि -"अर्थ, मनुष्य को इसलिए सर्व प्रिय नहीं कि वह ऐंद्रिय सुख प्रदान करता है,

बल्कि उसको कष्ट और दुख में संरक्षण भी प्रदान करता है। वह कानूनी फैसलों का विषय बनता है और युध्द तथा संघर्ष को उकसाने में मदद करता है। संपत्ति से रिश्ते जोड़े जा सकते हैं और तोड़े भी जा सकते हैं। संपत्ति आत्मोन्नति का साधन बनती है। व्यक्ति का सामाजिक दर्जा भी संपत्ति पर आधृत रहता है।"[57] अर्थ का प्रभाव व्यक्ति जीवन-पटल पर पड़ता है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अर्थार्जन के द्वारा ही करता है।

हमारे भौतिक जीवन में सुख-समृध्दि के लिए अर्थ को विशेष महत्त्व है। इसलिए समाज की पूँजीपति एवं शोषक वर्ग श्रमजीविओं का निरंतन शोषण करता है। परिणामत: आर्थिक विषमता बलवती होती है। एक विशेष वर्ग के पास अधिक धन की मात्रा, तो अन्य वर्ग निर्धन बनता गया। इसी आर्थिक विषमता को संवेदनशील साहित्यकारों द्वारा उद्घाटित किया गया।

4.3.1.आर्थिज वैषम्य -

आर्थिक असंतुलन आर्थिक विषमताओं की जननी है। समाज में अर्थ को अत्याधिक महत्त्व होने के कारण समाज में शोषक और शोषित वर्ग का निर्माण होना स्वाभाविक है। शोषक वर्ग शोषितों का आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक सभी प्रकार से शोषण करता रहा। शोषितों का शोषण करके वह अपनी आर्थिक पूँजी बढ़ाता रहा। इसलिए एक वर्ग अमीर और दूसरा वर्ग अधिकाधिक गरीब बन जाता है। समूचे विश्व में मचने वाली उथल-पुथल के पीछे अर्थ ही महत्त्वपूर्ण होता है। आर्थिक विषमता का चित्रण नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों में किया है। एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण की कहानिकारों ने अपनी कहानियों ज। कथ्य मध्यवर्गीय जीवन पर आधारित होने के कारण उन्होंने अपनी कहानियों में आर्थिक समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है। आर्थिक विषमता के जारज निम्न-मध्यवर्गीय व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। दूसरी ओर पूँजीपति ऐशो आरामी और विलासी जीवन जीता है। मध्यवर्ग की

आर्थिक स्थिति को उद्घाटित किया है। आर्थिक विपन्नता में जीवन-याप-न करनेवाले व्यक्ति अपने पुत्र की आकांक्षा पुरी नहीं कर पाते। अपनी आर्थिक स्थिति के संबंध में कहता है- "एक सप्ताह तक पैदल दफ्तर आने-जाने के बाद और पत्नी की किफायती से मैं इस काबिल हो गया कि प्लास्टिक की सुर्ख रंग की कार अपने बेटे के लिए खरीद लाया और उस शाम मैं मुन्ने की आँखों से बरसती खुशी से सराबोर हो गया।"[58] जब कार तुटने पर वह अपने पत्नी पर बरस पड़ता है, तब वह कहती है कि आपके साहब के बेटे ने कार को तोड़ा है, तब उसका गुस्सा काफूर हो जाता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्पा, सुर्यबाला, शिवानी, मेहरून्निसा परवेज, कुसुम अंसल आदि की कहानियों में आर्थिक विषमता से उत्पन्न वर्ग भेद तथा वर्ग भेद से उत्पन्न अमानवीयता को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

4.3.2. अर्थ लोलुपता-

अर्थ प्राप्ति की अधिक लालसा अवैध मार्गों का स्वीकार करने के लिए विवश करती है। स्वातंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक मूल्यों के अभूतपूर्व परिवर्तन को डॉ.गोरखनाथ तिवारी ने रेखांकित किया है- "व्यक्ति की सोच अर्थ प्रधान हुई, जिसके फल स्वरूप वह धनार्जन हेतु किसी भी हद को पार कर सकता है एवं गलत हथकंडे अपनाकर समाज में शीघ्र ही धनाढ्यों की श्रेणी में जगह बना लेने में सफल होता है। धन, संपत्ति, सत्ता-सुख, एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए मानव सदा दौड़ लगाता है, जिसके चलते उसका नैतिक पतन होने लगता है और वह भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वतखोरी जैसी कालुष्यपूर्ण मनोवृत्तियों का आदी हो जाता है।"[59] वास्तविकता यह है कि बड़ा बनने के लिए अधिक धन की आवश्यकता है। इसलिए मनुष्य अर्थलोलुप बनकर आशावादी जीवन जीता है। समाज में अधिकाधिक धन कमाने की लालसा से विकृतियाँ बढ रही है। हबीब हज्जाम के लड़के चाँद के साथ होली के दिन सुखिया, नवाब और गोपी कुकर्म

ञरते हैं जिसमें उसकी मृत्यु हो जाती है। इन तीनों को सजा देने के बजाए पुलिस रिश्वत लेकर मामला रफ़ा-दफ़ा कर देते हैं और दरोगा इन तीनों को सजा देने के बजाए हबीब हज्जाम को ही धमकाता है। वास्तव में धन कमाने ञी लालसा के कारण गुनाहगारों को सजा नहीं मिल पाती। रिश्वत देकर वह आसानी से छूट जाते हैं। धन की लालसा मनुष्य को विवेकहीन बना देती है।

धन की लालसा मनुष्य को अवैध धन्धे करने के लिए विवश कर देती है। 'प्रोफेशनल वाइफ' कहानी में फिल्म में कोई रोल मिल जाय इस लालच में जवान लड़के-लड़कियाँ अवैध धन्धे करती हैं। लड़कियाँ विजय के ऑफीस पर कई बार चक्कर लगाती है और बॅनर्जी को अपनी सिफारिश करवाने को कहती। फिल्म में रोल मिले इस लालच में कई लडकियाँ शारीरिक संबंध भी रखती है। सूर्यबाला की 'नकिान्नन' ने मध्यवर्ग के मन की अर्थ लोलुपता को व्यक्त किया है। मौसाजी अपना अधिकार जताकर दूसरों के खेत हड़पना चाहता है। मौसाजी और सुंदरदास दोनो गरिबों को ड़रा-धमकाकर उनकी जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं, क्योंकि "उन्हें पता चला था कि सरकार इधर स्टेश-ा ब-ा-ोवाली है, सो जमीन के बदले अच्छे पैसे देगी। उसे चौगुना मुनाफा होगा। मगर कम्मो खेत बेचने पर तैयार न हुई तो उसने मौसाजी के द्वारा डराया-धमकाया और अब सीधे ञम्मो पर वार ञर दिया।"[60] ि-म्-ा-मध्यवर्गीय समाज पर किस तरह अन्याय-अत्याचार किये जाते हैं, उसका यथार्थ उदाहरण सुंदरलाल के द्वारा साकार होता है। सुंदरलाल की अर्थ प्राप्ति की लालसा के कारण कम्मो को विभिन्न कटु अनुभवों को सहना पड़ता है।

धनवान बनने की नशा मनुष्य को मदहोश बना देती है इस लालच में वह अपनों का भी गला घोंट देता है। उसकी सारी संवेदना नष्ट हो जाती है। धन की लालसा से वह मानवीयता को भूल जाता है। वह मानवीय-अमानवीय, धार्मिक, अधार्मिक, नैतिक-अनैतिक, सत्य-असत्य का भेद भूलकर हर चीज को

व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखता है। नासिरा शर्मा ने 'जहाँनुमा' कहानी में कमाल की अर्थ आसक्ति को उजागर किया है। वह धन की लालसा में अपनी पत्नी नबीला और बेटों को धोखा देकर शहर के सबसे बड़े व्यापारी के बहन के साथ शादी करता है। एक दिन वह उलझा हुआ अपनी पूर्व पत्नी नबीला से अपनी व्यथा का बयान करता है- "-ाबीला, मेरे दुज ज ो समझो, मैं सच कह रहा हूँ। उस आराम, उस खामोशी से मैं थक गया हूँ। एक तरफा बोलता हूँ। एक तरफ पढ़ता हूँ। मुझसे बहस करनेवाला, उत्तेजित करने, चिढ़ाने और बेचैन करने वाला वहाँ कोई नहीं हैं। इस हिमशिला के नीचे दबा-दबा मैं पागल होता जा रहा हूँ। मेरा काम सिर्फ सुनना नहीं है, सिर्फ देखना नहीं है। जो देख-सुन रहा हूँ उसमें ज ोई बदलाव, कोई गति तो होनी चाहिए। मेरी दिमागी जरूरतों को उज़्मा नहीं समझ पाती है। मैं अब यह जिन्दगी ज्यादा नहीं झेल सकता।"[61]

धन प्राप्ति को साधन माते हुए 'इच्छा घर' की नीलम अपने घर में कपड़े बेचने का व्यवसाय करती है, लेकिन धन की लालसा उसे अमानवीय बना देती है। अपने ही बेटी को रामसिंह के ऑफिस में नौकरी लगवाकर रामसिंह के साथ अनैतिक संबंध बनाकर घर खरीद लेती है। धन लोलुपता के कारण अनैतिकता समाज में पायी जाती है। उन सभी अनिष्ठ प्रवृत्तियों का एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों ने खुलकर विरोध किया है।

4.3.3.अर्थ प्राप्ति के लिए अवैध धन्धें-

ज म समय में अधिक धन की लालसा अवैध धन्धों को जन्म देती हैं। इस दृष्टि से नासिरा शर्मा ने अवैध व्यवसाय करनेवाले विभिन्न पात्रों का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। नासिरा शर्मा की 'मटमैला पानी' प्रोफेशनल वाईफ', 'इच्छा घर', सुनिता जैन की 'पड़ोसन जिजी', 'परदेश' अग्निहोत्री की 'एक भटकता मन', निरूपमा सेवती की 'माँ' कहानी इस स्थिति को प्रकाशित करती है। 'इच्छा घर'की नायिका नीलम धन प्राप्त करने की अदम इच्छा रखती है। वह

अपने बेटी से आस लगाये रखी है कि "दो साल बाद उसकी बेटी मुट्ठी भर नोट घर में लायेगी और वह बैठकर उसको गिनेगी। नोट गिनना भी कितना सुख देता है।"[62] -नीलम अर्थ प्राप्ति के लिए सभी अवैध काम करने के लिए तैयार थी। नीलम ने "कसम खाई थी कि वह अपना भाग्य बदलकर रहेगी। वह खुद पैसा कमाएगी और अब तभी मायके आयेगी जब उसके बदन पर ज़ेवर और कलाइयों में भर-भर सोने की चूडियाँ होंगी और अमीरी की कथा सुनाने के लिए कुछ दिलचस्प किस्से होंगे।"[63] नीलम अपने जवान लड़की को ठेकेदार रामसिंह के यहाँ भेजकर अमीर होने के सपने देखती है। वह ठेकेदार के यहाँ पुत्री रूबी को यौन शोषण के लिए भेज देती है। "माँ ने रूबी को भेड़ियाँ के माँद में धकेल कर नये घर का दरवाजा बन्द कर दिया। रूबी के पास बचने के सारे दरवाज़े अब बन्द थे।"[64] अपने बेटी को दूसरों के साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर धन प्राप्ति की अत्याधिक लालसा ही है।

राजनीतिक लोगों के अवैध धन्धों की भी पोल खोल दी है। वे सत्ता को हथियाने के लिए अनेक प्रकार के षडयंत्रों का प्रयोग करते हैं। अतः वह सत्ता पाकर अवैध धन्धों से अपनी परिस्थिति सुधार लेना चाहता है। अतः स्पष्ट है एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों ने अवैध धन्धों के द्वारा धन प्राप्ति ज्ी स्वार्थी प्रवृत्तियों की पोल खोल दी है।

4.3.4.बेरोजगारी एवं दरिद्रता-

समाज में गरीबी, दरिद्रता, बेरोजगारी आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, शोषण आदि समस्याओं का बोलबाला है। बढ़ती जनसंख्या और उपलबध उद्योग-ध-धे दोनों में सांमजस्य स्थापित न होने कारण समाज में आज दरिद्रता, बेरोजगारी और भूखमरी की ज्वलंत समस्याओं से समाज में विषमता पायी जाती है। आर्थिक संकट ने जीवन जीने का संघर्ष प्रबल हो गया। आर्थिक अभाव के कारण समाज जर्जर और खोखला बन रहा है। बेरोजगारी, दरिद्रता आर्थिक विषमता का ही

परिणाम है। आर्थिक विषमता के परिणाम स्वरूप देश की अर्थ नीति बिघड़ती जा रही है। दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति संभव न होने के कारण समाज में मोहभंग स्थिति उत्पन्न हुई। युवक अपने बेरोजगारी से परेशान होकर अपनी जीविका चलाने के लिए रोजी रोटी की तलाश में भटक रहे हैं। वर्तमान जिन्दगी की बहुत बड़ी विसंगति बेरोजगारों की है। डॉ.सुरेश गायकवाड ने बेकारी उत्पन्न करनेवाले कारणों को उजागर करते हुए कहा है कि- "शासन की ओर से उपलब्ध व्यवसाय क्षेत्र और जगहें इतनी सीमित हैं कि बेकारों को उसमें समा लेना कठिन हो गया है।"[65] आज भारत में बेकारी की समस्याओं से आम आदमी निराशा एवं हताशाओं से त्रस्त है।

बेरोजगारी एवं दरिद्रता की विभीषिका को उजागर किया है। नासिरा शर्मा की 'आखिरी पहर' कहानी इसी बेरोजगारी को चित्रित करती है। कहानी की नायिका जाहेदा इसी मँहगाई और बेकारी से त्रस्त है। दौलत का अंदाजा लगाते हुए उन्होंने सोचा कि अब रोजी, रोटी, कपडा के लिए किसी मर्द की आवश्यकता नहीं है। दो वर्षों के बाद घर से बाहर निकलने पर उन्हें पता चला कि महँगाई बहुत बढ़ चुकी है। अपने चारों तरफ फैली बेकारी को देखकर वह चुप हो जाती है। घर का कीमती सामान बेचकर वह रोज का खर्चा चलाती है। अपने चारों तरफ फैले मुसीबतों को देखकर वह पागल-सी होने लगती है। आर्थिक अभावों का निरंतर संघर्ष करनेवाली एवं बेकारी का जीवन जी-ेवाली 'आखिरी प्रहर' की नायिका जाहेदा पूरी तरह टूट जाती है।

'इब्ने मरियम' कहानी में भोपाल गैस दुर्घटना से उत्पन्न बेरोजगारी को चित्रित किया है। गैस के हादसे से चारों तरफ बेरोजगारी फैल चुकी है। अनेक लोगों को इस हादसे से अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा है। रऊफ इसी बेकारी से त्रस्त है। "उनका बेटा रऊफ न्यू टैक्सटाइल में कभी नौकर था। कब से बेकार बैठा है। गैस लीक होने के बाद मजदूरों के जुलूस में वह शामिल था।

साहब लोगों को बात बुरी लगी। बहुतों की छॉटनी हुई। रऊफ को निकाल दिया गया। इधर-उधर पुताई का काम करने लगा। छः बच्चे और पाँच बड़े-सबज ा खर्च रऊफ के कन्धे पर है।"[66] -ाासिरा शर्मा जैस हादसे े बाद भोपाल में निर्माण हुई बेकारी की चर्चा अपनी कहानी में कर वहाँ के लोगों की संघर्षमय जिन्दगी को रेखांकित किया है। बेरोजगारी से आज देश का आम आदमी त्रस्त हैं। गाँव के शिक्षित बेरोजगार नौकरी करने उद्देश्य से शहरों में या दूसरे देशों की ओर बढ़ने लगे। निरूपमा सेवती की 'आवाजे अंधरे की' कहानी का तौफिक अपनी बेकारी से त्रस्त अपने देश 'फिलिस्तिन' को छोड़कर इस्त्राईल जाने को विवश होता है। जीवन संघर्ष में उसका परिवार बिखर जाता है। वह अनेक समस्याओं, यातनाओं का शिकार हो जाता है। तौफिक "रोटी कमाने के लिए ईस्त्राईल जाना लगा था और एक दिन थकन से चूर जब वह सरहद पार न कर सका और वहीं रास्ते में पड़ गया तो इस जूर्म में सीमा सुरक्षा पुलिस के जूतों और लातों की ठोकरों से उसे फुब्बाल में बदल दिया गया था। थज-ा जहीं भाज गई थी और वह लुढ़कता हुआ अँधेरी रात को पार करता हुआ घर पहुँचा था.. । भुखमरी, गरीबी, बेकारी महँगाई .. कैसे बुरे दिन थे, तो भी वह लड़का मुरझाज र टूटा तो नहीं था।"[67] बेज ारी से त्रस्त तौफिक का संघर्षमय जीवन कहानी में चित्रित हुआ है। 'परिंदे' कहानी का विजय एम.ए.तक पढ़ा है, बेकारी से तंग आकर वह ईरान में नौकरी के लिए चला जाता है। बेरोजगारी और महँगाई की विभीषिका से प्रताड़ित युवा पीढ़ी की करूण कहानी, उनकी बेबसी, असहायता को निरूपमा सेवती ने वाणी दी है।

4.3.5. मूल्यवृध्दि जी समस्या-

स्वतंत्रता के बाद आर्थिक समानता के सपने देखनेवाला आम आदमी पूरी तरह टूट चुका। देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ बनाने के लिए अनेक योजनाएँ बनाई गई, लेकिन भ्रष्ट व्यवस्था के कारण वह पूरी नहीं हो पाई। बढ़ती

जनसंख्या, बढ़ती महँगाई, कमानेवाले कम और खानेवाले ज्यादा जैसी स्थिति ने समाज में महँगाई और बेकारी ने उग्र रूप धारण कर लिया। आम-आदमी का जीवन दूभर हो गया। इस संबंध में डॉ.जालिंद्रर इंगळे ने उचित लिखा है- "आर्थिक विषमता का सामना अक्सर निम्न वर्ग को करना पड़ता है। बच्चों की पढ़ाई, परिवार के अन्य सदस्यों के पेट पालन आदि के लिए बढ़ती महँगाई में सबकी जरूरतें पूर्ण करना कठिन-सा है।"[68] बेकारी तथा महँगाई के कारण आम आदमी की हालत खास्ता हुई। वह अपने जरूरतें भी पुरी नहीं कर पा रहा है। महँगाई एक भीषण विभीषिका बनकर उनके जन-जीवन पर छा गई है।

महँगाई के कारण आज सामान्य व्यक्ति परेशान हो रहा है। महँगाई गरीब स्थिति को अधिक बढावा दे रही है। महँगाई के कारणों की मीमांसा करते हुए डॉ.अशोक धुलधुले ने निम्नमध्य वर्ग के शोषण चक्र के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं- "उत्पादक एवं उपभोक्ता के बीच कार्यरत बिच्चोलियों के कारण महँगाई की दर दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इसमें उत्पादक अर्थात जिनकी उत्पादन के साधनों पर अधिकार है, उन पर कोई प्रभाव नहीं होता। केवल मध्य एवं निम्न वर्ग के लोक ही इसमें प्रभावित होते हैं। यहा एक शोषण चक्र है।"[69] बढ़ती महँगाई से चिंताग्रस्त मनुष्य आर्थिक परिवेश के प्रभाव से घुटकर जीने के लिए त्रस्त हैं। उनकी इसी परिस्थितिओं का चित्रण एक्कीसवीं सदी जे प्रथम चरण के कहानिकारों की कहानियों में हुआ है। उनकी पत्थर गली', 'भूख' 'आखिरी प्रहर' 'आशयाना', 'इमाम साहब' 'दहलीज' 'परदेस' आदि सभी कहानियाँ गरीबी एवं महँगाई के शिकार हैं। एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों की कहानियों में आम आदमी का संघर्ष चित्रित हुआ है। नासिरा शर्मा की कहानी 'आशयाना' कहानी का जमशेद बढ़ती महँगाई के कारण अपनी दयनीय स्थिति को उजागर करता है- "घर का खर्च सँभाले नहीं सँभलता है। बड़े शहरों में छोटा आदमी पिसता है। रोज ऑफिस से बतूल को लेने जाता है।

रास्ते में सवारियाँ भी बिठा लेता है। चार-छह तुमान हाथ लग जाते हैं।.. शाम को बच्चों के हाथ पर दो दो तुमान रख देता है। पर बच्चे भी यह पैसा चॉकलेट कॉफी में खर्च नहीं करते हैं, बल्कि माँ-बाप उसी समय बचत योजना सिखाने के चक्कर में अपने सामने उनसे गुल्लक में डलवा देते हैं।"[70] बढ़ती महँगाई एवं गरीबी के कारण आम आदमी का जीवन दयनीय बना गया।

मालती जोशी की 'कोहरे के पार' कहानी का सोहराब अपने बेटे को विदेश में इंजीनियर करने के लिए भेजना चाहता है, लेकिन गरीबी और महँगाई से वह पूरी तरह तुट चुका था। बेकारी तथा मँहगाई की स्थिति उसके आत्मसम्मान को झज्झोर कर देती है। "जब से सोहराब के पिता ने फैक्टरी जाना छोड़ा है, तब से पैसे की ऐसी मार पड़ी है कि भरपेट खाना भी सपना-सा हो गया है। महँगाई ने तो जैसे गरीबों की भूख का मज़ाक उड़ाना सीख लिया है।"[71] आर्थिक समस्या गरीबों के सामने प्रश्न चिन्ह बनकर रह जाता है। बढ़ती मँहगाई के कारण आज आम आदमी अपनी जीविका चलाने के लिए भी असमर्थ हो जाता है। इस आर्थिक व्यवस्था से परेशान आम आदमी की संवेदना एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों की कहानियों से सर्वव्याप्त है।

4.3.6. उच्चवर्ग का विलासी जीवन-

आज समाज में अमीर और गरीब दो वर्ग है। इन दो वर्गों में गरीब उपेक्षापूर्ण जीवन जीने के लिए त्रस्त हैं तो अमीर या पूँजीपति के पास आज सभी भौतिक सुज-सुविधा उपलब्ध है। आर्थिक विषमता को निर्माण करने में पूँजीपति ही अधिक जिम्मेदार रहा है। गरीब की तरह उसे किसी भी प्रकार की आर्थिक तंगी का सामना नहीं करना पड़ता है। उच्चवर्ग पूँजी जमाकर अपने विलासी जीवन जीने के लिए गरीब लोगों का निरन्तर शोषण करते आये हैं। इन्हीं पूँजीपतिओं को जिम्मेदार ठहराते हुए डॉ.जालिंदर इंगळे ने लिखा है- "पूँजीपति पूँजी जमा करके पूँजीहीन लोगों का निरन्तर शोषण करते आये हैं। गरीब दलित

जनता के श्रम पर पूँजीपतियोंने अपने-आपको उच्चवर्ग में प्रतिष्ठित किया है। निम्नवर्ग तथा श्रमिक वर्ग का आर्थिक शोषण करना अपना कर्तव्य समझकर गरीबों को और ज्यादा गरीब बनाने में वह प्रयत्नशील रहते हैं।"[72]

उच्चवर्ग अपने विलासी जीवन जीने के लिए समाज के शोषित वर्ग को उनका शिकार होना पड़ता है। आर्थिक संपन्नता के कारण वह सभी जगह अपनी धाक जमाता है। डॉ.सरिता शुक्ला ने लिखा है- "पूँजीवाद ने मानवीय संबंधों का आधार पारस्परिक प्रेम और सहयोग नहीं रहने दिया.. आपस का सहयोग और सहानुभूति नष्ट होकर सभी भूखी जानवरों की तरह एक दूसरे पर अने दाँतों की तेजी की आजमायश कर सकें। ईश्वर की जगह मशीनों ने ले ली और प्रेम की जगह रूपयों ने।"[73] उच्चवर्ग में अमानवीयता तथा संवेदन शून्यता की स्थिति उत्पन्न होती है। नासिरा शर्मा ने अपनी कहानी 'जहाँनुमा' में कमाल उच्चवर्ग का विलासी जीवन जीने के लिए अपनी पत्नी नबीला और बेटों को छोड़ देता है। शहर के बड़े व्यापारी के बहन की साथ शादी करता है। उच्चवर्ग का विलासी जीवन जीने के लिए कमाल का यह बर्ताव अमानवीय तथा संवेदनशून्य जैसा ही है। कमाल बिल्लौर के जाम से भरी अलमारी दिखाता हुआ नबीला से कहता है- "सच नबीला देर में ही सही मगर उस मुकाम तक पहुँच चुका हूँ। पैसे में बहुत ताकत होती है। उससे दुनिया का हर आराम, हर खुशी खरीदी जा सकती है। तुम भी एक दिन जिन्दगी के किसी मोड़ पर पहुँचकर मेरी बात को समझोगी। ज्यादा देर मत करना। नबीला मैं अपने तजुर्बे से कह रहा हूँ।"[74] उच्चवर्ग की विलासी जीवन की लालसा से कमाल अपने परिवार को बिखर देता है।

शशिप्रभा शास्त्री की 'अगरबत्ती' कहानी भी उच्चवर्ग की लालसा को चित्रित करती है। धन की लालसा सभी में होती है। उच्च वर्ग बनने की धुन में वह अर्थार्जन को प्रधानता देता है। श्रमिक वर्ग का शोषण कर उन्हें अधिक गरीब बनाने में वह प्रयत्नशील रहते हैं। कहानी का नायक इस्माईल कमांडर तौफिक

धन को ही सब कुछ मानकर उसके बल पर सब कुछ हासिल करने की उसकी सोच हमारे सामने रखता है। "तुम्हारे पास दूसरी दौलत भी नहीं है, जो हमारी तरह तुम अज़ीज ताकतों को नाको चने चबवा सके। अगर आज हम महाशक्ति के बैंकों से अपना धन निकाल लें तो उनकी अर्थ व्यवस्था चरमरा जाए।"[75] उच्चवर्ग अपने आर्थिक बल के कारण सभी पर अपना रोब जमाना चाहता है। 'विरासत' कहानी के पुल्लन मियाँ का पुत्र अहमद अमेरिका में जाने के बाद वहाँ चार करोड़ का घर खरीद लेता है। वह सभी भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने में व्यस्त है। पुल्लन मियाँ को लगता है कि क्या अहमद को अपनी ऊच्ची दीवारें याद आती है या नहीं ? इस प्रकार उच्चवर्ग अपने आर्थिक प्रबलता के कारण विलासी जीवन जीने में व्यस्त है। एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों ने अपनी कहानियों द्वारा उच्चवर्ग की विलासी वृत्ति को प्रस्तुत करते समय मध्यवर्ग की पीड़ा और समस्याओं को संवेदनशीलता के साथ उद्धृत किया है।

4.3.7. आम आदमी का शोषण-

औद्योगीकरण के कारण समाज में मुख्य दो वर्ग निर्माण हुए। पहला पूँजीपति वर्ग और दूसरा श्रमिक वर्ग। इसी पूँजीपतिओं का श्रमिक वर्ग शोषण का शिकार होता है। इसलिए आर्थिक विषमता ने व्यक्ति के सम्बन्धों में दरार उत्पन्न की। डॉ.जालिंदर इंगळे इसी आर्थिक विषमता के दुष्परिणामों को रेखांकित करते हुए लिखते हैं- "आर्थिक संपन्नता के सारे साधनों की उपस्थिति में शोषक वर्ग अपना कार्य उचित ढंग से करता है। वह अधिकाधिक संपत्ति जुटाने में प्रयासरत् रहता है। दूसरी ओर शारीरिक श्रम के बगैर कोई भी पूँजी न होनेवाला शोषित वर्ग की भूख मिटाने में भी असफल रहता है।"[76] आज आम आदमी का शोषण उतना ही दुखदायी है, जितना आज़ादी के पहले था या आजादी के बाद। आवश्यक और मुलभूत सुविधाओं का अभाव आज भी आम आदमी के जीवनधारा

में है। आज आर्थिक नीतियों ने आम आदमी की कमर तोड डाली है। वह विभिन्न आपदाओं से त्रस्त है। आज़ादी के बाद अधिक लोगों का जीवन दि-ा-ब-दि-ा आर्थिक अभाव के नागपाश में जकड़ता गया। आज मध्यवर्ग के परिवारों का विघटन का मुख्य कारण उनकी आर्थिक कमी ही हैं। उसी तरह उन्हें बेरोजगारी, मँहगाई, बेकारी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों द्वारा आम आदमी के शोषण की स्थितियों को जीवंतता से साकार किया है।

'आया बसन्त सखी' में दस्तकारों की आर्थिक शोषण को चित्रित किया है। उन्हें दस्तकारी काम करने पर भूखे रहने की नौबत आती है। कहानी में बड़े व्यापारी दस्तकारों से अपना काम करवा कर उनका किस प्रकार शोषण करते हैं प्रस्तुत है। "सुल्ताना दिन भर दस्ताकारी का काम करती है, किंतु पारिश्रमिज अत्यल्प, प्राप्त होता है। वह अपनी बेटी सायरा से दुख का बयान करती हुई कहती है कि- "रूमाल की बनवाई.. दिन भर में बीस या तीस पैसा.. इसमें तो दो वक्त की रोटी का आटा भी नहीं आता है। तू उस काम पर हवाई किले खड़ी कर रही है। मौलवीगंज से चौक और चौक से डालीगंज चलते-चलते पैर टुटने लगे मगर मजदूरी के रूपए नहीं देने थे सो नहीं दिए। उन्हें गरीबों के घर का हाल क्या पता जि हम न सावन हरे न भादव।"[77] स्वतंत्रता के बाद आम आदमी का शोषण सर्वश्रृत है। दस्तकारी इन लोगों का जीने का एकमात्र मजदूरी का साधन होने के कारण बड़े व्यापारिओं द्वारा उनका शोषण होता है। अत: पूँजीपतियों द्वारा निर्मित व्यवस्था में आम आदमी आहें भरकर निराशा, घुटन-टूटन से अपना जीवन व्यथित करता है। श्रमिकों को अपने श्रम का उचित मोल न मिलने के कारण वह गरीबी के खाई में अधिक गिर जाता है। पूँजीपति के हाथ आर्थिक डोर होने के कारण अमानवीयता के बल पर धन संचय करते हैं।

पूँजीपति मध्यवर्गीय समाज का शोषण कर उन्हें आर्थिक दृष्टि से दुर्बल बना देते है। डॉ.सरिता शुक्ल का कथन उचित है- "समाज में आर्थिक विषमता लाने में सबसे बड़ा हाथ पूँजीपतिओं का रहा है। यह वर्ग निरंतन शोषण, बेईमानी भ्रष्टाचार और काले धन्धें करके अपनी पूँजी को दिन-दूनी ओर रात चौगुनी कर-ने में जी जान से जुटा हुआ है। उद्योग से लेकर सरकार की आर्थिक नीतियों तक की बागड़ोर इनके हाथों में है। अमानवीयता के बल पर धन संचय करना ही इनका मुख्य लक्ष्य रहा है।"[78] धन के कारण वह अनायास, अनैतिक कर्मों की ओर झुक जाता है। मेहरून्निसा परवेज की 'कातिब' कहानी में कातिबों की आर्थिक शोषण चित्रित हुआ है। अकरम जब कातिब लेखकों की सामग्री कागज पर उतार लेता है, किंतु मजदूरी को लेकर उसे परेशान किया जाता है। उनकी पत्नी नौशाब कहती है- "इस किताबत ने मुआक्या है।"[79] अकरम भी कहता है- "इस दुनिया में भरपेट खाना सिर्फ जानवरों को नसीब है। उनके पेट अल्लम गल्लम खाकर ऊपर तक लबालब भरे रहते हैं, तभी तो दिल तमन्ना और आरजू से बेगाना और दिमाग खयाल और फिक्र से आज़ाद होता है।"[80] अकरम के माध्यम से नासिरा शर्मा जी ने पूँजीपतिओं के प्रति आक्रोश की भावना व्यक्त की है। 'इमाम साहब' कहानी में आर्थिक शोषण का चित्रण हुआ है। शकीलउद्दीन को पाँसों रूपये वेतन देने की बात तय हुई थी। लेकिन उसे पाँसों से कम रूपये दिये जाते हैं। उसी प्रकार कोसी मोची भी अपनी आर्थिक दुरावस्था से परेशान है। कोसीमोची "चमड़े की चप्पल में पेबंद लगाते-लगाते कोसी मोची परेशान हो उठा था, मगर इमाम साहब से इन्कार कैसे करता, सो हर हफ्ते नए अंदाज से चमड़ा घिसकर नया पैबंद लगाने में जुट जाता था।"[81] एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से पूँजीवादी समाज की अनैतिकता तथा धन आसक्ति की भावना के खिलाफ आवाज उठकार उनकी विद्रोही कृत्यों को समाप्त करने की कामना की है।

4.3.8. प्रशासकीय व्यवस्था का आर्थिक शोषण-

राष्ट्रीय भावना और समाज हित व्यक्तिगत स्वार्थ के आगे लुप्त हो गई। सच्चाई, ईमानदारी की जगह झूठ, फरेब ने ले लिया। भ्रष्टाचार, प्रांतवाद, जातिवाद, सामाजिक जीवन के हिस्से बन गये। आज भारत में प्रशासकीय व्यवस्था द्वारा घुसखोरी, रिश्वतखोरी के माध्यम से अवैध धन्धों का बोलबाला दिखाई देता है। डॉ.पांडुरंग पाटील इस भ्रष्ट प्रशासकीय व्यवस्था की पोल खोलते हुए कहते हैं कि- "शासन में जब अव्यवस्था फैल जाती है, तब रिश्वतखोरी, बेईमानी, मिलावट, लूटमार, डकैत, गोलीकांड आदि का वर्चस्व होता है। पूँजीवादी व्यवस्था का बोलबाला रहता है। अधर्म, अन्याय, झूठ, बेईमानी घूस और शोषण पर पूँजीवादी व्यवस्था खड़ी है।"[82] भ्रष्ट प्रशासन ने समाज को अस्थिर बना दिया। अर्थ का महत्त्व अधिक बढ़ गया। इस संबंध में डॉ.राठौर का मत है कि "सरकारी व्यवस्था की मशीन भ्रष्टाचार एवं अनाचार से लिप्त हो गई और चारों तरफ अर्थ का ही बोलबाला हो जाने के कारण अर्थ तथा अर्थोपार्जन इस देश के लोगों का प्रमुख लक्ष्य बन गया है।"[83] अर्थ का महत्त्व बढ़ने से अवैध धन्धों को अघोषित स्वीकृति मिली।

आज भारत में प्रशासकीय क्षेत्रों में बढ़ रहा भ्रष्टाचार एक चिंता का विषय बन गया है। भ्रष्टाचार ने देश के स्वाभिमान को ठेस पहुँचा दी है। डॉ.धीरजभाई वणकर लिखते हैं कि- "भारत देश में ब्रिटीश काल में वस्तुतः सार्वजनिक कार्यक्षेत्र सीमित होने के कारण प्रशासकीय स्तर पर भ्रष्टाचार कम था। स्वतंत्र भारत में अनियंत्रित सत्ता, अवसरों की अधिकता, सामान्य रूप से विघटित होता नैतिक स्तर दिन प्रतिदिन बढ़ती महँगाई एवं जनता में पर्याप्त राजनीतिक जागरूकता का अभाव, शासक तंत्र को शिथिलता और प्रणाली के दोषों ने मिलकर भ्रष्टाचार को विकसित व फैलाने में विशिष्ट अवसर प्रदान किये।"[84] अपने देश को खोकला बनाने में भ्रष्टाचार प्रमुख रहा है। इन सभी स्थितियों को

ध्यान में रखते हुए एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों ने अपनी कहानियों में प्रशासकीय भ्रष्टाचार को उजागर किया है। नासिरा शर्मा की 'गूँगी गवाही' कहानी में दरोगा उन गुनाहगारों को बचाना चाहता है, जिन्होंने बालक के साथ अत्याचार किये थे, जिसमें उसकी मौत हो जाती है। लेकिन दरोगा पैसों की लालच में उन्हें गिरफ्तार नहीं करता। हबीब उस दरोगा से कहता है- "यह रखे, कहते दोनों गंदे कपड़ों में लिपटा पैकेट वहॉ रखकर सरपट लौट गए।"[85] रहीम गुनाहगारों को सजा देने की बात दरोगा से कहता है, तब दरोगा कहता है- "हम मदद करना भी चाहें तो नहीं कर सकते हैं। बेबात दुश्मनी हो गई तो फिर रोज दंगा-फसाद होगा। तेरा जीना मुश्किल हो जाएगा, उसे बाद में कौन सँभालेजा?"[86] प्रशासकीय व्यवस्था गुंडों के हाथों का खिलौना बन गई हैं। पुलिस द्वारा समाज सेवा के बदले गुंडों की सेवा की जाती है।

4.3.9. बाल मजदूरी-

आज बढ़ती जनसंख्या के कारण समाज में बेकारी, दरिद्रता, बेरोजगारी जैसी समस्या बढ़ रही है। समाज की अर्थव्यवस्था आर्थिक विषमता का ही परिणाम है। आर्थिक अभाव के कारण बालक अपने परिवार को आर्थिक सहायता करने के लिए मजदूरी करते हैं। बाल मजदूरी पर शासन द्वारा कई प्रतिबंध लगाए गये हैं, लेकिन उसे पूरी तरह रोक नहीं पाया। अपनी गरीबी के कारण बाल मजदूरी करने के लिए विवश हो जाते हैं। बाल मजदूरी के संबंध में डॉ.शाकिर शेख का मत है कि- "जब नाबालिक बालक किसी कारणवश परिश्रम कर धनोपार्जन करता है, उसे बाल मजदूरी कहते हैं।"[87] आर्थिक विवशता के कारण बालक मजदूरी करने के लिए विवश हो जाते हैं।

भारत में आज बाल मजदूरी की समस्या बढ़ रही है। गरीबी और शिक्षा के अभाव से यह बाल मजदूरी बढ़ रही है। इस संदर्भ में कैलासनाथ गुप्त अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं- "बालश्रम के सहायक अनेक कारण हैं जैसे

भूख, गरीबी, शिक्षा का अभाव दुःख, जीवन की मुलभूत आवश्यकताओं का पूरा न होना, चिंता, पारिवारिक कष्ट, तनाव, पारिवारिक विघटन, बेरोजगारी, जिज्ञ ाासा, पारिवारिक अनुशासन की कमी, औद्योगिकरण, फिल्में, नशाखोरी तथा उपेक्षित व्यवस्था आदि।"[88] परिवार की जिम्मेदारी कम उर्म में ही कंधे पर आने पर बालज मजदूरी करने पर विवश हो जाते हैं। यह लावारिस बच्चे कूड़े के ढेर से ही अपनी भूख मिटाते हैं। "गली के कुत्ते और शहर की गलियों में फिरने वाले लावारिस बच्चे जिनकी रोजी-रोटी का सिलसिला इस ज़ूड़े के ढ़ेर से जुड़ा हुआ था। कुत्तो की भूख को मिटाने के साथ उनकी जबान के चटखारे का भी यह स्त्रोत था। इसलिए पालनहार के बनाए इन दो के चटखारे में बड़ी मित्रता थी। लड़के कूड़ा खंगोलते, काम की चीज को प्लास्टिक बोरी में डालते और खाने का झूठन दुमहिलाते कुत्तों के सामने फेंक देते थे।"[89] लावारिस बच्चों की विवशता कहानी में चित्रित हुई है।

निराश्रित बालिकाओं का चित्रण 'ललमनियाँ' कहानी में हुआ है। सभी लडकियाँ मिल-जुलकर रेल्वे स्टेशन पर काम कर रही हैं। कोई सौतेली माँ के डर से, तो कोई घर की आर्थिक दुर्दशा के कारण घर से भाग आयी है। जैसे ही स्टेशन पर गाड़ी आ जाती है सभी लड़कियाँ सामान बेचने के लिए दौड़ती हैं। स्टेशन पर सन्नाटा होने पर उनके पैरों की दौड़ ठहरती। "पन्द्रह मिनट बाद पश्चिम की तरफ से आनेवाली ट्रेनें एक के बाद एक पहुँचने वाली थीं। सब-ने अपना-अपना सामान हाथों में संभाल लिया और नज़रें पटरी पर गाड़ दी।"[90] सामान बेचने के बाद हिसाब करती है और एक औरत हैं, जो उन्हें सामान देती है, और उनसे पैसे का हिसाब लेती है। कहानी की सभी छह लड़कियाँ घर से भागकर आई है। इन कारणों को कहानी में चित्रित किया है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण कई बच्चे मजदूरी करके अपने परिवार की आमदनी बढ़ाने का काम करते हैं। 'इमाम साहब' में आर्थिक अभाव के कारण

सुहैला अपनी माँ को मदद करती है। "रात को आँख खुली तो देखा सुहैला और जुलेखा चिराग की रोशनी में बैठी लिफाफे बना रही है। सुहैला के नन्हें--ा-हें हाथ माँ से अधिक तेजी से चल रहे थे।"[91] परिवार की आर्थिक तंगी के कारण कई बच्चों को काम करना पड़ता है। जिससे उनका शोषण होता है।

सुनिता जैन की 'किधर' कहानी का मन्नू अपनी आर्थिक अभाव के ज़ारज अपनी बेटी गुलबानो को किसी धनी के यहाँ काम करने के लिए लगा देता है। वह दो हजार रूपया एडवांस भी लेता है। वह यह सोचता है कि जैसे ही पख्तून ठीक हो जायेगी गुलबानो को धनी के घर से वापस ले आयेगे और मॉ और बेटी दोनों मिलकर पेट भरने के लिए कमायेगी। उसी प्रकार 'शर्त' कहानी की पार्वती भी दूसरों के घर काम करके अपने माँ को आर्थिक सहायता करती है। आर्थिक दुर्बलता के कारण आज माँ बाप भी अपने संतानों को मजदूरी करने के लिए विवश करते हैं।

संक्षेप में कहा जाता है एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों ने समाज में शोषक और शोषितों के बीच खाई बढ़ानेवाले अनेक कारणों को चित्रित कर शोषितों को अपने शोषण के बारे में जागृत करने का प्रयास किया है।

ि-ाष्ज र्ष-

विवेच्य अध्याय में एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों की ज़हानियों में आर्थिक संदर्भ के विविध पहलुओं पर प्रकाश ड़ालने का प्रयास रहा है। 'अर्थ' से ही मनुष्य का जीवन कामायाब होता है। इसलिए भारतीय समाज में अर्थ की प्रतिष्ठा सदैव रही है। आर्थिक दृष्टि से संपन्नता प्राप्त करने का उद्देश्य हर व्यक्ति के मन में रहता है। मनुष्य अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं की पूर्ति अर्थ के द्वारा ही पूरा करता है। आर्थिक स्थिति ने ही मनुष्य का स्तर बनाया है। आर्थिक विषमता के कारण ही समाज में गरीब-अमीर का भेद निर्माण हुआ है।

अर्थ का प्रभाव व्यक्ति के जीवनपटल पर पड़ता है। धन संचय करने से एक व्यक्ति के पास अधिक धन संचित हुआ और दूसरा वर्ग निर्धन बन गया। उनके अनेक रचनाओं में ऐसे अनेक प्रसंगों का समावेश हैं, जिसमें हमारे देश की अर्थ स्थिति तथा आर्थिक अभावों के दुष्परिणामों का यथार्थ चित्रण किया गया है।

आर्थिक संदर्भ के विविध पहलु मनुष्य जीवन से संबंधित हे। आज जनसंख्या के कारण बढ़ती महँगाई तथा गरीबी का चित्रण नासिरा शर्मा, कुसूम अंसल, शिवानी, मैत्रेयी पुष्पा, निरूपना सेवती, सुर्यबाला की कहानियों में चित्रण हुआ है। गरीबी को मिटाने के लिए सरकार द्वारा अनेज उपाय योजना की जाती है, लेकिन उनका लाभ न मिलने के कारण यह समस्या हल नहीं हो पाई हैं। आर्थिक शोषण के कारण गरीब अत्याधिक गरीबी की खाई में गिर जाता है। पूँजीपति द्वारा आर्थिक शोषण होने पर गरीब का जीवन स्तर गिरता जा रहा है। उसे अर्थ प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

आज मनुष्य अधिक से अधिक धन कमाने की लालसा रखता है क्योंकि जिसके पास अधिक धन उसकी इज्जत है। अधिक धन की लालसा से उसका जीवन संघर्षमय बन जाता है। जिससे नैतिक मूल्यों का ऱ्हास हो जाता हैं। हर मनुष्य की इसी धन लालसा को 'गूँगी गवाही', 'माँ', 'अगरबत्ती', 'परदेस', 'प्रोफेशनल वाईफ', आदि कहानियाँ प्रस्तुत करती है। पूँजीवादी व्यवस्था में धन के आधार पर उच्च वर्ग गरिबों का शारीरिक, आर्थिक शोषण करते हैं। जिसके कारण गरिबों को दो वक्त की रोटी भी नहीं मिल पाती।

जनसंख्या और नौकरी के लिए उपलब्ध जगह में काफी अंतर होने के कारण बेरोजगारी एवं दरिद्रता का सामना सामान्य जन को करना पड़ता है। इसी बेरोज़गारी के कारण उसे दो समय का भोजन जुटाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। 'आखिरी पहर', 'माँ', 'जिलुस', 'लालसा', 'खटरग', 'सिनाखत', 'इब्ने मरियम, परिंदे' कहानियाँ इसी बेराजगारी

ऱी विभीषिका को उजागर करती हैं। उच्चवर्ग विलासी जीवन जीने के लिए आम आदमी का शोषण कर रहा है। गरीब की तरह उसे किसी भी तरह आर्थिक तंगी का सामना नहीं करना पड़ता है। विलासी जीवन उसे अधिक धन कमाने की लालसा उत्पन्न करता है।

आज प्रशासकीय व्यवस्था में भ्रष्टाचार अधिक बढ़ने के कारण अवैध धन्धों का बोलबाला दिखाई दे रहा है। भ्रष्ट प्रशासकीय व्यवस्था ने समाज को अस्थिर बना दिया है। 'नौकरी','खुशबू का रंग' कहानिओं ने प्रशासकीय व्यवस्था के भ्रष्टाचार को उजागर कर समाज के सामने उसके असली चेहरे का पर्दाफाश किया है। आर्थिक अभाव के कारण बालको को अपने परिवार की आर्थिक सहायता के लिए मजदूरी करने के लिए विवश होना पड़ता है। एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानिकारों ने बाल मजदूरी की समस्या को उठाकर उसके प्रति चिंता जताई है। भूख, शिक्षा का अभाव तथा गरीबी आदि प्रमुख कारण 'शर्त', फिर कभी, भूख आदि कहानियों में चित्रण हुये हैं। आज कतिपय स्त्रियों को आर्थिक अभाव के कारण अपना शरीर बेचना पड़ता है। गरीबी, दरिद्रता, महँगाई, बेकारी आदि समस्याओं से जुझकर मजबूर होकर उन्हें अपने शरीर का सौदा करना पड़ता है। आर्थिक विवशता के कारण उ-ाऱा यौ-ा-शोषज ऱिया जाता है।

अंत में कहा जा सकता है कि, एक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के ऱहानिकारों ने अपनी रचनाओं में आर्थिक समस्याओं को सम्प्रेष्य वस्तु के रूप में अपनाकर उन्हें प्रभावपूर्ण प्रस्तुत भी किया है। आर्थिक संदर्भ के विविध आयाम जैसे आर्थिक शोषण, अर्थ लोलुपता, बेरोजगार, महँगाई, बाल मजदूरी, उच्चवर्ग का विलासी जीवन आदि कई पहलूओं को उनकी कहानियाँ उजागर करती है। अर्थ का जीवन-पटल पर प्रभाव तथा उनके अनेक परिणामों को भी बड़ी सफलता से निरूपित किया गया है।

संदर्भ-

1. नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामायिक बोध-डॉ.शेख मोहम्मद शाकिर शेख बशीर, पृ.59
2. राष्ट्र और मुसलमान-नासिरा शर्मा, पृ.196
3. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामायिक दृष्टि-डॉ.मंजुर सैय्यद, पृ.150
4. साठोत्तीय हिन्दी उपन्यासों में नारी-डॉ.सुधा अरोड़ा-पृ.263
5. देवेश ठाकूर और उनका उपन्यास साहित्य-डॉ.पांडुरंग पाटील- पृ.263
6. नारी शोषण आईने और आयाम-आशारानी व्होरा, पृ.236
7. दूसरा ताजमहल, नासिरा शर्मा, पृ.66
8. शामी कागज़, नासिरा शर्मा, पृ.23
9. थाली भर चाँद, सूर्यबाला, पृ.117
10. पत्थर गली, नासिरा शर्मा, पृ.95-96
11. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्ति मूलक अनुशीलन, डॉ.क्षितीज धुमाल, पृ.138
12. महिला उपन्यासकारों की रचना में वैचारिकता, डॉ.शशी जेकब, पृ.57
13. खुदा की वापसी, नासिरा शर्मा, पृ.97
14. ललमानियाँ, मैत्रेयी पुष्पा, पृ.97
15. हंस-जुलाई, 1994, पृ.40
16. हिंदी उपन्यास : समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ.चण्डीप्रसाद जोशी, पृ.113
17. समकालीन हिंदी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष, डॉ.जालिंदर इंगळे, पृ.166
18. बुतखाना, नासिरा शर्मा, पृ.17
19. पत्थर गली, नासिरा शर्मा, पृ.156
20. ललमनियाँ, मैत्रेयी पुष्पा, पृ.14

21. समकालीन हिंदी कहानी, पुष्पपाल सिंह, पृ.09
22. अंतीम दशक के हिंदी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ.गोरखनाथ तिवारी, पृ.110
23. पत्थरगली, नासिरा शर्मा, पृ.46
24. थाली भरचाँद, सूर्यबाला, पृ.21
25. प्रभाकर पाचवे के हिंदी उपन्यासों में समसामाजिक दृष्टि, डॉ.मंजूर सैय्यद, पृ.127
26. गूँगा आसमान, नासिरा शर्मा, पृ.132
27. अपराध समस्या और समाधान, रूपसिंह चंदेल, पृ.78
28. देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य- पांडुरंग पाटील, पृ.80
29. हिंदी उपन्यासों में नारी चित्रण- बिंदू अग्रवाल, पृ.56
30. गूँगा आसमान, नासिरा शर्मा, पृ.138
31. बुतखाना, नासिरा शर्मा, पृ.81
32. साठोत्तरीय हिंदी उपन्यास, डॉ.एम.बी.पटेल, डॉ.दिलीप महेश, पृ.39
33. अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाज शास्त्रीय अध्ययन, रामनरेश त्रिपाठी, पृ.175
34. खुदा की वापसी, नासिरा शर्मा, पृ.16
35. साठोत्तरीय हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ, डॉ.विजया वारद, पृ.91
36. पत्थर गली, नासिरा शर्मा, पृ.15
37. सबीना के चालीस चोर, नासिरा शर्मा, पृ.64
38. उच्चतर आधुनिक राजनीति सिद्ध्दात, प्रा.एल. एल. वर्मा, पृ.204
39. साठोत्तरीय उपन्यास, डॉ.पारूकान्त देसाई, पृ.149
40. कमलेश्वर, संपा. मधुकर सिंह, पृ-150

41.विमर्श के विविध आयाम-डॉ.अर्जुन चव्हाण, पृ.125

42.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युग चेतना, डॉ.अरूणेन्द्र राठौड, पृ.240-241

43.खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा, पृ.153

44.वही-पृ.55

45.जिंदा मुहावरे, नासिरा शर्मा, पृ.08

46.पत्थर गली, नासिरा शर्मा, पृ.29

47.वही-पृ.131

48.समकालीन हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक चित्रण-डॉ.सुकुमार भंडारे, पृ.65

49.इब्ने मरियम, नासिरा शर्मा, पृ.65

50.नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में युगबोध, डॉ.अजय पटेल, पृ.137

51.कथाकार कमलेश्वर, डॉ.के.पी.जया, पृ.11

52.पत्थर गली, नासिरा शर्मा, पृ.34

53.हिंदी नाटक में समसामायिक परिवेश, डॉ.विपिन गुप्ता, पृ.08

54.संगसार, नासिरा शर्मा, पृ.66-67

55.समकालीन हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक चित्रण, डॉ.सुकुमार भंडारे, पृ.15

56.पत्थर गली, नासिरा शर्मा, पृ.29

57.हिंदी एकांकियों में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति, डॉ.एम.के.गाडगीळ, पृ.34

58.बुतखाना, नासिरा शर्मा, पृ.146

59.अंतीम दशक के हिंदी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ.गोरखनाथ तिवारी, पृ.43

60.थालीभर चाँद, सूर्यबाला, पृ.38

61.इब्ने मरियम, नासिरा शर्मा, पृ.132

62.बुतखाना, नासिरा शर्मा, पृ.100

63.वही-पृ.101

64.वही-पृ.107

65.जैनेद्र के कथासाहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएँ-डॉ.सुरेश गायकवाड, पृ.63

66.इब्ने मरियम-नासिरा शर्मा, पृ.143

67.आवाजें अंधेरे, निरूपमा सोबती, पृ.43

68.समकालीन हिंदी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष-जालिंदर इंगळे, पृ.173

69.फनीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में वर्ण संघर्ष-डॉ.अशोक धुलधुले, पृ.155

70.शामी कागज-नासिरा शर्मा, पृ.59

71.कोहरे के पार, मालती जोशी, पृ.31

72.समकालीन हिंदी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष, डॉ.जालिंदर इंगळे, पृ.169

73.धर्मवीर भारती : युगचेतना और अभिव्यक्ति-डॉ.सरिता शुक्ला, पृ.97

74.इब्ने मरियम, नासिरा शर्मा, पृ.130

75.शशिप्रभा शास्त्री

76.समकालीन हिंदी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष-डॉ.जालिंदर इंगळे, पृ.229

77.सबीना के चालिस चोर-नासिरा शर्मा, पृ.197

78.धर्मवीर भारती : युगचेतना और अभिव्यक्ति- डॉ.सरिता शुक्ला, पृ.97

79.मेहरून्निस परवेज

80.वही

81.पत्थरगली-नासिरा शर्मा, पृ.63

82.देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास, डॉ.पांडुरंग पाटील, पृ.91

83.स्वातंत्र्योत्तर लघु उपन्यासों में युगचेतना, अरूणेन्द्र सिंह राठौर, पृ.225

84.कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ, डॉ.धीरजभाई, पृ.238/239

85.सबीना के चालीस चोर- नासिरा शर्मा, पृ.92

86.वही-पृ.93

87.नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामायिक बोध-डॉ.शेख बशीर, पृ.132

88.मानवाधिकार और उनकी रक्षा, डॉ.कैलासनाथ गुप्त, पृ.37

89.थाली भर चाँद, सूर्यबाला, पृ.48

90.ललमनियाँ-मैत्रेयी पुष्पा-पृ.88

91.बुतखाना-नासिरा शर्मा, पृ.131

पंचम अध्याय

5.0 इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानियों में चित्रित नारी के विविध रुप

प्रस्तावना-

5.1 प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानियों में नारी

5.2 नारी के विविध रुप

5.2.1 माँ

5.2.2 बेटी

5.3 नारी के प्रति दृष्टिकोण

5.3.1 नारी का विधवा जीवन

5.3.2 पुरुष द्वारा प्रताड़ित नारी

5.3.3 नारी का घुटन - टूंटन

5.3.4 नारी की जिजीविषा

5.3.5 नारी की सहन शीलता

5.3.6 स्वाभिमानी एवं अहम्वादिनी नारी

5.3.7 परम्परा से विद्रोह करनेवाली नारी

5.3.8 मानवतावादी नारी

5.3.9 राजनीतिक परिस्थिति से पीड़ित नारी

5.3.10 धर्म से प्रताड़ित नारी

निष्कर्ष

5.0 इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानियों में चित्रित नारी के विविध रुप-

प्रस्तावना :-

नारी समाज का अभिन्न अंग है । परिवार में उसका महत्वपूर्ण स्थान है । परिवार के सदस्यों को अच्छे रास्ते पर लाने का काम वही कर सकती है । हमारे सभ्य विकसित समाज में नारी का शोषण प्राचीन काल से चला आ रहा है I प्राचीन काल में उसे शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार नहीं था I मध्यकाल में उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय होती गई I वह सदियों से उपेक्षा, दुत्कार और शोषण की वस्तु बनकर जी रही है I वह दासता के बंधन में जकडती चली गई थी। जैसा समय चला गया वह प्रतिबंध के दृवारा संचलित होने लगी I स्त्री अपने आप पांरपारिक रुढ़ि वादी समाज के अत्याचारों की शिकार बनी । अत्याचार के कारण उसके सारे प्रगति के मार्ग बंद हो गये। अशिक्षा, अज्ञान और दमन के युग से शिक्षा और जागरण के युग में नारी शोषण ा के अधिकता दिखाई देती है।

स्त्री पुरुष भेद आज लगभग समाप्त हो चुका है। आज वह पुरुषों के आगे जा रही है । आगे जाने में वह सफल हो रही है, अपने कर्तृत्व के कारण आर्थिक व्यवहार में स्त्री और पुरुषों में पक्षपात की स्थिति अब भी मौजूद है । आज नारी को सभी क्षेत्रों में आरक्षण मिल रहा है।

समय के साथ-साथ समाज ने काफी प्रगति की लेकिन नारी विषयक संस्कार समाज में पुरातन पंथी और जड़वादी ही रहे हैं। समाज के बंधनों के कारण वह कुछ नहीं कर पाती । स्वतंत्रता के बाद समाज ने उसे बहुत कुछ अधिकार दिये लेकिन वह आज भी शोषित लगती है। नारी शिक्षित बनी , नौकरी करने लगी पैसा कमाने लगी अपनी अधिकार जताने लगे । लेकिन फिर भी अंध - विश्वास के कारण वह

पुरुष की दासी बन रही है । इसलिए मैथिलीशरण गुप्त का कहना उचित लगने लगाता है।

" अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी

आंचल में है दूध और आंखों में पानी । "[1]

प्रेमचंद पूर्व काल में नारी चार दिवारी के अंदर दिखाई देती है । उसे अनेक समस्याओं ने जकड़ लिया है।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' के सिद्धांत पर चलने वाले भारतीय समाज में काल परिवर्तन के अनुसार भारतीय नारियों की अवस्था अत्यंत दयनीय होती गयी । पुरुष प्रधान संस्कृति के कारण नारी दबी-सी गई । परिणाम स्वरुप उसे समाज में गौण स्थान प्राप्त हुआ । आज समानता का अधिकार है फिर भी उनकी स्वतंत्र में गति नहीं है ।पारिवारिक और सामाजिक धरातल पर वह अनेक समस्याओं से ग्रस्त है । हर नारी आज अंधविश्वास की शृंखला में वह जकड़ी हुई है। फिर भी नारी अपने अधिकार के प्रति संघर्षरत   है । डॉ. जालिंदर इंगले ने लिखा है " नारी को शक्ति हिन, अबला समझकर पुरुष वर्ग हमेशा नारी वर्ग का शारीरिक ,मानसिक,बैाध्दिक ,लैंगिक शोषण करता आया है । पंरतु अब नारी में संघर्ष भावना जागृत होकर अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध करने में सक्षम हुई । " [2] अतः नारी में संघर्ष की भावना धीरे-धीरे जागृत हुई ।

5.1 प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानियों में नारी :-

प्रेमचंद पूर्व युग में हिन्दी कहानी की विशेष लक्षणीय बात नहीं मिलती। इसका कारण एक मात्र हो सकता है कि जिस समाज के बल पर साहित्य का निर्माण होता है वह समाज इस युग में विश्रृंखल अवस्था में मिलता है । अंग्रेजों के आगमन

के कारण भारतीय समाज में तेजी से बदलाव आया । विदेशी संस्कृति के प्रति भारतीय लोगों के मन में आकर्षण की भावना निर्माण हुई । जिसके कारण हमारी संस्कृति पुरी तरह भारतीय लोगों के मन पर हावी हो गई । चटपटी, चुलबुली नायिका, सुंदर सलोना नायक ,ऐय्यशों की ऐय्याशी, माशूक आशिक के चोचले आदि कहानियों के प्रधान विषय बन गये।

नारी का रुप चित्रित होने में उसे पुरुष की विलासी उपभोग्य की वस्तु माना है । नारी के बारे में अपने विचार स्पष्ट करते हुए गोस्वामीजी कहते है कि" स्त्री समाज की अधिष्ठायी देवी है । सतीत्व उस देवी की ज्वाज्वल्यमयी प्रथा है और इस प्रथा के प्रकाश से ही भारत वर्ष भू मंडल का आदर्श गुरु रहा है । किंतु जब स्त्रियों में अवैध स्वाधिनता, अयोग्य शिक्षा का प्रचार होगा तब भारत के महिला कुल के इस सतीत्व और उसकी प्रभा संपूर्ण विनाश हो जाएगी तब यह देश घोर दुर्गति के गर्त में पड़कर सदैव के लिए मृतक हो जाएगा । अत एव देश के नेता जिन स्त्रियों की रक्षा उनके सतीत्व की रक्षा और समाज की रक्षा में विलासत वालों का अनुकरण कदापिन करे । "[3] प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानियों में नारियों के प्रति दृष्टिकोण संकुचित रहा है । नवसुधारवादी लेखकोंने नारी की दशा स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना है । नारी समानता को स्पष्ट करते हुए नारी के अंर्तमन को समझाने का प्रयास इस काल के कहानीकारोंने किया है । जिसके कारण नारी सम्मान की पात्र बनी ।

5.2 नारी के विविध रुपः-

नारी इस धरती पर जन्म लिया तो नारीने अनेक रुपों में अपना स्थान निश्चित कर लिया है। कभी वह माँ के रुप में तो कभी पत्नी के रुपमें, कभी बहन

के रुप में फिर भी यह रुप उसे कुछ नहीं दे पाये । इन्हीं रुपों में भी लगातर उसका शोषण ही हुआ है ।

इक्कीसवीं सदी की कहानियों में माँ ,पत्नी, बहन बन कर नारी का शोषण हूआ है । उसे हम यहाँ पर चित्रित करने का प्रयास करेंगे।

5.3.1. माँः-

भारतीय संस्कृति में माँ को देवता के समान माना गया है, लेकिन माँ होते हुए भी वह दूसरों पर आश्रित होती है । लड़की अपने पिता पर, पत्नी अपने पति पर और मॅा अपने बेटे पर आज भी आश्रित है । अतः कौमार्य अवस्था ,यौवन अवस्था तथा वृध्द अवस्था में वह पुरुष पर आश्रित हो गई ।

नासिरा शर्मा की 'दहलीज' कहानी की दादी एक औरत होते हुए भी औरत की दुश्मन है । वह अपनी पोतियों पर पढ़ाई के लिए रोक लगाती है । अपने पोते को घर का चिराग मानती है । बेटियों को घर के अंदर रखा जाता है । बेटियों का यह दर्द बाप समझ सकता है, लेकिन अपने मॅा को वह कैसे समझाये ? वह कहता है '' अम्मा ,आप तो खुद हाफिज कुरान है । शरीयत और हदिस का आप को खासा इल्म है । अब आपको क्या याद दिलाना कि आपने तालीम पर रोक नहीं लगाई तो फिर नौकरी करने पर आपको क्या एतराज है। ''4 सकीना के चाहने के बावजुद भी उसकी पढ़ाई बन्द कर दी जाती है और उसकी शादी कर दी जाती है । नासिरा शर्मा ने अपनी कहानी में मॅा का औरत विरोधी रुप उजागर करते हुए समस्त स्त्री जाति को सचेत किया है । 'संदूकची ' कहानी नारी मन और जेवरोंसे लगाव का बड़ा सूक्ष्म नारी के से अंकन किया गया है । कहानी सुमन के माँ कि संघर्ष भरी दास्तान ही नहीं बल्कि खानदान की बची कुची वस्तुएँ बेचनेवाली स्त्री की कहानी है । 'संदुकची ' कहानी स्वाभिमानी संवेदनशील सुमन की आवाजे माँ के प्रति चाची के अविश्वास

के कारण चीख में उभरती है । '' देखिए --अच्छी तरह से इतमिनान कर लीजिए । कुछ छुपा नहीं है । दराज फर्श पर परक --क्या माँ कुछ छुपाकर आपने साथ लेगई है । ''[5] कहानी का अंत मर्मस्पर्शी है '' मैं किसी को नहीं बता पाई कि माँ उस खाली दरान में क्या रखकर ताला लगाती थी । ''[6]

नासिरा शर्मा की 'कागजी बदाम' कहानी पैसों के लिए बेटी बेचनेवालों के दर्द को उजागर करती है । अजीज डंगरवाल अपनी बेटी को पैसों के लिए बेच देता है , लेकिन यह पत्नी को मालूम नहीं है । माँ को पता नहीं था कि बेटी का क्या हुआ । इसलिए वह अपने पति से कहानी है कि गुलबानो के लिए भीता बीज लिख दो । नासिरा शर्मा ने अपनी कहानी में माँ को अनेक रुपों में चित्रित करने का प्रयास किया है ।

5.2.2 पत्नी-

पत्नी परिवार का केंद्रबिंदू है । पत्नी सहचारिणी होती है वह संस्कृति की धूरी है । हमारी संस्कृति में पत्नी को अर्धांगिनी कहा गया है । परिवार में मधूर रस का अक्षय स्त्रोत है पत्नी पति के प्रति निष्ठावान रहना ही पत्नी का धर्म है । भारतीय समाज में उसे बहुत महत्व दिया गया है । पति पत्नी एक रथ के दो पहिये है , संसार में दोनो महत्व बराबर है। आपस में प्रेम की भावना ही दोनों के लिए महत्वापूर्ण है । पंरतु आज पत्नी रुपी नारी का एक पहिया दलदल में फॅसा हुआ है । अपनी पति को ईश्वर मानते हुए भी आज नारी पति की यातना ,शोषण को सहती रहती है ।

नासिरा शर्मा की कहानी 'संगसार' की नायिका आसिया को लगता है कि पहली रात अफजल उसे बार बार देखे, उसकी तारीफ करे। उसकी सजावर हटाकर उसको बाँहो में लेले पर उसने ऐसा कुछ नही किया । वह उसके साथ समागम के बाद

अधिक समय तक ठहर नही सकी । असिया उसके साथ जब पहली बार हमबिस्तर हुई तो उसे लगा कि उसके अंदर एक नई औरत ने जन्म लिया है । उसे लगा '' जैसे बदन के सारे जोड जंजीर तोड़ ठुमक रहे हो और रोएॅ रोएॅ उमंगो का सोता फूट रहा हो । एक निखार ,एक सम्मोहन एक हुस्न ,एक लावण्य उसके पूरे वजूद को दमका रहा था । '' [7] औरत मर्द का आपसी रिश्त वह जी रही थी वह किसी समाज सा कानून का मोहताज नहीं था । उसने पूरा सोच लिया था कि यादि लोग इस रिश्ते का नाम पूछेंगे तो उसे कि आदम और हव्वा कामिलना यदि गुनाह है तो उपर वाले ने बदन में प्यास क्यों भर दी । आसिया अपने ही पति द्वारा शोषण का शिकार बनी थी । समाज के कानून जब तक बदले नहीं जाते तब तक यह चलता रहेगा ।

आज भारतीय समाज में विवाहित स्त्री की सामाजिक स्थिति संतोष जनक है । परिवार के मधुर रस का आश्रय स्त्रोत है । पत्नी पन्ति के प्रति निष्ठावान रहना ही पति का धर्म है । भारतीय समाज में पत्नि को संस्कृति की धुरी माना गया है । पति पत्नी एक रथ के दो पहिये है । लेकिन आधुनिक युग में नारी स्थिति में बदलाव आया । नारी वर्ग का दलदल में फॅसा हुआ है । वह आज क्रुरता, शोषण ,आक्रोश शोषण सहती रही है । सुर्यबाला ने यामिनी द्वारा और जयशंकर की पत्नी के माध्यम से एक ऐसी नारी का चित्रण किया है कि वह पति द्वारा प्रेम न मिलने पर शोषण का शिकार बनती है । यामिनी तो अपने पहले पति की याद करती हुई पुतुल से प्यार करती है । उतना अपने दूसरे पति निखिल से भी प्यार करती है । निखील के मन में अपने पत्नी के बारे में मन में शंका उपस्थित हो जाती है । यामिनी जब निखिल चुनचुन से प्यार भरी बात करते हूए देखती है तो उसे अपने आप बुरा लगता है। वह पत्नी के रुप में निखिल द्वारा पुतुल को दूर नहीं देखना चाहती है। यामिनी अपने ही मन को समझाती है कि '' भेद रहस्य, भॅवर- और निखिल की वह दृष्टि जैसे इस भॅवर को बहाती मेरे अंदर बहुत गहरे तक

उतरती चली जा रही है । मैं तडफड़ाती घुटती डुबती चली जा रही हूँ । किसने कहा है मुझे इस भॅवर में घूटने चले जाने को ? यह इतना सुखी संपन्न ,घर परिवार पति स्वेच्छा अपनी इच्छा अपनी मरजी से स्वीकारा हुआ वर्तमान --। ''[8] अपने पति और बेटे के बीच में बँटचुकी है । अपने पति और बेटे दोनों को भी वह छोड नहीं पाती।

बेकार की बात कहानी की सिंधु अपने पति द्वारा शोषित है । वह अपने पति से बेहद प्यार करती है लेकिन उसका पति उसे धोखे में रखता है । '' सिंधू अपने पति के प्रेम सागर में डूबती उबरती तन मन से छलकती है ।''[9] लेकिन सिंधू के पति का अपने पत्नि के तरफ ध्यान नहीं है । वह रात दिन अपने ही पति के वियोग में तडपाती है । डॉ.प्रतिभा राय की हिंदी अनुवाद कहानी छाया चित्र मे नमिता का जीवन साथी सुजय अपने पत्नी का शोषण का कारण बनता है । वही नमीता अपने पति सुजय के लिए व्रत रखती है । '' सुजय पहले से ही विवाहित था पहली पत्नी से पुत्र रहते हुए भी न जाने उसने क्यों उसका दायित्व नहीं लिया । अपनी किस्मत के साथ उसने ऐसा विचित्र खिलवाड क्यों किया। सुजय के साथ बिताए गए यादगार पल उसके स्मृति पटल पर अमिट छाप बनकर रह गये । ''[10]

भारतीय संस्कृति के मापदण्डों के आधार पर पत्नी पति की समर्पिता बनकर ही जीना चाहती है । भारत की नारी आज पिछडी नजर आ रही है । शारीरिक मानसिक आर्थिक बैध्दिक ,लैंगिक शोषण पुरुष द्वारा नारी का होता हुआ दिखाई दे रहा है । पितृ सत्ताक पद्धति में भारतीय नारी हमेशा पराधीन ही रही है । नारी पर पुरुषों ने अपना हक जमाया है। पिता भाई पति बेटा इन सिठि़यों में उसे अपना जीवन बिताना पडता है । लेकिन शिक्षा के कारण अब नारी की स्थिति में बदलाव आ रहा है । वह संघर्ष के लिए तैयार हो गई है । अपने हक के लिए लढ़ रही है । नारी कितने ही नम्रता से उदारता से दया और प्रेम से व्यवहार करे उसके साथ अन्याय ही होता है । वह अपने सुखों को दूसरों के लिए त्याग भी देती है । वह

अपने पति को सूखी देखना चाहती है और खुद दुख झेलती है लेकिन उसे हमेशा अपनी इच्छाओं का दमन ही करना पड़ता है ।

5.2.3 बेटी :-

उसके जन्म से ही उसकी रक्षा उसका पिता करता है । इस पिता के बाद भाई भाई के बाद पति और पति के बाद बेटे पर वह आश्रित हो जाती है । इस प्रकार उसका जीवन बँटा हुआ दिखाई देता है । बेटी पराया धन समझकर उसके साथ परिवार में अलग दृष्टिकोण पनपता है । शिक्षा के संदर्भ में भी सभी निर्णय परिवार पर निर्भय करते है । 'मेरे संधि पत्र ' में सुर्यबाला ने पुत्री शोक का वर्णन किया है। रिंकी और ऋचा शिवा की सैातेली संतान है। सौतेली माँ बेटी से प्यार करती है । लेकिन अपनी संतान जैसा प्यार उसे नहीं मिलता जब ऋचा की शादी हो जाती है , तब रिंकी को कर्तत्व के प्रति बताती हुई उसकी ममी कहती है " ठहर ! ऋचा की तरह तेरी भी शादी कर देती हूँ । एक साल में पता चल जायेगा कि घर और बच्चों के पीछे अपनी हार जीत का कितना होश रहता है।" [11] जवान बेटी को उसके कर्तत्व के प्रति ज्ञान का डोस पिलाना एक मॉ द्वारा शोषण ही लगता है क्योंकि उसे अपनी मर्यादा का ज्ञान है फिर भी वह उसकी सौतेली मॉ है ।

आज समाज में बेटी के संदर्भ में माता पिता का दृष्टिकोण बदल रहा है । पढ़ा लिखाकर क्या कायदा वह तो पराया धन है सुबह के इतंजार तक की मान भी परिवार की आर्थिक स्थिति ठिक न होने के कारण शोषण का शिकार हो जाती है । वह भी मॉ की सौतेली बेटी है । मॉ तो मानू से प्यार करती थी लेकिन परिवार पर दुया करके जब मामी मानू को साथ लेकर जाने की बात करती है तो मॉ उसे समझाती हुई कहती है कि " जाएगी बेटी ? यहॉ तो सचमुच सारे दिन घर में घुटती रहती है । वहॉ मामा मामी का घर बड़ा है । घुमेंगी फिरेगी । तुझे तकलीफ नहीं

होगी जब समय मिले पढ़ाई लिखाई भी करना। यहॉ का क्या तीन आदमियों का काम ही क्या !मैं कर लिया करूँगी उनके पिंकू को बिटटू की तरह सँभालना सगे सौतेले का ख्याल मन में मत लाना ''[12] अपनी आर्थिक परिस्थिति अच्छी न होने के कारण मॉ मानू को भेजना चाहती है लेकिन अंत में संगे सौतेले की बात करती है। अपने परिवार की काम की जिम्मेदारी वह खुद उठाना चाहती है लेकिन बेटी के पालन पोषण के लिए वह मामी के घर भेजना चाहती है।

शिक्षा के संदर्भ में नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण कुछ अलगसा है। नासिरा शर्मा की कहानी 'दहलीज' की नायिका सकीना इण्टर पास हो जाने के बाद आगे पढ़ना चाहती है लेकिन उसकी पढ़ाई बंद कर दी जाती है। उसका भाई भी बहन को आगे पढ़ाने के खिलाफ है। वह अपने दादी से कहता है '' असलियत यह आपा तुम लोगों की फिर बेकार में मगजपच्ची करने और पैसा खर्च करने से फायदा? ''[13] परिवार में लडका लडकी के भेदभाव को कहानी स्पष्ट करती है। जावेद हमेशा अपनी बहन पर रोब दिखाने का काम करता है। सिंगापूर जाने के लिए दादी उसे पचास हजार रुपये देती है। सकीना की पढाई बंद कर दी जाती है और उसकी शादी कर दी जाती है, ससुरालवाले भी उसकी पढाई को लेकर ससुराल वाले भी नाराज है इसलिए वह घुटन भरी जिन्दगी जीती है। आठवे दशक के हिन्दी कहानीकारों में कुसुम अंसल, मेहरुन्निसा परवेज, शिवानी आदि कई कहानीकारों ने इसका चित्रण किया है।

5.3. नारी के प्रति दृष्टिकोण :-

भारत में आज भी नारी की स्थिति शोचनीय बनी हुई हमें दिखाई देती है। वह अपने अधिकार पाने के लिए संघर्षरत् है। यह संघर्ष उसे पुरुष प्रधान संस्कृति से करना पड़ रहा है। परिणामतः वह पारिवारिक सामाजिक अनेक धरातल पर

अनेक समस्याओं से ग्रस्त है । कमलेश्वर नारी जीवन की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहते है " मेरे ख्यालों की नारी वह हे जिसमें सांस्कृतिक चेतना हो और वह स्वीकारने का धैर्य और बोध हो कि उसका वास्ता एक ऐसे इन्सान से है जिसमें कुछ कमियॉ भी है क्योंकि पुर्ण कोई भी नहीं होता अतः कही न कही उसके मन में मेरे प्रति इतना लगाव हो कि वह मेरी भूलों को नजर अंदाज करने का प्रयास कर सके और संबंधों में परम्परता का विकास करे । " [14]

5.3.1 नारी का विधवा जीवन :-

स्त्री का पति द्वारा उसका शोषण किया जाता है । डॉ. क्षितिज धुमाळ ने विधवा की दयनीयता की स्थिति उजागर करते हुए लिखा है कि " वैधव्य नारी जाति के लिए अभिशाप माना जाता है । भारतीय संस्कृति में विधवाओं का जीवन अत्यंत उपेक्षित तिरस्कृत ,अशुभ ,घृणात्मक माना जाता है । भारतीय समाज सुधारकों ने इस अमानवीय परिस्थिति को परिवर्तित करने का प्रयास किया । विधवा पुन : विवाह का कानुन पारित कराया गया है । पंरतु आज भी ग्रामांचलो में परम्परागत विधवाओं और आधुनिक विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है ।"[15]

पति के मृत्यु के बाद उसके जीवन की प्रसन्नता जीवंतता ,आनंद समाप्त हो जाता है । पति पत्नी का जन्म जन्मांतर का नाता होता है । नारी की विधवा स्थिति का वर्णन करते हुए डॉ शशी जेकब ने लिखा है कि " इस जीवन में इच्छा ,उमंग ,उल्हास ,उत्साह का कोई स्थान नहीं होता अगर होता है तो केवल व्यथा का वेग अंदर ही अंदर खून सुखता रहता है । किंतु होंठ जरा भी नहीं हिलते ।" [16] पुरुष प्रधान संस्कृति की दानवी प्रवृत्ति ने उसे बंदिस्त बनाया अठवें दशक की कहानीकारों ने नारी की स्थिति पर अनेक कहानियों का लेखन किया । उसमें नासिरा शर्मा की बचाव कहानी महत्वपूर्ण है । बचाव कहानी की बदली का पति स्वर्गवासी होता है ।

कुछ ही दिनों में उसे घर के बाहर निकाल दिया जाता है । उसकी दर्दभरी दास्तान का चित्रण करते हुए नासिरा शर्मा ने लिखा है " हप्ते भर पहले दोनों जेठोंने कमरे खाली करवा लिये । सामान बाहर फिंकवाया उसमें किरायेदार रख लिये है । बीच में पडोसी पडे तो उनके साथ भी तु तू मैं मैं हो गई । बेकार की हाथापाई में कोई क्यों पडता सो एक दो दिन पडोसियों ने जैसे तैसे अपने घर रखा फिर सलाह दी कि भाई से कहकर इन पर केस करवा दो तभी तुम्हारा हिस्सा मिलेगा । "[17]

भारतीय समाज में वैधव्य की स्थिति एक अभिशाप है । विधवा का जीवन दुख से भरा करुण तथा यातनामय होता है । पति की मृत्यु स्त्री को नितांत असहाय और निराश्रित बना देती है । अकस्मात उसके जीवन से उसकी इच्छाएॅ और उसका आनंद छीन लिया जाता है । समाज भी उसे बुरे नजरों से देखता है ।

स्त्री के अभिशप्त जीवन का करुण एवं हृदय द्रावी चित्रण । आखिरी प्रहर कहानी में चित्रित है । कहानी की जाहेदा एक वाल विधवा है । पति के मृत्यु के बाद उसका जीवन संघर्ष मय बन जाता है । उसके जीवन में आये तीनों मर्दो से शारीरिक सुख ठीक से न पा सकी और न मॉ बन सकी । अंत में वह पागल बन जाती है । पागलखाने में जाकर उसकी वही मौत हो जाती है । 'उड़ान की शर्त' कहानी की नायिका महशी का पति एक कार दुर्घटना में मर जाता है और शुरु हो जाता है महशी का संघर्ष । उसी प्रकार गूॅगा आसमान की माहपाश को जबरदस्ती उठा लिया जाता है और उसे फरशीद के कैद में रहना पड़ता है ।

समाज पुरुष प्रधान होने के कारण ऐसी समाज व्यवस्था में पलने के लिए उसे निरंतर एवं सामाजिक तनाओं से वह त्रस्त रहती है । आज भी वह पीड़ित एवं प्रताड़ित दिखाई देती है । उसे पुर्ण स्वतंत्रता नहीं मिलती । उसका जीवन तिरस्कार, उपेक्षा से भरा हुआ होता है ।

5.3.2 पुरुष द्वारा प्रताड़ित नारी जीवन :-

भारतीय संस्कृति में नारी को आश्रित माना गया है । स्त्री मनुष्य पर आश्रित हुई क्योंकि पुरुष प्रधान संस्कृति के कारण । इसी पुरुष प्रधान संस्कृति ने नारी पर अनेक अत्याचार किये भारतीय समाज में नारी को कमजोर माना गया है । उसकी हमेशा उपेक्षा ही की जाती रही । पुरुष पर आश्रित होने के कारण पुरुष उस पर हमेशा अपने आधिकार के बल पर कमजोर बनाता गया वह सदियों से पुरुषों के अत्याचार को अन्याय को चुपचाप सहती रही । पुरुष हमेशा उसे अपनी भोग्य वस्तु मानता रहा।

पुरुष प्रधान संस्कृति ने हमेशा उस पर अन्याय ही किया और यही अन्याय वह आज तक सहती आयी है । नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण सोचनीय रहा है। वह केवल पुरुष की कठपुतली बनकर एक अनुगामिनी की भूमिका निभाने का काम करती है । स्त्री का स्वयं पर कोई अधिकार नहीं था। स्त्री के बारे में सिर्फ संतान को जन्म देना यह विचार समाज में दृढ हो गया है । कुछ आलोचकों का मन है कि '' स्त्री का पहला कर्तव्य है पुत्र सन्तान को जन्म देना ।'' अगर किसी नारी को पुत्र नहीं हुआ तो उसे बांझ समझकर छोड़ दिया जाता है । यह यातना दे-देकर वह स्वयंम् खुदखुशी कर लेती है ।

नारी के प्रति अविश्वास की भावना पुरुषों मे विहित होने के कारण वह हमेशा उसे संशय की निगाह से देखता है । नासिरा शर्मा की कहानी ने समाज की बुरशियों पर प्रहार कर कहानियों पर तीन युवतियों की व्यथा 'पत्थरगली ' कहानी में चित्रित की है । आज मुस्लिम समाज में लड़कियों पर अनेक पाबंदी है । कहानी का पात्र 'फरीदा ' का अपने ही घर में शोषण होता है । वह सोचती है '' आखिर मैं क्या करूँ ? मैं कहाँ जाऊॅ यूॅ पडे पडे जीना कोई जीना है । '' [17] फरीदा लड़की होने

के कारण परिवार वाले उसका स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण नहीं करते । फरीदा में सभी योग्यता होते हुए भी उसके घरवाले उसे पढ़ाने के लिए महाविद्यालय में नहीं भेजते । खुदैजा अपने परिवार वालों के अन्याय से बचने के लिए भाग जाते है । नाहिद एक शिक्षिका वह स्कूल में प्रिसिपल से अवैध संबंध रखता है । मरियम डॉक्टर होते हुए भी एक कम्पाउण्डर से शादी करता है । फरीदा भाई से मार खाकर बिखर चुकी है । वह सिर पटकर पटकर चिल्ला रही है । '' नहीं -- --नहीं मैं उस लडकी में नही ढलना चाहती हूँ जो अपना रास्ता किसी बेकार सहारे से बनाए मैं -- -- नाहिद नहीं बनूँगी ,जुलेया बाजी की तरह चचा से गलत रिश्ता नहीं करूँगी । खुदैजा की तरह भी नहीं मुझे आजादी दो -- मुझे फरीदा बनने दो --मुझे मेरी तरह जिने दो -- मुझ पर रहम खाओ मुझे सारी जंजीरों से इस कैद से आजाद कर दो मुझे आजाद कर दो -- -- आझाद । ''[18]

नासिरा शर्मा की दूसरी कहानी 'आखिरी पहर' कहानी नारी की विवशता पर प्रकाश डालती है । कहानी की नायिका के जिन्दगी में तीन मर्द आये है । इन तीनों मर्दों से वह शारिरीक संबंध रखती है । वह मन ही मन सोचती है । कोई अच्छे लडके के साथ शादी करे । खलील उस पर पानी की तरह पैसा बहाता है । खलील का यह पागल पन सहने के शिवाय जाहेदा के पास कोई रास्ता नहीं है । वह पिंजडे के बाहर आने की कोशिश करती है । दो साल साथ रहने के बाद वह शादी नहीं कर पायी है । जाहेदा '' इस कैद से आजाद होने के लिए दिल ही दिल में अपनी मौत की दुऑ माँगती । ''[19]

आज संविधान के द्वारा समानता का अधिकार प्राप्त होने के बावजुद परम्परा से पुरुष नारी को भोग्या तथा अबला ही मानाता है । 'पति पत्नी और वह' उपन्यास की नायिका शारदा इसी भावना को अभिव्यक्त करती है '' अनादि काल से पुरुष नारी को अबल और भोग्या ही मानता चला आया है । इसी पुरुष प्रधान समाज के

नियम संविधात नारी को समान अधिकार देने के बाद भी नहीं बदले है “ [20] पुरुष के समान अधिकार प्राप्त करने के बाद भी नारी का अबला रुप आज तक नहीं बदला है ।

समाज में आज नारी की स्थिति बहुत कमजोर है । उसे हर कदम कदम पर संघर्ष करना पडता है विवाह के समय दहेज देना या पुरुष वर्ग द्‌वारा दहेज लेना यह आम बात हो गई है । नारी का कोई मुल्य नहीं वह पशु तुल्य है । श्रीमती ज्योती शर्मा ने कहा है “ नारी का क्या मूल्य न कोई क्या वह पशु से ही हीन हो लडके वाले लेन देन में कितना अकड दिखाते है । नीलामी जैसी बोली लगाकर नेगों की लगवाते है ।यह पुनीत संबंध नहीं है निन्दनीय व्यवहार है ,इस दानव का ।” [21] नारी को शक्तिहीन बनाकर उसे कमजोर बनाया जाता है । शारीरिक ,बौध्दिक मानसिक ,लैंगिक शोषण किया जाता है ।संस्कृति के हजारों वर्षो का इतिहास का अवलोकन करने पर पता चलता है कि नारी विभिन्न कर्मकाण्डों से जकडी हुई है । बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक यातनाएॅ उसे सहनी पड़ती है ।

5.3.3 नारी की घुटन टूटन :-

भारतीय नारी की सबसे बडी विडंबना यह है कि राजनीतिक ,आर्थिक सामाजिक एवं व्यक्तिगत अधिकारों की प्राप्ति ने भी सदियों के संस्कारों से बंधी नारी की मानसिकता को परिवर्तित नहीं किया गया है । वह आज भी समाज व्यवस्था के कुचक्र से बाज आकर अपनी व्यथा - पीडा को अपने जीवन का भोग मानकर घुट घुटकर जीवन व्यतीत करती है । पुरुष द्‌वारा स्त्री को अपनी बात मानने के लिए विवश होना पडता है।

आज स्त्रियों का शोषण दो तरफा होता है एक परिवार से दूसरा समाज से उसे शिक्षित बनने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है । सदियों से

स्त्री दमनका अनवरत सिलसिला चला आ रहा है। इस सिलसिले के मुख्य कारण पुरुष प्रधान संस्कृति हिंदी साहित्य में उषाप्रियवंदा तथा कृष्णा सोबतीने 'महाभोज' 'पचपन खंबे लाल दीवारें', 'रूकेगी नहीं राधा' तथा 'जिंदगीनामा' से आरंभ की है। आगे चलकर महिला लेखिकाओं ने अपनी जमीन बनाने की कोशिश की। हमारे समाज में स्त्रियों के साथ दोहरी राजनीति खेलीगई है। उसे हमेशा तुच्छ ही माना गया है। 'एक ओर उसे देवी' , मॉ जननी के रुप में उसकी पुजा की जाती है, तो दुसरी ओर वह अन्याय अत्याचार की शिकार बनी हुई है।

महिला लेखन का अर्थ परिवार के सीमित दायरे में संबंधों और मूल्यों के बदलाव को व्यक्त करनेवाला लेखन माना गया है। स्वयं महिला लेखिकाओं ने खास तैार महिला लेखन विभाजन को अस्वीकार किया है। आज महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, इस स्थिति को हम स्वीकार करते है। जाहिर है कि इस सदी की नारी स्वतंत्रता के बाद खुलकर समाज में अपना अस्तित्व निर्माण करना चाहती है। पुरुषी वर्चस्ववादी समाज में सुधार के रुप में अनेक नये तरीके से शोषण किया जा रहा है। पुरुषों का हर तरह से विरोध करने की प्रवृत्ति ने कथा चरित्रों को अपने मुक्ति अभियान से भटका दिया है। राजीसेठी ने एक जगह लिखा है कि '' किसी स्त्री पात्र का अंधाधुंद समर्थन करके श्रेष्ठ करके श्रेष्ठ रचना नहीं लिखी जा सकती हमारे देश में '' स्त्री होना अनेक दुर्लभ गुणों का स्त्रोत होता है। संवेदन शीलता को मलता करुणा , प्रेम ,ममता आदि का वह आगार है। स्त्री हृदय शाश्वत मॉ का हृदय है। इसीलिए हिंदूओं ने मातृरुपा देवियों की कल्पना की है -- कोई भी पुरुष जब तक नारी के गुणों से समृध्द नहीं होता महान नही बन सकता। वह महा प्रतापी हो सकता है महान योध्दा महापंडित मगर महात्मा तो तभी होगा जब नारीत्व से युक्त हो। '' [22]

आज की नारी किसी भी अर्थ में मुक्त नहीं है । वह मुक्ति के लिए छटपटा रही है । स्त्री केवल भोग्या वस्तु नहीं वह परिवार की एक उतनी ही अपरिहार्य और समर्थ अंग है जितना पुरुष होता है । नारी अपने स्थिति से उबारने के लिए एडी चोटि का जोर लगा रही है । वह दासता की अनेक बंधनों में बंधी पडी है। इस संदर्भ में डॉ .शेख अफरोज फातेमा का कथन है कि '' बिना उसके मुक्त हुए मनुष्यता की मुक्तता नहीं हो सकती लेकिन नारी मुक्ति का अर्थ क्या है ? क्या पुरुष से मुक्ति ? क्या परंपरागत मूल्यों से मुक्ति ? क्या परिवार से मुक्ति ? यौन शुचिता से मुक्ति ? जो पुरुष चिंतक स्त्री की मुक्ति की बकालत उसके देह शोषण की नियत कर रहे है उससे तो संवेदनशील लोग बेहतर है जो स्त्री को गिध्दों का खादय बनने से बचाने के लिए उसे घर के भीतर रखना चाहते है । '' [23]

पुराणों में स्त्रियों के अधिकार हनन के लिए बडे बडे श्लोको के जरिए मोहर लगा दी है कि वह आत्मनिर्भर नहीं है ।

'' पिता रक्षति कौमारे,भर्ता रक्षति यौवने।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्र ः न स्त्री स्वतंत्र महर्ति । ।

नासिरा शर्मा की 'बंद दरवाजा' ,'पत्थरगली' 'संगसार' कृष्णा अग्निहोत्री की 'विरासत', 'यही बनारशी' 'रंगथा नपुंसक', 'मैं घर गई' उषा प्रियवंदा की 'वापसी' 'खुले दरवाजे' दीप्ति खंडेल वाल की 'वह तीसरा धूप', 'अहसास' आदि कहानियाँ नारी मन की संग्रहित कहानियॉ है । बंगाल की लेखिका तसलीमा नसरीन को अपने ही देश से निकाला गया । आज वह अपने मातृभूमि से परे है । अपने परिचितों से दूर है । उसे अपने देश से निकाला दिया गया । नासिरा शर्मा की पहलीरात कहानी स्त्री पर होनेवाले अत्याचार पर केद्रित है । ईरान की क्रांति में लाशों का ठेर लगता है । गुस्साले इन लाशों को धोते धोते थक जाते है । जुम्मे के

रात गुस्साले लाश धोने का काम करते थे। तभी पॉच लडकियों की लाश आ जाती है। अहमद रात में इन मृत लडकियों को अपने वासना का शिकार बनता है। इस कहानी के माध्यम से मनुष्य की घिनैानी वृत्ति का परिचय दिया है। डॉ प्रतिभा राय की कहानी 'छाया चित्र' कहानी इसमें नारी विवशता को चित्रित करती है। नमिता सुजय के जाने बाद एक मुर्ति बनकर रह गई है। " एक निर्जीव छाया चित्र क्या कभी नमिता की मदद कर सकती है? वह भी सुजय के जाने के चालीस वर्ष बाद ! सुजय के संक्षिप्त सान्निध्य की स्मृति नमिता के अंदर निश्चिल रुप से अम्लान होगी क्योंकि वही उसका अतंरंग सान्निध्य था। "[24]

आज नारी सामाजिक पारिवारिक धरातल पर अनेक समस्या ओं से त्रस्त है। कई नारियॉ अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत् है। डॉ .जालिदंर इंगळे ने लिखा है कि " नारी को शक्ति हीन समझकर शारीरिक मानसिक बौध्दिक लैंगिक शोषण करता आया है। पंरतु अब नारी में संघर्ष भावना जागृत होकर अन्याय के विरुध्द प्रतिरोध करने में सक्षम हुई है।"[25] इक्कीसवी सदी की महिला कहानीकारो नारी का घुटन-टूटन चित्रित कर उसे मुक्ति दिलाने का प्रयास किया है।

5.3.4 नारी की जिजीविषा :-

अनेक समस्याओं को झेलते हुए भी नारी में जीने की इच्छा अत्यंत प्रबल है। वह अपने जीवन में आनेवाले हर संकंटो से जुझती है, संघर्ष करती है मुकाबला करती है। नारी अपने संघर्ष जीवन में आशावाद रखती है। उसके जीवन में कोई बडे आरमान नहीं होते। अनेक प्रकार की उपेक्षाओं से त्रस्त वह संपूर्ण स्त्रीत्व के साथ जीने को अंगीकार हो जाती है। वास्तव में भारतीय परिवेश में नारी को अनेक यातनाएँ सहनी पड़ी हर जगह यातना एक सी है और उसके दर्द का एहसास भी एक-

सा है। स्त्री केवल काम वासना या बंधन हीन प्रकृति की कामना नहीं रखती बल्कि शरीर के साथ साथ संवेदना के स्तर पर भी उसे प्यार दे।

नारी अपने जीवन में प्रत्येक मोड़ पर आशावाद निर्माण कर अपने जीवन को व्यतीत करती है। उसके जीवन के बडे अरमान नहीं होते वह छोटे से सुख से अपना जीवन व्यापन करती है। नासिरा शर्मा की 'बावली ' कहानी जहॉ सुहेला को पानी से भरी बावली के रुप में प्रस्तुत किया गया है। उसका विवाह पूर्व जीवन अभावों और उपेक्षाओं के बीच गुजरा है। उसकी खालिद के साथ शादी हो जाने के बाद ही उसे अपने घर और लोगों की आत्मीयता प्राप्त हो सकी। वह पीढी लिखी थी इसलिए अध्यापक की नौकरी करती है। इसलिए वह अपने जीवन संघर्ष में आशावाद रखती हुई जीवनयापन करती है। " शादी के बाद पहली बार जिंदगी में अपने पैरों के नीचे मैंने सख्त मजबूत जमीन पायी थी। अपने घर अपने लोगों का सुख पहली बार मिला था प्यार और विश्वास ने मुझे जीना सिखाया था। मगर आज सात साल फिर मेरे पैरों के नीचे जमीन गायब हो रही थी। मैं फिर हवा में लटकने वाली हूॅं। सुहेला मेरी सौत बनकर क्या जुल्म ठायेगी मुझ पर खालिद का बर्ताव कैसा होगा? क्या मैं खालिद को बॅटने देख पाऊॅंगी। "[26]

मालती जोशी की कहानियाँ 'पराजय ', 'मध्यांतर' की टूटने से जुडने तक 'कलक अस्ताचल' कहानियाँ नारी आशावाद को चित्रित करती है कृष्णा सोबती की 'बादलों के घेरे' शाशिप्रभा शास्त्री दो कहानियों के बीच क्रांति त्रिवेदी 'दीप्त प्रश्न' तमतमाये चेहरे' के अक्स अनामिका की 'प्रतिनायक' कहानियों की नारी की जिजीविषा को प्रस्तुत करती है।

नारी अपनी जीवन में अनेक यातनाऍ सहती है लेकिन उसके मन में जिजीविषा कायम रखती है। वह अपने जीवन में निराशाओं के बावजुद भी

सुखमय जीवन की कामना करती है । हर मुकाबल कर अपनी आशा -आकांक्षाओं को हर पल नई उम्मीद पल्लवित करती है । हमेशा नारी को अपना मन मारकर जीना पड़ता है । जीवन में अनेक संकंटो को सामना करके उनकी सहनशीलता की प्रवृत्ति बलवती होती है । 'पतझड का फूल ' नारी की समस्या को उठाया है । विधवा अनाहिती एक ऑफिस मेें नौकरी करत हुए अपने परिवार अैार बहन की शिक्षा का बोझ उठाती है । छोटी बहन कतायुन एक दिन अचानक शादीकर पति के साथ घर में आती है तब अनाहिता दंग सी रहती है । कतायुन के विवाह के बाद उनके घरक वातावरण शांतिपूर्ण नहीं रहता । कुछ दिन बाद फिरोद चाचा अनाहिता को देखने के लिए आते है लेकिन वह उनके साथ शादी करने से इन्कार करते हुए अकेली जीवन गुजारने का निर्णय लेती है । अनाहित विधवा होते हुए भी मन में सुख की कामना करती हुए जीवनयापन करना चाहती है ।

5.3.5 नारी की सहन शीलता :-

समाज तथा परिवार में नारी को पुरुषों की तुलना में कम महत्व दिया जाता है । आज के युग में नारी समाज तथा पुरुष वर्ग से पीड़ित है । भारतीय स्त्री को अनेक यातनाऍ सहती पडी है । नारी मन की भाव स्थितियॉ वैश्विक धरातल पर एकही होती है । नारी संस्कृति धूरी की है । परिवार का आधार है । पति के प्रति निष्ठावान रहना उसका धर्म है । पुरुष के द्‌वारा पीड़ित होने के कारण वह व्यक्तित्व हीन रुढ़िवादी और अबला है । उसे अपने जीवन को अनेक संकट तथा पीड़ा का सामना करना पड़ता है। वह अपने मन को मारती हुई पत्नी के रुप में ज्यादा सफल होने का प्रयास करती है । जीवन में अनेक संकटों का सामना कर वह सहन शीलता की प्रवृत्ति बलवती होती है ।

नारी का जीवन केवल दुख सहने के लिए ही होता है । दुःख भोग कर भी अपना विकास चाहता है । बीसवी शती में महिलाओं की स्थिति में सुधार आया । स्वतंत्रता के बाद समाज में अपना अस्तित्व जमाने की कोशिश की । 'कालासुरज ' कहानी में स्त्री की त्रासदी प्रस्तुत हुई है । 'तीसरा मोर्चा ' कहानी कश्मीर के आतंकवाद माहौल का वर्णन करती है । आतकी माहौल से राहूल को अपने परिवार को छोडना पडा है रास्ते में उसे एक औरत बेहोश में पडी हुई दिखाई देती है । राहुल उसे मदद करने की कोशिश करता है लेकिन वह औरत मदद लेने के लिए नकारती हुई कहती है '' मै एक औरत हूॅ और औरत की अस्मन हिंदू मुसलमान नहीं होती जो -- । ''[27] पति की मौत होने पर भी वह औरत कश्मीर में शांतता चाहती है। अत्याचार और अन्याय को सहते हुए भी सहनशीलता की प्रवृत्ति उसमें बलवती होती हुई दिखाई देती है । 'अग्नि परिक्षा' की कम्मोगाँव में अन्याय अत्याचार का शिकार बनती है । 'कम्मो और नर्बदा खेती पर गुजारा करते है । कुछ लोग उनकी खेती हडपने का प्रयास करते है । कम्मो को अपवित्र समझकर उसे नदी की धार में उतारने को कहता है । कम्मो अपने पति रक्षा तथा खेती को बचाने के लिए तमाशा देखने आये लोगों से कहती है ,'' जो मैंने उस पापी का नाम बता दिया जिसने मेरे साथ बलात्कार किया है तो सरपंच उसे क्या सजा देगे । ''[28] कम्मो गॉव के लोगों के अत्याचार सहती हुई भी अपनी जमीन बचा लेती है । सहनशीलता का अंत हो जाने पर वह किस प्रकार संघर्ष करती है यह कहानी में चित्रित हुआ है ।

पत्नी का पति के साथ रहना भारतीय संस्कृति में उचित माना गया है । इसलिए उनकी मर्जी के खिलाफ पत्नी को पति के साथ रहने के लिए विवश होना पडता है । नारी का आचरण पुरुषों के मर्जीपर निर्भर है । पति पत्नी में परस्पर विश्वास होना अनिवार्य है । नारी को इतने बंधन होते है कि वह अपने आप को बंधन से बाहर लाने में असमर्थ बन जाती है । चरित्र मनुष्य की पूॅजी है । चरित्र

स्त्री और मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण है । स्त्री के चरित्र पर समाज की नजर हमेशा बनी रहती है । नारी का सारा जीवन पति के लिए समर्पित होता है । भारतीय समाज में पति पत्नी एक रथ के दो पहिये है ,पंरतु पत्नी रुपी नारी का एक पहिया दल दल में फॅसा है । निष्ठावान पतिव्रता के चक्कर में नारी आज भी पति की क्रुरता ,यातना आक्रोश शोषण सहती रहती है । मालती जोशी की मानिनी कहानी की नायिका पति की अनौरस संतान को अपनी संतान के रुप में स्वीकार करती है । और मातृत्व का उदारता एक उदाहरण प्रस्तुत करती है । शशि प्रभा शास्त्री ने अपनी कहानी में नारी की सहनशीलता तथा उदात रुप को दर्शाया है । कहानी का वीर सिंह बी.एस्सी पास होकर बेकार है । वह कही काम नहीं करता फिर भी मॉ दिन रात मेहनत कर उसे पोसती है । वीर सिंह को मॉ की कमाई खाते हुए शर्म नहीं आती । वास्तव में बेटे को माँ का सहारा बनना चाहिए पर यहॉ माँ अपने बेटे को सहारा देती है । उसका त्याग ,समर्पण ,सहनशीलता निश्चित ही प्रेरणादायी है । मेहरुन्निसा परवेज की 'आकाशनील' कहानी की तरु विशाल से प्रेम करती है । वह उसके बच्चे की मॉ बननेवाली है । पर विशाल के विवाहित होने के कारण वह अपने बच्चे को विशाल का नाम नहीं दे पाती । ऐसी स्थिति में तरु विशाल को भूलकर अपने बच्चे को अपने पूर्व पति का नाम देती है । वह अपना निश्चय बताते हुए विशाल से कहती है -" मैं नहीं चाहती कोई मुझे या मेरे होनेवाले बच्चे को नाजायज कहे । वह तुम्हारा है यह बात मैं जानती हूॅ और तुम मगर दुनिया को यह मत जानने दो मेरे बच्चे के आगे पति का नाम ही रहने दे "[29] बच्चे के भविष्य के लिए तरु बहुत कुछ सहती है। शिवानी की कहानी 'कैजा' कहानी भी इसी संवेदन शीलता तथा नारी सहनशीलता को प्रस्तुत करती है । कहानी की नायिका नंदी से उसी गॉव का सुरेश भटट् प्रेम करता है । नंदी के लिए वह पागल हुआ था पर नंदी के पिताजी नंदी के साथ उसका विवाह करने के लिए तैयार नहीं है इसलिए वह उसे

बाहर भेजते है और डॉक्टर बनाते है । नंदी पागल बनी लेकिन इधर गॉव में उसके लिए पागल बना सुरेश ने अनेक नारियों को भोगा । पगली को उससे बेटा हो जाता है । नंदी ने भी विवाह नहीं किया था उसे पगली को सुरेश से बेटा होने की खबर लगती है । तो वह बच्चे को गले लगाती है । वह उसकी मॉ बन जाती है । इतनी ही नहीं बेटे को सुरेश के पास अर्थात सुरेश के पास ले जाकर उससे मिलवाती है । तब सुरेश उसे पुछता है पर उसे उसके पिता से मिलाकर भी क्या तुम उसका पिता दे पाओगी नंदी । ''[30] तब नंदी अपने प्रेम का उल्लेख करती हुई कहती है '' वही करने आयी हूँ मैं तुमसे विवाह कर तुम्हें अपने साथ ले जाऊॅगी । ''[31] सुरेश के लिए वह अविवाहित रही सुरेश के जाने के बाद वह अविवाहित बन कर रही । उसके बेटे को अपना बेटा मानकर उसका लालन पालन किया । उसके लिए पागल बना सुरेश के लिए उसने भी अपना पुरा जीवन समर्पित करने हुए त्याग समर्पण का एक अलग उदाहरण प्रस्तुत किया ।

निष्कर्ष रुप में कहा जाता है कि परिवर्तन के साथ कितना बदलाव आया पर नारी में सहनशीलता समर्पण ममता आदि भाव आज भी दिखाई देते है । साहित्यकारोंने नारी के माध्यम से इन मूल्यों को उजागर किया है ।

5.3.6 :- स्वाभिमानी एवं अह्मवादिया नारी :-

नारी अपने युगीन समस्याओं एवं उलझनों तथा अन्याय अत्याचार से कसकर स्वाभिमानी एवं अह्मवादिया बनी से सहकर भी परिस्थिति से हार नहीं मानती । वह विषम परिस्थिति का डटकर सामना करती है । वह अपने जीवन से हताश होकर आत्महत्या नहीं करती बल्कि परिस्थिति का मुकाबला करती है । अपने जीवन में हताश होकर आत्महत्या करने वाली कमजोर नारी आज स्वाभिमान से जीवन जीती है । आठवें दशक में चित्रित नारी दूसरों के पैरों की बेडी बनकर जीना

नहीं चाहती वह स्वंय अपने पैरों पर खड़ा होकर अपना जीवन व्यतीत करती है। जीने के लिए वह हर रास्ते को स्वीकार करती है । बिकट परिस्थिति में वह अपने जीवन का फैसला करती है । संकटों से बिचलीत न होकर रास्ता खोजती है ।वह समाज में प्रचलित अंध विश्वासों का विरोध करती है ।नारी अपनी इज्जत को अपने जान से भी अधिक कीमती समझती है । नारी सभी प्रलोभनों को ठूकराकर अपने जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है । समझदारी से परिस्थिति में परिवर्तन नहीं आया तो वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण की क्षमता रखती है । आठवें दशक की नारी समकालीन समस्याओं एवं चुनैातियों से संघर्षरत् है ।

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी 'मंगली ' की नायिका नमिता है उसका कसूर सिर्फ इतना था कि उसकी कच्ची उम्र में शादी हो गई । उसके बाद उसके पति की मौत हो जाती है । पति मरने के पूर्व नमिता ने एक लड़की को जन्म दिया । नमिता ने दूसरी शादी कॅप्टन खन्ना से की । नमिता की लडकी बहुत सुदंर थी। पढाई लिखाई में भी वह प्रज्ञावान थी । फिर भी उसकी शादी कही तय नहीं हो रही थी । कुछ समय हैदराबाद का परिवार उसे पसंद करना है । परंतु माता पिता की अनेक शर्ते थी लेकिन उसकी मॉ नमिता सभी शर्तोकों अस्विकार करती है अपने स्वाभिमान को जागृत करती है ।

मैत्रेयी पुष्पा 'चिन्हार', 'ललमनियॉ', 'पियरी का सपना' आदि कहानियों के द्‌वारा नारी की स्वाभिमान वृत्ति को प्रस्तुत किया है। 'गोम हॅसती है' कहानियों के केंद्र में नारी अपने सुख दुःखों यंत्रणाओं और यातनाओं में तपकर अपनी स्वतंत्र पहचान मॉगती है । उसका अपने प्रति ईमानादार होना ही बोल्ड होना है ।'बिछुडे हुए 'कहानी की नायिका चंदा का पति को छोडकर चला गया है । वह साधु बन गया । बीस वर्षो में काफी परिावर्तन हुआ बेटी विवाह योग्य हो गई । साधु बने सुग्रीव का अपने घर के प्रति आकर्षण बढने लगा । चंदा उसे पहचानने में इन्कार

कर देती है । आपने आप से सॅभालती हुई बेटी से कहती है " मंगना बेटी तु यहॉ घर में तो कितना काम फैला है । इस गॉव के आदमी तो बावरे ठहरे जो भी साधु आता है उसे ही तेरा पिता कहते है ।"[30] चंदा का अंतर्मन इस बात को स्वीकरी नहीं करता जो पिता संतान को पालने की जिम्मेदारी नहीं उठा सकता उसे कन्यादान करने का अधिकर नहीं है । पिता द्वारा बेटी का पालन पोषण न होने के कारण चंदा अपने पति का अस्तित्व स्वीकार नहीं करती क्योंकि वह स्वाभिमानी स्त्री है ।

नासिरा शर्मा की 'दादगाह' कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें पति पत्नी के शिकायते दर्ज कर तलाक की मॉग करते है । रुम नं 18 कमरा नं 45 कमरा नं 59 सभी पति अपनी से पत्नी तलाक की मॉग करते है ।तेहरान कोर्ट में अकबर तेहरांची दस साल से जज के रुप में कार्यरत है । खुन खराबा ,कत्ल चोरी से बढ़कर वह तलाक जैसे मुकदमों को देखते देखते उन्हे ऐसा लग रहा है कि वह इसी बिमारी का शिकार न हो जाय । उन्हें ख्याज से इस दौर की लडकियॉ बादाम की तरह है । अकबर तेहरांची ने सोचा ऐसी संस्था खाली जाए जो शादी से पहले दुल्हा दुल्हन को ठोंक बजाकर नाप तौल कर यह बता दे कि हनीमुन के बाद घर की चाहरदिवारी में उनकी कब तक पटेगी कौन से कारण होंगे जो उन्हे एक दुसरे को सहने को ना काम करेंगे । नासिरा शर्मा ने लीला के मुख से अपने नये विचार प्रस्तुत किये है । " शादी ब्याह यह सामाजिक बंधन दर असल एक दूसरे का शील भंग एक सभ्य तरीका हो गया है । जानवरों से ईसान का अलग करने की एक बोगस बेकार कोशिश। "[31] नासिरा शर्मा की दूसरी कहानी 'पत्थरगली ' नारी की स्वाभिमान वृत्ति को उजागर करती है ।कहानी की नायिका फरीदा अपने परिवार से संघर्ष करती है । महाविद्यालय में फरीदा कौन सा विषय ले ले यह भी भाई द्वारा तय किया जाता है ।वह कहनी है कि " मैं उस लड़की में ढलना चाहती हूॅ जो अपना रास्ता किसी बेकार सहारे से बनाये ।"[32] यहॉ फरीदा पढ़ाई के लिए परिवार से संघर्ष कर

स्वाभिमान से जीना चाहती है । मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'तुजदारी' विधवा पत्नी की कहानी है । वह अपने बेटे को स्वाभिमान से जीना का संदेश देती है ।

निष्कर्ष रुप में कहा जाता है कि आठवें दशक की नारी अपने स्वाभिमान के लिए संघर्षरत है । वह संघर्ष करते हुए अपने पैरों पर खडा होना चाहती है । वह आत्महत्या नहीं करती अतः वह स्वाभिमान जीवन व्यतित करती है। आठवें दशक की कहानिकारों ने अपने नारी को कहीं रोते हुए नहीं दिखाकर अपनी जीवन की तमाम विषय परिस्थितियों से संघर्षरत दिखाकर नारी के स्वाभिमानी तथा अहम्वादिनी रुपों की प्रतिष्ठा की है ।

5.3.7 परम्परा से विद्रोह करने वाली नारी :-

आज के आधुनिक युग में नारी घर के दीवारी को लॉघ कर समाज के हर कार्य क्षेत्र में अग्रेसर है । वह परम्परा से विद्रोह कर नयी सामाजिक मान्यताएँ प्रस्तापित करती रही है वह अपने पैरों पर खडी होकर स्वाभिमान से जीवन बिताना चाहती है । दूसरों पर बोझ बनकर वह जीना नहीं चाहती । आज की नारी परम्परागत नारी की तरह परित्यक्त हो जाने पर भी वह 'अहं' छोडकर उसके पास नहीं जाती बल्कि अहं को बनाये रखने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता के लिए नैाकरी करती है । विजय सिंह ठाकुरजी का कथन नारी के परिवर्तन दृष्टिकोण के संबंध में विशेष उल्लेखणिय है " आज नारी के कदम भविष्य की ओर ओढ रहे है । जिसमें वह एक नई व्यवस्था का निर्माण एवं स्त्री पुरुषों की साझा मानवीय संस्कृति चाहती है ।नारी के नयी भूमिका के कारण वह न सम्बन्धी परम्परांगत मान्यताओं धारणाओं और नैतिकता के नियमों को नकारने लगी है । यौन भावना कामसंबंध दाम्पत्य जीवन आदि के सम्बन्ध में उसके दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है ।"[32] आठवें दशक की कहाानियों की नायिका अहमवादिनी है । मालती जोशी 'कोहरे के पार' इस

कहानी में नारी की उदारता का चित्रण किया है । कहानी की शीला अपनी बहन की मृत्यु के पश्चात उसकी बच्ची को अपनी बच्ची मान लेती है । बहन की बेटी स्वाती की मॉ बनते समय नीजा जी के साथ विवाह करने का विचार भी उसका नहीं है । बेटी की जिम्मेदारी से मुक्त करते हुए जीजाजी से वह कहती है '' आप निश्चित होकर स्वाती को मुझे सौप दे उसके बाद आप स्वतंत्र है । आपकी पत्नी बनने का सौभाग्य जिसे प्राप्त होगा वह मुझे दीदी की तरह प्रिय होगी ।''[35] शादी न करके बच्ची को गोद लेना यह एक प्रकार से परम्परा से विद्रोह करनेवाली बात है । नासिरा शर्मा की 'दीमक ' कहानी की नायिका एक ग्रामीण युवती है । विवाह हो जाने पर वह पति के साथ शहर में आती है । अपने देश से बना 'स्वदेशी ' सामान खरीदना चाहती है । जडे कहानी की गुलशन का परिवार युगांडा में राजनीति की बलि चढ जाता है । उसे अपनी जान बचाकर ब्रिटन में शरण लेनी पड़ती है। परिस्थिति से परास्त होने के बजाय गुलशन स्वयंम् निर्भर बनती है । नासिरा मोर्चा की पीड़ित स्त्री राहुल और रहेमान से दी गई सहायता अस्वीकार करती हुई कहती है '' औरत हूॅ इसलिए जुल्म के खिलाफ मुझे जिन्दा रहना है --। ''[36] कृष्णा अग्निहोत्री के 'विरासत ' 'नपुंसक', 'यही बनारसी रंग था' कहानियॉ नारी की परम्परावादी वृत्ति को विरोध करती है सिम्मी हर्षिता की कहानियों में एक ओर सीमित अनुभवों की दहलीज लॉघने की कोशिश है दूसरी ओर पीढ़ियों के अंतराल पर लिखने समय कुछ नया कहने की ईमानदारी भी है ।

नारी आज अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करना चाहती है । परम्परा से विद्राह कर वह परिवर्तन को स्वीकार करती हूॅ । स्वतंत्रता के बाद नारी मानसिकता में युगानुरुप आए परिवर्तन को आठवें दशक की कहानीकारों ने अपनी कहानियों में चित्रित करने का प्रयास किया है ।नासिरा शर्मा की कहानी 'गॅुगा आसमान 'में पुलिसकर्मी कुछ औरतो पर अत्याचार करता है । अपने पति की ऐसी हरकतों से

मेहर अंगीज परेशान है । उसका कहना था कि यह गुनाह है । उसने अपने पति को सबक सिखाने का तरीका ढूॅढ लिया तीनों औंरतो को उसने समझाया और अपने पति के कैद से उन्हें छुडवाया था कि हारी वह योजना पुरी करके घर में आयी । यहॉ मेहरअंगीज अपने पति से विद्रोह कर उन स्त्रियों की नई दुनिया बसाने का काम करती है ।

नासिरा शर्मा की 'गलीघूम गई' में प्रेम और जीवन यथार्थ में यथार्थ को चुनने की बात कही गयी है । कहानी का मुख्य पात्र मिनी है । वह रोहित से प्रेम करती है , पंरतु परिस्थिति वश उसका विवाह दूसरे जगह तय हो जाता है तब रोहित गायब हो जाता है । कुंठित मिनी उच्च शिक्षा ग्रहण कर आत्म निर्भर बनती है किंतु वह विवाह करने के लिए तैयार नहीं है । वह यथार्थ और जिंदगी के सच का सामना करती है । 'माणिका मोहिनी' ने अपने कहानियों में खास तौर पर तनाव और टूटन पर लिखा है । 'अभी तलाश जारी है' नारी चरित्र यौन अतृप्ति के शिकार है । लेकिन सेक्स समस्याओं को समानियत या कोमलता का पुर देकर नहीं देखा गया है ।"वह विषय से सीधे टकराती है और इस बात की रत्ती भर भी परवाह नहीं करती कि टकराहट के परिणाम स्वरुप कितनी धुल उडेगा ।" [37] अतः आठवें दशक की नारी अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए परम्परा का विरोध कर स्वयंम् अपने पैरों पर खडी होना चाहती है । उसका संघर्ष शुरु है जिससे वह सामाजिक नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा कर आत्मनिर्भर बनना चाहती है ।

5.3.8 मानवता वादी नारी :-

स्वातंत्रोत्तर भारत के बदलते हुए परिवेश ने सामाजिक व्यवस्था में बदलाव आया जिससे समाज पूरी तरह प्रभावित हुआ अर्थप्रधान समाज व्यवस्था में अर्थ को महत्ता प्राप्त हुई सामाजिक ही नहीं पारिवारिक सम्बन्धों मानवीय सबंन्धो में

परिवर्तन हुआ है । स्त्री आत्मनिर्भर एवं विद्रोह में बदल गई । नारी अपने स्वतंत्र अस्त्तित्व के लिए प्रयास करती रही । पुरुष प्रधान समाज में भी वह अपना धर्म जानती है । भौतिक प्रगति के साथ मानव सभ्य जरुर हुआ पर संस्कृति से हटता गया । भारतीय जीवन में ही नहीं बल्कि मानव जीवन ही एक संक्रमण से जा रहा है । अमानवीयता बेरोजगारी , रिश्वतखोरी आदि से मुल्यों का -हास हुआ । घटित प्रसंग उदाहरण से देखकर लगता है कि मानवीयता अभी बाकी है । आठवे दशक के हिंन्दी कहानीकारों ने अपनी कहानियों में मानवीयता के दर्शन करवाये है । त्याग समर्पण करुणा सहानुभूति दिखाकर जीवन मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया गया है ।

मेहरुन्निसा परवेज की कहानी 'आकाशनील' कहानी की तरु विशाल से प्रेम करती है । वह उसके बच्चे की माँ बननेवाली है । 'तरु' विशाल को भूलकर अपने पूर्व पति का नाम देती है । वह अपना निश्चय बताते हुए कहती है '' मैं नहीं चाहती कि मेरे बच्चा को नाजायज कहे वह तुम्हारा है यह तुम जानते हो । मेरे बच्चे के आगे उसके पिता का नाम रहने दे । अपने बच्चे के भविष्य के लिए तरु का यह बडप्पन महत्व पूर्ण है । मालती जोशी ने 'कोहरे के पार' कहानी में मानवीयता का उदाहरण प्रस्तुत किया है । शशि प्रभाशास्त्री की 'अगरबस्ती' कहानी नारी के उदाप्त रुप को दर्शाती है । मेहरुन्निसा की 'शिनाख्त' कहानी पति पक्का शराबी और विवेकहीन पशु है । वह प्रत्यक्ष अपने बेटी को वासना का शिकार बनाना चाहता है । जब उसकी मौत हो जाती है, तब पुलिस के पूछने पर उनकी शिनाख्त करने से इन्कार करती है । कुछ दिनों के बाद पति की गुदडी देखकर वह फूटकर रोने लगती है । रोते हुए अपनी लडकी से कहती है '' बत्ती मैंने उसे पहचान लिया देख देख यह पडी है । लाश ।''[38] वासनामयी शराबी ,निष्ठुर पति अपने ही बेटी को वासना का शिकार बनानेवाला पति गलत ही क्यों न हो पत्नी उसे अपनत्व देती है ।

'मुंआवजा' कहानी की नायिका 'गोदावरी ' श्रावण बसोड की पत्नी है । निम्न जाति की होकर भी गोदावरी अपने पति से बहुत प्रेम करती है । गोदावरी में केवल समर्पण की भावना है । पति पत्नी दोनों मिलकर उपजीविका चलाते थे । परवारी का लडका शराब में धुन होकर मुक्त में पत्तल दोने उठा ले जाता है और ऊपर से पुलिस थाने में रिपोर्ट भी करता है । अतः दोनो अपना गॉव छोडकर मामा के गॉव रहने के लिए चले जाते हैं । वहॉ भी उन्हे रहने नहीं देने । वहॉ से नर्मदा मैय्या के किनारे जाकर दोनों रहते है । ऐसी कठिन परिस्थिति में भी पत्नी अपने पति का साथ देती है । नर्मदा की बाढ़ ने जब कहर मचाया तो उसकी चपेट मे गोदावरी का पति श्रावण आ जाता है । बाढ़ में बहता हुआ देखकर गोदावरी चिल्लाती हुई कहती है '' सुनते हो मैं भी आ रही हूॅ ।''[39] यहॉ गोदावरी आदर्श नारी के रुप में चित्रित हुई है । कहानी पतिव्रता नारी के नए मानदण्ड स्थापित कर मानवीय संवेदना का स्वर उजागर करती है । मालती जोशी की 'मानिनी ' कहानी की नायिका पति की अनौरस संतान को अपनी संतान के रुप में स्वीकार करती है । यहॉ मातृत्व की उदारता का उदाहरण कहानी में प्रस्तुत हुआ है । वह नहीं चाहती कि मेरे पति के संतान को कोई नाजायज बालक कहे दुनिया उसे इस नाम पर ठोकरे मारे ।

नारी अनेक उदात्त मूल्यों से प्रेरित होती है । यहॉ आठवें दशक की नारी में हमे मानवीय संवेदना के भाव दिखाई देते है । नारी जैसी मानवीय संवेदना किसी ओर में नहीं पायी जाती । वह मानमर्यादाओं का संस्कृति के अनुसार निर्वाह करती है । आठवे दशक की कहानियों में चित्रित नारियॉ अनेक उदात्त मूल्यों से प्रेरित है । वह साक्षात वात्सल्य की मूर्ति है , सतीत्व की प्रतिमा है , सृष्टि की उत्पादक है और आदर्श संस्कृति की संवाहिका है । मानवता की साक्षात् मूर्ति है । नासिरा शर्मा ने नारी मन की उदारता का चित्रण 'कनीज बच्चा' कहानी में किया है । नूर मोहम्मद ने पत्नी अम्मी बेगम के रहते जैनब से विवाह कर लिया । अम्मी बेगम में सौतिया डाह

पैदा हो गया । अम्मी बेगम के बेटे जब बडे हो गये और उनके पिता की मृत्यू हो गई तो अम्मी बेगम का बेटा अहमद जायदाद का आधा हिस्सा अपने सौतेले भाई को देना चाहता है ,पर उसकी मॉ इस प्रस्ताव को अस्वीकार करती है । उधर शब्बीर जायदाद के लिए कोर्ट में चला जाता है । श्ब्बीर की मॉ बेटे के हरकत से नाराज है। ननिहाल से प्राप्त जायदाद का आधा हिस्सा सौतेले बेटे के नाम पर शब्बीर के हाथों अहमद को दस्ताऐज पहुँचा देती है । इसी घटना से अम्मी बेगम की ऑखे खुल जाती है और संबंधो में आयी दरार खत्म हो जाती है । यहॉ आदर्श नारी , आदर्श पत्नी आदर्श मॉ को प्रस्तुत कर मानवीय संवेदना को कहानी उजागर करती है ।

5.3.9 राजनैतिक परिस्थिति से पीड़ित नारी :-

स्वातंत्रोत्तर भारत में राजनेता लोग अपने स्वार्थ प्राप्ति के लिए आम जनता का इस्तेमाल कर अपनी जीवन की सुविधा जुटाते है । राजनीति का भयावह विकृत चेहरा आज सामने आ रहा है । विशेषकर नारी को कठपुतली बनकर अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है । स्त्रियों पर अमानवीय अत्याचार जैसे व्यवहार किये जाते है । गलत राजनेताओं के हाथ अगर सत्ता चली गई तो उसका असर नारी की पर पडता है । तानाशाही का शिकार देश में अत्याचार सहने के लिए बाध्य होना पडता है । अन्याय अत्याचार को चुपचाप सहने के शिवाय कुछ भी नहीं किया जा सकता आठवे दशक के कहानिकारों ने राजनीति से पीडित नारियों को चित्रित किया है। नासिरा शर्मा की 'गूँगा आसमान ' एक ऐसी कहानी है जिसमें नारी अमानवीय अत्याचारों से त्रस्त है । निरकुंश तानाशाही में चुपचाप अत्याचार सहना ही उसकी नियति बन गई है । कहानी का पुलिस अफसर फरशीद औंरतो पर अत्याचार करता है । फरशीद सत्ता के विरोध में जानेवाले लोगों को जेल में डालकर उनकी पत्नियों से निकाह कर अपने घर में रखता है । औरत उस घर से भाग भी नहीं सकती बाहर पुलिस का पहरा था । पत्नी मेहरअंगीज उसे रोकना चाहती है , लेकिन उसकी

बदनामी की जाती है । एक दिन मेहरअंगीज चार औरतो को घर से बाहर निकालने में सफल होती है तब फरशीद अपने पत्नी पर औरतो का व्यापार करने का आरोप लगाकर गिरफतारी का वारंट भी निकालता है । अब उसके पास घुट घुटकर जीने के शिवाय कोई रास्ता नहीं है । डॉ. नंदनुरवाले का कथन है कि '' जहाँ लोकतंत्र है वहॉ की स्थिति की कल्पना ही नहीं की जा सकती उन्हें वहॉ गूँगी गुडिया बनकर जीना है । सारे अत्याचारों बलात्कारों को चुपचाप सहना ही उनकी नियति है । '' [40]

अपने देश को छोडने की विपता जब आती है , जब हमें विदेशी धरती में बेहत्तर जिंदगी जीने की उम्मीद दिखाई देती है । इसी कारण भारतीय बेहत्तर जिंदगी जीने के लिए आज विदेशों में अनेक स्थानों पर बसने लगे है । भारतीय संस्कृति में परिवार का एक विशिष्ट स्थान है । विदेश में रहते हुए यदी लंबा समय बीत जाए और वहॉ उन्हे संतति हो जाए वह अपनी मूल भाषा भले ही भूल जाए पर संस्कारों की जडे उनमे हमेशा बसी ही रहती है । जडे कहानी में यदि कोई घरसे वंचित हो जाए और वह विदेश की धरती पर तो उसके मन की स्थिति कितनी कष्ट प्रद बन जाती है यह कहानी चित्रित करती है । युगांडा में बसे कई भारतीय लोगों को अत्याचार का सामना करना पडा विदेश में गुलशन का जन्म हुआ वही उनकी परवरिश भी हुई । वह स्वयं को युगाडा वासी समझती है क्योंकि उनका जन्म वहॉ हुआ था । युगांडा मे चल रहे फसाद के कारण भी वह देश छोडने को तैयार नहीं है । नीग्रो आयाने परिस्थिति को समझाने के बाद वह एडबर्ग में आकर रहने लगी । एडबर्ग में उसकी मुलाखात सिद्धार्थ से होनी है । आपसी संपर्क बढ जाता है । तब वह सिद्धार्थ से कहती है '' मैं घर की चहारदीवारी में प्रेम का सपना देखती हूॅ । घर के बाहर बनाये गये संबंध में मेरा विश्वास नहीं है । --मैं स्कॉटिश नहीं हूॅ । युगांडा से निकाली गई भारतीय मुल की एक लडकी हूॅ जिसका घर परिवार सब कुछ पलभर में भस्म हो गया इसलिए घर मेरे लिए पहली जरूरत है और प्रेम दूसरी ।

''[41] वह सिद्धार्थ से शादी करने के लिए तैयार है पर सिद्धार्थ उसके साथ शादी करने के लिए तैयार नहीं होता। उसकी मानसिकता इस प्रकार हुई है '' गुलशन का अतीत उसे मानसिक रूप से जुड़ने नहीं देता था। एक भय निरंतर उसका पीछा करता था। अक्सर उसके भय के अंधेरे में एक प्रश्न जल उठता था कि आखिर उस देश ने जिसको उसने कभी देखा नहीं कभी उससे प्यार तो दूर उसके बारे में सोचा भी नहीं वह क्यों कर जिंदगी में एक महत्वा पुर्ण भूमिका निभा रहा है ? क्या इंसान की जड उसका पीछा कभी नहीं छोडती है ? क्या फैलाती शाखाओं का कोई महत्व नहीं है। ''[42] गुलशन ने भले ही भारत देखा नही है , वह भारतीय संस्कारों से जुडी हुई दिखाई देती है।

अतः राजनीतिक की भ्रष्ट प्रवृत्ति से आज की नारियॉ बेबस जिदगी जीने के लिए त्रस्त है आठवे दशक की कहानीकार शिवानी, सुर्यबाला, दीप्ति खंडेलवाल, सिम्मी हर्षिता, की 'धराशायी', कृष्णा अग्निहोत्री की 'विरासत', मंगुल भगत की 'स्थाह घर' कहानियॉ महत्वपुर्ण है।

5.3.10 पुरूष द्‌वारा प्रताड़ित नारी :-

सामान्यात : पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी को दुय्यम स्थान ही प्राप्त हुआ है। जिसके कारण वह अधिकतर पुरुष वर्ग के हाथ की कठपुतली बनकर ही रह गई है। वह असहाय होने के कारण अन्याय को चुपचाप सहती रहती है। उसे पुरुष के कैदखाने में तरह तरह की यातनाऍ सहनी पडती है। पुरूष प्रधान संस्कृति में नारी को गौण स्थान प्राप्त हुआ है। पिता ,पुत्र, पति के आश्रय में ही नारी अपना जीवन व्यतीत करती है। भारतीय संस्कृति के मानदण्ड के आधार पर वह पति को सर्वस्व अर्पित कर अपना जीवन व्यतीत करती है लेकिन इसी पुरुष ने उसे सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक धरातल पर कमजोर बना रखा है। इस संदर्भ में

डॉ जालिदर इंगळे ने लिखा है '' नारी को शक्ति हिन अबला समझकर पुरूष वर्ग हमेशा नारी वर्ग का शारीरिक मानसिक बैध्दिक , लैंगिक शोषण करता आया है ।''[43] धर्म के नाम पर मनुष्य प्रवृत्त होता है । आज धर्म नारी को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए कोई व्यवस्था प्रदान नहीं करता । फलस्वरुप घुटकर जीना ही उसकी नियति बनकर रह जाती है अगर वह विरोध करती है तो वही व्यवस्था उसे कठोर दंड देने के लिए तैयार रहती है । अतीत का इतिहास भी इसके लिए हमारे सामने है । हिंदू समाज की धर्मांधता रूढिवादिता और स्वयं को श्रेष्ठ समझने की भावना से भारत वर्ष की क्षति हो गई है । कुछ व्यक्ति हिंदू धर्म और दुसरे धर्म की बात को ही मानते है लेकिन जब रोटी बेटी की बात आती है तो कतराते है । अतः वह दोनों अपने अपने धर्म से चिपक जाते है । निरुपमा रेवती की कहानी 'मॉ' यह नौकरी छोड दो यह एक ऐसी नारी की कहानी है तो बेटे की शिक्षा के लिए अफसर के यहॉ काम करती है । मॉ पार्वती को उसका पति हमेशा पिटता रहता है क्योंकि वह असहाय है । धर्म ने पुरुष को यह अधिकार दिया है । पुरुष प्रधान संस्कृति को धर्म ने बढ़ावा दिया है ।

नासिरा शर्मा की कहानी 'दरवाज ए कजविन' में मरियम की मजिद के साथ मंगनी हो गई है । मगर शादी नहीं हुई । शादी से पहले एक दूसरे को मिलते रहे । शारीरिक सुख की प्राप्ति भी करते है । शादी होने पर सुहागरात में बिस्तर से रुमाल पर खून के दाग न दिखने पर मान लिया जाता है कि बहु कुॅवारी नहीं है । मजिद सच बात कहने के लिए कतराता है ,वह अपने पत्नी को ही दोषी ठहराता है। तब मरियम को दरवाज ए कजविन का सहारा लेना पड़ता है । मरियम से विरोध करने के लिए औरते विरोध में सडक पर उतर आती है । उन्हे सरकार द्‌वारा गोलियों से भुन दिया जाता है । पुरुष तुंरत तलाक दे सकता है पर स्त्री को यह अधिकार नहीं है । धर्म व्यवस्था नारी जाति के लिए अन्याय कारक प्रतित होती

है । इक्कीसवी सदी की लेखिकाओं ने धर्म से प्रताडित नारी को अपनी कहानी में चित्रित किया है ।

निष्कर्ष :-

परिवार में स्त्री पुरुष दोनों का स्थान महत्वपुर्ण है। समय के साथ साथ आज समाज ने प्रगति कर ली पर नारी शोषण विषयक विचार मनुष्य के पुरातन पंथी और जुड़वादी रहे है । काल परिवर्तन के अनुसार भारतीय नारी के स्थिति दयनीय ही रही है । वह देवता होते हुए भी दूसरों पर आश्रित है । माँ, बेटी, पत्नी के रुप में अपना जीवन बिताते हुए वह अत्याचार अन्याय सहने के लिए ही बाध्य रही अतःनारी की स्थिति शोचनीय बन गई है । सामाजिक ,धार्मिक ,सांस्कृतिक परिवेश में उसे दुय्यम स्थान है ।

पुरुष प्रधान संस्कृति ने उस पर हमेशा अन्याय ही किया वही अन्याय वह आज सहती आयी है । मुस्लिम समाज में लड़कियों पर अनेक पाबंदियॉ है । आज संविधान से समान अधिकार होने के बावजुद भी नारी आज भोग्या या अबला ही समझी जाती है । अपने अस्तित्व के लिए उसे हर कदम पर संघर्ष करना पडता है । नारी का कोई मुल्य नहीं वह पशुतुल्य है । इतिहास का अवलोकन करने पर पता चलता है कि वह अनेक कर्मकांण्डो में जकडी हुई है । भारतीय नारी की सबसे बडी विडम्बना है कि राजनैतिक, अर्थिक, धार्मिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत अधिकार की प्राप्ति ने भी सादियों के संस्कारों से बंधी नारी की मानसिकता को परिवर्तन नहीं किया है । अपनी व्यथा, पीड़ा को वह घूट घूटकर जीवन का भोग मानकर व्यतीत करती है । पुरुष की बात मानना स्त्री को विवश होना पडता है । वह अपने जीवन में आशावाद निर्माण कर जीवन जीती है । नारी संस्कृति की धूरी है । परिवार की आशा है । जीवन में अनेक संकंटों का सामना कर वह सहनशीलता की मूर्ति बन

जाती है । दुःख भोग कर वह अपना विकास चाहती है । अपने पति द्वारा कितना ही अन्याय अत्याचार हो उसमें सहनशीलता,समर्पण , ममता का भाव हमेशा दिखाई देता है । आठवें दशक की लेखिकाओं ने नारी जीवन की त्रासदी को अपनी कहानियों में चित्रित किया हैं । शिक्षा के माध्यम से आज नारी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई दे रही है । वह स्वाभिमान से जीवन जीना चाहती है ।

आज नारी घर की दीवारी को लॉघकर सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहीं है । परम्परागत मान्यताओं को तोडकर वह अपना अलग अस्तित्व निर्माण करने के प्रति सजग हो गई बदलती हुई । मानसिकता को अठवे दशक की लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है । अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए वह परम्परा का विरोध कर स्वयंम् अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है । मानवता की सात्क्षात मूर्ति तथा संस्कृति के प्रेरक तत्वों की संवाहिका के रुप में नारी अपना धर्म निभाती है । भ्रष्ट शासन व्यवस्था के कारण वह पुरुष वर्ग की कैद बन चुकी है । युगानुरुप कितना ही बदला आ जाये फिर भी वह आश्रित ही रही है । पुरुष वर्ग हमेशा उस पर अपना अधिकार जताने की कोशिश करता है ।नारी को कठपुतली बनकर अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। धर्म के नाम पर नारियों का शोषण हो रहा है पुरुष प्रधान समाज होने के कारण धर्म के मान्यताओं के आधार पर ही उसे चलना पड़ता है । नारी पुरुष वर्ग की कैद से मुक्त होने के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है । ''21वी सदी की लेखिकाओं ने इसी नारी रुप को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है ।

संदर्भ

1 यशोधरा :- मैथलीशरण गुप्त- पृ 59

2 समकालीन हिंदी उपन्यास : वर्ग एवं वर्ण संघर्ष डॉ जांलिदर इंगळे, पृ 160

3 लीलावती या आदर्थ पति :-गोस्वामी किशोरीलाल पृ 183

4 खुदा की वापसी - नासिरा शर्मा- पृ 73

5 दूसरा ताजमहल- नासिरा शर्मा- पृ 168

6 दूसरा ताजमहल - नासिरा शर्मा पृ 168

7 संगसार - नासिरा शर्मा- पृ 106

8 यामिनी कथा-सुर्यबाला- पृ 20

9 भाषा भारती- जनवरी मार्च 2006 संपा.बी.आर .सैनी- पृ 29

10 गगनांचल अंक 4 जुलाई अगस्त 2014- पृ 72

11 मेरे संधि पत्र -श्रीमती सूर्यबाला- पृ 42

12 सुबह के इन्तजार तक- श्रीमती सूर्यबाला- पृ 93

13 खुदा की वापसी- नासिरा शर्मा- पृ 64

14 मेरे सात्क्षाकार- कमलेश्वर -पृ 139

15 बीसवी सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्ति मूलक अनुशीलन- डॉ क्षितिज धुमाळ- पृ 138

16 महिला उपन्यासकारों की रचना में वैचारिकता- डॉ. शशी जेकब- पृ 57

17 पत्थर गली- नासिरा शर्मा- पृ 144

18 पत्थर गली- नासिरा शर्मा- पृ 161

19संगसार - नासिरा शर्मा- पृ 169

20 समग्र उपन्यास- कमलेश्वर- पृ 557

21 भेल भारती -विनोदान्द झा भोपाल- पृ 30

22 तुम भूल गए पुरुषत्व के मोह में कुछ सत्ता है नारी की- पृ 130

23 नासिरा शर्मा का कथा साहित्य -वर्तमान समय के सरोकार- शेख अफरोज फातेमा- पृ 216

24 गंगनांचल -जुलाई- अगस्त 2014- पृ 63

25 समकालीन हिंदी उपन्यास- जांलिदार इंगळे- पृ 160

26 पत्थर गली- नासिरा शर्मा- पृ 21

27 इनसानी नस्ल -नासिरा शर्मा- पृ 38

28 इनसानी नस्ल -नासिरा शर्मा- पृ 67

29 फाल्गुनी- मेहरुन्निसा परवेज- पृ 82

30 कैंजा- शिवानी- पृ 48

31 गोमा हॅसती है- मैत्रेयी पुष्पा- पृ 64

32 शामी कागज- नासिरा शर्मा- पृ 29

33 पत्थर गली- नासिरा शर्मा- पृ 161

34 उत्तरशती का हिंदी साहित्य- डॉ सुरेश कुमार जैन -पृ 67

35 मालती जोशी की कहानियॉ- मालती जोशी- पृ 137

36 इब्ने मरियम -नासिरा शर्मा- पृ 68

37 वार्षिकी भारतीय सर्वेक्षण -1976-77- पृ 15

38 आदमी और हव्वा- मेहरुन्निसा परवेज -पृ 30

39 कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी- डॉ बालाजी श्रीपती भूरे- पृ 118/119

40 नासिरा शर्मा की कहानियों और नारी विमर्श- डॉ सोनल नंदनूरवाले -पृ 170

41 इब्ने मरियम नासिरा शर्मा- पृ 24/25

42 इब्नेमरियम -नासिरा शर्मा- पृ 26

43 समकालीन हिंदी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष- डॉ जालिदर इंगळे- पृ 166

षष्ठ अध्याय

6.0] इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानियों में चित्रित संवेदना

6.1] संवेदना से अभिप्राय

6.2] संवेदना व्युत्पत्ति अर्थ

6.3] संवेदना की परिभाषाएँ

06.4] संवेदना का अन्य के साथ संबंध

6.4.1] ऐन्द्रिय बोध और संवेदना का संबंध

6.4.2] सामाजिक संवेदना

6.4.3] सांस्कृतिक संवेदना

6.4.4] राजनैतिक संवेदना

6.5] इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण की कहानियों में चित्रित मानवीय संवेदना

6.5.1] मानसिक संवेदना

6.5.2] पारिवारिक घुटन की संवेदना

6.5.3] आर्थिकता के प्रति संवेदना

6.5.4] अकेलेपन तथा एकाकीपन की संवेदना

6.5.5] प्रेम संवेदना

6.5.6] आत्मपीडन या परपीड़ा की संवेदना

6.5.7] जीवन मूल्यों के प्रति संवेदना.

निष्कर्ष

6.0 इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानियों में चित्रित संवेदना

प्रस्तावनाः-

संवेदना और मानवीय जीवन का परस्पर संबंध हमेशा बना रहता है। संवेदना यह एक मानसिक आरंभिक प्रक्रिया इसलिए कहा गया है कि उद्दीपकों के बारे में ज्ञान हासिल करने के लिए अनेक प्रकार की मानसिक प्रक्रियाएँ होती हैं, जैसे कि चिंतन करना, कल्पना करना आदि। सबसे पहले जो प्रक्रिया होती है, वह है संवेदना किसी विषय के संदर्भ में हमे अंदाज करना है, तर्क लगाना है या कोई अनुमान बनाना है, तो उसके लिए आवश्यक है संवेदना।

संवेदना अलग-अलग ज्ञानेंद्रियों द्वारा होती है। शारीरिक और मानसिक दो प्रकार की संवेदना है। दूसरी प्रकार की मानसिक संवेदना यह भावनिक स्वरूप की होती है। शारीरिक और मानसिक संवेदना के कारण मानव संवेदना का अंग बन जाता है। सुख संवेदना दुःख संवेदना मानवीय जीवन पर प्रभाव छोडती है। संवेदना का प्रभाव मनुष्य के व्यक्तित्व पर पडता है। किसी दुखद की घटना को देखकर मन में होनेवाली वेदना तथा आनंद देनेवाली घटना को देखकर मन में ----उल्लास को अनुभूति और विचार का अनुभव लेने के लिए संवेदनशील होना आवश्यक होता है।

6.1] संवेदना से अभिप्राय-

जब कोई व्यक्ति कोई घटना या प्रसंग देखता है तो उस दृश्य तथा प्रसंग के अनुरुप हमारे मन में जो वेदना या भाव उत्पन्न होता है, वह संवेदना है। संवेदना ज्ञान का सरल और सहज रुप ऐसा है मनोवैज्ञानिक मानते है। घटना या प्रसंग को देखकर उठनेवाले भाव, विचार संवेदना का ही एक अंग है। संवेदना हमारे मन, मस्तिष्क की वह चेतना है कि जिसमें हमे वस्तु विशेष का बोध न होकर उसके गुणों का बोध हो जाता है। वस्तुतः रागात्मक और आनंददायी संवेदना मानवीय जीवन के

अंग है। मानसिक और शारीरिक संवेदना से व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। मन पर उठनेवाले भावों को संवेदना कहते है।

आज साहित्य जगत् में संवेदना शब्द का अर्थ विस्तृत हो चुका है। वास्तविक रुप से देखा जाए तो संवेदना उस काल्पनिक अनुभव की व्याख्या का प्रयास है, जिसमें सहजता से मन में उठनेवाले भाव का प्रस्तुतिकरण है। साहित्य संवेदना से जुडा रहता है। संवेदना के बिना साहित्य की निर्मिती नहीं हो सकती। साहित्य में मनुष्य की आंतरिक संवेदना तथा भावनिक संवेदना जुडी रहती है। रुपेश चर्तुवेदी का कहना है कि ''विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखे तो ज्ञान होता है कि संवेदना उस काल्पनिक अनुभव की व्याख्या का प्रयास है जिसमें सहज एवं सात्विक रुप में किसी पदार्थ में स्वात्म प्रक्षेपण होता है।''[1]

साहित्यकार अपनी रचना में संवेदना को पूर्ण रुप से आत्मसात करके संवेदना को जगाने का प्रयास करता है। संवेदना की प्रक्रिया में देखे गए पदार्थों तथा उसकी स्थितियों को पूर्ण रुप से समझकर प्रस्तुत करता है। संवेदना का संबंध मनुष्य के जड और चेतन दोनों से होता है। भावनिक या मानसिक और शारीरिक संवेदना साहित्य से जुड जाने के कारण पाठक पर वह अपना प्रभाव छोडती है। अतः साहित्यकार अपनी रचना में संवेदना को चित्रित करता है। साहित्य संवेदना के बिना संभव नही है। वही साहित्यकार सफल होता है, जो संवेदना को जानता हो परखना और उसे अपनी रचना विकसित करता हो। सुरेश सिन्हा का कथन विशेष उल्लेखनिय है, ''संवेदन ासे अभिप्राय है वह अनुभूति प्रवणता जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता से पूरित होती है।''[2] अंतः जो अनुभव व्यक्तित्व में घुलमिल जाते है और अनुभूति के रुप में सामने आ जाते है ये ही मिल जाते है और अनुभूति के रुप में सामने आ जाते है ये ही संवेदना की संज्ञा प्राप्त करते है।

प्रत्यक्ष अनुभवों का डिस्टिल फार्म संवेदना है। हरि शर्मा कहते है कि " संवेदना शुन्य आकार ग्रहण करती है, युग बोध से उसका करीबी रिश्ता है।"[3]

अर्थ ज्ञान से ही संवेदना का ज्ञान प्राप्त होता है। बिना अर्थज्ञान से संवेदना का ज्ञान नहीं चलता। भूख, थकान तथा प्यास यह हमारी शारीरिक संवेदना है, यह संवेदना मनुष्य की आंतरिक दशाओं के परिवर्तित होने पर अनुभावित होती है। अर्थ संवेदना के लिए महत्वपूर्ण है। प्रत्यक्ष संवेदना को अनुभवित करने के लिए अर्थ का ज्ञान होना आवश्यक है। वास्वत में मानसिक संवेदना यह दुःखित स्वरुप में ही अधिक अनुभूत होती है। सुख दुःख की संवेदना अधिक से अधिक मनुष्य अपने जीवन में अनुभावित करता है सुख संवेदना का लक्षण या अन्य मानसिक घटना है जिसमें किसी घटना के बाबत प्रेरित या संकल्पित परिवर्तन के कारण युक्त घटना के घटित होने को प्रवद्वित किया जाता है और दुःख संवेदना का लक्षण या मानसिक घटना है जिसमें घटना के बाबत प्रेरित या संकल्पित परिवर्तन के कारण कम या अधिक परिवर्तन उक्त घटना के अवसान में होता है।"[4]

अन्त में हम कह सकते है कि संवेदना अर्थ बोध करानेवाला वह यंत्र है जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करते हुए अनुभूति के रुप में प्राप्त होकर साहित्यिक रुप का सौदर्य एवं प्रभाव बढाता है। संवेदना अर्थ ज्ञान पर निर्भर है। रामदशरथ मिश्र का मत है कि "संवेदना के बिना साहित्य नहीं बनता, चाहे उसमें बुद्विवाद का कितना भी ऊहापोह क्यों न हो, दर्शन की नई गरिमा क्यों न हो। बुद्वि, दर्शन, चिन्तन, ज्ञान-विज्ञान सबको पहले जीवन में आत्मसात होना पडता है। आत्मसात होकर मानव-संवेदना का अंग बनना चाहता है।"[5] वास्तव में ज्ञान के बिना संवेदना नहीं है। साहित्य संवेदना के बिना हो ही नही सकता।

6.2 संवेदना : व्युत्पत्तिगत अर्थः-

संवेदना शब्द की व्युत्पत्ति 'सम' उपसर्ग पूर्वक 'विद्' धातु में ल्युट प्रत्यय लगाने से होती है। ''संवेदनमन [संवेदना] [सम+विद्+ल्युट] प्रत्यक्ष ज्ञान, जानकारी, तीव्र अनुभूति, भावना अनुभूति, भोगना आदि।''[6] सम् उपसर्ग में कई अर्थ बताये गये है- ''सम एक अवयव जिसका व्यवहार, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरन्तरता, औचित्य आदि सूचित करने के लिए शब्द में होता है।''[7] संवेदना अंग्रेजी के सेंसिटिबिटी, सेन्सशेन, सेन्सिबल, फिल्लिंग का समानार्थी शब्द है।''[8] मानक हिन्दी शब्दकोश में संवेदना के तीन अर्थ बताये गये है-1.मन में होनेवाला अनुभव बोध [अनुभूति] 2.किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुःख, किसी की वेदना देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभवन करना [सहानुभूति] 3.उक्त प्रकार का दुःख या सहानुभूति प्रकट करने की क्रिया या भाव कन्डोलेन्स।''[9]

विभिन्न कोशगत अर्थ का अध्ययन करने के बात यह स्पष्ट हो जाता है कि संवेदना के आधार पर व्यक्ति को देखने, सुनने, सूंघने, समझने तथा महसूस होने का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। व्यक्ति को जीवन में मिलनेवाले अनुभव ही संवेदना है। किसी कष्ट को लेकर मन में होनेवाला परिवर्तन जैसे दुःख, वेदना का भाव ही संवेदना है।

6.3 संवेदना की परिभाषाएँः-

साहित्य में संवेदना को अनन्य साधारण महत्व है क्योंकि संवेदनाओं से ही साहित्य की निर्मिती होती है। भावों और विचारों का संमिश्रण ही साहित्य की निर्मिती होती है। भावों और विचारों का संमिश्रण ही साहित्य होता है। संवेदना साहित्य में चित्रित होने के कारण वह मनुष्य के जीवन के साथ घुल-मिल जाती है। साहित्य में संवेदना का होना महत्वपूर्ण है। व्यक्ति के साथ संवेदना हमेशा रहती है।

कोई भी साहित्यकार हो वह अपने साहित्य में संवेदना को चित्रित करते है। साहित्य में संवेदना ही भावनाओं को उद्घाटित करती है। साहित्यकार अपने साहित्य में आत्मानुभूति को चित्रित करता है। किसी भी श्रेणी का साहित्यकार हो जैसे कि हिंदी साहित्यकार, अंग्रेजी साहित्यकार, चीनी साहित्यकार तथा कोई भी विदेशी का साहित्यकार हो वह अपने साहित्य में संवेदनाओ को व्यक्त करता है। बिना संवेदनाओं का साहित्य निर्मित हो ही नहीं सकता।

यहाँ हम कुछ आलचकों द्वारा संवेदनाओं की परिभाषा देने का प्रयास किया है, वह निम्नांकित है-

1. मॉर्रिस [Morries 1996] ''संवेदन से तात्पर्य दृष्टि, श्रवण, गंध, स्पर्श तथा दर्द के ज्ञानेंद्रियों से प्राप्त मौलिक संवेदी आकडों से होता है।''[10]

2. जे.पी.दास [J.P.Das] उद्दिपकों को प्राप्त करने की पहली अवस्था को ही संवेदन कहा

है।''[11]

6.4 संवेदन का अन्य के साथ संबंधः-

6.4.1:- ऐन्द्रिय बोध और संवेदनाः-

हर युग के साहित्य में अपने युग बोध के प्रति संवेदना होती है। जो मानव को संवेदनशील बनाती है। ज्ञानेन्द्रियाँ हमें संवेदनशील बनाती है, इसलिए ऐन्द्रिय बोध को ही संवेदना का आधार माना जाना चाहिए। मानव एक ज्ञान संपन्न प्राणी है। अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव में निर्णय लेने की क्षमता अधिक होती है। उचित, अनुचित का ज्ञान उसे होता है। यह सब मनुष्य अपने ज्ञान के आधार पर ही करता है। अपने ज्ञान के आधार पर ही उसे संवेदना का ज्ञान होता है।

संवेदना और मानव का संबंध अटूट है। संवेदना मानव जीवन से जुडी रहती है। मानव के मन मस्तिष्क से संवेदना का चिर संबंध है। मानव मन मस्तिष्क तथा बौध्किता से संवेदना का निर्माण होता है। संवेदना का यह निर्माण उसके मन में चिरस्थायी रहता है। ''आरम्भ में मनुष्य की चेतन सत्ता अधिक तर इन्द्रिय ज्ञान की समीष्ट के रुप में ही रही। फिर ज्यों-ज्यों मनुष्य का ज्ञान बुद्धि व्यवसायात्मक या विचारात्मक होकर बहुत ही विस्तृत हो गया।'[12]' इससे यह स्पष्ट होता है कि सभ्यता और संस्कृति की प्रतिक्रया स्वरुप संवेदना प्रतिफलित होती है।

समाज में नित्य अनेक घटनाएँ घटित होती है। उन घटनाओं का प्रभाव मानव जीवन पर पडता है। इस अनोखी घटनाओं का सीधा प्रभाव मनुष्य पर पडता है तथा मानव उन घटनाओं से अनुभव प्राप्त करता है। समाज द्वारा मिलनेवाले अनुभव के कारण ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है तथा व्यक्तिमत्व में परिवर्तन आता है। व्यक्ति के संवेदना में होनेवाला परिवर्तन साहित्य का केंद्रबिंदू बन जाता है। इसलिए साहित्य और जीवन में प्रत्येक इंद्रिय अनुभव को संवेदना माना जाता है। अतः समाज द्वारा प्राप्त अनुभव से परिवर्तीत व्यक्तित्व का रेखांकन संवेदना है। यह अनुभव का ऐन्द्रिय अनुभव है और वही साहित्य में संवेदना बनकर चित्रित हो जाता है। मानव मस्तिष्क पर इन अनुभवों का गहरा प्रभाव पडता है। यह गहरा प्रभाव संवेदना के रुप में साहित्य चित्रित करता है।

संवेदना के तीन रुप है-1 विशिष्ट संवेदना 2. अन्तरावय संवेदना 3. स्नायविक संवेदना मनोविज्ञान में संवेदना शब्द का मूल अर्थ लिया गया है। विशिष्ट संवेदना ज्ञानेन्द्रिय और बाहरी उत्तेजना के द्वारा होनेवाली संवेदना को दूसरी ऐनिद्रय संवेदना से अलग किया जा सकता है। इसके अनेक भेद है-जैसे प्राण, रस, त्वचा, दृष्टि और श्रोत संवेदना । इन्हीं संवेदनाओं के द्वारा हम विश्व के विभिन्न पदार्थो का ज्ञान प्राप्त करते है। अन्नरावय संवेदना शरीर की भीतरी अवस्था के

कारण पैदा होनेवाली पाचन क्रिया, रक्त, संचार और श्वास प्रश्वास आदि के अवयवो से संबंधित है। तिसरी संवेदना जो है अर्थांत स्नायविक संवेदना यह संवेदना ग्रंथीतथा मांसपेशी के संचालन से निर्माण होती है। '' संवेदना बाहय जगत का ऐन्द्रिय बोध है, वह एक प्रकार से भौतिक जगत का बिम्ब ग्रहण तो होता ही है, पर इसके साथ ही साथ भावों और विचारों का एक संयुक्त समाहार भी संवेदना के गठन में माना गया है।''

ऐन्द्रिक संवेदनाएँ बाद में अनुभव में पारित होती है। यही अनुभव वैचारिक संवेदनाओं में प्रतिफलित होती हैं। ' 'वस्तु को देखने और महसूस करने की स्थिति में प्रतिक्रिया के तौर पर हमारे भीतर उसके पक्ष अथवा विरोध में विचार बनने की प्रक्रिया क्रियाशील हो उठती हैं।''[14] हर युग का साहित्य अपने युग की संवेदना को प्रस्तुत करता है। यही संवेदना मानव मन को संवेदनशील बनाती है। व्यक्ति संवेदना में होनेवाला परिवर्तन साहित्य में भी परिवर्तीत होता है। किसी भी साहित्य का रचनाकार हो वह अपने साहित्य में परिवर्तीत संवेदना को या मन की संवेदना को प्रस्तुत करता है। अपने विचार तथा अनुभूति को अनुभव करने के लिऐ मनुष्य का संवेदनशील होना जरुरी है।

साहित्यकार अपने कृति का आस्वादन करता है तथा उस आस्वादन के लिए संवेदना उसके मन में निर्मित होती है। संवेदना साहित्यकार तथा कृति का सदस्य प्रतिनिधित्व करती है। ''संवेदना समाज परिवेश और मनःस्थिति के धरातल पर होनेवाले सांझे अनुभवों पर निर्भर हुआ करती है।''[15] कृति की आस्वादन से साहित्यकार के मन में संवेदना निर्मित होती है। मनुष्य को जिस प्रकार का अनुभव होता है, उसी प्रकार उसकी संवेदना होती है। नये-नये अनुभव से समाज उसी में ढल जाता है और नयी-नयी संवेदना तथा अनुभव निर्माण होते रहती है।

6.4.2 संवेदना और साहित्य का संबंधः-

संवेदना शब्द को 'सहानुभूति' के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। संवेदना और सहानुभूति में अंतर पाया जाता है। संवेदना में अधिक गहराई तथा व्यापकता पायी जाती है। सहानुभूति का संबंध करुणा से जोडा जाता है। किसी घटना तथा प्रसंग को देखकर मन में उसी प्रकार का भाव उत्पन्न होना या उस वेदनामयी घटना को देखकर उसी वेदना को महसूस करना सहानुभूति से संबंध रखता है। अंतः संवेदना और सहानुभूति में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। संवेदना का संबंध ज्ञान से है। संवेदना ना पूर्ण रुप से मानसिक है ना पूर्ण रुप से भौतिक प्रक्रिया है। ''संवेदना में कल्पना की क्रिया प्रधान होती है। संवेदना द्वारा ही साहित्य का सृजन संभव है क्यों कि साहित्य के सृजन के लिए साहित्यकार के मन में सर्व प्रधान भाव उत्पन्न होते है और इन भावों को साहित्यकार अपनी लेखनी द्वारा अभिव्यक्त करता है तभी साहित्य की रचना होती है।''[16]

साहित्यकार और साधारण व्यक्ति की संवेदना में काफी अंतर पाया जाता है। संवेदनशील साहित्यकार होने के कारण उसकी संवेदना अधिक तीव्र होती है। उसके विपरित साधारण व्यक्ति की संवेदना उतनी तीव्र संवेदना नहीं होती। साधारण व्यक्ति की संवेदना से साहित्यकार का मन संवेदनशील बन जाता है और वही संवेदना साहित्य में चित्रित होती है।

साहित्य की निर्मिती ही संवेदनाओं से होती है। मानव मन संवेदनाओं से अलग नहीं किया जा सकता। साहित्य का मूल ही मानव मन की संवेदनाओं से जुडा हुआ होता है। शक्तिशाली साहित्य की निर्मिती तब संभव है, जब मानव का मन दर्शन, चिंतन, ज्ञान, विश्वास को जीवन में आत्मसात करता हो। हर मनुष्य की संवेदना प्रतिकात्मक नहीं होती बल्कि उस संवेदना का संबंध चिंतन से भी जुडा हुआ

होता है। मनुष्य की किसी मानसिक घटना तथा भावनिक घटना में हमें संवेदना दिखाई देती है। ''साहित्यकार प्रत्यक्ष यथार्थ को केवल इंद्रियों के माध्यम से ग्रहण नहीं करता बल्कि मन, बुद्धि और संपूर्ण भावनात्मक सत्ता के साथ भी करता है। साहित्यकार की रचना दुहेरी होती है।'' [17] स्पष्ट है कि साहित्यकार साधारण व्यक्ति की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होता है। अपने मन बुद्धि के कारण वह संवेदनाओं को ग्रहण हरता है। सामाजिक वातावरण का प्रभाव उसके मन में अधिक पडता है। व्यक्ति की संवेदना ही साहित्य का प्रतिबिंब है।

व्यक्ति की संवेदना में समाज की परछाई दिखाई देती है। वही समाज की परछाई का प्रभाव साहित्यकार पर पडता है। संवेदनाओं की निर्मिती समाज द्वारा ही संभव है। समाज में व्यक्ति महत्वपूर्ण है, क्योंकि व्यक्तिओं के द्वारा ही समाज की निर्मिती संभव है। समाज है। संवेदनशील साहित्यकार व्यक्ति द्वारा ही समाज की सार्थक्ता समस्याओं से ग्रहण कर उसे अपने साहित्य में प्रतिफलित करता है। इस संदर्भ में प्रेमलता दुआ का कहना उचित है कि ''समाज यदि एक ओर लेखक के व्यक्तित्व के माध्यम से साहित्य का रुप ग्रहण व्यक्ति की विशिष्टता के स्पर्श से विशिष्ट हो उठता है तो दूसरी ओर व्यक्ति की विशिष्टता के स्पर्श से विशिष्ट हो उठता है, इसलिए प्रत्येक सार्थक रचना समाज के जीवन में नवीन योगदान देती है।''[18]

संवेदनाओं की निर्मिती मानव मन से संभव है। वही कोई दैविक शक्ति तथा चमत्कार नहीं है। समाज द्वारा ही वह परिवर्तित होती रहती है। संवेदनाओं का विकास सामाजिक परिस्थिओं के साथ संभव है। प्राचीन समाज की प्राचीन संवेदना में परिवर्तन दिखाई देता है। यहाँ यह बात स्पष्ट हो जाती है कि संवेदना यह मनुष्य पर जबरदस्ती से ग्रहण नहीं कर सकता। वास्तव संवेदना ही कृति का महत्व बढाती है। वही कृति प्रासंगिक लगने लगती है। साहित्यकार में संवेदना स्वाभाविक रुप से

निहित होती है। वह कोई ओढी हुई जबरदस्ती लाई हुई चीज नही है। संवेदना पूरे समाज जीवन को तथा समाज प्रणाली को प्रभावित करती है।

वस्तुतः संवेदना और साहित्य का अटुट संबंध है। टी. एस. इलियट के अनुसार ''रचनाधर्मी संवेदना समाज को नुतन अनुभूति जीन अनुभूतियों को हम जानते है, किंन्तु जिनकी अभिव्यक्ति के लिए हमें शब्द ज्ञात नहीं होते उन्हें अभिव्यंजना प्रदान करती है। इसके परिणाम स्वरुप हमारी चेतना का विस्तार और संवेदना शक्ति का होता है।''[19] 'साहित्यकार ह्दय में संवेदनात्मक अनुभूतियाँ साहित्य में प्रतिबांधित होती है। साहित्यकार में संवेदना ग्रहण करने की क्षमता होनी चाहिए तभी वह उन संवेदनाओं को साहित्य में या अपनी रचना में प्रस्तुत कर सकता है। युग की यथार्थ को पहचानकर ही साहित्यकार यथार्थवादी संवेदना को अपनी कृति को बनता है।

अतः कहा जा सकता है कि संवेदना से ही साहित्यकार का व्यक्तित्व निखरता है। व्यक्ति को उच्च कोटी का व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए संवेदना महत्वपूर्ण है। बिना संवेदनाओं से साहित्य की निर्मिती संभव नहीं है। कल्पना की प्रधानता संवेदना में होती है। साहित्य सृजन के लिए साहित्यकार के मन में संवेदनाओं का निर्माण होना महत्वपूर्ण है। वही संवेदना साहित्यकार अभिव्यक्त करता है और अपनी रचना की निर्मिती करता है।

6.4.3 संवेदना और अन्य समानार्थी शब्दः-

संवेदना यह शब्द एक अर्थ में सीमित नहीं है। वह विविध अर्थो का बोध करवाता है। संवेदना को अनेक प्रकार अध्ययन किया जाय तो संवेदना अधिक स्पष्ट होकर हमारे सामने आयेगी। समवेदना सम् + वेदना, संवेदना शब्द सम् उपसर्ग और वेदना शब्द से बना है। भोलानाथ तिवारी के अनुसार संवेदना मानक हिंदी कोश में

संवेदना का अर्थ, ''सैन्सेशन, संवेदन, संवेदना बोध, चेतना, ज्ञान, इंद्रिय बोध, उत्तेजनापूर्ण, भारी उत्तेजना, स्फूरण, संभ्रम, खलबली, हंगामा, जोश । ''[20]

'हिन्दी साहित्य कोश' में संवेदना का अर्थ या ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव है। अंग्रेजी में इसके लिए सिमपैथी, फीलिंग या फेलो फिलिंग आदि शब्द प्रचलित है। मनोविज्ञान में इसका आचार्यनन्द का अनुभव या सैन्सेशन के रुप में होता है।''[21] आचार्य नन्द किशोर के अनुसार संस्कृत के विद से उत्पन्न होने के कारण इसका अर्थ अंग्रजी शब्द 'सैन्सेशन' या परसेप्शन तक ही सीमा में आ जाते है। इस प्रकार एक सीमा तक बौद्धिक चेतना भी संवेदना शब्द के अर्थ में समाहित है।''[22]

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि संवेदना के लिए अनेक समानार्थी शब्द है- जैसे सहानुभूति, बोध, ज्ञान, संवेदन, चेतना, उत्तेजना, भावुकता, आदि यह परस्पर भिन्न होते हुए भी इन सबका निकट का संबंध होता है। यह संवेदना के विभिन्न स्तर दिखाई देते है।

6.5 संवेदना के विविध रुपः-

हर विधा का साहित्यकार यथार्थवादी संवेदनाओं को अपनाकर साहित्य का निर्माण करता है। समाज में चारों ओर फैली हुई प्रकृति तथा घटनाओं को वह अपनी खुली आँखों से देखता है। वह हर घटना, प्रसंग तथा भाव बोध को संवेदनशील मन से विशिष्ट रुप ग्रहण कर लेती है। समाज परिवेश का प्रभाव मनुष्य पर पडता है। यह परिवेश, सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यक, तथा सांस्कृतिक आदि रुपों से होता है। मनुष्य समाज की ईकाई है। मनुष्य जीवन पर पडनेवाला प्रभाव समाज परिवेश को प्रभावित करता है। साहित्यकार की अनुभूति उस समय विशिष्ट रुप ग्रहण करती है।

वास्तव में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा साहित्यिक परिवेश का प्रभाव मनुष्य के जीवन में पडने के कारण उनकी संवेदना भी उसी प्रकार की होती है। अंतः संवेदना बोध के निम्नलिखित रुप हो सकते है।

1] वैयक्तिक संवेदना

2] सामाजिक संवेदना

3] सांस्कृतिक संवेदना

4] राजनैतिक संवेदना

6.5.1 वैयक्तिक संवेदनाः-

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश का माहोल बदल गया। घटनाएँ प्रसंग तथा लोगों की परिस्थिती में भी बदलाव आया। युगानुरुप चलता रहा साहित्य भी परिवर्तीत हुआ। समाज जीवन की यथार्थ परिस्थितिओं का दर्पन साहित्य में दिखाई देने लगा। मोहभंग जनित असंगतियों, जीवनगत यथार्थ, संवेदनाओं को साहित्य में वाणी मिली इस संदर्भ में श्रीपत राय का कथन है कि ''समसामायिक संवेदना में विराग, कुण्ठा, निसंगता, सब जीवित तत्व है, इन मानसिक स्थिति में कोई रस नहीं है। जो समाज इन आधारभूत प्रश्नों को न अनुभव के धरातल पर न चिंतन के धरातल पर स्वीकार करता है, वह समाज जीवित नहीं है। उसक`जीवित रहने या न रहने से अंतर भी क्या पडता है? यही तो अस्तित्वावादी समाज से पूँछता है। इसी के समाधान में आज का संवेदनशील लेखक अपनी मेधा का उपयोग कर रहा है।''[24] यही संवेदनशील साहित्यकार व्यक्ति में संवेदना तथा चेतना को जगाने का काम करता है। व्यक्ति की संवेदना तथा चेतना को जगाने का काम करता है। व्यक्ति की

संवेदना में कालानुरुप बदलाव आया है। साहित्यकार ने भी अपनी पुरानी संवेदना को त्यागकर नयी संवेदना को अपनाया है।

व्यक्ति और समाज का समन्वय वैयक्तिक संवेदना उपस्थित करती है। राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिस्थियों में विषमता के परिणाम स्वरुप समाज में अराजकता पैदा हुई तथा समाज खण्डित होकर व्यक्ति में समाविष्ट हो गया। आज प्रत्येक व्यक्ति में आत्मचेतना बलवती हो गई है। वैयक्तिक संवेदना को साहित्यकार ने दो स्तरों पर प्रतिपादित किया है। एक स्वयं की अस्मिता तथा लेखन की विशिष्टता दूसरा समाज में व्यक्ति की स्थिति तथा उसकी रक्षा का है। साहित्य में वैयक्तिक न्यूनताओं को चित्रित किया है। व्यक्ति ज्यों-ज्यों जागृत हो गया, त्यों-त्यों रुढ परंपरा तथा अंधविश्वास से उसका विश्वास उठने लगा है। शेखर शर्मा का मत है। कि ''अपनी सारी आत्म-चेतना में वह अपने व्यक्तित्व को समाविष्ट की व्यापक चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम स्वीकार करता है।'[25]'

वास्तव में देखा जाय तो आज गाँव की अपेक्षा महानगरों में धन अधिक है और वृत्तियाँ भी अधिक उद्दाम रुप धारण करती है। अक्सर एक ही व्यक्ति में भिन्न-भिन्न प्रकार की चेतना दिखाई देती है। आज व्यक्ति युग की मान्यता को अपनी मान्यताओं के अनुसार ही स्वीकारता है। आज व्यक्ति अपनी व्यक्तित्व के प्रति इतना जागरुक हो चुका है कि वह केवल स्वयं के बारे में ही सोचता है। ''आज व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के प्रति इतना जागरुक स्वतंत्र कि अनुभूति से सारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने की अपेक्षा प्रान्त, जाति और व्यक्ति के स्वर ''मैं स्वतंत्र हूँ'' तथा स्वतंत्रता का उपभोग करना मेरा अधिकार है कि व्यक्तिवादी चेतना से प्रेरित होकर समूचे राष्ट्रीय जीवन में बिखराव की स्थिति पैदा कर दी है।''[26]

अतः कहा जाता है कि मनुष्य के सभ्यता के विकास के साथ वैयक्तिक संवेदनाओं में भी बदलाव आता है। सहानुभूति अक्सर मनुष्य को दिलासा देने का काम करती है। चेतना से वैयक्तिक संवेदना गति मिलती है। वैयक्तिक संवेदना समाज पर आश्रित होते हुए भी अपनी कुछ अलग विशेषताएँ रखती है।

6.5.2 सामाजिक संवेदनाः-

व्यक्तियों के समूह से ही समाज बनाता है। व्यक्ति के अस्तित्व के बिना समाज की कोई सत्ता नहीं होती। सामाजिक संवेदना का अर्थ है समाज के महत्व को स्वीकारना समाज और जीवन का संबंध साहित्यकार से घनिष्ट बना रहता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सामाजिक जीवन की अनुभूति को वह स्वीकारता है। साहित्यकार उन अनुभूतियों को साहित्य में चित्रित करता है। साहित्य में समाज की चित्तवृत्तियों का अध्ययन किया जाता है। अनुभव और अनुभूति के बिना साहित्यिक कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। साहित्य में यथार्थवादी संवेदनाओं का चित्रण होता है। रचनाकार सामाजिक यथार्थ को संवेदना, भावना और मूल्य के स्तर पर व्यक्त करता है।

साहित्य सामाजिक स्थितियों का लेखा-जोखा होता है। अनुभव और अनुभूति के बिना साहित्यक कृति की कल्पना नहीं की जा सकती है। साहित्य में सदा सामाजिक जीवन का यथार्थ प्रतिबिम्बित होता है। रचनाकार सामाजिक संवेदनाओं को भावना के स्तर व्यक्त करता है। साहित्य एक सामाजिक कर्म है। जिसकी रचना सामाजिक घटनाओं के भीतर घटित होती है। साहित्य में समाज का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। सुरेशचन्द्र शर्मा के अनुसार ''समाज और व्यक्ति के सापेक्ष सम्बन्ध को प्रभावित करने में युग विशेष की जीवन दृष्टि का योग होता है। अतः सामाजिक अंतः प्रक्रियाओं के औचित्य-अनौचित्य का युग विशेष के सन्दर्भ में

मनुष्य के बीच विषमता को दूर करके मानव सत्य की प्रतिष्ठा करती है। वह सर्वकालिक नैतिकता है।''[27] व्यक्ति समाज प्रिय प्राणी होने के कारण उसकी अंतः क्रिया समाज में ही घटित होती है। समाज के सदस्य अपना निर्वाह करते है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति की परस्पर अंतः क्रिया घटित होती है। इन अतः क्रियाओं, संबंधो द्वारा निर्मित एक संरचना भी है वह साहित्य।

व्यक्तियों के अंतसंबंधों संरचित समूह से ही समाज की निर्मिती होती है। व्यक्ति की अलग कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं होती। मनुष्य जीवन पर सामाजिक जीवन का प्रभाव पडता है। व्यवित का प्रतिबिंब समाज के दर्पण में दिखाई देता है। व्यक्ति के कारण ही समाज की निर्मिती संभव है। समाज की विशिष्टता को अपनाते हुए रचनाकार सार्थक रचना द्वारा समाज जीवन में नवीन योगदान देता है। समाज में संवेदना की निर्मिती सहसा चमत्कार नहीं हैं। संवेदना कोई ओढी हुई चीज नहीं है। साहित्यकार प्रत्येक स्तर समाज जीवन से जुडा रहता है। सामाजिक संदर्भों से जुडे संवेदनाओं को तथा सामाजिक जीवानुभवों को वह व्यापक रुप में विकसित करता है। रचनाकार सामाजिक संवेदनाओं को ग्रहण करते समय उसमें अंतर पाया जाता है क्योंकि वह अपने कल्पना के स्तर, रुचियों तथा मान्यताओं के स्तर पर ग्रहण करने का प्रयास करता है।

प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी एक विशिष्ट जीवन शैली है। जिसके आधार पर संवेदना निर्माण होना स्वाभाविक है। मुस्लिम और हिंदू समाज में विवाह की मान्यताओं पर अलग-अलग विचार दिखाई देते है। हिंदू समाज में उसे पवित्र माना गया है। दोनों का विच्छेद की कल्पना नहीं की जा सकती। अमेरीका की स्थिति भारत से विपरित है। वहाँ विधवा विवाह तथा विवाह विच्छेद को मान्यता दी गई हैं। ''मानव सभ्यता को विकास और ़ह्रास के साथ-साथ सामाजिक संवेदना में युगानुरुप परिवर्तन आते रहते हैं। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। परिवर्तन की

प्रक्रिया हर घडी हर पल चल रही है। मनुष्य समाज, नगर, राष्ट्र, सभी में परिवर्तन हो रहे है। समाज की जीवन प्रणाली में परिवर्तन हो रहा है।''[28] सामाजिक जीवन मूल्यों में परिवर्तन के कारण संवेदना में भी परिवर्तन आया। साहित्यकार इन बदलती हुई संवेदनाओं में भी परिवर्तन आया। साहित्यकार इन बदलती हुए संवेदनाओं का अपने विचारधारा के अनुसार प्रस्तुत करता है। समय के बदलाव के कारण यह संभव है। परिवर्तन के साथ-साथ व्यक्ति की अवस्था तथा मूल्य भी बदल रहे है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में संवेदनाओं का महत्वूपर्ण योग माना जाता है। उच्च कोटी की संवेदना मनुष्य का उच्च कोटि का व्यक्त्वि निर्माण करती है। व्यकितत्व के संबंध में शेखर शर्मा का कथन है कि, ''व्यक्ति अपने आचरण द्‌वारा संवेदना को शुध्द और परिमार्जित करता है। इससे व्यक्तित्व और संवेदना का घनिष्ठ संबंध जुड़ जाता है।''[29] अंतः किसी भी समाज की संस्कृति का अध्ययन करते समय उसकी सामाजिक संवेदना के आधार पर किया जाता है। समाज में एकता स्थापित करने के लिए संवेदना का महत्वपूर्ण स्थान है।

6.5.3 राजनीतिक संवेदनाः-

आज हर मनुष्य का जीवन राजनीति से प्रभावित हो चुका है। मनुष्य के जीवन संबंधी निर्णय भी राजनीति में लिये जाते है। समाज राजनीति से प्रभावित है। इसलिए उसकी संवेदना भी राजनीति से जुडी हुई है। साहित्य में राजनीतिक संवेदना प्रासंगिक हो उठी है। साहित्यकार भी राजनीति के प्रभाव से नहीं छूट सकता समाज और राजनीति को अलग-अलग कक्षों में विभाजित नहीं किया जा सकता। इसी कारण है कि अनेक साहित्यकार राजनेता भी रहे है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में पराधीन भारत की राजनीतिक व्यवस्था का चित्रित किया है।

साहित्यकार आने वाले युग पर राजनीतिक व्यवस्था की छाप छोड जाते है। नामवर सिंह का कहना है कि ''सन 1935 के जमाने में साहित्य और राजनीति के संबंधों को लेकर गरम चर्चा चल पडी। जिस तरह छायावादी युग मे साहित्य समाज का दर्पण है कहने की हवा थी, उसी तरह इस युग में साहित्य और राजनीति की घनिष्ठता पर जोर दिया जाने लगा था।''[30]

द्वितीय महायुद्ध ने भारतीय जनता की आशा आकांक्षाओं पर पानी फेर दिया। इस युद्ध में हुई धन की राशी का खर्च का बोझ भारतीय जनता पर पडा। जिसके कारण जनता अनेक समस्याओं से घिर गयी। कपडा, मकान, रोटी की समस्या जनता के सामने खडी हो गई। समाज में चोर बाजारी बढ गई। आसमान छुने वाली चीजों की किमतें बढ गई। बंगाल में पडें भीषण अकाल के कारण लाखों लोग मौत के शिकार हुये। समाज में असंतोष की भावना फैल गई। रामविलास शर्मा ने कहा है कि ''भारतवासियों पर ऐसी विपत्ति पहले कभी नहीं आयी थी। इस अकाल में खास तौर से उन साहित्यकारों को भी नहीं आयी थी। इस अकाल में खास तौर से उन साहित्यकारों को भी कल्पना लोक से निकलने पर मजबूर किया जो साहित्य को अशाश्वत सामाजिक समस्याओं से दूर रखने के पक्ष में थे।''[31]

स्वतंत्रता के प्राप्ति के बाद दूसरा युग नये संकटों के साथ आया। भारतीय राजनीति ने नया मोड ले लिया। भारत-पाक सीमा खण्डित हो गई। सीमाओं के दायरे सीमित होने के कारण परिचित करनेवाले अमानवीय कृत्य ने मानव जीवन को अस्तित्वहीन बना दिया। यह विभाजन दो देशों का न होकर दो दिलों का विभाजन हुआ। भारतवासियों को ऐसी आपत्ति का सामना इससे पहले कभी नहीं करना पडा। सर्वधर्म समभाव की भावना समाप्त हो गई। हिंदू-मुस्लिम एक-दूसरे के खून के प्यासे बन गये। धर्म के नाम पर लोगों को भडकाकर दोनों में घृणा और फूट डाल दी इसके पीछे विदेशी थे। अंग्रेजों की कुटनीति से भारत दो दिलों में बँट गया।

स्वतंत्रता के पश्चात की पीढ़ियाँ इस जख्म को निरन्तर भोगती रही। नयी पीढी और पुरानी पीढी के बीच मोहभंग स्थिति निर्माण हुई।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय जनता को आशा थी कि पुराने सारे अभिशाप मिट जायेंगे। पूँजीवादी समाज व्यवस्था समाप्त होकर जनता मुक्त हो जायेगी। पिछडेपन की जाति की प्रगति तेजी से होगी। लेकिन जनता की सारी आशाओं पर पानी फेर गया। राजनेता आम जनता को फसाने के लिए विविध हथकंडो का प्रयोग करने लगे। राजनेताओं ने ही समाज में सांप्रदायिकता का जहर खोल दिया। भारत को स्वतंत्रता दिलानेवाले स्वातंत्र सेनानी के बारे में उनके मन कोई जगह नहीं था। लोगों की सेवा करना, उनकी रक्षा करना इस मूल उद्देश से राजनेता ने मुँह फेर लिया। इसी तरह राजनीतिक संवेदना को साहित्यकार ने अपने साहित्य में उतरने की कोशिश की।

अतः आज के युग की परिस्थितियों को देखते हुए यह प्रतित होता है कि कोई मनुष्य इन परिस्थियों से देखकर उत्साहित नहीं हैं। वह संघर्ष करता हुआ चेतना का संस्कार करता जा रहा है। इन परिस्थितियों को देखकर भी साहित्यकार में संवेदना का जन्म हुआ।

6.5.4 सांस्कृतिक संवेदनाः-

सांस्कृतिक संवेदना का शाब्दिक अर्थ है संस्कृति से संबंधित संवेदना। संस्कृति से तात्पर्य है विभिन्न जीवन प्रणाली धर्म, परंपरा, अध्यात्म, भक्ति, पुराण, प्रकृति, सभ्यता। विभिन्न प्रकार की दृष्टि से संस्कृति शब्द 'सम' उपसर्ग के साथ कृत धातु में सुत का आगमन करके 'क्तिन' प्रत्यय लगाने से बना है।'[32]' नालंदा शब्द सागर में संस्कृति का अर्थ है-'' 1. शुध्दि सफाई 2. किसी व्यक्ति, जाती राष्ट्र आदि के सभी बातें जो उसके मन रुचि आचार-विचार, कला-कौशल्य और सभ्यता के क्षेत्र में बौध्दिक विकास की सूचक होती है।''[33]' 'आधुनिक हिंदी कोश' के अनुसार ''स्त्री

सं.शुध्दि, विकास, उन्नयन, परिष्कार, सभ्यता, सुधार 2. किसी देश या जाति की सामाजिक परम्परागत क्षमताओं और कलात्मक क्रिया-कलपों का उनके जीवन में व्यवहार रुप, मनुष्य की आंतरिक मानसिकता उसके सौंदर्यमूलक कार्यकलाप और अभिरुचियों का समाविष्ट रुप।''[34] इसका तात्पर्य है संस्कारक्षम आचार विचार एवं व्यवहार, नैतिक मूल्य ही संस्कृति है।

मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनने के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है, वह तत्व उसे संस्कृति देती है। डॉ.महेंद्र रघुवंशी के शब्दों में ''संस्कृति वस्तुतः मानवता का मेरुदण्ड है। यह स्थान विशेष रीति-रिवाजों, उत्सवों, कलाओं, आचार-विचारों आदि को प्रकट करते हुए निश्चित आदर्शो को प्रतिष्ठित करती है। समाज, धर्म, दर्शन कला संस्कृति के मूलतत्व है। इनके अभाव में संस्कृति की अवधारणा संभंव नहीं हैं। यह तत्व ही संस्कृति को गौरव को परिपुष्ट करते है। सत्य तो यह है कि मनुष्य सामाजिक परिवेश, धार्मिक बोध दार्शनिक चिंतन और कला विश्वास मिलकार संस्कृति का निर्माण करते है।''[35] प्रत्येक देश की अपनी एक संस्कृति होती है। इस संदर्भ में जवाहरलाल नेहरु का कहना है कि ''संसार भर में जो सर्वोत्तम बातें जानी या कही गयी है, उनसे अपने आपको परिचित करना संस्कृति है।...संस्कृति शारीरिक या मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण, दृढीकरण या विकास अथवा उससे उत्पन्न व्यवस्था है। यह सभ्यता का भीतर से प्रकाशित हो उठना है।''[36] सामान्यतः संस्कृति में हमारे चिंतन और कलात्मक सृजन की समस्त क्रियाएँ समाहित हो जाती है।

संस्कृति मनुष्य का जीवन ऊँचा बनाती है। जन-मानसमें नैतिक मूल्य, आचार,-विचार, रीति-रिवाज, धर्म, उत्सावों का महत्व संस्कृति में देखने को मिलती है। रुढि, रीति-रिवाज, आचार-विचार, उत्सव, कलाएँ, नैतिक मूल्य, पर संस्कृति का विशाल प्रसाद का ढाँचा खडा है। संस्कृति के संबंध में अपने विचार स्पष्ट करते हुए

डॉ. रामसजन पाण्डेय लिखते है-''सामान्यतः संस्कृति उन सकल गुणों का समाहार हैं, जिसमें मानवीय व्यक्तित्व का परिष्कार और परिमार्जन होता है। चूँकि सुपर व्यक्तित्व अन्तहीन चारुता और बाहरी प्रभावमयता से निर्माण होता है। संस्कृति के दो पक्ष निर्धारित किये गये है-एक संस्कृति का भौतिक पक्ष और दूसरा भावात्मक [मानसिक] जिन साधनों से वह संस्कृति अपना शब्दकार ग्रहण करती है, उसी की उपक्षा नहीं की जा सकती। इसलिए संस्कृति के उपजीव्य तत्वों के अन्तर्गत संस्कृति के अभिव्यक्ति के माध्यमों की चर्चा समीचीन है, क्योंकि वे भी परिधि से बाहर नहीं माने जा सकते है।''[37]

हर व्यक्ति संस्कृति के महत्व को जानता है। संस्कृति के तत्वों के आधार पर हमारा जीवन निर्भर रहता है। हमारे चेतना को प्रभावशाली बनाने का काम संस्कृति करती हैं, जिसके कारण हमारे अंदर सांस्कृतिक संवेदना के भाव उत्पन्न होते है। व्यक्ति दुव्यवहार करे वह एक ही सुत्र में बँधा रहने का काम संस्कृति करती है। बाबू गुलाब राय का कथन हैं कि ''संस्कृति देश-विदेश की उपज है, उसका संबंध देश के भौतिक वातावरण और उसमें पालित पोषित एवं परिवर्तित विचारों से होता है।''[38]

मनुष्य की जीवन निर्वाह धर्म, परंपरा, रीति-रिवाज तथा आचार-विचार से संबंधित होता है और इन सभी संचय ही संस्कृति है। समय बदलाव के साथ-साथ मनुष्य के जीवन में भी परिवर्तन आया। इसी परिवर्तन के अनुसार संस्कृति भी परिवर्तनशील है। भारतीय संस्कृति ने अनेक आघातों को झेला है, फिर भी उन्होंने अपने अस्तित्व की रक्षा की है क्योंकि वह निरन्तर गतिशील और विकासशील रही है। अनेक विदेशी जातिओं के समावेश के कारण संस्कृति नये-नये विचारों को अपनाकर 'वसुदैव कुटुम्बकम' की भावना समाज में स्थापित की। पाश्चात्य प्रभाव के कारण सभ्यता को संस्कृति का पर्यायवाची रुप माना गया लेकिन सभ्यता और संस्कृति में पर्याप्त अंतर है। मानव समाज को उन्नत करनेवाले साधन, अविष्कार

तथा सामाजिक संस्थानों से सभ्यता जुडी रहती है। द्विवेदी जी लिखते हैं-''ज्यों-ज्यों मनुष्य संघबद्ध होकर रहने का अभ्यस्त हो गया, त्यों-त्यों उसे सामाजिक संगठन के लिए नाना प्रकार के नियम कानून बनाने पडे। इस संगठन को दोष हीन और गतिशील बनाने के लिए उसने दण्ड-पुरस्कार की व्यवस्था भी की, इन बातों को एक शब्द में सभ्यता कहते है।''[39] मनुष्य के व्यवहार से निर्मित सामाजिक, राजनैतिक संगठन का समावेश सभ्यता में होता है। मनुष्य जीवन को प्रभावित करने का काम संस्कृति करती है।

सामान्यतः देश की आत्मा का नाम संस्कृति है। जिस प्रकार देश की प्रगती तथा पतन अधोरेखित होता है। भारतीय संस्कृति में विविधता पाई जाती है। अंग्रेजों के आगमन के परिणाम स्वरुप हमारी भारतीय जनता सांस्कृतिक उत्थान के प्रति उदासीन होने लगी जिससे मनुष्य का नैतिक पतन हो गया। आज मनुष्य अपने संस्कृति के प्रति जागरुक दिखाई देता है। उन्होंने समय के साथ बदलाव को स्वीकारा। गिरिजाकुमार माथुर का कहना है कि ''यह सत्य है कि संस्कृति की धारा विच्छिन और सतत प्रभावी होती है। यह अवश्य है कि प्रत्येक युग उस धारा से अपना नया सांमंजस्य और सन्तुलन स्थापित करता है तथा काल प्रवाह में उसके कुछ उपादान कुछ मानव-मूल्य घिस कर पुराने पड जाते है।''[40]

मनुष्य का सामाजिक विकास संस्कृति के कारण ही होता है। उसका प्रभाव साहित्य में जरुर पडता है। साहित्यकार समाज जीवन से जुडने के कारण वह संस्कृति के पभाव से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से जुड जाता है। कठोर आघातों को झेलने की क्षमता उसी साहित्य में है, जिस साहित्य में संस्कृति का निर्वाह होता है। समाज में रहते हुए साहित्यकार पर संस्कृति का प्रभाव न पडे ऐसा हो ही नहीं सकता। संस्कृति के बिना अपनी रचना का लेखन वह करें यह भी संभंव नही होता।

साहित्यकार प्रत्येक युग, प्रत्येक धर्म के साथ सांस्कृतिक संवेदना से जुडा रहता है। मानवीय संवेदना को अपने साहित्य में वह अभिव्यक्ति देता है।

6.6 इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण की कहानियों में चित्रित मानवीय संवेदनाः-

संवेदना यह एक मानसिक प्रक्रिया है। यह एक आरंभिक मानसिक प्रक्रिया है। आरंभिक मानसिक प्रक्रिया उसे इस लिए कहा गया है कि उद्दीपकों के बारे में ज्ञान हासिल करने के लिए अनेक प्रकार की मानसिक प्रक्रिया होती है। जैसे कि चिंतन करना कल्पना करना आदि। इन सबसे जो प्रक्रिया होती है वह है संवेदना। किसी विषय-वस्तु के संदर्भ में अगर तर्क करना है, तो उसके लिए आवश्यक है संवेदना होना। संवेदना अलग-अलग ज्ञानेंद्रियों द्वारा होती है। जैसे दृष्टि यह संवेदना का एक उदाहरण है। संवेदना को साहित्य में अनन्य साधारण महत्व है। दोनों का घनिष्ट संबंध है। किसी भी श्रेणी का साहित्यकार हो संवेदनाओं को चित्रित करता है। साहित्यकार अपने साहित्य में संवेदना चित्रित करता है। संवेदना के बिना साहित्य की रचना संभव नही है। यहाँ हम इक्कीसवी सदी में चित्रित मानवीय संवेदना को स्पष्ट कर रहे है-

6.6.1 मानसिक संवेदनाः-

साहित्यकार इस संवेदना के अंतर्गत समाज की मानसिक संवेदना को चित्रित करता है। इसके लिए घटना, प्रसंग महत्वपूर्ण होते हैं। सुनिता जैन की 'कालीरुपा' कहानी में एक स्त्री के सामने आनेवाली दशाओं का चित्रण किया है। इस कहानी की नायिका रुपा रंग काला होने के कारण उसकी शादी नहीं हो रही है। इसी कारण अपने ही परिवार जनों से उसे ताने सुनने पडते है। लेकिन काली होना उसका दोष है? उसकी भाभी भी उसे ताने सुनाती है।''[41] भाभी की बात में थोडा व्यंग होता है, अपनी ननंद के लिए जिसका रिश्ता कहीं ठीक नही हो पाया है और उम्र बबुल की

तरह बढ चली है। होठ काटकर रह जाती हूँ। दिल में कचोर उठती है। ''यहा रुपा की मानसिक संवेदना चित्रित हुई है। रुपा अविवाहित होने के कारण उसकी अपनी अलग समस्याएँ जारी हैं। समाज में अविवाहित रहने के कई कारण हमें दिखाई देते है। प्रेम का विरोध होने पर या घर में कमानेवाला न होने के कारण या सुंदरता न होने के कारण दहेज की वजह से, आयु बढने के कारण। सुनिता जैन ने अपनी कहानी में नारी मन की द्वंद्व स्थिति को उजागर किया है। नारी अपनी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और उसकी स्वतंत्रता का पूरा अधिकार देने की इच्छा सुनिता जैन ने कहानी में व्यक्त की है। कहानी में पात्रो की जो मानसिक संवेदना चित्रित हुई है, उन संवेदनाओं के अंतर्गत मन की प्रकृति, वृत्ति, दशा और क्रियाओं का भी विचार उन्होंने संवेदाओं के माध्यम से किया है। डॉ.मत्सेंद्रनाथ शुक्ल का कहना है कि ''सुनिता जैन में नारी और उसका मनोविज्ञान पक्ष का विस्तृत एवं सधन विश्लेषण व्यापक रुप में उपलब्ध है।''[42]

नारी मन की मानसिक जटिलता का चित्रण 'बिरथा जन्म हमारो' कहानी में हुआ है-''ठीक कहती हूँ माँ जी। ज्यादा पढी-लिखी मै नही हूँ शास्त्र कुछ पढे है। उनमें लिखा है, स्त्री और पुरुषों में शरीर का कर्म संतान की इच्छा से होना चाहिए। अन्यथा यह दुष्कर्म होगा व्याभिचार होगा। जब संतान होनी ही नही फिर यह कर्म कैसा? नहीं माँ वह तो अधर्म है, घोर पाप। मैंने उन्हें कह दिया है कि जिंदगी भर तुम्हारी सेवा करुँगी, तुम्हारे बच्चे को भी माँ की तरह पालूँगी। पर शरीर मेरा मत छूना कभी भी वह तो अर्पण कर चुकी हूँ कृष्ण महाराज को।''[43] सुनिता जैन की कहानी 'आशा' इस चरित्र को न चाहते हुए भी अस्पताल में वृद्धो के वार्ड में काम करती है। पति के दबाव के कारण आशा वहाँ काम कर रही है। 'मोहरें' कहानी की नायिका उस के मन में भी निरंतर मानसिक द्वंद चलता है जब वह अकेली बैठकर अपने स्मृति पटल को देखती है और बाद में उठकर वह अस्तपताल की आवाज सुनने

का प्रयत्न करती है और चाहते हुए भी उसे लगा वह कुछ सुन नहीं सकती हैं। उसे लगा वह एक 'वैक्युम' में है। एकदम अकेली कोई उसके साथ हैं तो सिर्फ उसका दिन-रात चलता भीतर के विकारों का महायुद्व।''[44]

नासिरा शर्मा की कहानी 'दहलीज' नारी जीवन की व्यथा को चित्रित करती है। सकीना, हुमैरा, शाहीन को आगे पढानों में उनका परिवार असमर्थ है, वही लडका जावेद को पढाने के लिए विदेश दिया जाता है। कहानी में तीनों लडकियों का मानसिक द्वंद चित्रित हुआ है। दादी सकीना से कहती है कि ''बँधी मुठ्ठी लाख की, खुली तो राख की। चुपचाप घर में बैठकर माँ का सिलाई में हाँथ बटाओं वरना तारिफ मियाँ की इज्जत पर राह चलते ढेले फिकेंगे - निगोडा मोहल्लन भी कैसा है, नदीदों का,-- जैसे औरतों की ताकझाँक में लगे रहेंगे दादी में अपनी सकीना को आगे पढाने में दिक्कत है, क्योंकि उसे लगता है कि पढी-लिखी लडकियाँ कही गलत का न कर बैठे।''[45] यह उसकी मानसिकता बनी हुई है। 'आबे तौबा' कहानी की सूसन एक काम काजी नारी है। शमशाद सेक्स पर बहस करके उसके अंदर सोये हुए सेक्स को जगाता है। ऑफीस में मीटिंग समाप्त हो जाने पर ऑफीस में दोनों ही है। ''युरोप में रहकर जाने कैसे समय का मूल्य न समझ सका? उसने पर्स उठाया, थोडा पहलू बदल कर उठने का उपक्रम किया तब ही बिना कुछ कहे उसे रोके, उसने सूसन को अपने समीप कर उसके गर्दन का चुम्बन ले लिया।''[46] शहजाद को लगता है कि कामकाजी नारियाँ अक्सर सेक्स की भूखी रहती है। उसकी यह मानसिकता का शिकार सूसन हो जाती है।

नारी की मानसिक अवस्था का चित्रण 'भरोसा' कहानी में हमें आशा के मन में सिर्फ शक के कारण मानसिक घुटन निर्माण हो रही है। उसके मन में अनेक विचार तथा उलझने निर्माण हुई है। मिस शर्मा अविवाहित नारी है। इस कारण उसके मन में अनेक शंकाएँ निर्माण होती है। लेकिन पुस्तक का काम जादा है कम समय में पूरा

करना यह बताकर 'यतीन' घर में देर से लौटता है। 'आशा' को बुरा लगता था, दिन भर तो ऑफिस में और शाम को मिस शर्मा के साथ काम। मिस शर्मा के यहाँ आशा जाती हैं-''खुले दरवाजे से मिस शर्मा के पलंग का कारानी बेड-कवर दिखाई दे रहा था और डबल बेड की उनलपी नरमाई। उसके कलेजे में बंद कोई चिडियों बडे जोर-जोर मन में यतीन के प्रति बैठा नहीं जा रहा है।''[47] यह सब देखकर उसके मन में यतीन के प्रति शंका और भी बढ जाती है।

6.6.2 पारिवारिक घुटन की संवेदनाः-

परिवार समाज की नींव है। सामाजिक संगठन का दूसरा नाम परिवार को सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके सदस्य रक्त-संबंधों द्वारा बँधे होते है।''[48] भारतीय संस्कृति में गृहास्थाश्रम को स्वर्ग के समान माना जाता है। धार्मिक कर्तव्य के पूर्ति, प्राप्ति, परिवार, सुख, सामाजिक एकता पुरुषार्थ की पूर्ति आदि उद्देशयों को पूर्ण करने के लिए विवाह किया जाता रहा है। अगर उसमें किसी भी कारणवश कोई पक्रिया असंतुलित हो जाए तो गाडी डगमगाने लगती है। परिवार में स्त्री-पुरुष को समान महत्व है। भारतीय संस्कृति का एक घटक है। 'सर्वेभवन्तु सुखितः' की कल्पना हम परिवार में ही पूरी कर सकते है। मनुष्य-मनुष्य में स्वार्थ की प्रवृत्ति बढने के कारण परिवार विघटीत हो गया।

पाश्चात्य संस्कृति तथा भौतिकता का बढता प्रभाव के कारण परिवार में सभ्यता की गरिमा नष्ट हो गई। समाज में परिवर्तन हुआ। संयुक्त परिवार को जीवित रखने के लिए समाज व्यवस्था असमर्थ रही। डॉ.सरला दुबे ने परिवार के विघटन को अंकित करनेवाली परिस्थियों को चित्रित करते हुए कहा है कि ''परिवारिक विघटन वह अवस्था है जिस में परिवार के सदस्यों में हितों, उद्देश्यो और व्यक्तिगत आकाक्षाओं की एकता के अभाव से उनमें प्रेम, सहयोगिता तथा

आत्मत्याग की भावनाएँ नहीं है। जिसके कारण परिवार अपने प्रमुख कार्यों को करने में असफल है और पारिवारिक जीवन सुखी नहीं है। आज परिवार में पारिवारिक स्नेह, ममता की, उत्तरदायिकत्व की अपसिमित भावना विद्यमान न होने से परिवार का विघटन हो रहा है।''[49]

आर्थिक विपन्नता, मूल्यहीनशिक्षा, स्वतंत्र की चाह, विलासी जीवन के कारण पारिवारिक संबंधों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जीवन के कारण पारिवारिक संबंधों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। संयुक्त परिवार की कडी चूर-चूर होकर एकल परिवार की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इक्कीसवी सदी के प्रथम चरन की कहानी में पारिवारिक घुटन की संवेदनाएँ चित्रित हुई है।

नासिरा शर्मा की कहानी 'पत्थरगली' में मुस्लिम परिवार में लडकियों पर अनेक पाबंद लगाये जाते है। 'पत्थर गली' में मुस्लीम औरतों की पीडा व्यक्त हुई है। कहानी में तीन युवतियाँ है। लडकियाँ होने के कारण वह स्वतंत्र निर्णय ले पाती। उनके बडे भाई साहब उन्हें कहते है-'' लडकियों को घर में रहना चाहिए। कमर पतली और हाथ मुलायम रखने की कोशिश करनी चाहिए। मर्दनुमा लडकियाँ औरतें नहीं होती है।''[50] दुनिया कहानी की शोभना द्वारा व्यर्थ पापिरवारिक संबंधो को चित्रित किया है। शोभना कॉलेज में अध्यापक की नोकरी करती है। अपनी पिता की खबर सुनकर भी वह अपने कार्य में व्यस्त है। पारिवारिक संबंधो में आयी गिरावट कहानी में चित्रित हुई है। शोभना का व्यक्तित्व का हीन ठहरना, किसी का न सुनना जो लाभ में जाता है, उसी को स्वीकार करना। अपनी सत्ता को संचलित करते हुए विस्तार की तरफ बढना।''[51] वह अपने पति से कहती है''-जब मैं जीते-जी नहीं गई तो अब जाकर क्या करूँगी? [52]

परिवार में पति द्वारा सुख न मिलने के कारण परिवार मे अशांति फैल जाती है। शादी के बाद तुरंत विघटन होना, आत्महत्या करना, दहेज, बलात्कार, गर्भावस्था के दिन शारीरिक पीडा, घर में अपमान, हिंसाचार, क्रूर व्यवहार जैसे व्यवहार का सामना उसे करना पडता है। डॉ.शेख रब्बानी लिखते है- ''दाम्पत्य संबंधो में तनाव के अनेक कारण दिखाई देते है। पति की सुदृढ स्थिति पति को बौनेपन का अहसास करवाती है और पति का अहंभाव असहज दाम्पत्य संबंधो को जन्म देता है।''[53]

सुनिता जैन की कहानी 'महानगर' में ऐसी दाम्पत्य तनावों को दिखाया गया है। दिल्ली जैसे शहर में आकर भी जो आवश्यक सुविधा है वहाँ नहीं मिल रही है। विजय और उसकी में आकर भी जो आवश्यक सुविधा है वहाँ नहीं मिल रही है। विजय और उसकी पत्नी पुत्र बिमार होने के कारण फोन करने के लिए वकील बाबू के यहाँ गये तब वहाँ उनकी शराब की आदत उन दोनों को पता चल गई। बाद में एक परिचित ने उन्हें खराब बाबू संबंधी बताया कि ''वकील साहब की घरेलु जिंदगी बहुत खराब हैं पत्नी बडी कर्कशा है। दोनों की बनती नहीं। वह है जिंदा दिल। बीबी साथ नही देती। नियमों की बडी कठोर और कायदों की पाबंद है। अमीर घराने की लडकी है। वकील साहब के पीने-पिलाने की पाबंद है। अमीर घराने की लडकी है। वकील साहब के पीने-पिलाने पर चिढती है और डरती कतई नहीं। औलाद कोई नहीं है। वैसे वकील आदमी भला है।''[54] आज की बिगडी पारिवारिक स्थितियों के कारण स्त्री के मन में तुफान उठने लगे है। इसलिए 'खटरग' कहानी महत्वपूर्ण है। इस कहानी में सुधा को गृहस्थ जीवन में अनेक घरेलु या पारिवारिक परेशानियों का सामना करना पडता है। सुधा का पति उसके साथ हमेशा झगडा करता है। बच्चों के सामने सुधा को फटकारता है। उसके पति का मानना है कि ''औरत को चाहिए कि पहले घर देखे, बच्चे पाले ना कि किताब-उपन्यास पढ़ती रहे।''[55]

आज भारतीय नारी कितनी दीन-हीन और असहाय हुई। मैत्रेयी पुष्पा, कुसुम अंसल, शिवानी, सुर्यबाला जैसी महिला लेखिकाओं ने नारी की स्थिति का चित्रण अपनी कहानी में किया है। मेहरुन्निसा परवेज की 'शिनाख्त' कहानी का पति पक्का शराबी और विवेकहीन पुरूष है। वह प्रत्यक्ष अपने बेटी को वासना का शिकार बनाता है। जब उसकी मौत हो जाती है, तब पुलिस के पूछने पर उसकी शिनास्त करने से इन्कार करती है। कहानी मनुष्य की घिनौने वृत्ति का दर्शन करवाती है। शिवानी की कहानी 'कैजा' के सुरेश ने अनेक नारियों को भोगा यहाँ तक एक पागल औरत को भी भोगा था। नंदी से वह पुछता है-'' उसके पिता से मिलकर भी क्या तुम उसका पिता दे पाओगी नंदी।''[56] अमृता ठाकुर की कहानी 'बरक्स' में पति-पत्नी के बनते बिगडते हालात को चित्रित किया है। पति चाहे कितनी भी गलतियाँ करे, पर पत्नी के गलती पर उसे माफ नहीं करता। राजी सेठ की कहानी 'यही तक' कहानी संग्रह की कहानियाँ स्त्री मन की कहानियाँ है।

आज स्त्रियाँ अपने अस्तित्व की लढाई लढ रही है। अपनी व्यथा वेदना को, अपने संघर्ष एवं सपनों को स्वयं व्यक्त कर रही है। परिस्थितियाँ बदलती है, समाज बदलता है परंतु स्त्री की करुणामयी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता। इक्कीसवी सदी के कहानिओं में परिवारिक घुटन को चित्रित कर नारी मन में क्रांति की संवेदना को भी जगाने का प्रयास हुआ है।

6.6.3 आर्थिकता के प्रति व्यक्त संवेदनाः-

आज अर्थ के प्रति समाज का आकर्षण बढ गया है। अर्थ प्राप्ति के लिए अवैध धंन्दे को बढावा मिल रहा है। समाज, राज्य तथा देश के विकास में अर्थ का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। मनुष्य की आर्थिक स्थिति पर उसका रहन-सहन, खान-पान अवलंबित होता है। आर्थिक अभाव में जीनेवाला व्यक्ति अत्याचारों को सहते हुए

अपमानित जीवन जीता है। आज आर्थिक अभाव में से जुझने वाले परिवार मेहनत, मजदूरी करते है। समाजमें धनी वर्ग या उससे नीचे मजदूर वर्ग की ऊपर अपनी हुकूमत करना चाहता है। आर्थिक शब्द से तात्पर्य ''द्रव्य संबंधी धन संबंधी माली।''[57] मनुष्य आत्मनिर्भर बनने के लिए नोकरी व्यापार, व्यवसाय, कृषिकार्य को आधार बनाता है। धन की लालसा से दूसरे व्यक्ति का शोषण आरंभ हो जाता है। अमीर-गरीबी के बीच की दूरी बढ जाती है। अर्थ के कारण मनुष्य समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करते है। ''पूँजीवादी ने ही समाज को वर्गो में विभाजित किय है। निम्न और उच्च वर्ग के बीच विभाजक रेखा खींचने वाली पूँजीवादी व्यवस्था के कारण ही सर्वधारा अर्थात मजदूर वर्ग का शोषण होता आया है।''[58] आज इस बहुरंगी समाज में जिसके पास पैसा है उसकी ही लोग तारीफ करते है। अमीर-गरीब इस वर्ग विभाजन के कारण अनेक संघर्ष का जन्म होता है। डॉ.सुरेश बाबर ने उचित लिख है। कि ''सामंती व्यवस्था में शोषण का प्रत्यक्ष था किन्तु पुँजीवादी व्यवस्था में यह शोषण छिपे तौर पर चलता है। पूँजीवादी व्यवस्था जमीदार या सामंत वर्ग की भाँति शोषितों को प्रत्यक्ष रुपसे कोई शारीरिक कष्ट नहीं देता, बल्कि वह उसको जोंक की तरह चुसती रहती है और उसके सभी अंगों को खोकला बनाती है। पूँजीवादी उस व्यवस्था का नाम है, जिसके अंतर्गत भूमि कारखानें और औजार आदि से भूस्वामियों और पूँजीपतियों के अधिकार में होते है।''[59]

आर्थिक अभाव में कारण जीवन जीना दुष्कर हो जाता है। आर्थिक विषमता के कारण समाज विभिन्न श्रेणियों और अनेक संघर्षो के स्वरुप को निर्धारित करता है। दोनों वर्ग में संघर्ष की भावना अपने आप निर्माण हो जाती है। सुनिता जैन की कहानियों में मध्यवर्ग या निम्न वर्ग की आर्थिक समस्याओं के कारण निर्माण हुई उलझनों को दिखा गया है। सुनिता जी की 'तिग्गी' कहानी इस प्रकार की कहानी है, जिसमें छिम्मी को अपनी परिस्थिति के कारण दूसरों के घर जाकर घर का काम

करना पडता है। उस कारण वह अपने बच्चों की पढाई भी नहीं कर सकती है। बेटियों के विवाह की जिम्मेदायिँ उस पर है। अपने दोनों बच्चियों की शादी एक ही मंडप में एक ही घर के दो बेटों से कर देती है ताकि खर्च की बचत हो। पूछने पर वह बताती है-''खर्च कम होता है, और बहने एक दूसरे के काम भी आती है।''[60] इसी कहानी में आगे तिग्गी चौबीस वर्ष की आयु में ही विधवा हो जाने के कारण उसका देवर घर की जिम्मेदारी उठाता है, उसके बदले वह तिग्गी से संबंध रखना चाहता है। आर्थिक निर्धनता के कारण अनेक समस्याओं का सामना उन्हें करना पडता है। इस विषय में कात्यायनी का कहना है-''औरत का यौन शोषण मात्र इसी आधार पर नहीं होता कि औरत औरत है। यह इसीलिए संभव हो सकता है कि उसकी सामाजिक हैसियत घर-बाहर सर्वत्र दूसरे दर्जे के नागरिक की और इस सामाजिक हैसियत का ताल्लुक उसके आर्थिक शोषण से है।''[61] इसलिए सुनिता जैन की कहानी में मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक परिस्थिति का अंकन किया गया है। घर में पिता की मृत्यु के बाद घर का बेटा माँ से पैसों के कारण झगडा करता है। उसे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना है। माँ के सर के ऊपर बेटियों की शादी की जिम्मेदारी है, इस कारण माँ पैसे बचाकर रखती है। ''--मै कह रहा हूँ कि मुझे पाँच हजार रुपये चाहिए--।'' पर कह दिया न, मेरे पास नहीं है, बार-बार क्यों कहता है।'' ''इसलिए कि मुझे वह प्लैट बुक करना है और पहली किस्त देनी है--। ''कैसे नहीं है। पापा की बीमा सब तुम्हारे पास है कि नहीं।'' ''राजीव शर्म कर बीमे की बात करता है। लडकियों की शादी करनी है कि नहीं--।''[62]

नासिरा शर्मा की 'आखिरी पहर' कहानी आर्थिक विपन्नता झेलने के लिए विवश जाहेदा की कहानी है। बाल्य व्यवस्था में विपन्नता झेलने के लिए विवश जाहेदा की कहानी है। बाल्या व्यवस्था में हुई विधवा के सामने अपने पेट भरने की अनेक समस्या खडी है। गाँव से शहर आकर वह कुछ काम करना चाहती है। लेकिन चारों

तरफ देखी बेकारी, मँहगाई को देखकर चुप हो जाती है। 'दहलीज' कहानी गरीबी पर प्रकाश डालती है। पिता के मौन के बाद घर का सारा बोझ सामिन पर आ पडा है। पिता के पेंशन के रुपये बन्द हो गया। घर का खर्च चलाने के लिए सकीना की पढाई बंद करनी पडी। जावेद अपने पिता की तरह क्लर्क की नोकरी नही करना चाहता। जावेद अपनी दीदी से कहता है-''बडी-बडी रकमें देकर नौकरियाँ मिलती है, या फिर पैसा हो जो हमारे पास नही है न पैसा न सोर्स-- मैंने सोच लिया है कि बाहर जाऊँगा दुबई सिंगापूर।''[63] पिता के मौन के बाद पेंशन बंद हो जाने के कारण घर की आर्थिक स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। सभी को गरीबी में जीवन यापन करने के लिए विवश होना पडता है।

भारत में आज बाल मजदूरी की समस्या बढ रही है। गरीबी और शिक्षा का अभाव जिसके कारण यह मजदूरी बढ रही है। बाल मजदूरी पर शासन द्वारा कई प्रतिबंध लगाये गये पर वह पूरी तरह समाप्त नहीं हो पायी है। बाल मजदूरी के संदर्भ डॉ.शाकिर शेख का मत है कि ''जब नाबालिक बालक किसी कारण वश परिश्रम कर धनोपार्जन करता है उसे बालमजदूरी कहते है।''[64] आर्थिक विवशता के कारण बाल मजदुरी करने के लिए विवश होना पडता है। कैलासनाथ गुप्त ने अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा हैं-''बालश्रम के सहायक अनेक कारण हैं जैसे भूख, गरीबी, शिक्षा का अभाव दुःख, जीवन की मुलभूत आवशयकताओं का पूरा न होना चिंता, पारिवारिक कष्ट, तनाव, पारिवारिक विघटन, बेकारी, जिज्ञासा, पारिवारिक अनुशासन की कमी, औद्योगिकरण, फिल्में, नशाखोरी तथा उपेक्षित व्यवस्था आदि।''[65] 'गलियों के शहजादे' कहानी में कचरा बीनकर उसे बेचनेवाले निराधार बालकों का चित्रण है।'' इन लडकों का जिनकी उम्र आठ से पन्द्रह वर्ष तक थी। कोई ठाव-ठीकाना नहीं था। कहीं भी रात को जगह मिलती पसर जाते थे।''[66] 'बात' कहानी की विधवा सुरती अपने बेटे को पढने के लिए मजदूरी करती है। पतिके मृत्यु

के बाद उसे आर्थिक संकट का सामना करना पडता है। वह कहती है कि ''साडी में फाल लगाएंगे, मोहल्ला की बेटी पतोह का फ्रॉक-ब्लाऊज सीकर, स्वेटर, शाल बुनकर गुजारा करेंगे। बी.ए.पास है कहीं कोनों काम कर लेंगे, टयूश्न पढा लेंगे।''[67]

निरुपमा सेवती की कहानी 'माँ' यह नौकरी छोड दो एक ऐसी कहानी है जो अपने बेटे की शिक्षा के लिए अफसर के यहाँ रसोई बनाने का काम करती है। साहब उसके साथ पत्नी जैसा व्यवहार करता है। लडका अपने माँ से नौकरी छोडने के लिए कहता है, पर दूसरी जगह नौकरी करने पर भी ऐसे ही साहब मिलेंगे वह अपने बेटे की पढाई के लिए यह सब बर्दाश्त करती है। 'आवाजें अँधेरे की' की कहानी बीडी बनाने वाले मजदूर की लडकी की कहानी है। कहानी में गरीबी का मार्मिक चित्रण हुआ है। फरीदाने चाहा मजदूर करे। जब वह ठेकेदार के पास काम मांगने गई तो पचास वर्ष के जुम्मन मिस्त्री की नजर उस पर पडती है। वह उसे कहता है ''तू छोकरी --ज्यादा है, अरे जिस्म को क्या चाहेगी? मैं भी रोटी को तरस रहा हूँ। दवाई की कमी नही रहेंगी।''[68] कहानी द्वारा अपना पेट पालने के लिए विवश गरीब नारी का चित्रण हुआ है।

6.6.4 अकेलेपन तथा एकाकीपन की संवेदनाः-

आज के आधुनिक युग में मनुष्य अधिक स्वार्थी बन गया है। मनुष्य का जीवन पूरी तरह यांत्रिक होता जा रहा है। मनुष्य वैज्ञानिक प्रभावों के कारण भावना शून्य होता जा रहा है। उसके पास किसी के लिए वक्त नहीं है। अपनी खुद की जिंदगी भी वह निरसता के साथ जी रहा है। आज ''हर कोई भीड में रहकर भी अकेला होने लगा। जिसकी परिणति तमाम तरह के मनोवैज्ञानिक रोगों में हो रही है जो हमें अपने चारों और दिखने लगे है। हर कोई खुद को असुरक्षित और अवसाद

से घरा पाने लगा है।''[69] मनुष्य आज जितनी तेजी से प्रगती की और जा रहा है, उतना ही वह समाज से दूर जा रहा है।

भौतिक प्रगति के कारण समस्त समाज का ढाँचा ही बदल गया। पुष्पपाल सिंह का मत है-''मानवीय संबंधों को बेमानियाँ बेमतलब का बोझ देने की रस्म बना रहा है।'' [70]

मनुष्य स्वयं संवेदना रहित बन गया है। महानगरों में नैतिक मूल्यों के मानदण्ड बदल चुकें हैं। नासिरा शर्मा की 'विरासत' कहानी में बढते शहरीकरण की प्रवृत्ति के कारण परिवार का विघटन चित्रित हुआ है। आज महिलाओं का एकाकीपन के संदर्भ में मानसशास्त्रीय दृष्टि से विचार करे तो उन्हें वह एकाकीपन के संदर्भ में मानसशास्त्रीय दृष्टि से विचार करे तो उन्हें वह एकाकीपन अच्छा लगता है। ज्यादा तर महिलाओं को एकाकी समस्या बनती जा रही है। हम देखते है कि पारिवारिक की एक समस्या बनती जा रही है। हम देखते है कि पारिवारिक जीवन में सुख की प्राप्ति न हो, पति-पत्नी के संबंध में सुख की प्राप्ति न होना यौन शोषन, प्रेम में असफलता, आत्मकुंठ, ऑफिस में बाँस का दबाव आदि कोरणों से महिलाओं में एकाकीपन की भावना निर्माण होती है। एकांत और उसके बाद अकेलेपन का अनुभव, असुरक्षा, चिंता, निराशा, अयोग्यता, अर्थहीनता और भावनाओं में असंतोष प्रकट होता हुआ हम देख सकते है। अक्सर अकेला मनुष्य लगातार एकाकी बन जाता है। आज मनुष्य के सामने एकाकीपन यह एक समस्या बन गई है। उसके जीवन में तनाव बढ जाता है। वह मुत्यु के करीब पहुँच जाता है। जीवन में भय बढ जाता है।

सुनिता जैन की कहानियों को पढने से पता चलता है कि उनकी कहानियों में ज्यादातर एकाकीपन की समस्या है वह प्रेम की असफलता या दाम्पत्य जीवन में आनेवाली समस्याओं के कारण ही निर्माण हुई है। 'किधर' इस कहानी में जगदीश

और रीवू पति-पत्नी है, लेकिन क्बीलैंड में जगदीश को नौकरी न रहने के कारण वह 'बोस्टन' में नौकरी कर रहा है। रीवू जगदीश से प्रेम करती है, उसे जगदीश के प्रति अधिक लगाव है। पर बोस्टन में जाकर जगदीश के घर में ही ऑफिस की अन्य दो लडकियों को देखकर रीवू हताश हो जाती है। वापिस आने पर उसके मन में बार-बार यही विचार आ रहे थे। वह जगदीश के संबंधित बातें सोचती है और अपने आप को बिल्कुल ही एकाकी और अकेला महसूस कर रही थी। अकेलेपन से छूटकारा पाने के लिए वह बच्चों को साथ्झ लेकर इंडिया चली जाती है। अकेलापण अब उससे सहा नहीं जा रहा था।

'परदेश' कहानी में रुपा जब डॉक्टर के पास गई तो डॉक्टर कहते है कि ''अगले सप्ताह आप इसी समय आइए। तब भविष्य के लिए कुछ सुझाव खोजेगें ताकि आपकी असली बीमारी है एकाकीपन उसे दूर किया जा सके और अगर इससे पहले आप जरुरत समझे तो फोन कर लीजिएगा।''[71] शादी के उपरान्त भी रुपा अकेलेपन की समस्यासे ग्रस्त जिंदगी उसे जीनी पडती है। 'सरसी धरती' कहानी में डॉ.नाजनीन इसी समस्या से ग्रस्त है।

नासिरा शर्मा ने अपनी कहानीओं में एकाकीपन की जिंदगी जीनेवाले लोगों की मानसिकता का चित्रण किया है। 'तलाक' ऐसी कहानी है जिसमें तलाक की शिकायतें दर्ज है। अपने पति से तलाक लेकर औरते एकाकीपन जीवन जीना चाहती है। 'यही तक' कहानी वर्तमान जीवन के पारिवारिक संबंधों पर प्रकाश डालती है। मोबाईल नया इंटरनेट के माध्यम से दूर-दूर तक संवाद स्थापित किये जा सकते है। परंतु आज घर के सदस्यों में कई महीनों तक संवाद नही हो पाता। पति-पत्नि, पिता-पुत्र में संवाद नहीं हो पाता। पिता सोचते-''हाथ ही हाथ होते है विचारों तरफ याचक कोंसते हुए। आँखे ही आँखे भर्त्सना करती हुई प्रश्न पुछती हुई क्यों उनके पास सबकुछ नहीं जो दूसरों के पास है? क्यों रुखी रोटी है, रोटी पर पिघलते

मख्खन की तरावट नहीं, क्यों कमरे है, ड्राईग रूम बेडरुम नही? खरीखरी खाटें है, पलंग और सोफे नही? यह सब मात्र उससे पूछा जाता है जो केंद्र में होता है-घर का अकेला आक्रांत मुखिया।''[72] 'एक भटकता मन' अग्नीहोत्री की कहानी पति प्यार में तडपती पत्नी का एकाकीपन चित्रित हुआ है। वह अपने पति से कहती है-''चले आओ ना। कितनी बार बुला चुकी हूँ। जितना मैं तुम्हारे पास आती हूँ, तुम उतना ही दूर भागते जाते हो इस लुका-छुपी में मै तंग आ चुकी हुँ। तुम्हें जो नौकरी पसंद नही थी, उससे सुलह कर, क्या हम दोनों अकेली बिंदू का पेट नही भर सकते? इतना भी क्या तुम मुझे नही दे सकोंगे।''[73]

मृदुला गर्ग, शिवानी, राजी सेठी, नासिरा शर्मा, मंजुल भगत, सुर्यबाला, कुसुम अंसल ऐसी अनेक लेखिका है, जिन्होंने अकेलेपन तथा एकाकीपन जीवन जीने वाले व्यक्तियों की जिंदगी को चित्रित किया है।

6.6.5 प्रेम संवेदनाएँः-

समाज में रहने के लिए जिस तरह मुलभूत आवश्यकता होती है। प्रेमसे ही दोनों में अपने पन की भावना निर्माण होती है। वासना का अधिक्य में प्रेम में दिखाई देता हैं। डॉ.रश्मि बजाज कहती है-''उनके लिए प्रेम मात्र देह-व्यापार न होकर देह, मन व आत्मा का संयुक्त आवेग है। चूँकि मात्र 'जीभ' व जाँघ का भूगोल उन्हे नहीं रचना।''[74]

प्रेम मानव के लिए सर्वोच्च वरदान माना जाता है। प्रेम का मूलाधार आत्मा है। जिसका प्रकाशन चित्त और इंद्रियों से होता है। प्रेम सभी जाति, धर्म के ऊपर है। प्रेम एक ऐसी संकल्पना है, जिसमें स्त्री और पुरुषों के शारीरिक और भावनात्मक आकर्षन के कारण प्रेम रुपी मनोभाव निर्माण होते है। डॉ.विमलेन्दु गुप्त के अनुसार-''स्त्री पुरुष के बीच गहरी आसक्ति, जिसमें परस्पर सहानुभूति, निष्ठाा,

अण्डरस्टैडिंग, वफादारी हो और इससे भी अधिक एक दूसरे के लिए गहरी संवेदना हो उसे प्रेम कहते है।''[75]

इक्कीसवी सदी की प्रथम चरण कहानियों में प्रेम की दोनों भावना का चित्रण हुआ है। एक तरफ वासना से भरा प्यार तो दूसरी तरफ वासना रहित प्रेम। हम यह भी कह सकते है कि अधिकतर कहानियों में प्रेमतत्व को ही महत्व दिया जाता है। सुनिता जैन की ज्यादातर कहानियों में प्रेम की सुंदर अभिव्यंजना हम पाते है। सुनिता जैन की अपेक्षा मन में पवित्र प्रेम की भावना रखना आवश्यक है। उनकी कहानियों में प्रकृति के प्रति प्रेम, ईश्वर के प्रति प्रेम अभिव्यक्त हुआ है।

'' सुनिता जैन की 'निदान' कहानी में मीरा अपने से भी बडे आयुवाले रासे शादी करती है समय मीरा की उम्र सिर्फ साल की और राज की 32 साल की थी। शादी के कुछ दिन बाद ही राज का उसकी भतीजी सरिता के साथ प्रेम हो जाता है और वह सरिता के साथ अनैतिक संबंध बढाता है। उसी कारण मीरा को पति का प्रेम नहीं मिल पाता। वह डॉक्टर के पास जाती है डॉक्टर कहते है-''मिसेस नारायण आप बिलकूल स्वस्थ है। उसका निदान 'सेक्स' है मिसेस नारायण देखिए अपसेट होने की बात नही। आप विवाहित है, आकर्षक है मेडिकल की दृष्टि से 'यू नीड टू हैव मोर सेक्स।''[76]

'सरसी धरती' कहानी में प्रेमभंग का वर्णन चित्रित हुआ है। 'आभा सतीश से प्यार करती है पर सतीश कुछ दिन आभा के साथ रहकर बाद में जूली नामक लडकी के साथ मिलने-जुलने लगता है। सतीश के बर्ताव के कारण आभा हताश हो जाती है। 'क्लियोपेटो' कहानी में प्रेम की गहराई का चित्रण हुआ है। 'सुख्यी' कहानी में एक तरफा प्रेम दिखाया गया है। सूख्खी राजू से एक तरफा प्रेम का वर्णन करके उसे हँसी-मजाक में लेता है। कहानी में एक तरफा प्रेम का वर्णन करके मानसिक क्लेशों

को प्रस्तुत किया गया है। 'कहानी की खोज' की नायिका 'शुभा' की शादी 'सुमाल' नामक युवक से हो जाती है, पर वह 'शुभा' विजय नामक लडके साथ प्रेम करती है। उस कहानी में एक हॉटेल में विहोपरांत विजय को देखकर शुभा और विजय के साथ बिताऐं प्रेम क्षण की बातें होती है-''अतीत के कोहरे में खेई याद एकइउभरती चली आयी--हिन्दी पार्क की बेंच पर दिसंबर की ठिठुरती शाम--अंधकार की ओर दोनों हाथों में बंदी कर-- विजय का चेहरा झुका है। ताजे आसूओं से भंग रहा चेहरा दर्द से कम्पित हो--सहमीसी आवाज--शुभा मै कैसे जिऊँगा--तेरे बिना--शुभा-- तू मुस्लिम होती में आज ही मुसलमान हो जाता पर पंजाबी से जैन कैसे बन जाए शुभा--कैसे तेरे बाबुजी--।''[77]

नासिरा शर्मा की कहानी 'खुशबू का रंग' में आत्मसमर्पण की भावना चित्रित हुई। कहानी की नायिका सत्ता संघर्ष में मारे गये अपने प्रेमी की याद में जीवनायापन करती है। कहानी की नायिका अंत में प्रेमी की कब्र के पास जाकर स्वयंम को दफन होने की प्रार्थना करती है। कहानी प्रेम की आत्मियता को चित्रित करती है। 'गली घुम गई' कहानी में मिनी रोहित से प्रेम करती है। किंतु उनका विवाह नहीं हो पाता अपने भाई और बडी बहन का विवाह होने तक वह शादी नहीं करना चाहती। रोहित द्वारा पुनः संपर्क आने पर पता चलता है कि वह शादी-शुदा है, तब वह शादी न करने का निर्णय लेती है। 'बंद दरवाजा' कहानी में शबाना अपने पति से बेहद प्यार करती है लेकिन पति के पिता के कारण दोनों को अलग होना पडता है। पिताजी जमीर को धमकाते हुए कहते है-''एक औरत के लिए जमीर की पुकार तुम्हें बेकरार कर रहीं हैं? नालायक, अगर अब मैंने उसके साथ तुम्हें देखा तो जायदाद से अलग कर दूँगा समझे।''[78] नासिरा शर्मा ने अपनी कहानिओं द्वारा अनैतिक प्रेम संबंधों का भी जिक्र किया है। उनकी 'दुसरा ताजमहल' कहानी की नयना विवाहित होते हुए भी रविभूषण नामक विवाहित पुरुष के साथ प्रेम करती है।

देर रात तक फोन पर दोनों के बीच प्रेम की बातें चलती है। उस प्रेम के कारण नयना के जीवन में बदलाव आ जाता है।'' उसमें थकान की जगह खुश मिजाजी आ गई थी। सजने-संवरने की इच्छा के चलते उसने क्रीम सेंट का ढेर लगा दिया और हर रात रविभूषण के बुलावे पर उसका मन बंबई जाने को मचलने लगा। उसे अपने घर में ओर एक घर नजर आने लगा। बातों की लय में दोस्ती का अनुराग मर्द-औरत की चाहत में बदल चुका था।'' [79] कहानी में स्वार्थ प्रेम का चित्रण हुआ है।

अग्निहोत्री की कहानी 'एक भटकता मन' पति के प्रेम विरह में भटकते मन का चित्रण है। कहानी में एक आदर्शवादी पत्नी का चित्रण है। वह पति के प्रेम की प्यासी है। पर वह दूसरे व्यक्ति के साथ विवाह नहीं करती। अतः इक्कसवी सदी के प्रथम चरण के हिंदी कहानीकारोंने प्रेम की संवेदना को अनेक धरातल पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

6.6.6 आत्मपीड़न या पीड़न की संवेदनाः-

मन की अभिलाषा पूरी नह होने पर मनुष्य को दो प्रकार की कुंठा निर्माण होती है एक आत्मपीडन की और पर पीडन की। परपीडन से ग्रस्त मनुष्य को अक्सर दूसरों को पीडा पहुँचने का काम करता है।- फ्राइड के अनुसार ''मानव के उच्चरण का अधिकांश भग मनोग्रंथिओं द्वारा प्रभावित होता है।''[80] व्यक्ति अपने इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए दूसरों को शोषण करता। ऐसे मनुष्य परपीडन कार्य में अधिक रुचित रखते है। ऐसे व्यक्तिओं में क्रमहीनता दिखाई देती है। इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकार ने इस संवेदना को प्रखरता से चित्रित किया है।

आज समाज में नारी को दुय्यम स्थान दिया जाता है। उसके संबंध में निर्णय सभी मनुष्य जाति पर निर्धारित रहते है। अपनी इच्छा के विरुद्व उसे शादी करनी पडती है। आज समाज में अनमेल विवाह होते है। आधुनिक युग मे आज मनुष्य

संवेदनाहिन होता नजर आ रहा है। आदमी जब संवेदनशील होता है, तब उसे दूसरों की वेदना भी बैचेन कर देती हैं और वह पर अनुभूति को स्वानुभूति के द्वारा समझ सकता है। किंतु आज ऐसे कितने आदमी है, जो परपीडा को आत्मपीडा के रुप में सवीकार कर मनुष्य को पीडासे मुक्ति देने की मानवतावादी कोशिश करते हैं। आज तो मनुष्य-मनुष्य को पीडा देने मे धन्यता मानता है। दूसरों की बदबादी में उसे आनंद मिलता है। इस तरह मनुष्य संवेदनहीनता से जीवन जीता रहेगा तो मानवता की हत्या होती रहेगी।

'पडोसन जीजी' सुनिता जैन की इस कहानी में आत्मपीडन का उदाहरण हम देख सकते है। इस कहानी की नारी पति और सांस के शकी स्वभाव के कारण आत्महत्या करती है।''एकाएक समझ न सकी बेचारी। बडी भोली थी। मुँह में जुबान तो थी ही नहीं।--क्यों? लोग एक दूसरे से पूछ-पाछ कर रहे थे।''[81] मेहरून्निसा परवेज की 'शिनाखत' कहानी में पति शराबी है। उसने बहुत सारी औरतों को भोगा था। इतना ही नहीं अपनी बेटी को भी वासना का शिकार बनाना चाहता है। उन्होंने अपनी पत्नी को बहुत पीडा दी थी। इस घिनोने वृत्ति के कारण उसका परिवार पूरी तरह तहस-नहस हो चुका था। शिवानी की 'कैजा', अमृता ठाकूर की 'बरक्स', नासिरा शर्मा की 'दहलीज,' 'बंद दरवाजा,' राजी सेठ की 'यही तक' कहानियाँ नारी की आत्मपीडन को चित्रित करती है।

नासिरा शर्मा की कहानी 'दहलीज' में नारी जीवन की पीडा को चित्रित किया गया है। लडकी होने के कारण सकीना शाहीन, हुमैरा को आगे पढाने में परिवार असमर्थ है। वह लडका जावेद को पढाई के लिए विदेश भेज दिया जाता है। तीनो की पढाई बंद कर उनका शोषण किया जाता है। समाज में आज अज्ञान एवं अशिक्षित होने के कारण कम उम्र में ही बालिकाओं का विवाह जैसी कुप्रथाओं पर बलि चढा देते है। गरीबी, दहेज, अशिक्षा के कारण अधिकार माता-पिताओं की इच्छा होती है

कि किसी तरह उसका विवाह हो जाए। वही पुराना कानुन कहानी बालविवाह का चित्रण करती है। कहानी की नायिका रज्जो भी एक अनाथ लडकी का पालन-पोषन करती है। उसे पता है कि अविवाहित लडकी के प्रति युवकों के मन में वासना भरी रहती है। इसलिए जाहिदा विवाह की उम्र से पहले तय करती है। रज्जो भी जानती है-''जवान लडकी बुढे मर्द के साथ खुश नहीं रह सकती, मगर वे जवान शोहर जो और का जीना दुभर कर देते है, उनसे औरत कैसे बचे।''[82] शारीरिक तथा मानिसक त्रासदियों का चित्रण कहानी में हुआ है। मालनी जोशी की 'कोहरे के पार', शशिप्रभा शास्त्री की 'अगरबत्ती' मेहरुग्निसा परवेज की 'आकाश नली' कहानियाँ आत्मपीडन की कहानियाँ है।

6.6.7 जीवन मूल्यों के प्रति संवेदनाः-

आदर्श जीवनयापन करने के लिए आवश्यक है, नैतिक मूल्य ही समाज में मानवतावाद स्थापित कर सकते हैं। नैतिक मूल्य हमारे संस्कार का एक भाग है। यह संस्कार हमें संस्कृति से प्राप्त होते है। संस्कृति का एक भाग है। यह संस्कार हमें संस्कृति से प्राप्त होते है। संस्कृति का मूल आधार हम नैतिक मूल्यों को मानते है। समाज को एकसूत्र में बाँधने की क्षमता मूल्यों में है। आई.ए.रिचर्ड की तुलना में साहित्यकार का दायित्व अधिक गुरु होता है। साहित्यकार से भिन्न, अन्य सभी विद्ववानों का संबंध जीवन अथवा संस्कृति के किसी एक पहलु विशेष से होता है। जबकि साहित्यकार का दायित्व पूरी संस्कृति के मूल्यात्मक विकास का दायित्व है।''[83] साहित्य सामाजिक, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना करता है। साहित्य अमंगल अहितकारी तत्वों को हटाकर समन्वयपरकता, समवर्तनशीलता, सहिष्णुता, सहनशीलता की स्थापना करता है। एच.एम.जान्सन का कथन है कि ''मूल्यों को एक धारना मानकर रुप में परिभाषित किया जा सकता है। यह धारणा संस्कृति हो सकती है। और व्यक्तिगत भी। उसके द्वारा उचित या अनुचित, स्वीकार्य या

अस्वीकार्य अच्छे या बुरे शास्त्रीय विवेचन किया जाता है और नैतिकता की कसौटी पर परखा जा सकता है। value may be defind as a conception or standard cultural or merely personal by which thing are compared and approved or disapproved relative to one another held to ve elatively desirable or under sirable[more meritorious or less correct" [84]

हमारे संस्कार हमारी संस्कृति का अंग है। संस्कृति ही मानव समाज की अलग पहचान बनाती है। साहित्य मानव मन की सुखती संवेदनाओं को जगाकर उसे अमानवीय होने से बचाकर मंगलमयता की ओर प्रेरित करती है। लेकिन आज मुनष्य का विचार करने का तरीका बदल गया है। सुनिता जैन की 'लक्ष्मण रेखा' कहानी सामाजिक मूल्यों को प्रस्तुत करती है। आज कल पैसो के आधार पर अपनी काम वासना पूरी की जाती है। यह काम युवक वर्ग के हाथों से अधिक होता है। इस कहानी में 'विशु' जो जीजी का 'छोटा देवर है, वह जीजी से बात करते समय बताता है कि '' जहाँ। से तुम टी.वी.सेट खरीद कर लायी हो। उस जगह जो लडकी काम करती हैं- याद हैं? हाँ, अच्छी थी दिखने में, पर कुछ बदतमीज जरुर थी। क्यों न हो नौकरी तो दिखाने को है। साढे तीन सौ लेती है। दोस्तों के कई संडे बडे मजे में कटे है उसके सहारे--।''[85] अधार्मिक और नास्तिक व्यक्ति में दुराचार और अकर्म कूट-कूटकर भरे होते है। कुछ सामाजिक तत्वों और मानसिक रुपसे कुंठित लोगों के कारण नैतिक पतन हम देख सकते है। परिवार में हम बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकते है। इसी कारण हम बच्चों को नैतिकता की प्रयोगशाला भी कह सकते है। सोचा जाए तो यह प्रश्न उठता है कि आए दिन राजनैतिक, सामाजिक और पारिवारिक घटनाओं का एक ही कारण है नैतिक पतन। यह नैतिक पतन का कारण है, बढती आबादी। भारत जैसे देश में पाश्चात्य जीवन शैली का समावेश जीवन मूल्य के बारे में डॉ.वि.य.कुलकर्णी तथा डॉ.माधव पोतदार ने कहा है-''जीवन मूल्य

क्या है? यह सवाल आसानी के साथ मन में उभरता है। व्यवहार के मूल्य एवं कीमत इन दोनों शब्दों में कोई फर्क नहीं है लेकिन काफी मात्रा में फर्क है। मनुष्य के मनसे, बोल-चाल वाले जीव से। यह जीव शिव की और सक्रिय होना अर्थात जीवन मूल्यों की रक्षा करना है। शिवत्व को मनुष्य में लाकर मनुष्य के पुशत्व को पार भगानेवाले कारण जीवन मूल्य होते है।''[86] सुनिता जैन की 'तलछैट' कहानी में भी पुरुषों की गिरती नैतिकता को दिखाया गया है। जब तोबी अप्पी से इला के बारे में पुछती है तो अप्पी बताती है कि ''जानती है इला ऐंग्लो- इण्डियन है? और ऐंग्लो इण्डियन लडकी से कोई ऐंग्लो-इण्डियन शादी करे तो बल्कि हिंदू सिख तो सब कायर है, एकदम नीचा समझते है कि लडकी के बाल कटे है, स्कर्ट पहनती है तो जरुर ही उसका मारल स्टैण्डर्ड के जितना ही छोटा है।''[87] मनुष्य स्वयंम् को श्रेष्ठ समझता है। बाहर लडकियों को अपने जाँल में फसाते हैं और घर में बीबी के पास शरीफ आदमी की तरह पहुँच जाते हैं।

नासिरा शर्मा की 'गूँगा आसमान', 'पत्थर गली,' 'पतझड का फूल', ओरगोमती देखती रही आदि कहानियाँ भी गिरते नैतिक मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं। शिवानी, मंजुल भगत, सूर्यबाला, कुंसुम अंसल, कृष्णा-सोबती, मृदुला गर्ग, आदि लेखिकाओं ने समाज में गिरते नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

सारांश रुप में कहा जा सकता है संवेदना अधिक तर मानव मन से जुडी होती है तथा संवेदना के प्रभाव से व्यक्ति का व्यक्तिमत्व पर प्रभाव पडता है। किसी व्यक्ति को विचार का अनुभव लेने के लिए संवेदनशील होना आवश्यक है। घटना या प्रसंग-देखकर मन में उठनेवाले भाव संवेदना का ही भाग है। संवेदना से वस्तुविशेष

का बोध न होकर गुणों का बोध होता है। साहित्य की निर्मिति संवेदना से ही होती है। मनुष्य के जड और चेतन दोनों का संबंध संवेदना से होता है। भावनिक तथा मानसिक संवेदना साहित्य से जुडने के कारण उसका प्रभाव पाठक पर दिखाई देता है। संवेदना अर्थ बोध करानेवाला यंत्र है, जो सूक्ष्माति सूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण कर अनुभूति के रुप में प्राप्त होकर साहित्य को उच्चतम् बनाता है।

संवेदना शब्द का 'प्रत्यक्ष ज्ञान', 'भोगना, अनुभूति आदि अर्थ रुपाहित होते है। मन में होनेवाला अनुभव संवेदना है। सुखद और दुःखद दो प्रकार की संवेदना होती है। ज्ञानेन्द्रियाँ हमें संवेदनशील बनाती है, इसलिए ऐंन्द्रिय बोध को संवेदना का आधार माना जाता है। मानव के मन-मस्तिष्क का संबंध संवेदना से होता है। समाज द्वारा मिलनेवाले अनुभव से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। व्यक्ति के संवेदना में होनेवाले परिवर्तन साहित्य का केंद्रबिंदू बन जाता है।

व्यक्ति समाज प्रिय होने के कारण उस की अतःक्रिया समाज में घटित होती है। साहित्य में समाज का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। समाज की जीवन शैली के आधार पर संवेदना का निर्माण स्वाभाविक है। उच्च कोटि की संवेदना मनुष्य का उच्च कोटि का व्यक्तित्व निर्माण करती है। व्यक्ति अपने संवेदना द्वारा संवेदना को शुद्व एवं परिर्माजित करता है। परिवर्तन संसार का नियम है। इस बदलती परिस्थिति का अंकन साहित्यकार अपने साहित्य में करता है।

हर व्यक्ति राजनीति से प्रभावित है। आज साहित्य में राजनैतिक संवेदना प्रासंगिक हो उठी है। भारतीय जनताने अनेक आघातो को झेला। उसी दुःखद घटनाओं का चित्रन साहित्य करता है। धर्म के नाम लोगो में फुट पड गई। सामान्य जनता की आशा पर पानी फेर गया। पिछडे जाति की प्रजाति तथा पूँजीवादी समाज व्यवस्था पर जनता मुक्त होने की आशा देखती रही लेकिन सबकुछ समाप्त हो

गया। साहित्य इसी यथार्थ स्थिति को उजागर करता है। संस्कृति मानवता का मेरुदण्ड है। रीति-रिवाज, उत्सव, आचार-विचार आदि को प्रगट करते हुए निश्चित आदर्शो को प्रतिष्ठित करती है। यह तत्व संस्कृति के गौरव को परिपुष्ठ करते है। सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश, धार्मिक परिवेश, दार्शनिक परिवेश संस्कृति का निर्माण करते है। भारतीय संस्कृति में विविधता पायी जाती है। मनुष्य का सामाजिक विकास संस्कृति पर आधारित है। साहित्यकार पर संस्कृति का प्रभाव ना पडे ऐसा हो ही नही सकता प्रत्येक युग, प्रत्येक धर्म के साथ जुडी संवेदनाओं को वह अपने साहित्य में चित्रित करता है।

संवेदना एक मानसिक प्रक्रिया है। इसके लिए घटना, प्रसंग महत्वपूर्ण होते है। मन-पटल पर पडे गहरी संवेदना को यथार्थ रुप में प्रस्तृत करने का काम साहित्य करता है। परिवार भारतीय संस्कृति का एक घटक है। संयुक्त परिवार को जीवित रखने के लिए समाज व्यवस्था असमर्थ रही।

संदर्भ

1] कविता में संवेदना का स्वरुप-तपेश चर्तुवेदी-पृ.112

2] हिन्दी उपन्यास सुरेश सिन्हा-पृ.57

3] सर्वेश्वर की संवेदना और संप्रेषण-हरिचरण शर्मा-112

4] भाव, उद्वेग और संवेदना-राजकमल बोरा-पृ140

5] आधुनिक हिन्दी कविता-रामदरश मिश्र-पृ.23

6] संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश-वामन शिवराम आपटे-पृ.1043

7] हिन्दी शब्दसागर [10 भाग] श्यामसुंदरदास पृ.4839

8] व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रजी शब्दकोश-भोलानाथ तिवारी-पृ.646

9] मानक हिन्दी शब्दकोश-[पाचवा] रामचंद्र वर्मा-237

10] आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान-अरुण कुमार सिंह एवं आशिषकुमार सिंह-पृ.99

11] वही.-पृ.99

12] चिंतामणी भाग-1रामचंद्र शुक्ल -पृ.103

13] अस्मिता के संवेदन-विरेन्द्र सिंह-पृ.31

14] समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक-शेखर शर्मा-पृ.24

15] वही-पृ.25

16] हिन्दी कविता संवेदना और दृष्टि-राममनोहर त्रिपाठी-पृ.36

17] वही-पृ.36

18] समाजवादी यर्थाथवादी नागार्जुन का काव्य-प्रेमलता दुआ-पृ.20

19] हिन्दी कविता संवेदना और दृष्टि-राममनोहर त्रिपाटी -पृ.36

20] हिन्दी पर्यायवाची कोश - भोलानाथ तिवारी - पृ.626

21] मानक हिन्दी कोश [पाँचवा भाग] रु.रामचंद्र वर्मा-पृ.1236

22] हिन्दी साहित्य कोश-धीरेन्द्र वर्मा-पृ.863

23] अज्ञेय की काव्य तितीर्षा-नन्द किशोर-पृ.17

24] समकालीन में नयी संवेदना-विकल्प कथासाहित्य विशेषांक-श्रीपतराय-पृ.27/28

25] समकालनी संवेदना और हिन्दी नाटक-शेखर शर्मा-पृ.31

26] वही-पृ.31/32

27] निराला साहित्य में सामाजिक चेतना-सुरेश शर्मा-पृ.16/17

28] हिन्दी उपन्यास-सातवा दशक-जयश्री बरहोट-पृ.24

29] समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक-शेखर शर्मा-पृ.38

30] कविता के नये प्रतिमान-नामवर सिंह-पृ.84

31] भाषा साहित्य और संस्कृति-रामविलास शर्मा-पृ.138

32] बृहद हिन्दी कोश-कालिका प्रसाद-पृ.635

33] नालंदा शब्द सागर-श्रीनवलजी-पृ.1399

34] आधुनिक हिन्दी कोश-संपा.धीरेन्द्र वर्मा-पृ.80

35] छठे दशक के हिन्दी उपन्यासों में लोक संस्कृति-डॉ.महेंद्र रघुवंशी पृ.42

36] संस्कृति के चार अध्याय-रामधारी सिंह दिनकर-पृ.5

37] संस्कृति और सौंदर्य-डॉ.रामसजन पाण्डेय-पृ.15

38] भारतीय संस्कृति की रुपरेखा-बाबू गुलाबराय-पृ.04

39] ग्रंथावली भाग 1-हजारी प्रसाद द्विवेदी-पृ.203

40] नयी कविताःसीमाऐं और संभावनाएँ-पृ.63

41] सुनिता जैन समग्र खंड काव्य भाग-2 पुष्पपाल सिंह-पृ.114

42] वही-पृ.256

43] वही-पृ.20

44] वही-पृ.77

45] खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा-पृ.64

46] शामी कागज-नासिरा शर्मा-पृ.116

47] सुनिता जैन समग्र खंड काव्य भाग-2सं.पुष्पपालसिंह-पृ.86

48] शोध दिशा-संपा.गिरिराजशरण अग्रवाल-शोधअंक-3 जुन 2007 पृ.118

49] सामाजिक विघटन-डॉ.सरला दुबे-पृ.118

50] राष्ट्र और मुसलमान-नासिरा शर्मा-पृ.93

51] इनसानी नस्ल-नासिरा शर्मा-पृ.93

52] वही-पृ.95

53] हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन-डॉ.शेख रुब्बानी पृ.125

54] सुनिता जैन समग्र खंड-2 संपा.पुष्पपाल सिंह-94

55] वही-पृ.126

56] कैंजा-शिवानी-पृ.56

57] नालंदा शब्द सागर-श्रीनवलजी-पृ132

58] शिवप्रसादसिंह के कथा साहित्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन डॉ.टी.मीना कुमारी पृ.128

59] भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन-डॉ.सुरेश बाबर-पृ.102

62] सुनिता जैन खंडकाव्य भाग-1संपा.पुष्पपाल सिंह-पृ.100

61] पंचशील शोध समीक्षा [त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका] वर्ष-3 अंक-12 अप्रैल-जून 2011 पृ.62

62] सुनिता जैन खंडकाव्य भाग-1 संपा.पुष्पपाल सिंह-पृ.100

63] खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा-पृ.64/65

64] नासिरा शर्मा की कहानियों में समसामाईक बोध-डॉ.शेख बशीर पृ.132

65] मानवाधिकार और उनकी रक्षा-डॉ.कैलासनाथ गुप्त-पृ.37

66] बुतखाना-नासिरा शर्मा-पृ.37

67] स्त्री को पुकारता है स्वप्न-संपा.गीताश्री तथा अरुणासिंह-पृ.14

68] कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी-डॉ.बालाजी भूरे-पृ.18/119

69] समकालीन साहित्य समाचार पृ.38/39

70] समकालीन हिन्दी कहानी-2संपा.पुष्पकाल सिंह पृ.09

71] सुनिता जैन समग्र खंड-2संपा.पुष्पपाल सिंह-पृ.44/45

72] कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी-डॉ.बालाजी भुरे-पृ.82

73] सुनिता जैन समग्रखंड-6 संपा.पुष्पपाल सिंह-पृ.323

74] शोध दिशा-संपा.गिरिराजशरण अग्रवाल-अंक-2मार्च 07 पृ.01

75] प्रेम संबंधो की कहानियाँ-संपा.अनिल कुमार-पृ.28

76] सुनिता जैन समग्रखंड 2 संपा.पुष्पपाल सिंह-पृ.227

77] पत्थरगली-नासिरा शर्मा पृ.46

78] दूसरा ताजमहल-नासिरा शर्मा पृ.30

79] हिन्दी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम व्यंकटेश्वर पृ.39

80] सुनिता जैन समग्र खंड-2 पुष्पपाल सिंह-पृ.24

81] इन्सानी नस्ल-नासिरा शर्मा-पृ.101

82] रांघेय राघव के उपन्यासों में नैतिक मूल्य-डॉ.सुनिता बानी-पृ.20

83] महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य-डॉ.भारती शेळके -पृ.15/16

84] सुनिता जैन समग्र खंड-संपा.पुष्पपाल सिंह-पृ.54

85] नववें दशक की हिन्दी कविता में नैतिक मूल्य-डॉ.मर्डे, अशोक वसंतरवार-पृ.88

86] सुनिता जैन समग्र खंड-2 संपा.पुष्पलाल सिंह -पृ.54

सप्तम अध्याय

इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानी का शिल्पगत अध्ययन

7.1 शिल्प : स्वरुप और विवेचन

7.2 शिल्प की अनिवार्यता

7.3 भाषा

7.4 इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों की भाषा

7.4.1 पात्रानुकूल भाषा

7.4.2 प्रसंगानुकूल भाषा

7.4.3चित्रात्मक भाषा

7.4.4 डॉट्स भाषा

7.5 इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ

7.5.1 शब्द प्रयोग के विविध रुप

7.5.1.1 तत्सम शब्द

7.5.1.2 तद्भव शब्द

7.5.1.3 बोली भाषा के शब्द

7.5.1.4अँग्रेजी भाषा के शब्द

7.5.1.5 अँग्रेजी वाक्य

7.5.1.6 शब्द की पृनरुक्तियॉ

7.5.1.7 सार्थक-निरर्थक शब्द प्रयोग

7.5.1.8 मुहावरे

7.5.1.9 कहावतें

7.5.1.10 अरबी फारसी शब्द

अ -अरबी शब्द

आ -फारसी शब्द

7.6 शैली

7.6.1 शैली का अर्थ

7.6.2 शैली की परिभाषा

7.6.3 शैली के विविध रुप

7.6.3.1 वर्णनात्मक शैली

7.6.3.2 पूर्वदीप्ति शैली

7.6.3.3 आत्मकथात्मक शैली

7.6.3.4नाटकीय शैली

7.6.3.5 काव्यात्मक शैली

निष्कर्ष

-सप्तम अध्याय-

इक्कीसवी सदी के प्रथम दशाक की हिन्दी कहानी का शिल्पगत अध्ययन :-

कहानी सृजन के लिए कहानीकार अनेक उपकरण जुटाने पड़ते है । यह उपकरण ही कहानी का शिल्प है । वैसे भी कहानीकार को कहानी लिखते समय इधर उधर भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि वह जिस जीवन में जीता है , उसी जीवन से कहानी लिखने की प्रेरणा मिलती है । कहानीकार अपनी ईर्द गिर्द परिस्थितिओं से प्रभावित होकर अपने अनुभव को कहानी के माध्यम से साकार करता है ।

संसार का प्रत्येक रचनाकार अपने अनुभव को शिल्प के माध्यम से स्थापित करता है । कहानीकार जनजीवन की संवेदनशील घटनाओं को आधार बनता है और फिर अपने शब्द भंडार से वह कहानी लिखता है । रचनाकार के अनुभव से शिल्प में भी परिवर्तन आता रहता है । कहानीकार अपने बदलते परिवेश को तथा सामाजिक संदर्भों को कहानी में रुपाहित करता है । तब उसे निश्चित शिल्प का सहारा लेना पड़ता है । सामान्यतः कहानी और उसका शिल्प मानव जीवन से जुड़ा रहता है । शिल्प के बिना कहानी पूरी नहीं होती । शिल्प के बिना कहानी लिखना कहानीकार को असंभव है कहानीकार की सफलता उसके द्वारा चुने गये शिल्प संयोजन क लिए महत्वपूर्ण होती है । रचनाकार जिस घटना प्रसंग से प्रभावित होकर अपनी बात कहता है वह भाव वस्तु है और अपनी भावनाओं को जिस ढाँचे में प्रस्तुत करता है वह उसका शिल्प है ।

पुरानी कहानी और नई कहानी के शिल्प के संदर्भ में काफी अंतर आ चुका नई कहानी कथ्य की नवीनता के साथ साथ शिल्प में भी नवीनता का परिचय देती है नवीनता का परिचय देती है ।नये कहानी कारों पुराने शिल्प को खण्डित कर नये

शिल्प को अपनाया है ।डॉ सूर्यनारायण रणसुभे का कथन महत्वपूर्ण है '' शिल्पगत विवेचन का अर्थ है अनुभूति और अभिव्यक्ति में सांमजस्य ढूँढना । जहाँ कही यह सांमजस्य नहीं है वहाँ यह कहा जा सकता हे कि शिल्प की प्रधानता है अथवा अनुभूति के अनुरुप शिल्प नहीं है अथवा प्रखर नहीं है ।''[1]

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानी की अपनी विशेषता है ।इस अध्याय में हम इक्कीसवी सदी के कहानीकारों को किस हद तक शिल्पगत सिध्दि मिली है , यह देखने का प्रयास करेंगे ।

7.1 शिल्प स्वरुप विवेचनः-

शिल्प विधि को अंग्रेजी मे टेकनीक (Technique)के अतिरिक्त मेकानिक्स (mechanics) सेटिंग (setting) डिझाइन (Design) कन्ट्रक्शन (Constrution) आर्टिस्ट्री(Artistrx) आदि शब्दों को प्रयोग किया जाता है । शिल्प का संबंध उस रचना की पद्धति पर होता है । शिल्प संबंधी राजेंद्र यादव की मान्यता है कि '' जिन संवेदना चित्रों से लेखक अपने अनुभवों अनुभूतियों को पाता है उन्हें अधिक समृध्द सम्पादित और सार्थक करके युक्ति पूर्ण ढंग से अनुशासित करके इस प्रकार संप्रेषित करता है कि वे दूसरों के लिए भी दूसरों के लिए भी संवेदनशील बन जाएॅ उन संवेदना चित्रों को अधिकाधिक सम्प्रेषणीय बनाने के लिए लेखक शिल्प का सहारा लेना पड़ता है ।''[2] शिल्प विंधि को शाब्दिक अर्थ है 'किसी चीज के बनाने या रचने का ढंग अथवा तरीका ।'' 'बृहद हिन्दी कोश' के अनुसार शिल्प विधि का शाब्दि अर्थ इसप्रकार है '' शैली से ज्यादा व्यापक वह उपादान जिसके द्वारा रचनाकार अपनी भावनाओं को किसी विशेष ढंग से व्यक्त कर पाता है ।''[3] बृहद हिन्दी अग्रेजी कोश भाग -2 में शिल्प विधि के अनुसार टेकनीक के लिए शिल्प विधि पदधति रचना प्रणाली आदि का प्रयोग हुआ है ।''4 अर्थात शिल्प विधि का शाब्दिक अर्थ है हाथ से

किसी वस्तु को बनाने का तरीका या ढंगा रचना कार अपने शिल्प के माध्यम से रचना को कलात्मक अनुभूति देने में समर्थ होता है । शिल्प के द्वारा ही रचनाकार सफलता की अनुभूति करता है । शिल्प वह माध्यम से जिसके कारण रचनाकार अपनी अनुभूतियों को कलात्मक अभिव्यक्ति देने में समर्थ होता है ।

कलाकृति के सभी तत्वों का समावेश शिल्प के अंतर्गत किया जाता है ।डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल शिल्प विधान को रचना का महत्वपूर्ण तत्व मानते हुए कहते है कि '' जब और अनुभूति की प्रेरणा मनुष्य के मन और मस्तिल्क में घनीभूत होती है ,जब वह उसकी अभिव्यक्ति में संलग्न होता है । अभिव्यक्ति के लिए वह कभी वाणी का सहारा लेता है कभी आकृति का लेकिन वह अपने भाव प्रकाशन में अधिक से अधिक रोचकता आकर्षण और प्रभविष्णुता लाने के लिए अन्याय रुप विधानो की योजना करता है । ''[5] हर रचनाकार अपने अनुभवों और विचारों के आधार पर अपने भावो को अभिव्यक्त करता है । अभिव्यक्त करते समय उसे शिल्प विधि को सहारा लेना ही पड़ता है । हर रचनाकार की अभिव्यक्ति का ढंग अलग अलग होता है , इसलिए हर रचनाकार अपने अपने तरीके से शिल्प का सहारा लेता है । रचनाकार के ढंग कौशल्य को ही शिल्प कहा जाता है । शिल्प विधान की जागरुकता के कारण ही संप्रेषणीयता जटीलता सांकेतिकता बिम्ब,प्रतीक ,दुरुहता आदि प्रभाव कहानीकार में पाया जाता है । बसंती पंत का कहना है '' शिल्प किसी साहित्यिक कृति की रचना प्रक्रिया का ही नाम है । शिल्प का मुख्य प्रयोजन रचना की बाहयाकृति का निर्माण करना है । संक्षेप में रचना शिल्प का आशय किसी साहित्यिक कृति का रुप निर्माण रुप रचना या रुप विधायक तत्वों के आधार पर संयोजन है ।''[6]

रचनाकार की रचना प्रस्तुत करने की कारीगर प्रणाली ही शिल्प विधान है । साहित्य निर्माण में शिल्प की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । शिल्प को परिभाषित करते हुए डॉ जवाहर सिंह ने कहा है " शिल्प विधि से तात्पर्य किसी कृति के निर्माण की उन सारी प्रक्रियाओं तथा रचना पदधतियों से है ,जिसके माध्यम से रचना अपनी अमूर्त जीवानुभूतियों मन प्रभावों तथा विचारों और भावों को मूर्त रुप देकर अधिकाधिक संवेदन और सौंदर्यमूलक बनाता है ।"[7] रचनाकार अपने अनुभवों को तथा निष्कर्ष के आधार पर अपने भावों को उद्धृत करता है। हिन्दी के कहानीकारने शिल्प के विशेषताओं को सहज रुप से आत्मसात कर नये नये प्रयोग बडी सफलता के साथ किये है । इसलिए रचनाकार की अनुभूति और दुष्टिकोण को व्यंजित करने के माध्यम का नाम शिल्प है ।

शिल्प विधि के द्वारा रचनाकार की उददेश्य की पूर्ति होती है । किसी भी रचना को प्रस्तुत करने मे कारीगर प्रणाली ही मुख्यतः शिल्प विधान है । शिल्प किसी साहित्यिक कृति की रचना प्रणाली का ही नाम है । शिल्प का मुख्य प्रयोजन रचना की बाहय कृति का निर्माण करना है । संक्षेप में रचना शिल्प का आशय किसी साहित्यिक कृति का रुप निर्माण रुप रचना विधान या रुप रुप विधायक तत्वों के आधार पर संयोजन है । शिल्प के सहारे विषय पाठको तक बडे मार्मिक ढंग से पहुँचाया जाता है । अपने विचारों को मूर्तरुप देने के लिए शिल्प का सहारा हर रचनाकार को लेना पडता है । शिल्प के दवारा ही रचना में सौदर्य की अनुभूति हो जाती है । अपनी लक्ष्य की पूर्ति के लिए हर रचनाकार को शिल्प का सहारा लेना पडता है । इसी कारए हिन्दी के कहानीकारों ने नये नये शिल्प का प्रयोग कर अपनी अनुभूति को व्यंजित करने का प्रयास किया है । पाठक के मन प्रभाव उत्पन्न करने के लिए शिल्प महत्वपूर्ण है ।

रचना लिखते समय रचनाकार अनेक शिल्प का प्रयोग करता है । रचनाकार अपने मन के प्रभाव पाठक तक पहुँचाने के लिए शिल्प का प्रयोग करता है । शिल्प से ही रचना की गहराई को पहचाना जाता है । विभिन्न प्रकार के शिल्प के कारण ही पाठक रचना के दवारा रसानुभूति का अनुभव करता है । प्रभाव पूर्ण शिल्प पाठक पर अपनी अमिट छाप छोड़ देते है । इस संदर्भ में डॉ सुरेश बाबरजी का कथन विशेष उल्लेखणिय है " शिल्प पाठकों की अभिरुचि के अनुसार साहित्य के चूनाव में केवल सहायक ही नहीं होता अपितु शिल्पगत विशेषताओं के आधार पर उसे स्थायित्व भी प्रदान करता है । यही शिल्पगत आकर्षण पाठक को किसाी भी रचना को आद्योपान्त पढने के लिए विवश कर देती है।"[8] रचनाकार अपनी अभिव्यक्ति और प्रभावान्विति को संभव बनाता है । हर रचना कार अपनी अपनी प्रतिभा से शिल्प का संयोजन करता है । अतः भाषा शैली की प्रस्तुतिकरण को ही शिल्प कहा जाता है । रचनाकार अपनी कृति में अपनी वैचारिक दृष्टि को निर्धारित करने के लिए कथा वस्तु पात्र संवाद देशकाल वातावरण भाषाशैली आदि तत्वों का सहारा लेता है । यहाँ हमारा उददेश्य इक्कीसवी सदी के कहानीकार की शिल्प की प्रस्तुति ही है । यहाँ शिल्प विधान के अंतर्गत भाषा शब्द रचना और शैली का विश्लेषण अपेक्षित है ।

7.2 शिल्प की अनिवार्यता -

हर रचना में शिल्प का होना अनिवार्य है । रचनाकार अपनी रचना में शिल्प का सहारा लेता है । शिल्प के प्रयोग से ही हर रचना की सफलता -असफलता निर्भर होती है । हर एक रचना कार अपनी अपनी रचना में शिल्प का प्रयोग कर पाठक को मंत्रमुग्ध करने का प्रयास करता है । कहानी के कहानी बन को बनाए रखना या उसे अधिक प्रभावित बनाने के लिए कहानीकार को शिल्प का 'आश्रय लेना ही पड़ता है । प्रत्येक रचनाकार अपने अपने अनुभव को अभिव्यक्ति देने के लिए शिल्प का प्रयोग

करता है । अनुभूति और दृष्टिकोण को व्यंजिन करने का माध्यम शिल्प होता है । इसी कारण कहानीकारो ने शिल्पगत विशेषताओं को आत्मसात करके नये नये प्रयोग सफलता से किये है । पाठकों के दिलों में अपना स्थान प्राप्त करने के लिए रचनाकार नये नये शिल्प का प्रयोग करता रहता है ।

कोई भी रचना बिना शिल्प से सफल नहीं होती। रचना को सफल बनाने के लिए रचना में शिल्प का होना अनिवार्य है । आकर्षक शिल्प ही पाठक को रचना पढ़ने के लिए प्रेरित करता है । शिल्प का प्रयोग करते समय रचनाकार को यह ध्यान देना आवश्यक है कि अति शिल्प का प्रयोग ना करो अति शिल्प के प्रयोग से रचना असफल भी हो जाती है । इसलिए हर रचनाकार को अपनी रचना में शिल्प का संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता होती है ।

रचानाकार की कौशल पद्धति तथा अनुभूति अलग अलग होती है ,इसी के आधार पर वह शिल्प का प्रयोग कर अपनी रचना पाठक तक पहुॅचाता है अलग अलग दृष्टि से वह शिल्प का सहारा लेती है । इसी कारण हर रचना में शिल्प एक जैसा नहीं होता साहित्य में शिल्प परिावर्तन होता रहता है । युग परिस्थिति के कारण नये नये शिल्प के प्रयोग होना अनिवार्य है । शिल्प लेखन संबंधी नये नये शिल्प का प्रयोग लेखक की पहचान का द्योतक बन जाती है । डॉ त्रिभुवन सिंह के विचार स्पष्ट है कि “ शिल्प अथवा रचना का संबंध उस परिणति से है जो कृति को सभी रचना विधायक तत्वों के सहयोग से कृतिकार की प्रतिभा द्वारा प्राप्त होती है”[9] अपने जीवन सत्य को उचित आधार देने के लिए रचना कार को शिल्प का सहारा लेना पडता है । रचना विधायक तत्वों के सहयोंग से रचना कार शिल्प का प्रयोग करता है ।रचनाकार के अनुभव भिन्नता के कारण रचना में अलग अलग शिल्प का प्रयोग होता है।इसी शिल्प भिन्नता के कारण पाठक साहित्य के प्रकारों अन्तर को सहज समझ लेता है । सफल अभिव्यक्ति के लिए उत्कृष्ट शिल्प रचना को सफलता

प्रदान करता है । रचना को सफलता प्राप्त करने के लिए रचनाकार को अति शिल्प का आग्रह नहीं करना चाहिए । रचना की सफलता के लिए भाषा महत्वपूर्ण है।

7.3 भाषा :-

भाषा भावाभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन है । भाषा के द्वारा ही हम अपने विचारों को दूसरों को तक पहुँचाते है । कहानी में सशक्त भाषा का होना अनिवार्य है । कहानी की कथा वस्तु में रोचकता तथा प्रवाहमयता लाने के लिए चित्ताकर्षक भाषा की आवश्यकता होती है । कहानी की सफलता तथा असफलता क्षेत्र भाषा को ही दिया जाता है । देशकाल वातावरण तथा पात्रों में जीवंतता निर्माण करने में सशक्त भाषा का होना आवश्यक है । एक-दुसरे के विचारों का साधन होने के कारण भाषा विचारों का आदान प्रदान का साधन माना जाता है भाषा ही रचना के सभी तत्वों को संगणित एवं सशक्त बनाती है । रचनाकार अपनी रचना में सशक्त भाषा का प्रयोग कर रचना को प्रभावशाली बनाता है ,जिससे पाठक रसानुभूति का आस्वाद लेता है ।

भाषा के बिना विचारों का आदान प्रदान संभंव नहीं है । अपितु भाषा के बिना समाज गूँगा जैसा है । भाषा के महत्व स्पष्ट करते हुए डॉ .सुरेश बाबरजी ने लिखा है “ भाषा मनोभावों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है । शैली उस साधन का उपयोग करने की रीति अथवा पदधति है । भाषा की शक्ति पर शैली की उत्कृष्टता अवलंबित होती है ।” [10] मनुष्य की अभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसणीय साधन भाषा को माना जाता है । वैचारिक आदान प्रदान का माध्यम भाषा है । जिन ध्वनियों दवारा मनुष्य विचारों का आदान प्रदान करता है वह भाषा है ।क्रोचे के मतानुसार “ Language is articulate limited organized sound

employed in expression" अर्थात स्पष्ट एवं सीमित सुघटित शब्द समुह को ध्वनि कहा जाता है ।

साहित्यकार अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से भाषा में व्यक्त करता है । साहित्यकार अपने जीवन अनुभवों को रचनात्मक ,सृजनात्मकता ,प्रतिकात्मकता ध्वन्यात्मकता बिम्बात्मकता आदि के दवारा साहित्यिक रुप देना है । डॉ. भोलानाथ तिवारी भाषा के महत्वा के संबंध में अपने विचार स्पष्ट करते हुए लिखते है कि " भाषा वह माध्यम है ,जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को दूसरों पर व्यक्त करते है या सोचते है ।" [12] साहित्यकार अपने जीवनानुभवों को सशक्त भाषा के दवारा प्रस्तुत करता है । साहित्यकार के अनुभवों को साहित्यिक रुप देने की क्षमता भाषा में ही होता है । व्यक्ति और समाज को जोडने का काम भाषा दवारा ही संभंव है । भाषा ही मनुष्य को पशु से अलग कर देती है ।

भाषा और शिल्प किसी भी साहित्यिक कृति की अनिवार्य शर्त है । भाषा की जीवंतता ही रचना को श्रेष्ठता प्रदान करती है । भाषा के बिना यह संभंव नही है । यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति को उदघाटित करने के लिए कहानी महत्वपूर्ण है । शिल्प भावाभिव्यक्ति की स्वच्छंद प्रणाली तो भाषा भावाभिव्यक्ति का माध्यम है । रचना को भाषा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है वही रचना श्रेष्ठ होती है । भाषा की प्रभावशालीता को उदघाटित करते हुए डॉ. सुरेश सिन्हा का मतैक्य है कि " विकलांग भाषा किसी उपन्यास के कथ्य कोन तो समर्थ बना सकती है न किसी संवेदनशीलता की प्रचीति दिला सकती है । वह मानवीय संदर्भो को कोई संज्ञा भी नहीं दिला पाती । अपनी सूक्ष्मता ,पैनेपन एवं काव्यत्मक व्यंजनोंओं से ही उपन्यास की भाषा आज अर्थवान को सकती है ।"[13] साहित्य सृजन के समय साहित्यकार सहजना से भाषा से जुड़ जाता है और उसी भाषा में रचना प्रस्तुत करता है । साहित्यकार अपने भाषिक कौशल के कारण पाठक पर अपनी अमीप छाप छोड देता

है। पाठक रचना अंत तक पढ़ते समय रोचकता बनी रहती है । गुलाबराय का कहना है कि " ये लोकमुख से प्रत्यक्षतः गृहीत होते है और लोक की प्रज्ञा, बुध्दिमत्ता, अनुभूति , चातुरी, रसात्मक भावना, नीतिमत्ता आदि कहा प्रतिनिधित्व करते है । इसलिए इन नमुनों से जुडे लोकवार्ता तत्व ॲचल विशेष के संपूर्ण संस्कार ,व्यवहार और विचारों को बडी तीव्रता तथा यथार्थता के साथ अनुभूत कराने में समर्थ होते है।" [14] अधिक तर भाषा प्रांतिय तथा भौगोलिक वातावरण के कारण परिवर्तित होती रहती है । मानव के साथ भाषा का विकास जुड़ा हुआ है । अन्य भाषा के शब्दों का आधार लेकर ही वह भाषा विकशीत होती है । अतः वह स्वयंपूर्ण नहीं होती ।

संक्षेप मे कहा जाता है कि भाषा आचार विचार का सशक्त माध्यम है । अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने का काम भाषा ही करती है । दूभाषित होते हुए भी भाषा के माध्यम से वह अपने विचारों से परिचित करने का काम करता है । अनेक व्यक्ति के संपर्क के लिए भाषा महत्वपूर्ण है । समाज जीवन का जीता-जागता चित्र कहानी में प्रस्तुत करते समय जन जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करता है । कहानी में भाषा ही ऐसा माध्यम है जिसमें कहानीकार पाठक तक पहुॅच पाता है पात्र और प्रसंगों को सजीव बनाने के लिए भाषा का योगदान महत्वपूर्ण है ।

7.4 इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों की भाषा -

इक्कीसवीं सदी के कहानीकार भाषा को लेकर सजग रहे है । उनकी भाषा आम आदमी भाषा रही है । उन्होंने कहानी में सहजता प्रभावमयता लाने के लिए बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है । उन्होने यथार्थ एवं प्रामाणिक अनुभूतियों को उजागर करने के लिए अर्थगर्भित भाषा का प्रयोग किया है । कहानियों में सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभव घटनाओं स्थितियों को अभिव्यक्त करके भाषा को नुतन शक्ति देने

का प्रयास किया है । भाषा के स्तर में कोई क्लिस्टता न होने के कारण पाठक भाषा की गहराई में जाकर रचना का रसास्वादन करते हुए मंत्रमुग्ध होते है ।

भावों की गहराई एवं सूक्ष्मता तथा कथ्य की विशिष्टता तथा विस्तृत अनुभवों से इक्कीसवी सदी के कहानीकार पाठकों के ह्दय को जनजीवन के लिए झकझोर देते है । उन्होंने समय को भाषा प्रदान करने के बजाए समय के स्वर को उसी भाषा में व्यक्त करने का काम किया है । भाषा इतनी सटिक है कि कमसे कम शब्दों में परिवेश वातावरण का चित्र उदघाटित हो जाता है । इक्कीसवी सदी के कहानीकार के भाषा कौशल के कारण साधरण कथ्य भी विशेष लगने लगता है । सूक्ष्म सांकेतिकता बिम्ब परकता व्यंजनात्मक ,प्रतिक ,मुहावरे, कहावते उनकी भाषा की विशेषता रही है । भाषा के प्रयोग एवं संवादो की कुशलता के कारण ही उनकी भाषा सशक्त लगते लगती है । मंजुल भगत ,शिवानी, नासिरा शर्मा, सुर्यबाला, सुनीता जैन आदि महिला कहानीकारों ने अपने जीवनानुभवों को अभिव्यक्त करते समय अर्थगर्भित भाषा का प्रयोग किया है । यथार्थ जीवन की सबल अभिव्यक्ति उनकी भाषा की विशेषता है । नासिरा शर्मा ने अपनी भाषा द्वारा दर्शाये है । 'तीसरा मोर्चा कहानी में हिंदू मुस्लिम का प्रेम और भाावुकता का समन्वय पाया जाता है । " मै राहुल हूॅ यह रहमान हम दोनों बचपन के दोस्त है अगर तुम हिन्दू हुई तो हमारी बहन अगर मुसलमान हो तो रहेमान के रिश्ते से हमारी बहन ही लगी-- ।" [15] इक्कीसवीं सदी की कहानी अपनी भाषा के माध्यम से समाज में समन्वय की भावना स्थापित करने का महत्वपूर्ण काम करते है ।

संक्षेप में इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकारों की भाषा सशक्त एवं प्रभावशाली है जो वस्तु चेतना का निर्माण करती है। प्रसंगानुकूल पात्रानुकूल, भाषा का प्रयोग कर अरबी, फारसी, उर्दू शब्दों से भाषा इतनी सशक्त बन पाई है कि कम से कम शब्दों से भी अधिक से अधिक विस्तार हो पाया है । जटिल से जटिल भावों

विचारों घटनाओं स्थितिओं को अभिव्यक्त करने में भाषा सफल रही है । इसलिए भाषा पाठक को अपने लगने लगती है । निम्नाकिंत रुप से भाषा की विविधता इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के कहानी में पायी जाती है ।

7.4.1 पात्रानुकूल भाषा :-

इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के हिन्दी कहानीकारों ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है । पात्रानुकूल भाषा कलात्मकता की मांग होती है , जो पाठक पर अपने अमीट छाप छोड देती है । प्रत्येक पात्र की अपनी अपनी एक शैली होती है । कहानीकारों अपनी अपनी कहानियों में पात्रो की अलग छबी बनाई है । उनके पात्र सभी जनजीवन से संबंधित रहे है । उनकी भाषा पात्र की होने के कारण वह पाठक पर अपना अलग प्रभाव निर्माण करती है । इक्कीसवी सदी के कहानी के पात्र कस्बाई जीवन से लकर महानगरीय जीवन तक सभी पात्रों को चित्रित करने में सफल हुये है । पात्रानुकूल भाषा दवारा पात्रों के मनोभावों की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति की है ।

नासिरा शर्मा की कहानियों की भाषा जनजीवन से जुडी है । उन्होंने अपनी भाषा में जटिल भावों विचारों घटनाओं तथा स्थितिओं को अभिव्यक्त करने में उनकी भाषा सफल रही है । 'जडे' कहानी में युगांडा के निवासिओं के घर जलाये गये । हत्या और लुटपाट का ऐसा तुफान आया कि नीग्रो आया को अपनी गुलशन को उनकी सुरक्षा के लिए अपने से अलग होना पडा । नीग्रो आया गुलशन से कहती है " बेबी तुम इंडिया नही ग्रेट ब्रिटन जाओगी वहॉ तुम्हारे जान को खतरा नहीं है, फिर जैसी ही यहॉ हालात ठीक हुए में तुम्हे खम डालकर बुला लुॅगा। "[16] काल परिवर्तन के साथ समाज में नैतिक मुल्यों का -हास होने लगा । नासिरा शर्मा ने 'बिलाव' कहानी में सोनामाटी इस पात्र के माध्यम से नतभ्रष्ट हुए परिवारिक मूल्यों

को उद्घाटित किया है । बलवीर अपनी ही बेटी की इज्जत लुटता है , तब उसकी पत्नी सोनामाटी उसे मार देती है और पुलिस से कहती है ''मैं उधर टेलीफोन बिल्डींग के सामनेवाली झुग्गियों में रहती हुं । मेरा पति बलवीर शराबी है । उसने मेरी बेटी की इज्जत खराब की है । मैंने उसे बहुत मारा है । वह मर गया है । ''[17] 'बडे परदे का खेल' कहानी बदलते प्रेम संबंध को व्यक्त करती है । राज शादी शुदा होकर भी रमा से शारीरिक संबंध रखता है । राज उसे कहता है '' यह कैसे मुमकिन है ? तुम जानती हो मैं शादीशुदा हुँ । यह शादी मेरे इच्छा के विरुदध हुई थी जब मै मात्र उन्नीस वर्ष का था । उस अत्याचार विरोध मेरा क्रोध शांत नहीं हुआ है , तो भी मॉ बाप को मै दुख नही दे सकता दूसरा विवाह करके । आखिर उनकी मान मर्यादा भी तो है इस समाज में रहा मेरी धर्मपत्नी का प्रश्न वह तो संयुक्त परिवार में रच बस चुकी है । उससे मै मिलॅू या न मिलॅू मुझे वह सुख दे यान दे अब ये प्रश्न मेरे लिए नहीं रह गए है । मेरी समस्या कुछ ओर है । ''[18]

डॉ. दीप्ती गुप्ता की कहानियों की भाषा पात्र और चरित्रों के अनुरुप अपनी भाषा बदलते है । उन्होंने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग कर पात्रों के मनोभावों की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति की है । सभी पात्रों की भाषा समान न होकर उसमें विविधता पाई जाती है । उनकी 'पातकनाशनम् ' के भैख और मुश्ताक दोनों हीरा के गोरे रंग चंपई रंग और सुंगठित शरीर को देखकर फिल्मों में काम करने की बात को लेकर छेड़ते है ,तब हिरा उन्हें कहता है '' ये सब कसी दे पढने की जरुरत नहीं है समझे । आगे से मै न सुनू ऐसी बात मजाक में भी की राहजनी छोड दे तो । यह राहजनी मेरी जिन्दगी है उसी के बल पर मै जिन्दा हूॅ जी रहा हूॅ । तुम दोनों भी इसी की दी हुई खा रहे हो । क्या समझे ? ''[19] सुर्यबाला की कहानी 'रहमदिल' में रेलगाडी में सफर करते समय वार्तालाप का वर्णन हुआ है । सकीना बानू कहती है कि '' अरे । तुम्हें क्या हम सॅभालेंगें न रास्ते में और अब देखो कैसा सॅभाल रहे है ? इसटेसन

आते देर नहीं कि लपक लेते है दूहॉ से उहॉ समुच्ची गाडी की खोज खैरियत लेने । कहाँ कहाँ के चीन्हे अनचीन्हे मिलभी जाते है ।''[20] मुस्लीम पात्र होने के कारण उनके अनुरुप भाषा का प्रयोग कहानी में हुआ है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इक्कीसवी के कहानीकारोंने पात्रों के भावों और विचारों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है । उन्होंने जनजीवन में व्याप्त सभी क्षेत्रो से जुडे पात्रों को अपनी कहानी के माध्यम से मुखरित किया है । राजनैतिक ,सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक , परम्परागत विभिन्न समस्याओं एवं उलझनों को पात्रों के दवारा मुखरित किया है । साथ ही कहानी में जनजीवन के विविध पहलुओं को पात्रानुकूल ,देहांती, दर्दभरी, सामंती विद्रोही भाषा दवारा अभिहित किया है ।

7.4.2 प्रसंगानुकूल भाषाः-

प्रेम,हर्ष ,शोक ,संघर्ष ,आक्रोश, घृणा, दैन्य आदि स्थिति और प्रसंगों में भाषा अपने आप परिवर्तित हो जाती है । हर स्थिति में मनुष्य एक सा नहीं होता । उसी प्रकार स्थिति और प्रंसंग के अनुसार भाषा बोलने में परिवर्तन आना स्वाभाविक है । सुख के समय तथा दुख के समाने बोलना अलग अलग है । शांत स्थिति में मनुष्य संयम रहता है । शांत के विरोध की स्थिति होती तब मनुष्य क्रोधित होता है ।

सुनिता जैन की कहानी 'तलछैट' कहानी में इस प्रकार का उदाहरण हम देख सकते है । 'इला' अपना क्रोध प्रगट करती हुई कहती है '' यह राबिन्स का बच्चा पूरा गधा है। हब्शी कही का सभी को एक ही मर्ज । कभी कभी जी में आता है किटमैन की तरह बंदुक लेकर आठ दस लडकों को ठिकाने लगा दूँ । ''[21]नासिरा शर्मा की कहानी ' अग्निपरीक्षा ' की कम्मों पर बदचलन का झूठ आरोप लगाया जाता है ,तब कम्मो अपने बुध्दी चातुर्य से इन झूठे आरोपों से मुक्त हो जाती है । इस प्रसंग का

वर्णन कहानी में उदधृत है " नहीं-- कम्मो निर्दोष है --- कम्मो निर्दोष है । मंगलु ने घबराकर कहा और रोते रोते वह कम्मों की तरफ मुडा। पकड ढीली हूई तो वह कम्मो के पैरों पर गिर पडा । " मुझे क्षमा कर दो मुझे क्षमा कर दो --कह दो इन ---इन सबसे मै निर्दोष हूँ । मैने तुम्हे हाथ नहीं लगाया ।" [22] संघर्षशील प्रसंग का वर्णन कहानी में उदधृत हूआ है । अब फुल नहीं खिलते मैत्रेयी पुष्पा की कहानी में छात्रों दवारा किया गया आंदोलन का चित्रित किया गया है । उस प्रसंग का चित्रण इस प्रकार हुआ है " विद्यार्थिओ का रेला बाढ़ के जल सा कालिज कम्पाउंड में घुस आया । फिर वही तोड फोड शीशे दरवाजों पर पथरावा रोकने का भरपूर यत्न किया उन्होंने पर एक बार को लगा कि सब अकारथ । " [23] सुनिता जैन की 'पडोसीन जीजी' नामक कहानी में भी हम देख सकते है कि जी जी आत्महत्या कर लेती है । तब सारी बिरादरी का मानना था कि " अच्छा ही किया जान छूट गई । दिनरात नाकों चने चबवाएँ थे ,बिचारी यतीन से मरकर छुटी हो गई । " 24

संक्षेप में कहा जाता है कि इक्कीसवी सदी के प्रथम कहानीकारने अपनी कहानी में हर्ष ,शोक ,संघर्ष ,आक्रोश ,प्रेम आदि प्रसंगो के साथ ही दैन्य,उत्पीडन, घृणा, पीडा आदि प्रसंगानुकूल भाषा की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है ।

7.4.3 चित्रात्मक भाषा :-

चित्रात्मकता यह भाषा की एक विशेषता है । किसी दृश्य को कहानी में पढ़ते समय हमारे सामने जैसा की तैसा चित्र उपस्थित हो जाना है । किसी दृश्य को जैसे की तैसे रुप में उभारने की शक्ति भाषा में होती है । इक्कीसवी सदी के कहानी कारों की कहानी पढ़ते समय घटनाओं के दृश्य चित्र ऑखों के समक्ष सहज बिंबित हो उठते है । कुछ अभिजात्य चित्रात्मक भाषा के उदाहरण दृष्टव्य है-

नासिरा शर्मा की ‘लूका झोंका’ कहानी में चित्रात्मक भाषा का उदाहरण दृष्टव्य है “ सूरज सीधा सर पर चमक रहा था, रमेश चंद्रा का मुख अलसे शिथन कुत्ते की तरह लार बहानासा लगा । दिन का एक तेज ज्वार उसके मन में उण, स्कूटर पर बैठ कर उसे लगा हर कोई औरत को चॉकलेट ही क्यों समझता है । मन मस्तिष्क में लु के झोके नहीं थपेडे चल रहे थे जो बाहर चलने वाली लु को पुरवा में बदल रहे थे । घर पहुॅचकर लगा कि वह भेडिये की नाद से वापस लौट आयी है । [25] सावित्री दिल्ली से अमृत सर आकर उसकी यादों का दृश्य चित्रात्मक भाषा में उदधृत है “ आज सैतीस साल गुजर जाने के बाद मुझे वह पुश्तैनी घर का ऑगन फिर याद आ रहा है । साथ ही वह पुराना नीम का पेड भी जिसकी डालियॉ पतियॉ से लदी हुई ऑगन की ऊॅची दीवार से बाहर गली में फैली थी ,जिसके नीचे पडी चारपाई पर भारी शानों पर बिखरे बालों से उलझे मेरे हाथ --“ सच भ्राजी, मेरे बाल कब इतने बडे होगे ।“[26]

“पगला गई है भागवती ‘ मैत्रेयी पुष्पा की कहानी में विवाह के प्रसंग को चित्रात्मक भाषा में उदधृत किया गया है । “ व्दार की धजा बदल चुकी है शमियाने में वर वधु के लिए दो महाराजा कुर्सियॉ लाल मखमाल से जुडी हुई सुनहरी हत्थों वाली सिंहासन की तरह डाल दी गयी । सामने कतारबध्द कुर्सियॉ ही कुर्सियॉ बगलवाले शामियाने में खाने का प्रबंध होगा । डोगा प्लेटो का असबाबा विभिन्न मसालों की उठती महक से गॉव गमक उठा ।“ [27]

‘चार बहने शशि महल’ की बदले राजनीति तथा अपने जुडे चाचा दवारा परेशान चार बहनों की स्थिति का हु ब हु चित्रण प्रस्तुत है “ रात सन्नाटी थी । शाम से ही कुत्तों ने भौकना शुरु कर दिया था । अनहोनी घटने का भय फिजा में अटका हुआ था । दोपहर से बारिश की झडी लगी हुई थी । चारों बिस्तर में घूसी उपन्यास कहानी में डूबी हुई थी कि तभी बिजली जोर से कडकी और उन्हें महसूस हुआ

ऑगन में कोई कुदा है । एक नहीं कई साये उन्हें अपनी तरफ बढ़ने महसूस हुये । बडी ने पेंरो की चार फेकी और बिस्तर से कूद पलॅग के नीचे पडी बन्दुक उठाली। ''[28]

प्रथा माथुर की कहानी 'स्पर्श ' में चित्रात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है । '' उस बाल विधवा युवती के ह्रदय के भीतर बडा भीषण महायुदध छिडा हुआ है। कौरवों, पाण्डवों की सेना के बीच कृष्ण अर्जुन का रथ खडा हुआ गीता का उपदेश ही सुनाये जा रहा है । एक ओर काम रूपी सत्ता की लालसा तो दुसरी और वैराग्य की भावना । इन दोंनों में सैातिया डाह चल रही है । बीच में विवेक भीष्म पितामह की भॅाति दीवार बना हुआ है । अर्जुन के बाण भीष्म पितामह को मृत्यु लोक पहुँचाने में असमर्थ हो रहे है । ''29 संक्षेप में कहा जाता है कि इक्कीसवी सदी के कहानीकारो ने चित्रात्मक भाषा दवारा समाज जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है । संवाद प्रसंग घटना के सामने ज्यो की त्यों रुपो में साकार होती है ।

7.4.4 डॉट्स भाषा :-

तनावपूर्ण तथा अमूर्तभाव की स्थिति उत्पन्न करने के लिए डॉटृस भाषा का प्रयोग किया जाता है । कहानी में पात्रों का दर्द तनावा निराशा तथा द्वन्द्व की स्थितियों को डॉट्स भाषा दवारा दर्शाया जाता है ।अप्रिय कथन से बचने के लिए इस भाषा का प्रयोग किया जाता है । इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकारों ने इस भाषा का प्रयोग किया है । नासिरा शर्मा की 'मटमैला' में फुलवा को डर है कि कई मेरा बेटा मेरी असलियत जान तो नहीं गया वह कहती है '' कही --कही वह धुधलान समझा दृश्य कभी -- नीचे खटोले से --नींद खुली हो और--अब वह सब जुड गया हो --एक अर्थ हे भगवान मुझे क्षमा कर । '' 30

'दूनिया' कहानी की शोभना अपने पिता के देहांत के बाद भी दाह संस्कार में जाना नहीं चाहती क्योंकि उसे मुख्यमंत्री के टी पार्टी में जाना था । अपने पति और बेटे द्वारा समझाने पर भी वह तैयार नही होती । उसके मन में व्दव्दांत्मक स्थिति है जॉऊ या ना जॉऊ ।" हॅला !रामनरेश जी कैसे है ? कल तो पार्टी में मेरा आना असंभव है । दर असल मेरे पिता का देहांत हो गया है और मुझे आज निकालना है --उम्र होगी अस्सी वर्ष --जी कस्बा है । पानी तो साथ ले जाँऊगी ,वरना उबलना लूँगी --- ठीक कह रहे है मगर ---अच्छाश्रीमती देव भी आ रही है--- हॉ उनसे मिलना भी चाह रही थी । खैर ----रुकना तो मुश्किल है ---देखती हूॅ । "[31]

सूर्यबाला की कहानी 'सिर्फ मै' में अनमेय छोडने की कोशिश वाक्य में हुई है जैसे " वाह ! लेकिन मुझे भी तो अधिकार है कि मैं तुम्हे अपनी पसंद के ----। "[32] 'योदधा' कहानी में अपने भाई के मौत पर देबू अपना दर्द छुपाता उस समय उसकी मॉ उसे कहती है " कैसे घटा ---तेरे दिल पर क्या बीतती होगी मै जानती हूॅ। [30]बेटे ,हाथ मुँधोले ---काश ! तुभी साथ गया होता तो देखता कि कितने कितने गुलाब गजरे तेरे बहादूर भाई के मुसकराने चित्र पर चढाए गये थे --। "[33] नासिरा शर्मा की कहानी 'पहलीरात' कहानी का मोहम्मद लाश ढोने को काम करता हे वह अपने ईरान को लेकर चिंतित है । मोहम्मद आँसू पोछता हुआ अपने दो साथिओं से कहता है " कुछ नही अपना काम करे जाओ ---हम गुस्साल है-हमारा काम लाश धोना है । ---हमारा काम---हमारा कामलाश जैसी हो --- खुन बंद कब होता है ---वही कोने में बैठा फफककर वह रोने लगा । "[34] अतः स्पष्ट है इक्कीसवी शती के कहानीकारोंने तनाव पुर्ण स्थिति कीअभिव्यक्ति के लिए डॉटस भाषा का प्रयोग किया है ।

7.4.5 लाक्षणिक भाषाः--

इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकारों ने भाषा का अधिक प्रभावशाली एवं सशक्त बनाने के लिए लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया है । इस भाषा में अर्थ केवल अभिधार्थ तक सीमित नहीं रहता बल्कि उसके आगे निकल जाता है।'' जहॉ मुख्यार्थ में बाधा होने पर उससे ही संबंधित दूसरा अर्थ रुढिया प्रयोजन के आधार पर लगाया जाता है वह लक्ष्णार्थ होता है । ''[36] इक्कीसवी सदी के लेखक मंजुला भगत, मेहरुमा परवेज, डॉ.ऋचा शर्मा, नासिरा शर्मा, सुनिता जैन, सुर्यबाला आदि ने अपनी कहानियों में लाक्षणिक भाषा का सफल प्रयोग किया है ।

सूर्यबाला की न 'किन्नी' न कहानी में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग हुआ है ,जैसे मॉं खुद भी इस इंद्रजाल की गिरफत में आ गई थी । सिर्फ एक दो बार देखने के बाद ही आप ही आप में कुछ सुनने सहेजनी लगी थी । उनकी गुमसुमी और शिथिलता पर रेत में अंकुर जैसा एक सपना उग आया था । वे समझती ,उस अंकुरित सपने को लुके छिपे सींचते हुए उन्हें कोई नहीं देख रहा तो क्या मै भी तो यही समझती थी कि मुझे कोई नहीं देख रहा। '' [37]

नासिरा शर्मा की कहानी ' कल की तमन्ना ' में जीवन को चित्रण लाक्षणिक भाषा में हुआ है । '' रोज रोज की मार से लहुलुहान उसका अस्तित्व जैसे आलपिन दीन बन गया हो, घायल खुनी काया पर अनगिनत भालों जैसी बीधी पिने । आखिर उसे अपने विचारों को मूल्य चुकाना ही पडेगा । फिरी शिकवा कैसा ? साप के जहर जैसी सनसनाहट उसके शरीर में फैल गई और उसके उबलते खून को सुन्न कर लिया । '' [38] 'इमाम साहब ' कहानी की सुहेला को अब्बा के जाने सेहार सुना सुना लगता है । वहॉ के वातावरण का चित्रण लाक्षणिक भाषा मेंधृत है । '' आसमान

साफ था बेसुमारे तारे छिटके थे । इंसानो की उम्मीद की तरह चमचमाने हुए शकील उद्दीन का दिल थी लौटने को नहीं चाह रहा था । तन्हाई ,भूख,अपमान ---उन्हें लौट आना चाहिए । हर एक का नमक इस तरह चखना ठिक नहीं है । मगर दीन मजहब के लिए गए है । वहॉ लौट आए तो मस्जिद सुनी हो जाएगी ,अजान नहीं खींच पाती फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाती है । ''[39]

7.5 इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों की भाषा की प्रमुख विशेषताएॅ-

7.5.1 शब्द प्रयोग के विविध रुपः-

शब्द को भाषा की लघुत्तम इकाई माना जाता है । महाभाष्यकार पंतजलि के अनुसार '' शब्द कान से प्राप्त बुध्दि से ग्राहय नया प्रयोग से प्रस्फुटित होनेवाली आकाश व्यापी ध्वानि है ।'' [40] शब्द में जो वर्ण होते है , उन्हें सार्थक होना आवश्यक है । भाषा में सार्थक शब्द को महत्व दिया जाता है । वही सार्थक शब्द भाषा को प्रभावशाली एवं सशक्त बनाने का काम करते है । भाषा समृध्दि के लिए सार्थक शब्दों को महत्व दिया जाता है । शब्द भंडार में सस्कृत के तत्सम ,देशज, विदेशी आदि कई शब्द शामिल हुये है । भाषा का चरित्र बहुआयामी है ।

इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकारों ने शब्दों के विविध रुपों को कहानी में प्रस्तुत किया है । उन्होंने आम आदमी की समस्याओं एवं उलझनों को वाणी देने का प्रयास किया है । उनकी भाषा इतनी सटीक है कि उनके अनुभव पाठको के सामने जीवंतता खडी कर देते है ।भाषा समाज के विभिन्न वर्गो के व्यक्तियों की यथार्थ पहचान प्रस्तुत कराने में पूर्णतः समर्थ है । उन्होनें आम आदमी की भाषा उकेरने की कोशिश की है । अरबी, फारसी, ॲंग्रेजी शब्द, मुहावरे,

कहावतें, सुक्तियॉ से अपनी भाषा समृध्द और प्रभावशाली बनाई है । यहॉ पर इन्हीं मुददों पर विचार करना हमारा उददेश्य है ।

7.5.1 तत्सम शब्द :-

संस्कृत भाषा को हिंदी भाषा की जननी कहा जाता है । तत्सम शब्द का अर्थ है ततृ उसके +सम समान = तत्सम । उसके समान अर्थात जो संस्कृत के समान है उसे तत्सम कहते है । संस्कृत भाषा से जो शब्द बिना विकृत हुए हिंदी भाषा में अपनाए उन्हें तत्सम शब्द माना जाता है । इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों ने अपनी कहानियों में पात्रों एवं घटनाओं की स्थिति के अनुसार तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है । उनकी कहानियों में प्रयुक्त कुछ तत्सम शब्द यहॉ प्रस्तुत है।

रात्रि अज्ञान रोमांच ,क्षितिज ,चूर्ण ,पंडित छात्रवृत्ति, निर्दय, संवेदना संरक्षण नगर जनतंत्र, ग्राम, ग्राहक, पिता, निदान, आगमन, गृह, चिन्ह, स्वस्थ, शिशु, संघर्ष, अश्रू, स्पर्श, चुर्ण, स्वर्गीय, शेष, विपक्ष, स्वयं, स्पर्श, स्वस्थ ,भगवान धर्म जीवन ,स्वप्न ,अज्ञान ,हृदय, विशेश व्दार, परिवार,जन्म ,अशुम, मृत्यू पश्चाताप संघर्ष विघ्न,वर्ण ग्रह लज्जा ,अनुभव निर्लज्ज, विस्फोट ,व्यायाम, कामना,क्षमा ,अशान्त अधिक ,विदेश ,समर्पित ,पुत्र, जनतंत्र ,निदर्य,आज्ञा ,दीपक ,संरक्षण पत्र ,स्वर,कामना, व्यायाम ,विस्फोट ,क्षण प्रसन्न पत्रिका विद्यारम्भ ,वधु ,चिन्ता,दोष मुक्त, सुख पिता ,अज्ञात आश्रय सहस्त्र, वर्षा कर्म परीक्षा ,पिपासा, अनुचित ,पुण्य इच्छा शर्म ,अर्धशताब्दी, रात्रि निष्पास इष्ट टीका ,उपादान ,मातृभाषा, कृपा,मंथर कार्य, जाति विवाह स्थूलकाच, शरीर संस्कार, संवेदना, कवि, धर्म, भक्त सुर्य ,परमात्मा,जीर्ण,हृदय, साध्वी उल्का ,दृष्ठ ,क्षार कोटि ,प्रहरी ,समुद्र अंगरक्षक,शान्ति ,राजा विज्ञान ,पुण्य ,सुवर्ण, भ्राता,वर्षा पंडित,

ज्योषित,दीपक आदि कई तत्सम शब्दों का प्रयोग इक्कीसवी सदी प्रथम दशाक के कहानीकारों की कहानी में पाये जाते है ।

7.5.1.2 तद्भव शब्द :-

तदृभव शब्द का अर्थ है -- तद् उससे + भव उत्पन्न तदृभवा। संस्कृत से जो शब्द संस्कृत से यात्रा प्रारंभ करके हिन्दी तक पहूँचे है । अर्थात संस्कृत शब्द अपना मुलरुप बदलकर दुसरी भाषा में आता है । विकृत रुप धारण कर हिंदी में आये हुए शब्द तद्भव कहलाता है । नालंदा शब्द सागर में तद्भव का अर्थ है " भाषा में प्रयुक्त होने वाला संस्कृत का वह शब्द जिसका रुप कुछ विकृत अथवा परिवर्तित हो गया । जैसे अश्रु का आँसू संस्कृत शब्द का अपभ्रंश रुप । "[41] इक्कीसवी सदी के कहानीकार ने सहजता से अपनी कहानी में तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है । जो इस प्रकार है -

ऑख,बहरा, सॉप हाथ ,सुन्दर ,विजय ,लिछमी, प्रतिदिन, गृहस्थी ,प्यार गोदी काम बहन घोडा धरम ,असीस, अगम ,तनाव काम मगन ,जतन खेल कूद आत्महत्या, सुरज ,हाथ ,गॉव ,राखिया ,कठबी ,मरद, रात,वृक्ष,मुखौटा ,किशन,बरस, होंठ ,लतिका ,होंठ, दुध, पानी, मुॅह, मरना, घर, अधिकतर नवजात अनुमान प्यार, धरम, असीस, अगम, तनाव, काम, मगन, जतन, भाई, जवान, सोई, पंछी, बरसात, ऑसु ,पत्थर, रात, बच्चा ,रसोई ,आग ,आसरा ,सिर, हाथी, पानी ,थाली पुत, कृपा अजरच, नाच ,बरसाल, करोड, भालु, जवान, मौन, पत्थर, कपुर, पछतावा, सॉप,सरपंच, कोख, पंछी ,सपना, नैन आदि कई तद्भव शब्दों का प्रय्रो कहानियों में सफल हुआ है ।

7.5.1.3बोली भाषा के शब्द :-

इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकार ने कथ्य के अनुरुप बोली भाषा के शब्दों का प्रयोग अपनी कहानी में किया है । उन्होंने आवश्यकता नुसार अरबी फारसी संस्कृत ,ॲंग्रेजी आदि शब्दों के उन्होंने बोली भाषा के शब्दों दवारा पात्र तथा परिवेश का चित्र प्रस्तुत किया है । उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ मात्रा में शब्द निम्नाकित है

'' जनवासा ,फरलग ,फानन लारी मय्यत , झझंट, बक बक, बताइन, कहत, बाप, झापड, अडचन ,जुगाड ,गडबड ,वसवास ,चाल ठाल ,दरसन, रोब दाब गुलगपाडा फावडा बेरा बखत लफंगा मुँहफर ,जोक ,रोक दाब चट पट चख चख किरपा घमंड किवाड हमका देखो फाक ,लुला लॅगडा ,गाडकर ,हमका ,करत काहे गरदन चाल ठाल, बवाल ,बकना, लौडिया बक बक सुनार गुगल पाडा ,खुराक जोक थका मांदा हया शरम लोफर लॅघा, जिठानी ,कुहराम ,लारी ,डिराइवर ,फानन ठसका ,फरशाद ,भीड भब्बड मंतरी ,बिसात ,बज्जा गडबड हुमक ,सॉसन, घुमड हुज्जत , जनवासा, फस्लांग, किरपा, साच्छात, बतियाने ,कुप्पी,ठसका ,फावडा खुराक ,दरसन मजालिसी ,मजमा,जली कटी आदि कई बोली भाषा के शब्दो का प्रयोग कहानियों में हुआ है ।

7.5.1.4 अँग्रेजी भाषा के शब्द :-

ॲंग्रेजी भाषा के शब्द हिंदी में इस प्रकार घुलमिल गये है कि उनका प्रयोग टालना कठिन है । यह भाषा आज जनमानस में अपना प्रभाव छोड़ चुकी है । कहानियों में पात्रों के संवादो में भी ॲंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है । ॲंग्रेजी शब्द निम्नाकिंत है '' स्टॉप, टीचर,सर्टिफिकेट, टी.वी., लेक्चरर, स्कॉलर, वाइस चांसलर, युनिवार्सिटी ,लैम्प ,इंटरण्यु,कम्पाउंडर, स्टेशन ,सेलेक्शन, मैट्रिक ,

प्रोफेसर, प्रोगाम, बास्केट ,डॉक्टर ऐलोपेथिक, प्रैक्टिस, पार्टनर ,पाउंड, फर्स्टक्लास ,पैट्रोलिंग ,मिडिल स्कूल ,इंटर ब्रीफकेस ड्राईगरुम, डिबेट ,लॉन ,बस, स्टॉप लव अफेअर, एबशिन, हॉल हायर सेकण्डरी ,हिस्ट्री, इकनॉमिक्स ,स्मार्ट ,प्रमोशन ,पिकनिक, कम्पेयर, साइड ,फेलोशिप ,डॉक्टर ,रोल कॉल ,माईडियर ,होस्टल ,अपार्टमेन्ट, डर्टीरेट, ओवर, सेंसिटिव, डेस्क, रजिस्ट्रार, नर्स लॉन, कॉमेण्ड्री, ऑपरेशान ,इन्टरनेशनल, ऑफिस, फेवरिट डांससेक्स ,हँगर ,हाउस,टेप रिकार्डर, गर्ल फ्रेण्ड ,लेटर ,हार्न, सिली,बलक स्टेप ,नॉलेज, कम्पेचर साइड बैक ,फॅक्टरी ,डॅडी पास पोर्ट कस्टम प्रोजेक्टस गारण्टी फस्ट फलोर ,स्ट्राइक, सेक्टर, रिपोर्ट लैम्प पोस्ट क्वाटरा हिस्टीरिकल ,हॅलिकॉप्टर ,स्कूल,रोडवेज इंटेलिजेट ,एटीक्स, टेलर, लेडिज, प्राइवेट, फैशान फैक्टरी युनिफार्म ,क्रीम,कम्फटे बिल, रिसेप्शनिस्ट ,रेस्ट्रा ट्रेन,ट्रेनिंग ,पेन्सिल,ड्रेस, गजेटियर फिगर ,मॅगजीन, पिंग ,ब्रीफकेशा ,ऑफर, माइनर टी सेंटर ,एम्बुलेस, फायर बिग्रेड ,टेड क्रॉस ,हॅडलाइट ,स्टोर, कस्टम इपोटेड, रिपोर्टिग , डिपार्टमेंट ,स्कॉलरशिप, सेक्रेटरी ,प्राइवेट लाइफ, डिस्कशन, रुम, डिस्टेपर ,प्लास्टर, टैक्सी ,नायलोन,कंडक्टर,मिनीबस, आर्टिस्ट, स्मार्ट, रिपोर्ट ,फिल्म ,कनप्युज, मैंडम, शॉपिंग, कमिशनगर, व्हाइट ,चाइल्ड, वैल्युज,पॉलिटिक्स,रिसर्च,स्टील,ब्लॅक,एयर पोर्ट,इंडियर ,बॉक्स, सूटकेस ट्रेन रिपेयर, डेवलप, सैकरिफाइज, डिवोशन ,टेलिफोन ग्रीनलाईस ,कोल्डड्रिंक, कुलर, शॉप,थैक्स, नॉट पॉसिबल,स्टार्ट हीटर फैक्टरी पीरियड ,मीटिंग ,लिफट ,रजिस्टर ,एंटीक्स, पर्स रेक्टर, स्कूटर, रेड ,स्टाफ ,कैम्पस, स्टॉप, बिल्डिंग, क्लालिटी ,टैरेस ,आपरेटर, ऑफर,सुपर हिट, यंग मैन ,प्रापर्टी, बाहकनी कमिशन, कैनाल्स, प्रेस,डिवीजन,रिजर्वेशन, सिविल कोर्ट,सैंपल आदि कई अंग्रेजी भाषा के शब्द प्रयोग भाषा को अधिक प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया है ।

7.5.1.5 ॲंग्रेजी वाक्यः-

1फ्रेंडशिप इज नो प्रॉब्लेम ---नो ऑब्जेक्शन ---लव किसी भी हयुमन बींग से हो सकता है ।

2 प्लीज डॉक्टर डू नॉट डिस्टर्ब अस अगेन ऑन दिस इशु

3वी.नो.यू.लव डायना बट

4 शॉकिंग -वेरी शॉकिन फॉर भी

5 हॅलो माई स्वीट हार्ड

6प्लीज डोट टच ।

7 योर गुड नेम प्लीज ।

8 क्राइस्ट विल हैप्प यु ।

9 सो हाड इजद लाइफ ।

10 डैडी दिसिज नॉट फेयर ।

11 अब तुम्हारा बिल से मैरेज करना नॉट फेअर माई चाइल्ड

12 हीट वेरी कुवेल वेरी स्ट्रेज मेन ।

13 युआर इस्टिल हियर ?

14 सारी मॅडम जा ।

15 सॉरी फॉर लेट ।

16 हैप्पी बर्थडे ।

17 व्हेयर इजद चाइल्ड ?

18 व्हाट नॉनसेस ।

19 इट्स नेवर टू लेट ।

20 ओह नो डियर ,डेट यूसी वेस्ट पर फेट होता जा रही दूँ ।

21 हॉट नो डियरा ।

22 यु वुड लुक लाइक अ लिजर्ड ।

23 हाड अबाउट अ डान्स ।

24 गुड इवनिंग सर ।

25 ड्रेस्डअप लाइक अ लेडी ?

26 व्हाट डिफरेस ! मिनी इज देयर नो मिनी ?

27 वी आर हियर । वेडरफुल इज द वर्ल्ड ।

28 ओह नो !एवरी थिंग इज जस्ट फाइन वेडरफुल इज द वर्ल्ड ।

29 आल फिंगर्स आर नाट ईक्युल वेडरफुल इज द वर्ल्ड ।

30 लाइफ दीज ज्वाइन्ट फिंगर्स वेडरफुल इज द वर्ल्ड । वी आर टुगेदर वेडरफुल इज द वर्ल्ड । आदि अँग्रेजी वाक्यों का प्रयोग सफलतापूर्वक करके भाषा की प्रभावशीलता की वृध्दि हुई है वेडरफुल इज द वर्ल्ड ।

7.5.1.6 शब्द की पुनरुक्तियॉ :-

भाषा में सौदर्य लाने के लिए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है । उमडते भावों को शब्दांकित करने की आवश्यकता होती है । अनेक बार शब्दो को दुहराकर उनसे सार्थकता की वृध्दि हो जाती है अथवा उन पर अतिरिक्त बल देकर भाषा को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने की कोशिश इस प्रकार की शब्दों के प्रयोग दवारा की जाती है । इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकारने अपनी कहानियों दवारा पात्रों के वार्तालाप को अधिक सजीव तथा स्वाभाविक बनाने के लिए ऐसे शब्दो का खुलकर प्रयोग किया है । उनके द्‌वारा कहानी में प्रयुक्त शब्द पुनरुक्तिओं के कुछ उदाहरण निम्नाकिंत है-

'' बजा बजा ,फूट- फूट ,सॅभाल-सॅभाल ,लेटे -लेटे ,गिरते -गिरते ,टटोलते-टटोलते ,उठा-उठा ,जुमे-जुमे ,खुलते-खुलते ,पिघल-पिघल ,दूर- दूर ,गिरते -गिरते ,खुलकर -खुलकर, अभी -अभी, गोरी -गोरी ,रोज -रोज ,खुलते खुलते, लडते -लडते,झलते -झलते जलते -जलते ,घूॅट घूॅट पास -पास रहते- रहते ,छप्पर -छप्पर ,गरम -गरम, मोटी -मोटी , परक- परक हरी -हरी, टकराते -टकराते,तिनका -तिनका , नाचते नाचते ,बहुत -बहुत क्या -क्या सॅभाल-सॅभाल ,धूप- धूप क्या -क्या, चूर -चूर ,टुकडे -टुकडे,सुनते- सुनते ,प्रेम -प्रेम ,जमा -जमा, पोर- पोर, हाय -हाय ,कौडी -कौडी ,दर- दर, अजीब -अजीब , तौल- तौल ,साफ -साफ, समेटते- समेटते ,नार- नार झलते -झलते ,अजीब -अजीब , तैरते - तैरते, खोल -खोल ,लिखते -लिखते ,गौर -गौर ,घिसे -घिसे, अगल -अगल ,भीगा -भीगा ,चौका -चौका ,खानदान -खानदान , पैगाम -पैगाम ,रंग- रंग , अहिस्ता -अहिस्ता , डरते -डरते ,भटका -भटका, उखडे-उखडे, कॉव -कॉव, धीरे- धीरे, घर्ट -घर्ट ,बिस्तर -बिस्तर ,झलमल- झलमल , सॉय -सॉय , बिटर -बिटर ,अजनबी -अजनबी बस्ता- बस्ता, घिसे -घिसे, रंग -रंग ,कुट -कुट ,खुला -खुला ,पसंद -पसंद, तलाक -तलाक, भीगा -भीगा ,कहॉ -कहॉ, फूट -

फूट, पिपल -पिपल, जैसा- जैसा ,मकान- मकान, सटे -सटे ,काम -काम ,कमजोर -कमजोर दुनिया- दुनिया, सौतेली -सौतेली , मॉ- मॉ, सामान -सामान ,आप -आप, टुकुर- टुकुर आदि कई शब्द प्रयोग से पात्रों के माध्यम से भाषा प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया है ।

7.5.1.7 सार्थक-निरर्थक शब्द प्रयोग :--

इक्कीसवी सदी के कहानी कारने अपने भाषा में सौंदर्य लाने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है । रचनाकार अपनी रचना में बोलचाल की स्थिति को अत्याधिक स्वाभाविक और प्रभावशाली बनाने के लिए सार्थक निरर्थक शब्दों का सहारा लेता है । सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक ,सांस्कृतिक जीवन से संबंधित विभिन्न पात्रों का समावेश किया है । पात्रों के दवारा सार्थक शब्द के साथ निरर्थक शब्द का प्रयोग कर उनकी वार्तालाप में सहजना एवं स्वाभविकता लाने का प्रयास किया है । उनकी रचनाओं में पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकूल भाषा के कारण रोचकता ,स्वाभाविकता आ गयी है । इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकार की रचना में चित्रिक सार्थक निरर्थक शब्द निम्नाकित है -

“ सुध- बुध ,देख -देख, इर्द -गिर्द , अलग -थलग, ताम -झाम, दम -खम, अल्लम -गल्लम , रेल -पेल, चमकता -दमकता, झटक -पटक , आवा -जावा, मुडा- तुडा, इखट --दुख्खट, पकड -धकड ,सजी -धजी, नोंक -झोक ,लथ -पथ , भीड- भाड ठीली -ठाली ,टीम -टाम,रहे -सहे उमडते -घुमडते ,उथल - पुथल, उलट- पुलट, याजूज -माजूज ,खटर- पुटर, घुडम-घडाम, ठीक- ठाक ,टुटे -फुटे ठीक -ठाक जहॉ -नहॉ टोका -टाकी , अलग- थलग ,तितर- बितर, धक्का -मुक्की, घिसे- पिटे ,बस्तो -पटी छोटे -मोटे ,रंग- ढंग भिगो -भागो ,टाईप -वाईप ,अला -बला, लड -झगड ,अगल -बगल , अटा -पटा, घिसी -पिटी , भीगा -भागा ,डोल -डौल ,मिलने -जुलने , अला -

बला, अटा -पटा टाईप -वाईप ,घुमता - घामता , बांध -बुंध ,मिशन -फिशन हिन्दी -फिन्दी कान -वान ,अचार- वचार गठरी -मुठरी , उमडते- घुमडते साडी -वाडी क्लाइट-ब्लाइंट माफी -वाफी, खीर -वीर करना -वरना , ॲगुठी - वेगुठी , जेवर- ऐवर, बिस्तर- दुस्तर ,बूॅदा -बॉदी लडकी- वडकी ,लहर- वहर खर्चा -वर्चा , भागने- भुगने ,कोर्स -वोर्स , बिस्तर- ईस्तर ,करना -वरना, खीर- वीर, माफी -वाफी फैक्टरी -वैक्टरी ,छोड -छाडा ,खर्चा -वर्चा कॉलिज -फालिज करने -धरने, चाय -वाय खरीदने -वरीदने, कीडे -मकोडे , गाली- गलौज ,कपडा -सपडा, रात -बिरात, समझने -वमझते ,कोकीन -वोकिन ,नाम- वाम, किराये -विराये, झूठ -मूठ , दम -खम काम -धाम, दौड -धूप दिन- बीन भीड- भाड तडक -भडक, चोरी -चमारी , चेहरा -मोहरा, तितर -बितर, चाल- ढाल ,घुमता -घामता, जेवर -ऐवर इश्क- विश्व, लहोर -वाहोर आदि सार्थक निरर्थक शब्दो का प्रयोग कर हर घटना प्रसंग को रोचक बनाया है ।

7.5.1.8 मुहावरे :-

वाक्य को अधिक गतिशील एवं अधिक प्रभावी बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है । आशय को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है । इसके कारण प्रवाहमयता सजीवना अभिव्यंजकता में वृध्दि हो जाती है। शक्ति प्रदान करने का काम मुहावरे करते है । पात्रों की मानसीक स्थिति मुहावरों द्वारा उदघाटित हो जाती है ।

नासिरा शर्मा की कहानी ‘कच्ची दीवारे ’ के चाचा को बीबीने पाकिस्तान में बुलाने के कारण वे दो मास पाकिस्तान चले गये । एक मास ही रहते हुए वे भारत चले आये घरवालों से उन्होने स्पष्ट कहा था कि मेरा वतन हिंदूस्थान है । उन्हींने कभी अपने लोगों को हिंदूस्थान या पाकिस्तान में रहने पर जबर्दस्ती नहीं की । आप

आपने फैसले से आजाद है वेसे ही वे भी आजाद है । उनका " सारा कुनबा चला गया मगर बन्दा टस से मस न हुआ । "[42]

इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानी कार द्वारा में प्रयुक्त कहानी मुहावरे :-

" आग बबुला होना सांप सुघ जाना , ऑखों में धूल झोकना, दिल पर घुसा लगना ,जान में जान आना , अनमना सा हो जाना , माथे पर कलंक लगाना, गोलमाल नजर आना,सबक सिखाना ,रोगटे खडे हो जाना, खून के ऑसू रोना, अटपटा सा लगना , ऑखो में खुन उतर आना ,बाल बाल बचना, दम घुटना , बवंडर उठना,खून का घूँट पी जाना, अवाक रहना गदगद होना, धक से रहना ,हक्का बक्का रहना, सन्नाटा छा जाना ,तेंश में अपना ,फूट फुट कर रोना ,कॉटा चुभना, अनमना सा होना, खून चुसना ,खून पसीना बहाना,अवाक होना ,मुँह उतरना, हंगामा मचाना रोम रोम फुलना ठगा सा रह जाना माथा टेकना ,ऑखेनम हो जाना ,बाग बाग हो उठना , बौखला जाना, ऑखे में धुल झोकना ,बुझा बुझा सा रहना, बेहोश हो जाना, टस से मस न होना, न्यौछावर होना, रोम रोम टुटना, चूर चूर हो जाना, औल फौक बकना, तमतमा हो उठना, आग बबुला होना, ताक झॉक में रहना, खुन के घूँट पीना, आवभगत करना, शरीर कॉप उठना, सिर फट जाना।

7.5.1.9 कहावतें :-

रचनाकार अपनी रचना में चमत्कार लालित्य , तथा प्रौढ़ता लाने के लिए कहावतों का प्रयोग करता है । गागर में सागर भरने की क्षमता कहावतों में होती है। नालंदा शब्द सागर में कहावतों का अर्थ है " बोलचाल में बहुत बार आनेवाला ऐसा बंधा चत्मकार पूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो। "[43] कहावतों में भावों की गंभीरता को व्यक्त करने की शक्ति होने के कारण वह

पाठक पर अपना अलग प्रभाव छोडते है । इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानी कारों ने कहावतों का सफल प्रयोग अपनी कहानी में किया है । उनके दवारा प्रयुक्त कुछ कहावतें निम्नाकिंत है

“ मान न मान मैं तेरा मेहमान ,साप का बेटा सपोला ही होता है , गधे के सर के सींग , रस्सी जल जाती है मगर बल नहीं जाता ,खुदा देता है तो छप्पर फाड देता है ,किसकी बकरी कौन डाले घास ऐरे गैरे नत्थु खैरे काला अक्षर भैंस बराबर ,घर का भेदी लंका ढ़ाए, न होगा बॉस न बजेगी बाँसूरी ,गुड की सुगन्ध पर मक्खी कहना आसान है करना कठिन, अन्धे को मिली दो ऑखे ,पके पौन बैठ है, आज लुठके कि कल ,लडकियॉ तो जान की जंजाल होती है , महरी है न जुगनी एक लट होती है, बाकी सिर गंजा भाई हो तो लक्ष्मण सरीखा, नकटे को देख कोई नाक नहीं कटवा लेता मोरी की किडा मोरी में ही रहता है , हिंग लगेना फिट करी रंग चोखा आये , मियॉ की जुती मियॉ के सिर, जैसी करनी वैसी भरनी ,हर चमकदार चीज सोना नही होती , देर आये दुरुस्त आये,अपनी चादर देखकर पैर फैलाओं साँप का जहर नहीं मरता आदि कई कहावतों का प्रयोग इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानीकार ने अपनी कहानी में किया है ।

7.5.1.10 अरबी फारसी शब्द :-

इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकारों का अनेक भाषा पर अपना अधिकार होने के कारण अनेक शब्दों का प्रयोग भाषा में सहजता से हुआ है । कोई भाव जिस भाषा में व्यक्त करने की क्षमता रखता है वही भाव को उसी भाषा में सहजता से व्यक्त करने में इक्कीसवी सदी के कहानी कार की विशेषता रही है । उन्होंने अपने शब्द भंडार को समृध्द बनाने के लिए जीवन के सभी क्षेत्र की ओर दृष्टिपात किया है । यही कारण है कि अरबी ,फारसी जैसी विदेशी भाषा के शब्दों

का प्रयोग हुआ है । पात्र घटना ,प्रसंग के अनुकूल भाषा में रसात्मकताकी वृध्दि के लिए भाषा का प्रयोग करना संभंव हो जाता है। अरबी फारसी यह दोनो भाषा शासकों की भाषा रही जिसके कारण दोनो भाषाओं के शब्द लोक व्यवहार में प्रचालित रहे । अरबी फारसी दोनो भाषाओं के शब्द बडी सहजता से सामजिक जीवन के वातावरण को अंकित करते है । इक्कीसवों सदी के कहानीकार द्वारा प्रयुक्त अरबी फारसी शब्द निम्नांकित है -

अ. अरबी शब्द :-

आदाब ,इजाजत,इनसान ,सलामन निकाह ,कुरबान, शरबत, हिमाकत मरहम मशहुर ,रुखसन,हिमाकत ,तबदील ,तफावत ,तकलीफ, तशरीफ ,जनाब, गम ,मनहुस मजमुन ,इल्जाम ,इतमिनान, खैाफजदा, कातिल, जहन्नुम ,नफरत, लिंबास, अजीब, नब्ज, मुआयना ,जहमद ,दहेज ,औलाद ,खुमार, इसरार , शहीद ,इजाफा, निकाह, नामुसी इजाफा ,दुनियॉ ,नजाकत, दावत,महफिल, मजहब, मजबूरी, मजमुआ कलम किस्मत ऐयारी खसलत ,जलावतन,मशविरा,मिजाज,अफसर इमाम, तफावत,लिहाज, मुरीद ,दैालत,दुनिया, शहीद मजबुत शहीद दुनिया दौलत ,दफन ,तकदीर ,फर्श हुकूमत, शिकायत, रियासक ,मकसद ,नफरत,जायदाद ,फर्ज ,किताब कफन ,बगावत ,मंजिल ,जुल्म जमानात,मुकाबला ,मशहुर,मुकादमा, काबिल, किस्मकिरासा ,कुर्बान,तकलीफ, जायदाद कयामन,तमन्ना ,अफवाह,इश्क आफत ,शरारत ,अफसर ,वकाई, अक्स, वाकिफ,अक्सरियत, लिहाज,अक्ल, अजुबा लजीज, लफज, इन्तिहा, रुख्सत, रियासत, इन्निहा इजलास ,इत्तफाक,रियासत, महसूस ,महफिल,इजाजत,इम्महान, इत्मीनान, इत्तिला, इश्क, मुकाबला, मुशीगिरी ,मशहुर मरीज एतराज, इबादतगाह,इजहार,मजिल,मुहब्बत,मुश्किल
इस्लाम,इजहार,एहसानमन,एतराज,कौम,मुलाहिजा,मसला,मुनासिव

मुकादमा,मातहत,कौंम कुर्बानी ,किश्ती ,कद्र ,काबिले,जहाज नख्त जरिया, जवानी ,जनाना, जालिम नक्शा बुखार बगावत ,नब्ज फब्ती, बुखार, नक्शा ,नफरत, कफन, एय्याशा,जालिमखलल ,किक्र फाईल,जिल्लत,नाजायज,जमानत, मातहत, मुआइना तख्तोताज,तब्दीली,तशरीफ ,जरिया, जिम्मा, इत्तिला आदि कई अरबी शब्दो का प्रयोग इक्कीसवी सदी के कहानीकारने अपनी कहानी में किया है ।

आ) फारसी शब्द :-

इक्कीसवी सदी के कहानीकार ने अपनी कहानी में फारसी शब्दो का प्रयोग कर भाषा को प्रभावशाली बनाया है। उनके द्वारा प्रयुक्त फारसी शब्द निम्नांकित है-

"सैलाब, सख्त,सवारी, हरगिज,शहनाई ,शरीकत मर्द ,रोशनी, मुर्दनी, बेरहम,बेगनाह,बेईमानी ,बुलंद ,बुनियाद,कारगर ,कशमकश ,एहसान फरामोश ,आजमाइश, आमदनी अफसोस, अहिस्ता,बुखार, बेरोजगार, बरामद, बदकिस्मत,बख्शीश ,बर्दाश्त, फरिश्ता, फरियाद , फरमाइश, कबिस्तान कारीगर, कामयाब, खामख्याब, खुदा हाफिज, खरीद ,फरोख्त ,खुदमुख्तार, तबाह,नजाकत नाबलिक,नमकीन, नुमाइदे, नुकसान देह तश्तरी तख्तन शील ,तल्खी, तबाह, ख्वाहिश, खुशामद ,खुशबख्ती, खौफनाक ,खूश्क , खैरियत, खुश,किश्मती ,खामोश जबरदस्त ,गुमराह,मुब्बारा गुनाह, गोश्त ,गस्त,गुस्ताखी,गुब्बारा खुशामद ,खिलाफ, जबरदस्त, गुमहार,मुब्बारा ,गुनाह ,गोश्म ,गस्त,गुस्ताखी ,पनाह, तनहाई,फहमी, दहेज, नुमाइश , पैगाम,जहमन ,तनहा , गलत ,शिकवा, गमगीन, जवाब, तुनक,किरदार, दामन बरसात ,बंकरारी, बरिश,दर्द नाबदान,गुंजाइश, बरसात,जिन्दगी ,लाश खानदान,खुन कामयाब, गुनाह खेरियत, सैलाब , आम दनी रोशनी ,सरहद शिकस्त देहान दिल हकदार बेहोशी बेवक्त,पैबस्त, दालान,

कब्रिस्तान,बेकरार, बेवफाई लाश ,चिराग , रजामन्द मुलाकात,खामोश ,नश्तर, बेवफाई ,देहात,बेवफाई पाकिस्तानी ,परचा,गुजाद, मेहमान, किरायदार,चिराग ,जिस्म बदन ,शादाब,गुमनाम, आजादी,बर्बाद, दहशत, रोशनीर खुन खानदान,तुनक, जवाब, आदि कई फारसी शब्दो का प्रयोग हुआ है।

7.6 शैलीः-

भाषा के माध्यम से रचनाकार अपने अनुभवों को प्रयुक्त करता है । समाज जीवन की अनुभूतियाँ को वह अपने कल्पना के बल पर रोचक, चत्मकारी प्रभावी बनाता है । अतः उस अभिव्यक्ति कौशल्य का नाम ही शैली है । रचनाकार के अन्तकरण की अनुभूतियों को साकार करने की एक विशिष्ट प्रक्रिया पद्धति का नाम शैली है । सामान्यतः प्रस्तुतिकरण की पद्धति ही साहित्य के क्षेत्र में शैली नाम प्रयुक्त है ।

7.6.1 शैली का अर्थ :-

शैली शब्द सामान्यतः अंग्रेजी के Style तथा संस्कृत के रीति शब्द से संबंध रखता है । नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार शैली का अर्थ है ''1. चाल ढंग 2. प्रणाली । तर्ज 3. रीति । प्रथा रिवाज 4. वाक्य रचना का वह ढंग जो लेखक की भाषा संबंधी निजी विशेषताओं का सूचक होता है । स्टाइला 5. समुह जिनकी विशेषताओं में उनके कर्ताओं की मनोवृत्ति की एक रुपता के कारण सामान्य हे कलत।'' [44] डॉ. नगेंद्र ने अपने 'हिन्दी काव्यालकार सूत्र वृत्ति' नामक ग्रंथ में शैली शब्द की युत्पत्ति संस्कृत के शील से माना है । ''[45] डॉ भोलानाथ तिवारी ने शैली शब्द के मुल शील शब्द का प्रयोग वैदिक काल सेही माना है । स्पष्ट किया है कि 'शील' एक देवता विशेष है , जिनका मेध्य आंजली विधा है । इस विधा में '' लिपना' आंजना तथा 'पालिश ' करना आदि का आना 'शील' शब्द के अर्थ के स्तर पर शैली

के निकट ला देता है।"[46] शैली का संबंध रचनाकार की कार्यप्रणाली से होता है अपनी रचना को प्रचालित शैलियों में प्रस्तुत करने का प्रयास रचनाकार का होता है । रचना कार की रीति पद्धति को नाम ही शैली है ।

7.6.2 शैली की परिभाषाएँ :-

शैली की परिभाषा में विभिन्न विद्वानों में भिन्नता दिखाई देती है । शैली की परिभाषा करते हुए बाबु गुलाबराय का मतैव्य है कि " शैली में न तो इतना निजीपन हो कि वह सनक की हद तक पहुॅच जाये और न इतनी सामान्यता हो कि वह नारिस और निर्जीव हो जाये । शैली व्यक्ति के उन गुणों का कहते है जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रुप में दुसरो तक पहुँचाने के लिए अपनाता है । "[47] डॉ रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने सामाजिक संदर्भी के भाव एवं कला पक्ष में संरचना करने वाला तत्व स्वीकार करते हुए कहा है कि " शैली भाषा तथा साहित्य को जोडने वाली संकल्पना है जिसके संदर्भ में कहा जा सकता है कि शैली सहेतुक भाषिक अभिव्यक्ति है और दुसरी ओर साहित्य और कला को जोडनेबाली संकल्पना है । जिससे वह स्पष्ट होता है कि शैली कलात्मक सौदर्य की संरचना है ।" [48]

डॉ.जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने शैली को परिभाषित करते हुए कहा है कि " शैली के अवयव शब्द विन्यास ,वाक्यरचना, प्रघटक ,मुहावरा और लोकोक्ति, अलंकार योजना को माना है एवं शैलीगत गुणों मे प्रसाद ओज ,माधुर्य , लाक्षणिकता ,प्रभावोंत्पादकता विषय ग्रह पालन को महत्व दिया है । "[49] बाबुश्याम सुंदरदास के विचारों से " भाव विचार और कल्पना को व्यक्त करने की स्वाभाविक शक्ति को साहित्य में शैली की अभिधा प्रदान है । "[50] डॉ ,भोलानाथ तिवारी के शब्दों में " किसी भी कार्य के करने के विशिष्ठ ढंग का नाम शैली है । " [51]पाश्चात्य विद्वान ओह मैन ने कहा है " शैली लिखने का तरीका है । "[52]

7.6.3 इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानाकार की कहानी में शैली के विविध रुप :-

इक्कीसवी सदी के कहानीकार ने युगबोध एवं युग सत्य को उन्होंने अपने कहानी में प्रस्तुत किया है । उन्होने समसायिक सामाजिक चेतना के सृजन हेतु विविध शैलियों का प्रयोग किया है । अपने कहानी में बडी सूक्ष्मता एवं सांकेतिकता के साथ नए सामाजिक यथार्थ को निरुपित किया है ।

7.6.3.1वर्णनात्मक शैलीः-

जहाँ विषय विस्तार की आवश्यकता होती है वहाँ तथा कहानीकार को अपनी बात स्पष्ट करने के लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है । अन्य पुरुष के माध्यम से कहानीकार कथा का विस्तार करके अपनी बात स्पष्ट करता है । कहानी में वर्णनात्मक शैली का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है । वर्णनात्मक शैली अधिक प्रचालित शैली मानी जाती है । अनेक कहानीकार इस शैली का अधिक प्रयोग करते है । क्योंकि इस शैली में कहानीकार को अपने आपको अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता रहती है । कहानी का उददेश्य और पात्रों की भावना को कहानीकार इससे स्पष्ट करता है ।

इक्कीसवी सदी के कहानीकारने अपनी कहानियों में वर्णनात्मक शैली का आवश्यकता नुसार किया है । नासिरा शर्मा की 'मटमैला पानी' कहानी में उजडा गाँव का चित्रण तथा फुलवा की अवस्था का चित्रण वर्णनात्मक शैली में हुआ है । '' सैलाब से उजडा गॉव जहॉ पानी में तैरते सॉप ने पति को काट लिया था । बहते पानी में उसीके सामने वह तड़पता बहता चला गया । वह बस रोती चीखती रह गई थी । जब ऑख बन्द करती तो बंटी अन्तिम दृश्य उसकी आँखो के सामने आ जाता कि वेग से बहते मरियाले पानी में बकरी बछडो और बच्चों के साथ उसका लम्बे कद

कहा पति भी उससे दूर चला गया था । पुरे गाँँव की तबाही में पॉच लोग बच गये थे बुढिया नायन अन्धा साधू ,अधेड मनिहारिन ---वह और उसका बेटा । ''[53]

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानी 'छाँह ' में जमीनदार ददुआ का वर्णन वर्णनात्मक शैली में किया है । '' मेरे गॉव के जमीनदार रहे है ददुआ रियासतो का जमाना देखा है । शीशेदार झूल से सजे ऊॅट पर चला करते थे कभी भव्य तेजस्वी व्यक्तित्व के स्वामी दूधिया और गौरवर्ण बडी बडी काली मॅूछे इक्क सफेद लिबास पर लहरियादार पगडी । वैश्य होकर भी क्षत्रियों कीसी आन बान वैसी ही गरिमा जिधर निकलते लोग राह छोड़कर अलग खडे निखरते रह जाते । पुरे पॉच गावों की जमीदार था ।''[54] शिवानी, कुसुम अंसल, सूर्यबाला जैसी अनेक कहानीकारों ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है ।

7.6.3.2 पूर्वदीप्ति शैलीः-

जीवन की घटनाओं को स्मृति तरंगो के रुप में प्रस्तुत किया जाता है । हर मनुष्य के जीवन में सुख और दुख दोनों का चक्र हमेशा चलता रहता है । यही चक्र जीवन पर अमिर छाप छोड़ जाते है और वही घटनाएॅ उसके स्मृति पटल पर अजरामर हो जाती है । डॉ तारा अग्रवाल पूर्व दीप्ति शैली का अर्थ स्पष्ट करती हुई कहती है '' वर्तमान जिन्दगी जीते हुए पात्र अपने बिगत जीवन की घटना का उल्लेख जब करते है तब उसे पूर्वदीप्ति या स्मृति परक शैली कहा जाता है।''[55] इसमें अतीत के स्मृत्यावलोकन से वर्तमान स्थिति के विवेचन को चित्रित किया जाता है। इस शैली में पात्र का संबंध वर्तमान घटना जिसका संबंध अतीत की घटना से जुडा हुआ होता है । पाठक को रचना के साथ जोड़ने के लिए रचनाकार इस शैली का प्रयोग करता है।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण के कहानी कारोंने अपनी कहानियों में पूर्वदिप्ति शैली का प्रयोग किया है । सुनिता जैन की 'बिन्दु ' काली रुपा कमाई अपराजिता कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया है । उन्हे जाने दो कहानी में भी शीला निराश समय में अपनी स्मृतियों को जोडते हुए रीता से कहती है '' बेटी की जब सहेलियॉ आती है तो वे लोग लॉन के किसी कोने गेट के बाहर या छत पर फुसफुसा कर बातें करती है । पास से गुजरों तो एकदम से चुप पीछे अपमानित कर दे ऐसी दबी सी हॅसती है ये लडयॉ ।''छत पर बैठा वह मोटी मोटी किताब लैप के प्रकाश में पढता। माँ की कराहट और पिता की दमा खॉसी को सुना करता । लोहे के जाल के नीचे रसोई घर से आती जाती तीनों बहनों के युवा शरीर और पीले चेहरे उसे जहर से लगते थे।''[57]

नासिरा शर्मा की कहानी 'दिल की किताब ' पूर्व दीप्ति शैली का वर्णन हुआ है । ''शादी के कुछ सप्ताह बीत चुके थे । जिंदगी ठीक ठाक गुजर रही थी । इस समय भी दोनों इस तरह एक दूसरे के सामने बैठे थे जैसे सलीब पर टॅगे हो । मोहसिन किताब उठाने के लिए बेचैन था,मगर मॉ को दिया वचन याद कर रुक जाता था कि वह महीने भर तक नुरा की देखभाल तथा हर तरह प्रिंसिपल मिस गोवा अपने स्कूल को ऊॅचाईयों के बुलंदियों पर ले जानेवाला व्यक्तित्व का चित्रण ' चिमगादड़े कहानी में दृष्टव्य है '' वे विनम्र थी ,मृदुभाषी थी ,मिलन सारखी मिसेज गोवा मॉ थी ,ममता का अथाह सागर थी । लोगों के लिए वह जी थी ,मरी थी। वे वह सब देखकर और देखकर और वह सब पाकर जो मिसिज गोवा ने टीचरों में बॉटा था । साहस ,बलिदान ,सहिष्णुता, मेहनत और लगन । उसने इन सब में अपने काम से प्यार हो गया था । कुर्सी के लालच का सवाल न था । ''[59] संक्षेप में इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकारोंने इस शैली का प्रयोग कर घटना प्रसंगों तथा परिस्थितियों को पुनः साकार किया है ।

7.6.3.3 आत्मकथात्मक शैलीः-

कहानी को अधिक विश्वसनिता पैदा करने में तथा घटनाओं में रोचकता लाने के लिए तथा मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने के लिए यह शैली बेजोड़ रही है । इसमें प्रथम पुरुष के रुप में शैली को प्रस्तुत किया जाता है। प्रथम पुरुष के रुप में प्रस्तुत किये जानेवाले कहानी की शैली को आत्मकथात्मक शैली कहा जाता है । डॉ दुर्गा शंकर मिश्र आत्मकथात्मक शैली को स्पष्ट करते हुए लिखते है कि " प्रथम पुरुष की ओर से प्रस्तुत की जानेवाली सभी प्रकार की रचनाओं को आत्मकथात्माक शैली के अंतर्गत माना जाता है । लेखक किसी न किसी रुप में अपने संबंध में कुछ न कुछ कहता है परंतु कभी-कभी वह यह कार्य सीधे वर्णन दवारा या किसी पात्र भी करता है।" [60] इस शैली मे लिखी गई कहानियॉ प्रथम पुरुष मैं के माध्यम से विकसित होती है इसमें घटनाओं की अपेक्षा मै व्यक्ति को अधिक महत्व दिया जाता है ।

सुनिता जैन ने अपने कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है , हम मोहरे दिन रात इस कहानी संग्रह के अंतर्गत दविधा कहानी में इस शैली का प्रयोग हुआ है।"देखता हूॅ कि जब तक अपनी फाईल मेज पर रख मै अपनी जगह निर्धारित नहीं कर लेता तब तक वह खडी रहती और ठीक सामने गोलाकार मेजो पर वह बैठती रहती है ,जुडी जूडी ब्राउना बडा अजब-सा ,अटपटा सा नाम है । उसका उच्चारण में अमधुर ,कर्कश ,क्लास दो घण्टे की है । जब तक लेक्चर देता हूॅ,वह निगाह के घेरे में बनी रहती सामने बैठती हैन । " [61]

नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है । जैनुन की साये कहानी में फिलिस्तिन और इस्त्राईल के बीच चल रहे संघर्ष के कारण रोजगार की नलाश में तौफिक को इस्त्राईल सीमा में कैद कर लिया जाता

है । उसे कैद खाने में तरह तरह के यातनाएँ दी जाती है । अपनी जीवन व्यथा को वह स्वयंम मुखरित करता है -"मै आज किसी से बातें करना चाहता हूँ । अपना दिल खाली करना चाहता हूँ मगर बाते किससे और कैसे करुँ ? पत्थर की ये बेजुबान दीवारों मुझे दिलासा भी नहीं दे सकती है न मेरे टूटते वजुद का सहारा बन सकती है यह मुख्खा ---अंधेरे की ऑख ---इस पर आज तक कोई परिन्दा आकर नहीं बैठा है मेरा रिश्ता हर जानदार से टूट चुका है और हर बेजान चीज मेरी साथी बन चुकी है।"[62] दाहगाह कहानी में मिस्टर नखाई से उसकी पत्नी तलाक देना चाहती है । वह अपनी परेशानी बताती हुई कहती है " मैने कौन सी बदकारी की है कि इनका सर झुकाने का कारण बनी ? एक तो मै इनका पैसा बचाती हूँ । दूसरे मेरी यह खुबी की यह तारीफ नहीं कर सकते है कि मेरा बेकार चीजों को भी देखने का अपना एक दृष्टि कोन है ,जिसमें सौदर्य बोध है।"[63]

सूर्यबाला की 'रमन की चाची' कहानी में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है । " मैं ने मिडिल पास कर लिया ,अच्छे नंबरो से पहले से ही नय किया था कि मिडिल के बाद चुँकि बाद में स्कूल नही है इसलिए मामा अपनी पहली माँ वाले के पास रहकर पढूँगा । वैसे भी मेरी मॉ मरने के बाद से मेरे ननिहाल से लगातार बाबूजी परवे लोग दबाव डाल रहे थे कि मै जब तक बडा नहो जाऊॅ ननिहाल में रहूँ।"[64] संक्षेप में कहा जा सकता है कि इक्कीसवी सदी के कहानीकार ने पात्रों की अंतर्भूत पीडा वेदना अर्न्तव्दन्द को आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया है ।

7.6.3.4 नाटकीय शैली :-

कहानीकार नाटक जैसा प्रभाव एवं गति की तीव्रता के लिए शैली का प्रयोग करते है । पात्रों के वार्तालाप या संवाद कहानी में जीवंतता प्रदान करते है । भव्य वातावरण का चित्रण प्रस्तुत कर कहानीकार पात्रों के अर्तमन की भावनाओं को

उजागर करता है । रोचक संवाद से कथ्य प्रस्तुति प्रभावपुर्ण बन जाती है । इस शैली में कहानीकार पात्रों के संवादों से कथन को प्रभावशाली ढंग से आगे बढाता है । विभिन्न प्रकार के संवाद पात्रों की मनस्थिति को चित्रित करते हुए नाटयात्मक मोड़ कहानी में मिल जाता है घटना तथा कथ्य को सहज तथा स्वाभाविक बनाने के लिए इस शैली का प्रयोग कहानी में किया जाता है ।

इक्कीसवीं के प्रथम चरण के कहानीकार ने नाटकीय शैली का प्रयोग कर प्रभाव शाली रोचक और रस प्रद संवादो की सृष्टि की है । पात्रों के संवाद उनकी परिस्थिति मन स्थिति को चित्रित कर नाटयात्मक मोड देते है । पात्रों के संवाद कहानी में जीवतंता प्रदान करते है ।

सूर्यबाला की कहानी 'रमन की चाची' कहानी में नाटकीय शैली का प्रयोग हुआ है । रमन अपने मामा से चर्चा करता है -''मामा एक दिन को घर हो आऊॅ ?''

घर ?हॉ-हॉ पर तेरे इम्तहान --?

''दुसरे दिन ही वापस आ जाऊॅगा ।

'' अच्छा अच्छा समझ गया । चला जा सुबह की बस से चला जा । दोपहर का सन्नाटा खिंचा था । सिर्फ बाबू बाहर बैठक में जगे थे ।

''तुम्हे कैसे पत्ता चला ? ''

''मामा ने बताया। ''

''ओह । ''

'' क्या कहा बडे डॉक्टर ने ?''

'' जल्दी से जल्दी ऑपरेशन करके पैर करवाने को । ''

मैं भागा भागा अंदर पहुँचा । चाची बिस्तर पर थी । पैसे में साफ अस्पताली पटटी बॅधी थी । मेरे आहट पर उन्होने चौककर देखा , जैसे किसी महाशून्य को थहाते हुए उनकी दृष्टि लौटी थी ।

''रमन भैया । ऑखो में न कही बादल थे न समदर सिर्फ रेत सुखी रेत और सुखीरे से जैसे पानी की पतली धार सी हॅसी वह ।

''क्या छुटियॉ आ गई रमन भइया ?''

''नहीं मै तुम्हे देखने आया । ''

'' हॉ अभी तो तुम्हारे इम्तहान होने वाले होगे न ?''

'' हॉ अभी पंद्रह दिन है । ''

''तो ?'' [63]

नासिरा शर्मा की कहानी 'फिर भी ' कहानी की लडकी को उसकी सौतेली मॉ उसे रोज मारती पिटती है , तब वह लडकी घर से भाग जाती है । मीनाक्षी के साथ हुए वार्तालाप से लडकी की दुख भरी कहानी का पता चलता है ' यह कौन सी जगह है ? वह उधर देखती हुई बोली ।

' दिल्ली !तुने क्या कक्षा पढी है ?

'पहली में भी जब मॉ मरी थी फिर बापू नये मॉ ले आया और--- बाकी शब्द रोने के कारण टूटने लगे थे ।

'तेरा बाप क्या करता था? '

'रिक्शा चलाता था । वह मुझे ढूॅढ रहा होगा । उसके ऑसु थम गए । '

'वापसी जाएगी ?'

'सौतेली मॉ अब तो और पीटेगी फिर भगोडी कहकर चिढाएगी भी । सौतेली माँ का व्यवहार सहज और स्वाभविक रुप सवे उद्धृत हुआ है । 'आशियान' कहानी में सियाकुश किरवान चला जाता है । वहॉ खेत खलिहान में लडाई में उसे चाकू लग जाता है । तब सियावुश पैसे की मॉग करता है ,तब जमशेद कहना है -

''बतुल पासबुक उठाना । '

'क्यों क्या काम है ?'

'देखूॅ रुपया कितना है ?'

' 10हजार तुमान। '

' अपना हिस्सा बेचने की सोच रहे हो ? जमशेद को सोच में डूबा देख बतुल बोली ।'

नहीं !कुछ पैसे निकलने की सोच रहा हूॅ ।'

''खबरदार । इन्हे हाथ मत लगाना वरना टब में पडे छेद की तरह सारा पानी वह निकलेगा ।''

''वह ठीक है पर--''

''ऐसी कौन-सी जरूरत पड गयी ?''

'' किरवान से खत आया है , सियावुश को चाकू लग गया है । ''

''अस्पताल में है । पैसे मॅगवाये है । ''

''क्या''

'' हालत ठीक है न ? ''बतुल ने घबरा कर पूछा ।

''हॉ खतरे की कोई बात नहीं है । '' [66] .

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'बोझ ' में नाटकीय शैली का सफल प्रयोग हुआ है । पापा अक्षय से गुस्सा करते है । मम्मी चिड़चिड़ी हो गई है । बुआ कहती है घर में एक बच्चा आएगा। मम्मी अस्पताल से लाएॅगी ।उसके साथ मजे में खेलना ।

----मैं कैश भी जाऊॅगा बुआ?''

''नहीं रे ,तब तो मै रहुँगी यहॉ छुटटी लेकर आ जाऊॅगी हॉस्टल से तू सारा दिन मेरे पास रहेगा । '

'अक्षय ताली पीटकर हॅसने लगा ,''अहा । ''

'' बहादुल । ओ बहादुला

बहादुल ने ऊपर देखा , अक्षय था ।

अरे । अच्छय बाबा । ''

'' बहादुल ,तुम को जालये हो ? ''

''बाजार ,अच्छय बाबा । हम साब के लिए सिगरेट लेने जा रहे है । ''

मैं आऊॅ तुम्हारे साथ ?'' [67]

संक्षेप में इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानी कार ने सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक परिस्थितियों को पात्रों के नाटकीय शैलीके संवादों दवारा कहानी को जीवंतता प्रदान की है ।अतः उन्होंने अनेक कहानियों में नाटकीय शैली का सफल प्रयोग किया है ।

7.6.3.5 काव्यात्मक शैली

लोक जीवन के विविध संदर्भ को अभिव्यक्त करने के लिए काव्यात्मक शैली का प्रयोग इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकार ने इस शैली का प्रयोग किया है । भावों की प्रधानता के लिए कहानीकार अपने कहानियों में काव्यात्मक शैली का प्रयोग करता है । काव्यात्मकता उनकी भाषा की सशक्तता का प्रमाण है । उन्होंने काव्यात्मक भाषा का प्रयोग प्रसंगानुकूल किया है । कुछ उदा इस प्रकार है

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'बोझ ' में काव्यात्मक शैली का प्रयोंग हुआ है ।

''अटकन बटकन दही चटक्कन ,बडफूले बंगाले।

मामा लाया सात कटोरी ,एक कटोरी फूटी ।

मामा की बहुरुठी । काहे बात पै रुठी ।

दही दुध बहुतेरा खाने को मुॅंह टेढा ।

बिछा देरानी पालिका ।''[68]

'छॉंह' कहानी में सन्नू बतासो गाता हुआ कह रहा है

''चौर सन्नु आज कैसे ? मूसक छिडकाव नॉंव का आज ?''

'' पण्डितजी के यहॉं सगाई तौ कल्ल है ददुआं तब ही छिडकाव होयगों । ''

''कैसी आमदनी चलि रही है आजु कल्ल ?''

'' तिहारी किरपा है ददुआ मेहरमानी । ''[69]

सूर्यबाला की 'रमन की चाची ' कहानी में निम्नलिखित उदा उदधृत है

'' पितु मातु सहायक स्वामि सखा

तुम ही इक नाथ हमारे हो

जिनके कुछ और आधार नहीं

तिनके तुम ही रखवारे हो । ''[70]

नासिरा शर्मा की कहानी 'शामी कागज' की खानम कपडा धोते गीत गाती है

'' मैं कल रात आयी पर तुम घर पर न थे,

सच कहो कहॉ गये थे ,

याद नहीं कहा था कि मेरे समीप रहोगे ,

खुदा की कसम सबके खाने गया था

जोशमा तुम्हे पाने के लिए जलाई थी ,

उसे मुशद पा लेने के बाद बढाने गया था ।

झुठन बोलो झुठन बोलो यह शब्द फिर न कहना ,

तुम मेरी रकीब के साथ जाजे नदी पर देखे गये थे

जहॉ नदी के किनारे बैठे उससे बातो में डुबे थे । '' [70]

'पत्थर गली' कहानी की सलमा को सहेलियॉ खेल खेल में चिठानी थी तब वह रोते हुए अपनी अम्मा के पास पहूॅचती तब अम्मा उसे सीने से लगाकर पुचकारती और फिर सलमा अम्मा की गोद से कुदकर सहेलियों के साथ खेलने में शामिल हो जाती और गाना गाती है

''अक्कड बक्कड बम्बे बौ

अस्सी नब्बे पुरे सौ ,

सी में लगा तागा

चोर निकलकर भागा

राजा की बेटी सोती थी

फुलों की मार पडती थी

आलू भॉटा रोम धम । “[72]

अतः इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकार ने काव्यात्मक शैली का प्रयोग कर प्रसंगों घटना ओं को और प्रभावित करने का प्रयास किया है ।

निष्कर्ष :-

किसी भी रचना को प्रस्तुत करने समय शिल्पविधान प्रधान है । इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकार की भाषा प्रभावशाली रही है । उनकी भाषा जटिल से जटिल भावों विचारों ,घटनाओं ,स्थितिओं को अभिव्यक्त करने में भाषा सफल रही है । पात्रानुकूल भाषा के दवारा कर बाई जीवन से लेकर महानगरीय जीवन तक सभी पात्रों तक चित्रित करने का प्रयास किया है । दीप्ती खंडेलवाल, शिवानी ,नासिरा शर्मा ,मंज शर्मा ,सुनिता जैन, मैत्रेयी पुष्पा ,सुर्यबाला आदि सभी की भाषा में विविधता पायी जाती है । प्रेम ,हर्ष,शोक,संघर्ष ,आक्रोश, घृणा ,दैन्य आदि स्थिति और प्रसंगों में भाषा अपने आप परिवर्तित हो जाती है । किसी दृश्य को जैसे के तैसे उपस्थित करने में भाषा सफल रही है ।

तनावपूर्ण तथा अमूर्तभाव की स्थिति उत्पन्न करने के लिए डॉटस भाषा का भी प्रयोग हुआ है । कहानी में पात्रों का दर्द तनाव निराशा स्थितियों को उदघाटित किया

है ।ॲंग्रेजी ,अरबी ,फारसी शब्दो का प्रयोग प्रसंगानुकूल हुआ है। भाषा में सहजता, सरलता, अर्थगर्भिता स्वाभाविकता उपयुक्तता और व्यंग्यात्मकता भी पाई जाती है । हमारे समाज की सामाजिक व्यवस्था हो या राजनैतिक धार्मिक व्यवस्था पर उन्होंने व्यंग्यात्मक शब्दरुपी वाणी का प्रयोग किया है ।

इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के कहानीकार की भाषा में विभिन्न गुणों के साथ साहित्यिक गरिमा भी दिखाई देती है । रचना को नवीनता या सजीवता दिलाने के लिए रचनाकार शिल्पगत परिवर्तन करता है । शैली की विभिन्नता इस कहानीकार में दिखाई देती है । काव्यात्मकता वर्णनात्मकता या मनोविश्लेषण विभिन्न शैलीयों का प्रयोग अपने सृजन कार्य में पायी जाती है । जिस भाषा शैली का प्रयोग उसमें ॲंग्रेजी विदेशी शब्द तत्सम तदभव शब्द का प्रयोग किया है ।

क्रोध घुटन आदि भावों को व्यक्त करने के लिए अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है । मुहावरे लोकोक्तियॉ का प्रयोग भाषा सौदर्य वृध्दि में सहायक हुआ है । अतः इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण के सभी कहानीकारों की भाषा सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक व्यवस्था को सफलता से उद्‌घाटित करती है ।

संदर्भ :-

1 कहानीकार कमलेश्वर :संदर्भ और प्रकृति- सुर्यनारायण रणसुभे, पृ 141

2 एक दूनिया समानान्तर : राजेंद्र यादव भूमिका से

3 बृध्द हिन्दी कोश- संपा. कालिका प्रसाद तथा अन्य, पृ 1130

4 बृध्द अँग्रेजी हिन्दी कोश संपा सत्यप्रकाश बलभद्र प्रसाद पृ 1390

5 हिंदी कहानी में शिल्पा विधि का विकास- डॉ लक्ष्मी नारायण लाल पृ 1

6 हिंदी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास -डॉ प्रतापनारायण टण्डन पृ 346

7 हिंदी के ऑचलिक उपन्यासों की शिल्पविधि- डॉ. जवाहर सिंह पृ 1

8 भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन- डॉ. सुरेश बाबर पृ 186

9 हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग-डॉ.त्रिभुवन सिंह पृ 240

10 भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन-डॉ सुरेश बाबर पृ 186

11 हिंदी भाषा और भाषा विज्ञान डॉ अशोक शाह प्रतीक पृ 18

12 भाषा विज्ञान-भोलानाथ तिवारी पृ 9

13 हिन्दी उपन्यास सुरेश सिन्हा पृ 364

14 हिंदी के ऑचलिक उपन्यासों का लोकतांत्रिक विमर्श, डॉ. उषा डोगरा पृ 155

15 इब्ने मरियम-नासिरा शर्मा पृ 67

16 इब्ने मरियम- नासिरा शर्मा पृ 21

17 बुतखाना-नासिरा शर्मा पृ 69

18 इन्सानी नस्ल नासिरा शर्मा पृ 42

19कथा विहार डॉ सुरेश कुमार जैन पृ 160

20 थालीभर चॉद सुर्यबाला पृ 27

21 सुनिता जैन समग्र खंड काव्य संपा पुष्पपाल सिह पृ 53

22 इन्सानी नस्ल नासिरा शर्मा पृ 70,71

23 ललमनियॉ मैत्रेयी पुष्पा पृ 49

24 सुनिता जैन समग्र खंड काव्य संपा पुष्पपाल सिंह पृ 241

25 बुतखाना- नासिरा शर्मा पृ 143

26 इष्ने मरियम- नासिरा शर्मा पृ 15

27 ललमनियॉ- मैत्रेयी पुष्पा पृ 103

28 खुदा की वापसी- नासिरा शर्मा पृ 61

29 कथा विहार- सुरेश कुमार जैन पृ 175

30 बुतखाना- नासिरा शर्मा पृ 82

31 इन्सानी नस्ल- नासिरा शर्मा पृ 94/95

32थालीभर चॉद- सुर्यबाला पृ 17

33 वही- पृ 169

34 संगसार- नासिरा शर्मा पृ 14

35 सुनिता जैन, समग्र खंड काव्य- संपा. पुष्पपाल सिंह -पृ 27

36 साहित्य यात्रा- संपा. मनोहर सराफ- रेखा गाजरे पृ 169

37थालीभर चॉद- सुर्यबाला पृ 16

38बुतखाना- नासिरा शर्मा पृ 145

39 सबीना के चालीस चोर- नासिरा शर्मा पृ 56

40 हिंदी भाषा और भाषा विज्ञान- डॉ अशोक शाह प्रतीक पृ 237

41 नालंदा- विशाल शब्द सागर- श्रीनवलजी पृ 1358

42 पत्थर गली- नासिरा शर्मा पृ 135

43 नालंदा शब्द सागर- श्रीनवलजी पृ220

44 नालंदा शब्द सागर- श्रीनवलजी पृ1358

45 हिंदी काव्यालंकार -सुत्रवृत्ति भूमि- डॉ नगेद्र पृ 54

46 शैली विज्ञान डॉ भोलानाथ तिवारी पृ 11

47 सिद्धात और अध्ययन-बाबू गुलाबराय पृ 190

48 संरचनात्मक शैली विज्ञान डॉ रविंद्रनाथ श्रीवास्तव पृ 291

49 भीष्म साहनी के हिंदी उपन्यासोंका शैली वैज्ञानिक अध्ययन-डॉ रमेश उमाजी आडे पृ 45

50 वही पृ 45

51 शैली विज्ञान-डॉ भोलानाथ तिवारी पृ 7

52 शैली और शैली विश्लेषण- डॉ पाण्डेय- शशि भुषण पृ 34

53 बुतखाना- नासिरा शर्मा- पृ 76

54 ललमनियॉ- मैत्रेयी पुष्पा- पृ 105

55 बुतखाना- नासिरा शर्मा- पृ 101

56 सुनिता जैन- समग्र खंड 1- संपा. पुष्पपाल सिंह- पृ 119

57 वही- पृ 98

58 बुतखाना- नासिरा शर्मा- पृ 116

59 इनसानी नस्ल- नासिरा शर्मा- पृ 78

60 अक्षेय का उपन्यास साहित्य- डॉ दुर्गाप्रसाद मिश्र- पृ 260

61 हम मोहरे दिन रात -सुनिता जैन पृ 58

62 सबीना के चालीस चोर- नासिरा शर्मा- पृ 126

63 संगसार- नासिरा शर्मा- पृ 95

64 थाली भर चॉद- सुर्यबाला- पृ 53

65 वही. पृ 60/61

66 दूसरा ताजमहल- नासिरा शर्मा -पृ 109/110

67 ललमनियॉ- मैत्रेयी पुष्पा- पृ 95

68वही. पृ 88

69 वही. पृ 109

70 चॉद का मुॅह टेढा -सूर्यबाला पृ 52

71 दूसरा ताजमहल- नासिरा शर्मा- पृ95

72 शामी कागज- नासिरा शर्मा- पृ 121

उपसंहार-

उपसंहार के अन्तर्गत पूर्व चर्चित सभी मुद्दों को संक्षिप्त किंतू निष्कर्षवत् प्रस्तुत करना हमारा अभिष्ट है। पूर्ववर्ती विभिन्न अध्यायों में उपलब्ध निष्कर्षों जो सार रूप में प्रस्तुत करना हमारा लक्ष है।

प्रथम अध्याय में 'इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के हिंदी कहानी एक अवलोकन' पर विचार करते हुए देखा गया है कि स्वातंत्र्योत्तर काल में कहानी पर नये सिरे से नये प्रकार की चर्चा आरंभ हुई और कहानी को अनायास ही केंद्रीय विधा की गरिमा प्राप्त हो गई। बीसवीं सदी में साहित्य के क्षेत्र में काफी परिवर्तन हुआ।जहाँ तक कहानी विधा के विकास का प्रश्न है, वहाँ इस विकास की गति को निश्चित करने के लिए उसका काल विभाजन किया जाना आवश्यक है।19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही आधुनिक हिन्दी कहानी अपने विशिष्ट रूप में आरंभ होती है। बींसवी सदी के प्रथम दशक में हिंदी कहानी का उत्थान हुआ परंतु हिंदी कहानी का उद्भव और विकास को निश्चित करते हुए हमारा ध्यान प्राचीन कथा साहित्य पर आकर्षित होता है।

प्रेमचंद ने सामाजिक मानव की सामान्य और विशिष्ट परिस्थितियों, मनोवृत्तियों और समस्याओं का अंकन कर हिंदी कहानी को एक यथार्थवादी दिशा और गति प्रदान की। सामाजिक कहानियॉ प्रमुखतः समाज से जुड़ी रही। प्रेमचंद के साथ गुलेरी, सुदर्शन तथा कौशिक ने सामाजिक प्रधान कहानियो का लेखन किया। नई कहानी मनुष्य को केद्र में रखकर उसका प्रामाणिक चित्रण समाज की विसंगतियों से उसे परिचित करवाया। घटना प्रधान कहानी चरित्र प्रधान कहानी, वर्णन प्रधान कहानी, भाव प्रधान कहानी, घटना प्रधान कहानी लिखी गई। कहानीकार कहानी लिखते समय उसके पीछे उसके कुछ उददेश्य रहते है I वह समाज की कु रीतियाँ तथा व्यक्ति की सामाजिक जीवन की समस्या, नारी समस्या तथा समाज के व्यापक प्रश्न का चित्रण

करता है । कहानी की सफलता इसमें निहीत है कि वह पाठक के अंर्तमन को छू सके । पाठक कहानी को पढ़कर अपने उददेश्य की पूर्ति कर सके ।

हिन्दी कहानी का उदभव और विकास, स्वातंत्र्योत्तर कहानी, हिन्दी कहानी का अर्थ, हिन्दी कहानी की परिभाषा, हिन्दी कहानी का स्वरूप, चरित्र चित्रण, संवाद, भाषा शैली आदि मुद्दों का विस्तार से चित्रण किया गया है।

द्वितीय अध्याय में 'संवेदना का स्वरूप एवं शिल्प: सैध्दांतिक विवेचन' किया ज्या है। संवेदना के स्तर पर कहानी जीवन के विविध पक्षों को पूरी गहराई और मार्मिकता से उद्‌घाटित करती है। संवेदना का अर्थ है-सहानुभूति, भावानुभव, इंद्रियानुभव, बोध, ज्ञान आदि। वस्तुतः संवेदना विभिन्न प्रकार की होती है। समाज में घटित प्रसंग से मनुष्य विभिन्न प्रकार की संवेदना का अनुभव करता है। साहित्य मनुष्य की भावनात्मक संवेदना है । मनुष्य की भावात्मक संवेदना को साहित्य मे संवेदना कहा जाता है । आज समाज भ्रष्टाचार, गुटबाजी, वैमनस्य तथा चारित्रिक -हास के कारण मनुष्य अकेलापन की दूनिया में पहूँचकर भी हार नहीं मानता । उसे संघर्ष के लिए संवेदना ही ऊपर उठाती है ।

कोई भी साहित्यकार के मन में संवेदना के निर्मिती के लिए कोई न कोई कृति अवश्य रहती है, वह उस कृति का आस्वाद लेता है और अपनी संवेदना को जागृत करता है । समाज परिवेश तथा मनःस्थिति व्दारा उत्पन्न संवेदना ही साहित्य में प्रतिफलित होती है । साहित्यकार लिखते समय संवेदना को मूल आधार मानकर ही लिखता है ।

शिल्प विधि से रचनाकार अपनी अनुभूति और संवेदना को पूर्ण रुप देता है । शिल्प विधि के कारण ही संप्रेषणीयता, जटीलता, दुरुहता, सांकेतिकता, बिम्ब आदि का प्रभाव रचनाकार पर पड़ता है । भाषा भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है,

तो शिल्प, भावाभिव्यक्ति में स्वच्छंद प्रणााली का नाम है। भाषा के माध्यम से रचनाकर उच्च कोटि का स्थान प्राप्त करता है।

संवेदना का अर्थ, संवेदना की परिभाषा, संवेदना से अभिप्राय, ऐन्द्रिय बोध और संवेदना, संवेदना और साहित्य का संबंध, संवेदना के भेद,संवेदना बोध के विविध तत्व शिल्प, भाषा, शैली, शैली के विविध रूप आदि मुद्दों पर विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय 'इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी कहानी परिवेश एवं परिस्थितियाँ' में सामाजिक परिवेश, राजनैतिक परिवेश आदि मुद्दोंका अध्ययन, विश्लेषण किया है।

समाज के बदलने स्वरूप के कारण समस्याएँ भी कालानुरूप बदलती रहती है। इस बदलते जीवन स्वरूप को आठवें दशक की महिला कथाकारों ने विविध जीवन संदर्भों पर साधिकार लेखन किया है। अपने परिवेश, की गतिविधियाँ, संवेदनाएँ, घटनाएँ आदि का वर्णन इक्कीसवीं सदी जे ज हा-नीज ारों की कहानियों में चिजित हैं। बालविवाह, विधवा विवाह, वेश्या समस्या, बहु विवाह, अनमेल विवाह, दाम्पत्य संबंधों में बिखराव, विधवा की दयनियता, नारी शिक्षा, अवैध काम जैसी सामाजिज परिस्थितियों का भयावह चित्रण नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला, कुसूम अंसल, शिवानी, मेहरून्निसा परवेज, इनकी कहानियों में हुआ है।

आम आदमी कदम-कदम पर राजनीति का हस्तक्षेप महसूस करजे स्वयंम् को कमजोर समझ रहे हैं। राजनीति का दूसरा नाम भ्रष्टाचार आज उभरकर सामने आया है। । राष्ट्रनेता समाज हित के बदले स्वहित में पूरी तरह डूब गयें हैं। सामान्य जनता की भावनाओं को स्पर्श कर अपना स्वार्थ सिध्द करना वर्तमान राजनीतिज्ञों का व्यवसाय बन गया। विश्वबंधुत्व की भावना पर आज

आतंकवादियों ने तोफ डाग दी है। कुटिल राजनीति के कारण राजनीति नैतिकता विहिन हो गई है। भ्रष्टाचार के कारण कई योजना कागज पर ही दिखाई देती है। इस संदर्भ में यहूदी सरर्गदान, अगरबत्ती, ललमनियाँ, लालसा, जुलुस, परदेस, खटरग, आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण है।

चतुर्थ अध्याय 'इक्कीसवीं सदी के कहानियों में विविध समस्या' के अंतर्गत सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक समस्याओं का विस्तृत चित्रण किया गया है। जीवन के प्रायः सभी विषयों में दाम्पत्य तथा दाम्पत्येत्तर संबंध, मूल्यों का -हास तलाकशुदा, विधवा जीवन व्यक्ति की यौन भावनाएँ, वेश्या जीवन ,बहुविवाह, बालविवाह आदि संबंधित उत्कृष्ट कहानियों की रचना इक्कीसवी सदी में हुई । अपने परिवेश की गति विधियाँ,संवेदना,घटनाएँ आदि का चित्रित उस समय के कहानीकारोंने अपनी कहानियों में किया । पुरुष प्रधान संस्कृति ने नारी को अपने सींकजे में बन्द कर रखा है। पति के मृत्यु के बाद उसके जीवन की प्रसन्नता, आनंद ही समाप्त हो जाता है। पुरुष प्रधान समाज में सदियों से महिलाओं का दमन और शोषण होता है।

नारी पारिवारिक तथा सामाजिक धरातल पर अनेक समस्याओं से त्रस्त है। नारी आज शिक्षित होने के कारण अपने अधिकार के प्रति सचेत हो गई और वह अन्याय के विरुध्द प्रतिरोध करने में सक्षम हो गई । स्वातंत्र्योत्तर के बाद अर्थ को अधिक महत्व प्राप्त हुआ भौतिक प्रगति के कारण समाज का ढाँचा बदल गया । समाज अर्थ केन्द्रित हो गया । इक्कीसवीं सदी की कहानीकारों ने अपनी कहानियों में भ्रष्ट राजनीति का जनता के सामने यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है।

सामाजिक समस्या **जे अंतर्गत** विवाह समस्या, विधवा की दयनीयता, नारी का दमन और शोषन, दाम्पत्य संबंधों में बिखराव, यौन शोषण, वैश्या व्यवसाय, अवैध काम संबंधों की समस्या, दहेज, नारी शिक्षा का अभाव, **राजनीतिक समस्या**

के **अंतर्गत** चुनाव प्रणाली, विभाजन की त्रासदी, आतंकवाद, नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन, राष्ट्र कल्याण की भावना का अभाव, सांप्रदायिक संकुचित भावना, **आर्थिक परिस्थितियाँ के अंतर्गत** आर्थिक वैषम्य, अर्थ लोलूपता, अर्थ प्राप्ति के लिए अवैध धन्दे, बेरोजगारी एवं दरिद्रता, मूल्य वृध्दि की समस्या, उच्चवर्ग का विलासी जीवन, आम आदमी का शोषण, प्रशासकीय व्यवस्था का आर्थिक शोषण, बाल मजदूरी आदि का चित्रण किया गया है।

पंचम अध्याय ' **इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की हिन्दी कहानियों में चित्रित नारी के विविध रुप** ' के अंतर्गत नारी के विविध रुप, माँ , बेटी, नारी के प्रति दृष्टिकोण, नारी का विधवा जीवन, पुरुष द्वारा प्रताड़ित नारी, नारी का घुटन - टूंटन, नारी की जिजीविषा, नारी की सहन शीलता, स्वाभिमानी एवं अहम्वादिनी नारी, परम्परा से विद्रोह करनेवाली नारी, मानवतावादी नारी, राजनैतिक परिस्थिति से पीड़ित नारी, धर्म से प्रताड़ित नारी आदि नारीयाँ चित्रित की गई है।मैत्रेयी पुष्पा, शिवानी, नासिरा शर्मा, सूर्यबाला, मेहरून्निसा परवेज, कुसूम अंसल आदि स्त्री कहानिकारों की कहानियाँ इस परिस्थितियों का चित्रण करती है।

षष्ठ अध्याय **इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिन्दी कहानियों में चित्रित संवेदना** 'के अंतर्गत संवेदना से अभिप्राय, संवेदना व्युत्पत्ति अर्थ, संवेदना की परिभाषाएँ, संवेदना का अन्य के साथ संबंध, ऐन्द्रिय बोध और संवेदना का संबंध, सामाजिक संवेदना, सांस्कृतिक संवेदना, राजनैतिक संवेदना, इक्कीसवीं सदी के प्रथम चरण की कहानियों में चित्रित मानवीय संवेदना, मानसिक संवेदना, पारिवारिक घुटन की संवेदना, आर्थिकता के प्रति संवेदना, अकेलेपन तथा एकाकीपन की संवेदना, प्रेम संवेदना, आत्मपीड़न या परपीडा की संवेदना, जीवन मूल्यों के प्रति संवेदना आदि मुद्दों का चित्रण इस अध्याय में हुआ है।

भावनिक या मानसिक और शारीरिक संवेदना साहित्य से जुड़ जाने के कारण पाठक पर वह अपना प्रभाव छोडती है। संवेदना साहित्य में चित्रित होने के कारण वह मनुष्य के जीवन के साथ घुल-मिल जाती है। साहित्यकार अपने कृति का आस्वादन करता है तथा उस आस्वादन के लिए संवेदना उसके मन में निर्मित होती है। संवेदनाओं की निर्मिती समाज द्वारा ही संभंव है। सहानुभूति, बोध, ज्ञान, संवेदन, चेतना, उत्तेजना, भावुकता, आदि यह परस्पर भिन्न होते हुए भी इन सबका निकट का संबंध होता है।

साहित्य की निर्मिति संवेदना से ही होती है। मनुष्य के जड और चेतन दोनों का संबंध संवेदना से होता है। भावनिक तथा मानसिक संवेदना साहित्य से जुडने के कारण उसका प्रभाव पाठक पर दिखाई देता है।

इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों ने अपनी कहानी द्वारा समाजजीवन की संवेदनाओं को चित्रित कर मानव जीवन के मन मस्तिष्क का संबंध संवेदना से जोड़ा है। जिसके कारण मानव मन के यंत्र को अर्थ बोध ज्ञ-र-नेवाली संवेद-ना उनकी कहानियों का लक्ष रहा है।

सप्तम अध्याय इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की हिन्दी कहानी का शिल्पगत अध्ययन इस अध्याय में शिल्प : स्वरुप और विवेचन, शिल्प की अनिवार्यता, भाषा, इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों की भाषा, पात्रानुकूल भाषा, प्रसंगानुकूल भाषा, चित्रात्मक भाषा, डॉट्स भाषा, इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों की भाषा की प्रमुख विशेषाताएँ, शब्द प्रयोग के विविध रुप, तत्सम शब्द, तद्भव शब्द , बोली भाषा के शब्द , अँग्रेजी भाषा के शब्द , अँग्रेजी वाक्य, शब्द की पुनरुक्तियॉ, सार्थक-निरर्थक शब्द प्रयोग, मुहावरे, कहावतें, अरबी फारसी शब्द, अरबी शब्द , फारसी शब्द, शैली, शैली का अर्थ, शैली की परिभाषा, शैली के विविध रुप, वर्णनात्मक शैली , पूर्वदीप्ति शैली, आत्मकथात्मक शैली, नाटकीय शैली, काव्यात्मक शैली आदि मुद्दों का विश्लेषण इस अध्याय में हुआ है।

आधार ग्रंथ

ज़हा-ी संग्रह

1. निरूपमा सेवती -आवाजें अधेंरे - वाणी प्राकशन, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, सं.2009
2. -ासिरा शर्मा, पत्थर गली - राजकमल प्रकाशन, 1बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 02 तृ. सं. 2011
3. -ासिरा शर्मा, संज़सार - वाणी प्रकाशन, 4695 अ. ए. अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, सं. 2009
4. संपा, पुष्पपाल सिंह-सुनिता जैन- समग्र खंड- 2
5. -ासिरा शर्मा, इब्ने मरियम - किताबघर प्रकाशन, 4855- 56/24 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली सं. 2010
6. शिवा-ी- कैंजा
7. -ासिरा शर्मा, जुदा ज़ी वापसी - भारतीय विद्यापीठ 18 इन्स्टीटयूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली तृ सं. 2001
8. -ासिरा शर्मा, बुतखाना - लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद सं. 2002
9. -ासिरा शर्मा, दूसरा ताजमहाल - इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, के - 71 ज़ृष्ज-ाज़र, दिल्ली 110051 सं. 2009
10. सूर्यबाला, थाली भर चाँद- सतसाहित्य प्रकाशन, 205- बी, चावडी बाजार, दिल्ली-110006, संस्ज़रज 2009
11. मैत्रेयी पुष्पा-ललमनियाँ- किताबघर प्रकाशन, 24, अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1996
12. मालती जोशी- ज़ोहरे ज़े पार

संदर्भ ग्रंथ

1. अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. राम नागेश त्रिपाठी, वैशाली प्रकाशन, विनायक शिखर, सादुल गंज, गोरखपुर, प्र. सं 1993
2. अशोक के फूल - आ.हजारीप्रसाद, व्दिवेदी, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली सं. 1950
3. अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र, हिंदी साहित्य भण्डार, लखनऊ सं. 1976
4. आठवें दशक के उपन्यासों में आधुनिक बोध-डॉ. शोभा देशपांडे, चंद्रलोक प्रकाशन, 132 शिवकृपा, मयुर पार्क, वसंत विहार, कानपुर प्र. सं. 2008
5. आलोचना के सिद्धांत - डॉ. शिवदान सिंह, राजकमल प्रकाशन, 1 - बी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 2 प्र. सं. 1960
6. आठवें दशक की हिन्दी कहानी - डॉ. प्रतिभा धारासूरकर, विकास प्रजाश-ा, 311 सी, विश्व बैंज बर्रा, जा-ापुर - 208027 सं. 1998
7. उच्चतर आधुनिक राजनीति सिध्दान्त - प्रो. एस. एल. वर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 337 चौड़ा रस्ता, जयपुर 302003 प्र. सं. 2002
8. उपन्यास शिल्प और प्रवृत्ति - डॉ. सुरेश सिन्हा, राम प्रकाशन, लखनऊ सं. 1965
9. अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का चित्रण - मोहम्मद जमील अहमद- अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100 डब्ल्यू वन, साकेत नगर - जा-ापुर -सं. 2006
10. अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ. गोरखनाथ तिवारी, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100 डब्ल्यू वन, साकेत -ाजर - जा-ापुर - सं. 2008

11. ज्थाजार -ाासिरा शर्मा - डॉ. ओहाल मोहन विठ्ठलराव, ए. बी. एस. पब्लिकेशन, आशापूर, सारनाथ वाराणसी 22/007 (उ.प्र.) प्र. सं. 2012

12. ज्हा-ीज्ञार ज्मलेश्वर - संदर्भ और प्रकृति - डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर 302003 प्र. सं. 1977

13. ज्मलेश्वर का कथा साहित्य - डॉ. माधुरी शाह, साहित्य रत्नाकार 37/50 गिलिस बाजार, कानपुर सं. 2007

14. ज्थाजार ज्मलेश्वर - डॉ. के. पी. जया, जवाहर पुस्तकालय सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.) 241001 - सं. 2007

15. जाँधी और सांप्रदायिक एकता - डॉ. सुनिलकुमार अग्रवाल, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 02 प्र. सं. 2005

16. छठे दशक के हिन्दी उपन्यासों में लोक संस्कृति - डॉ. महेंद्र रघुवंशी, चंन्द्रलोक प्रकाशन, 132 शिवराम कृपा, मयुरपार्क बसंत विहार, नौबस्ता ज्ञा-ापुर -208021 प्र. सं. 1998

17. देवेश ठाकूर और उनका उपन्यास - डॉ. पांडूरंग पाटील, क्वालिटी बुक पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रिब्युटर्स 104A/118 रामबाग, कानपुर - 208012 प्र स. 1998

18. धर्मवीर भारती युगचेतना और अभिव्यक्ति - डॉ. सरिता शुक्ला, चिन्तन प्रकाशन, 3A/119 आवास विकास हंसपुरम, कानपुर - 21 प्र. सं. 2004

19. नरेश मेहता के उपन्यासों का सांस्कृतिक अनुशीलन डॉ. प्रेमलता गांधी, भारतीय ग्रंथ निकेतन 27/3 कूचाचेलान, दरियागंज नई दिल्ली 110002 सं. 1996

20. नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में युगचेतना - डॉ. अजय के. पटेल, चिन्तन प्रकाशन 3A/ 119 आवास विकास, हंसपुरम, कानपुर 208006 प्र. सं. 2010

21. नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व - डॉ. विजयकुमार राऊत, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, 125/79 'एल' गोंविन्द नगर कानपुर 2080006 प्र.स. 2010
22. -ासिरा शर्मा ज़ी ज़हा-ियों में -ारी विमर्श - डॉ. सोनल नंदनूरवाले, अन्नपूर्णा प्रकाशक, 127/1100 डब्ल्यू वन, साकेतनगर कानपुर - 208014 प्रसं. 2011
23. नासिरा शर्मा के कथासाहित्य में समसामायिक बोध - डॉ. शेख मोहम्मद शाज़िर शेज बशीर - अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100 डब्ल्यू वन, साकेतनगर कानपूर - 208014 प्रसं. 2011
24. नासिरा शर्मा का कथासाहित्य - वर्तमान समय के सरोकार डॉ. शेख अफरोज फातेमा, अतुल प्रकाशन, 57 - पी. कुंज विहार II यशोदानगर, ज़ा-ापुर 208011 प्र. सं. 2012
25. नासिरा शर्मा का कथासाहित्य में संवेदना और शिल्प - जाहेदा ज़बीन, -िर्मल प्रज़ाश-ा, 4-1 शक्ति दिप बिल्डींग, नेताजी सुभाष मार्ग, लाल किला, चांदनी चौक दरियागंज - दिल्ली 110006 सं. 2007
26. -ारी शोषज - आईने और आयाम - आशारानी व्होरा, -ेश-ल पब्लिशिंज हाऊस 2/35 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - 2 प्र. सं. 1982
27. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामायिक दृष्टि - डॉ. मंजूर सैय्यद, चिन्तन प्रकाशन, 3 - ए / 119 आवास विकास हंसपुरम, ज़ा-ापुर - 208021 प्र. सं 2008
28. प्रगतिवाद एक समीक्षा - धर्मवीर भारती, ग्रंथावली - 5 साहित्य भवन लि. प्रयाज सं. 1946
29. बींसवी सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृत्ति मूलक अनुशीलन - डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाळ, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100 डब्ल्यू वन, साकेतनगर कानपूर - 208014 प्रसं. 2006

30. भाषा विज्ञा-न प्रवेश - डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, 2203 गली डकौतान, तुर्क मानगेट, नई दिल्ली - 6 प्र. सं. 1969
31. भारतीय संस्कृति का विकास - डॉ. हेमसिंह बघेला, रिसर्स पब्लिकेशन, त्रिपोलिया वितरक विश्वभारती पब्लिकेशन - नई दिल्ली सं 2008
32. भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास - आर, शरण, राधा पब्लिकेशन, 437814 बी अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली -110002 सं. 2009
33. भारतीय संस्कृति और सभ्यता - डॉ. प्रसन्नकुमार, आचार्य हिन्दी साहित्य संमेल-न प्रयाज प्र. सं. 1957
34. भारतीय संस्कृति का इतिहास - मा-िज लाल गुप्त, साहित्य रत्नाकर, गिलीश बाजार 37/50 गिलिस बाजार, कानपुर प्र. सं. 2007
35. भारतीय राजनीति के नये आयाम - डॉ. (श्रीमती) राजेश जैन, डालचन्द जैन, विश्वभारती पब्लिकेशन 4378/413 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली प्र.सं. 2009.
36. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन - डॉ. सुरेश बाबर, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100 डब्ल्यू वन, साकेतनगर कानपुर - 208014 प्र.सं. 1978
37. मानवाधिकार और उनकी रक्षा - डॉ. कैलासनाथ गुप्त, अविराम प्रकाशन - 29/62 st fir जल्ली -ां.- 11 विश्वासनगर शहदारा, नई दिल्ली - 32 प्र. सं. 2007
38. महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता डॉ शशि जैकब, जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार मथुरा (उ.प्र.) सं. 1989
39. राही मासुम रज़ा के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. मोहम्मद फरीद्दीन, दिग्दर्शन, ऋषभचरन जैन, एवं. संन्तति, 4662/21 दरियागंज, नई दिल्ली 110002 प्र. सं. 1984.

40. राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय जीवन - डॉ. अर्जुन चव्हाण, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइव्हेट लि. 2138 अंसारीरोड, दरियागंज, दिल्ली प्र. स. 1995

41. वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. कृष्णा अवस्थी, पुस्तक संस्थान, नेहरूनगर कानपुर - 12 प्र. सं. 1978

42. रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन - डॉ. वी. पी. चौहान, चिन्तन प्रकाशन, 3-ए/119 आवास विकास हंसपुरम, कानपुर 208021 सं. 2004

43. विमर्श जे विविध आयाम - डॉ. अर्जुन चव्हान, वाणी प्रकाशन, 4695 21-ए दरियागंज, नई दिल्ली, 110002 प्र. सं. 2000

44. राष्ट्र और मुसलमान- -ासिरा शर्मा-किताबघर प्रकाशन 4855-56/24 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 सं-2011

45. समजालीन में -यी संवेद-ा-विकल्प कथासाहित्य विशेषांक-श्रीपतराय-मयूर प्रकाशन 1111/16 प्रतापनगर, मयूर बिहार, नई दिल्ली-91

46. शिवप्रसाद सिंह के कथासाहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. टी मी-ाजुमारी, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100 डब्ल्यू वन, साकेतनगर जा-पुर - 208014 प्रसं. 2007

47. शैली विज्ञा-ा - डॉ. भोलानाथ तिवारी, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2/35 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 02 प्र. सं. 1969

48. समजालीन महिला लेज-ा - डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, पुजा प्रकाशन आई 7 कवतय चौक लक्ष्मीनगर दिल्ली - 110062

49. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक चित्रण - डॉ. सुकुमार भंडारे, विजास प्रजाश-ा, 311 सी. विश्वबैंज बर्श, जा-पुर 208027 प्र . सं. 2007 ई

50. समकालीन हिन्दी उपन्यास - वर्ग एवं वर्ण संघर्ष - डॉ. जालिंदर इंगले, चंन्द्रलोक प्रकाशन, 132 'शिवरामकृपा' मयुर पार्क वसंत विहार, नौबस्ता कानपुर -21 सं. 2007
51. साठोत्तरीय हिन्दी उपन्यासों के नायक - डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले, अमन प्रकाशन 104A/ 118 रामबाग कानपुर सं. 2009
52. समाजवादी यथार्थवादी और नागार्जुन का काव्य- राधाकृष्ण प्रकाशन, 2138, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली.
53. साहित्य और संस्कृति चित्रण - डॉ. राधेश्याम शर्मा बुक एनक्लेव, जैन भवन, एम. ई. आई के. सामने शांतीनगर, जयपुर -302006 प्र. सं. 2004
54. साठोत्तरीय हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना - डॉ. एस. गंभीर, विदया विहार प्रकाशन, कानपुर
55. साठोत्तरीय हिन्दी उपन्यास - सं डॉ. एम. बी. पटेल, डॉ. दिलीप मेहरा, ज्ञान प्रकाशन 128/90 जीवलोक, किदवाई नगर, कानपुर -208011 प्र. सं. 2009
56. साठोत्तरीय उपन्यास - डॉ. पारूकान्त देसाई, चिन्तन प्रकाशन 3 - ए /119 आवास विकास, हंसपुरम कानपुर - 208021 प्र. सं. 2002
57. सामाजिक विघटन - डॉ. सरला दुबे, सरस्वती प्रकाशन सदर, शॉप नं. 9 हॅपी स्कूल के पास, टेलीफोन ऑफीस के सामने, दरियागंज, दिल्ली प्र. सं. 1970
58. साठोत्तरीय महिला कहानीकार - डॉ. मंजु शर्मा, राधा पब्लिकेशन्स 4378/4 बी अन्सारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली - 208011, प्र सं. 2009
59. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी लघु उपन्यासों में युग चेतना - डॉ. अरूणेन्द्र सिंह राठोर, जागृति प्रकाशन -89 ब्लॉक, किदवाई नगर कानपुर सं. 2009

60. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में समाज परिवर्तन - डॉ. शेख रब्बाजी, विदयाविहार प्रजाशना 124 - बी /679 जोविन्द नजर जानपुर -208006 सं. 2007

61. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप डॉ. गणेश दास, अश्रय प्रकाशन, अन्हाखेडा, कानपुर सं. 1992

62. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में युज्बोध - डॉ. लालसाहब सिंह, अभय प्रकाशन, 128/224 'H' ब्लाक किदवाई सं. 2005

63. स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य - डॉ. रामविलास शर्मा, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, C -21/30 पिसाच मोचन बनारस, वाराणसी (उ.प्र.) 2110010 सं.1956

64. संक्रमण की पीड़ा - श्यामचरण दुबे, वाणी प्रकाशन 4695/ 2/ए दरियागंज, अंसारी रोड, नई दिल्ली 02 सं. 1994

65. संस्कृति और सौदर्य - डॉ. रामसजन पाण्डेय, संजन प्रकाशन, 437/4 बी, 209 जे. एम. डी. हाऊस, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - 110002 प्र. सं. 2006

66. संरचनात्मक शैली विज्ञान - डॉ. रविंद्र श्रीवास्तव, आलेख प्रकाशन, पांडव रोड, आंम्बेडकर नगर, शहदारा दिल्ली - 110032 सं. 1967

67. हजारी प्रसाद, द्विवेदी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना - डॉ. शिवप्रसाद त्रिवेदी, साहित्य निलम, 49 बौध्दनगर, नौबस्ता कानपुर -11, प्र सं 1997

68. हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि - डॉ. जवाहर सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस 23 दरियागंज, नई दिल्ली 110002 प्र. सं. 1986

69. हिन्दी उपन्यास कथा शिल्प का विकास - डॉ. प्रताप नारायण टण्डन, हिंदी साहित्य भण्डार, लखनऊ, प्र. सं. 1959

70. हिंन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग - त्रिभुव-ा सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान E21/30 पिसाचमोचन, वाराणसी, प्र. सं. 1973
71. हिन्दी के आँचलिक उपन्यास - सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ डॉ. विमल शंकर नायर, प्रेरणा प्रकाशन चंदननगर 32, मुरादाबाद सं. 2000
72. हिन्दी एकांकियों में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति - डॉ. एम. के. गाडगीळ, पुस्तक संस्थान, कानपुर -12, प्र. सं. 1976
73. हिन्दी उपन्यास और राजनीतिक आंदोलन - डॉ. भागवत शरण अग्रवाल, पार्श्व प्रज ाश-ा, िनशापोल, झवेरी रोड, तिलक मार्ग, अहमदाबाद प्र सं. 1989
74. हिन्दी कविता : संवेदना और दृष्टि-राम मनोहर त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, अंसारी रोड, नई दिल्ली.
75. हि-दी -ायज में समसामायिज परिवेश - डॉ. विपिन गुप्त, निर्मल पब्लिजे श-स A -139 कबीर नगर 100 फुट रोड, गल्ली नं. 3 निकट शिवमंदीर, शाहदरा, दिल्ली - 94 प्र. सं. 2000
76. हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण - बिंदू अग्रवाल, राधा कृष्ण प्रकाशन, 2138 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
77. हिन्दी उपन्यास समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. चण्डीप्रसाद जोशी, अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर कानपुर सं. 1962
78. हिन्दी के सांस्कृतिक उपन्यास - डॉ. सी. चेन्नकेशवुलु अन्नपूर्णा प्रज ाश-ा 12/1100 डब्ल्यू वन, साकेतनगर कानपुर - 2080/4 प्र. सं. 2001
79. हिन्दी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. रमेश तिवारी, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1990
80. हि-दी ज हा-ी - एक दशक डॉ. ऋषिकुमार चर्तुवेदी, तारमण्डल प्रकाशन - अलीगढ़ - 1 प्र. सं. 1990

81. हि-दी ज्हा-ी में शिल्पविधी ज ा विज ास - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, साहित्यभवन प्रा. लि. इलाहाबाद - 211003 चर्तुर्थ सं. 1974
82. हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष - डॉ. शिवदान सिंह चौहान इंडियन पब्लिशिंग हाऊस - दिल्ली
83. हि-दी ज ाव्यालंज ार - सूत्रवृत्ति भूमिज ा - डॉ. जगेंद्र, आत्माराम एण्ड सन्स 1376 कश्मीरी गेट इंडियन बैंक के पास,

अँगेजी भाषा के ग्रंथ

1. Modern political Analysics, prentice Hall of India (Private) Ltd. New Delhi -1965 p
2. Political as a vacation ezcerpted in pizzornoced political sociology - penguin books ltd. P. 28
3. Political theory and the modern state 1989 David Held.

शब्दज ोश

1. -ालंदा शब्दसांज र श्रीनवलजी, आदर्श बुक डेपो करौल बाग, नई दिल्ली 110005 सं. 1984
2. ज्ञा-ाशब्द ज ोश - सं. मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस 1 जेष्ठ 2013
3. हिन्दी पर्यायवाची कोश - भोलानाथ तिवारी प्रभात प्रज ाश-ा, 4/19 असफअली रोड, नई दिल्ली - 110002 प्र. सं. 1994
4. परिमल शब्दज ोश - य. ए. धायगुडे, परिमल प्रकाशन, खडकेश्वर औरंगाबाद सं. 1995
5. आधुनिक हिन्दी शब्दकोश - गोविंद चातक, तक्षशिला प्रकाशन 23/4761 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002 सं. 2001
6. लोकभारती प्रमाणित हिंदी कोश - आ. रामचंद्र वर्मा लोकभारती प्रकाशन, 15ए महात्मा गांधी, इलाहाबाद तृ सं. 1996

7. बृहद हिंदी पर्यायवाची कोश - गोविंद चातक, तक्षशिला प्रकाशन 23/4761 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002 सं. 2001
8. मानक हिंदी कोश खंड - 2 सं. बदरीनाथ कपूर, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाज
9. हिंदी विश्व ज ोश - नगेंद्रनाथ बसु, बी. आर पब्लिशिंज ज ार्पोरेश-ा, 23 वाँ खण्ड दिल्ली - सं. 1986
10. बृहद हिंदी ज ोश - कालिका प्रसाद तथा अन्य, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराजसी -221001 सं. 1984
11. हिंदी विश्व ज ोश - धीरेंद्र वर्मा तथा अन्य, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, संत ज बीर रोड, वाराणसी 221001 तृतीय संस्करण - 1985

अंग्रेजी शब्दकोश

1. शोधार्थी - हिन्दी अंग्रेजी शब्दकोश - डॉ. हरदेव बाहरी ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी 22001, तृ. सं. 1985
2. मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश - सं. सत्यप्रकाश बलभद्र प्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सं. 1971
3. हिन्दी अँग्रेजी अभिव्यक्ति कोश - कैलासचंद्र भाटिया - प्रभात प्रकाशन - दिल्ली सं. 1993
4. Hindi - Transliterated Hind English Distionary sangeety. S. Parith, Allied publishers limited New Delhi - p 1996

पत्र पत्रिज ा-

1. जगनाँचल - सं. ज -हैयालाल -ां-ाद -1999
2. सम्मेल-ा - अंक 12 लाहौर
3. साक्षात्कार - 2004
4. माध्यम - 2009
5. हंस-1994